मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 03 | सितम्बर, 2022 | पृष्ठ : 132 | मूल्य : ₹20

शिक्षक दिवस विशेषांक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

चित्र वीथिका : सितम्बर, 2022

आजादी के अमृत महोत्सव राज्य स्तरीय कार्यक्रम, जयपुर के आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, अध्यक्ष माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, अति.वि. अतिथि शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती जाहिदा खान, मुख्य सचिव श्री पवन कुमार गोयल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल, जिलाधीश जयपुर एवं अन्य शीर्षस्थ अधिकारीगण की उपस्थिति में 1.23 करोड़ विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति गीत गायन का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनने पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड के उपाध्यक्ष श्री प्रथम भल्ला द्वारा प्रोविजन सर्टिफिकेट ससम्मान प्रदान करते हुए ।

रा.उ.मा.वि. शिवबाड़ी, बीकानेर में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भामाशाह श्री केशरीचन्द धोलखेड़िया एवं श्री किसन धोलखेड़िया के सहयोग से 20 लाख की लागत से नवनिर्मित कक्षा-कक्षों का लोकार्पण व विज्ञान संकाय का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री महोदय श्री डॉ. बी डी कल्ला, अति विशिष्ट अतिथि पूर्व संसदीय सचिव श्री कन्हैयालाल झंवर, सेवानिवृत्त आईपीएस श्री मदन गोपाल मेघवाल व विशिष्ट अतिथि डॉ. बी.एल. खजोटिया तथा जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक श्री सुरेंद्र सिंह भाटी, संस्थाप्रधान एवं शाला स्टाफ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शाहजहांपुर, नीमराना, अलवर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए शाला स्टॉफ एवं छात्राएं।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवत जालोर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए शाला स्टॉफ एवं विद्यार्थीगण ।

अशोक गहलोत

सत्यमेव जयते

मुख्य मंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि महान दार्शनिक, शिक्षाविद् और देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्म दिवस 5 सितम्बर, 2022 को शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षा विभाग की पत्रिका 'शिविरा' के शिक्षक दिवस विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

नई पीढ़ी को सुसंस्कृत नागरिक बनाने और बच्चों के जीवन का सही दिशाबोध कराने में शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने अध्यापन को यज्ञ के समान मानते हुए शिक्षा को समाज की कुरीतियों और अज्ञान को दूर करने का माध्यम बताया है। यह शुभ है कि हमारी शिक्षण संस्थाओं और शिक्षकों के प्रयासों से राजस्थान का देश में प्रदर्शन मूल्यांकन 1+ग्रेडिंग और इंस्पायर अवार्ड-मानक योजना में प्रदेश में लगातार दूसरी बार प्रथम स्थान पर रहा है। इसका श्रेय हमारे शिक्षकों को जाता है।

प्रदेश में उच्च कोटि के अध्यापन और नवाचार के लिए संकल्पबद्ध राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर पुरस्कृत शिक्षक अपनी मेहनत, लगन और कर्त्तव्यनिष्ठा के लिए बधाई के पात्र हैं। साथ ही प्रदेश में राजीव गाँधी ग्रामीण ओलम्पिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, जिला और राज्य स्तर की नई खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने की महत्त्वपूर्ण पहल है। यह प्रतिस्पर्धा देश ही नहीं दुनिया भर में एक नवाचार है।

आज हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में प्रारंभिक से लेकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार आदि की जो पहल की गई है, उसके ठोस परिणाम देने में हमारे शिक्षक और शिक्षण संस्थाएँ पूरी निष्ठा और लगन का परिचय देगी।

मैं महान शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को श्रद्धापूर्वक स्मरण और नमन करते हुए प्रदेशवासियों को शिक्षक दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही शिविरा पत्रिका के शिक्षक दिवस विशेषांक के प्रकाशन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

(अशोक गहलोत)

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा),
संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा,
(पंचायती राज के अधीनस्थ), कला,
साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

शिक्षा है : असीम सम्भावनाओं का प्रवेश द्वार

बड़े हर्ष एवं उत्साह का दिन है 05 सितम्बर को मनाया जाने वाला शिक्षक दिवस। भारतीय संस्कृति के संवाहक, शिक्षक, दार्शनिक, भारतरत्न एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस पर प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले शिक्षक दिवस पर सभी शिक्षकों को ससम्मान हार्दिक बधाई। डॉ. राधाकृष्णन ने भारतीय शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक चिंतन में भारतीय मानवीय स्वभाव को मूल रूप से न केवल बेहतर बताया है बल्कि वैश्विक जगत में शान्ति और विकास के लिए भी जरूरी बताया है। उन्होंने अपने चिन्तन में बताया है कि आत्मज्ञान का प्रयास सभी बुराईयों को समाप्त कर श्रेष्ठ नागरिक बनाता है। प्रत्येक शिक्षक को उनके चिन्तन के अनुसार असीम सम्भावनाओं के द्वारा विद्यार्थियों को परिचित कराते रहना चाहिए।

अपने विद्यालय के परिक्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने वाले शिक्षकों को ग्राम पंचायत, ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तर से शिक्षक दिवस पर सम्मानित करने की स्वस्थ परम्परा का निर्वहन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष किया जाता है। सम्मानित होने वाले शिक्षकों को विशेष रूप से अग्रिम बधाई देता हूँ।

NMMS परीक्षा 2022 का परिणाम घोषित हो गया है। जिसमें प्रथम स्थान छात्र निशु, रा.उ.मा.वि., रामसरा ताल, चूरू एवं द्वितीय स्थान भी छात्रा खुशबू बिवाल, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय, जमवारामगढ़, जयपुर ने प्राप्त किया है, इसके लिए दोनों बेटियों, उनके अभिभावकों एवं विद्यालय स्टाफ को हार्दिक बधाई देता हूँ। छात्राओं ने कड़ी मेहनत के साथ-साथ उनके शिक्षकों के सम्बलन, मार्गदर्शन एवं पारिवारिक सहयोग से यह उपलब्धि हासिल की है।

विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक जागरूकता हेतु उच्च माध्यमिक कक्षाओं में वर्तमान सत्र से ही 249 विद्यालयों में 'स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा' को ऐच्छिक विषय के रूप में आरम्भ किया है। राज्य सरकार ने शारीरिक शिक्षकों के 5846 पदों को भी स्वीकृत किया है, जो सरकार की स्वास्थ्य के प्रति बेहतर सोच एवं समझ का नतीजा है।

सम्पूर्ण देश में हमारे राजस्थान ने शिक्षा के क्षेत्र में बेहतरीन उपलब्धियां हासिल की है। शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी नवाचारों, नीतिगत निर्णयों एवं उनके ईमानदारी से समयबद्ध क्रियान्वयन के कारण ही हमारा राजस्थान, देश में अग्रणी राज्य के रूप में पहचान बना चुका है। यह माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के कुशल नेतृत्व, दूरदर्शिता एवं सकारात्मक सोच का नतीजा है।

08 सितम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस भी है। शिक्षा के संसार में साक्षरता प्रथम कदम है। वर्तमान कम्प्यूटर युग में निरक्षर को अनिवार्य रूप से साक्षर और साक्षर को कम्प्यूटर में साक्षर यानी टैक्नोलॉजीकल उपयोग करने में माहिर होना भी बहुत जरूरी है। समाज से निरक्षरता दूर करने का संकल्प लेने के साथ-साथ हम सब शिक्षकों को आवश्यक सहयोग भी देना होगा। जो लोग शिक्षा से दूर है, उन्हें पास लाए और कुछ वक्त निकालकर सरकार की शिक्षा सम्बन्धी बेहतरीन योजनाओं की जानकारी एवं महत्त्व बताएं।

छोटे-छोटे प्रयासों से भी हम बेहतर परिणाम ला सकते है। शिक्षा जीवन को न केवल सहज व सरल बनाती है बल्कि यह हमें बड़े अवसरों के लिए योग्य भी बनाती है। शिक्षक स्वयं में दीपक है, जो जल कर हमें और हमारे जीवन को प्रकाशमान करता है, जिसकी धवल रोशनी से हम जीवन यात्रा में निरन्तर मंजिल दर मंजिल अनवरत चलते रहते है। किसी ने कहा है कि-

शिक्षक जलते दीप सा, शिक्षा जिसका नूर।
अंधकार अज्ञान सब करते ज्ञान से दूर।।

शिक्षक सदैव अध्ययनरत रहता है एवं विद्यार्थियों को ज्ञानवान बनाकर अच्छे नागरिक बनाने में अभूतपूर्वक सहयोग करता है।

बुलाकी दास कल्ला

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

"छोटे-छोटे प्रयासों से भी हम बेहतर परिणाम ला सकते है। शिक्षा जीवन को न केवल सहज व सरल बनाती है बल्कि यह हमें बड़े अवसरों के लिए योग्य भी बनाती है। शिक्षक स्वयं में दीपक है, जो जल कर हमें और हमारे जीवन को प्रकाशमान करता है, जिसकी धवल रोशनी से हम जीवन यात्रा में निरन्तर मंजिल दर मंजिल अनवरत चलते रहते है।"

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

> शिक्षक कलम का धनी होता है। वह सतत लिखता और पढ़ता भी है। समाज में रहते हुए समाज के हित में संलग्न शिक्षक साहित्य की विविध विधाओं यथा कहानी, कविता, भजन, गीत-गजल, यात्रा वृतान्त संस्मरण आदि हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं में साहित्य का सृजन करते रहते है। इससे उनकी शिक्षण विधा एवं शैली में निखार आता है।

मेरा संदेश

सृजनशीलता शिक्षकों का श्रेष्ठ कार्य

ऐसे सत्य सिखाना जग को, अनाचार जग से मिट जाए।
मिटें स्वर्ग की असत् कल्पना, शाश्वत सत्य भूमि पर आए।।
मैं भूलूं पर तुम मेरी, भूलों पर उदास न होना।
तुम शिक्षक, विद्वान् तुम्हारी प्रतिभा से लोहा भी सोना।।

मुझे अतीव प्रसन्नता है कि शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार द्वारा भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति जी के जन्म दिवस पर अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से विशिष्ट पहचान स्थापित करने वाले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्म दिवस पर शिविरा मासिक पत्रिका का यह अंक शिक्षक दिवस विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत रत्न से सम्मानित डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् समर्पित, ईमानदार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ शिक्षक के रूप में जाने जाते है। इन्हीं के विचारों से प्रेरित होकर प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस पर चयनित श्रेष्ठ शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है। समस्त शिक्षकों को मेरी शुभकामनाएँ।

मुझे बताया गया है कि शिविरा के इस विशेषांक में सृजनशील शिक्षकों की कलम से प्रसूत साहित्यिक रचनाओं को शामिल किया गया है। शिक्षा विभाग में ऐसे अंक वर्षों से प्रकाशित किए जा रहे है, जो बहुत ही सराहनीय और अनुकरणीय है।

शिक्षक कलम का धनी होता है। वह सतत लिखता और पढ़ता भी है। समाज में रहते हुए समाज के हित में संलग्न शिक्षक साहित्य की विविध विधाओं यथा कहानी, कविता, भजन, गीत-गजल, यात्रा वृतान्त संस्मरण आदि हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं में साहित्य का सृजन करते रहते है। इससे उनकी शिक्षण विधा एवं शैली में निखार आता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिविरा के इस विशेषांक में प्रदेश के सृजनशील अधिकाधिक शिक्षकों की रचनाओं को स्थान दिया जाएगा।

शिक्षकों के साहित्यिक अवदान को शिविरा पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित करने के प्रयास की सराहना करते हुए शिक्षक दिवस 2022 के मुबारक अवसर पर शिविरा पत्रिका के विशेषांक की सफलता के लिए मेरी ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएँ।

Zahida

(जाहिदा खान)

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्यों को पहचान मिले

एक सुखद अनुभूति! राष्ट्र के महान् शिक्षक, शिक्षाविद्, दार्शनिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् के जन्म दिवस 05 सितम्बर को शिक्षकदिवस के रूप में मनाना। यह एक शिक्षक का जीवट ही है कि सर्दियों की तीक्ष्ण ठण्डी हवाओं और गर्मियों की झुलसाने वाली तीव्र गर्म हवाओं (लू) में भी कहीं रेतीले धोरों पर तो कहीं दुर्गम पहाडी क्षेत्र में सजगता के साथ एक सैनिक की भाँति अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करने में लगा हुआ है। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में रहकर भी राज्य का शिक्षक पूर्ण मनोयोग के साथ अंतिम छोर की ढाणी तक शिक्षा की अलख जगा रहा है, यह जानते हुए कि संसाधन अल्प हैं, पर हौसले बुलन्द है और यही वजह है कि राजकीय विद्यालयों के बोर्ड और विद्यालयी परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहे हैं। आज हमारा शिक्षा विभाग राजकीय विद्यालयों के नामांकन और ठहराव के साथ-साथ बालिका शिक्षा के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य करते हुए अन्य नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन भी कर रहा है, जो शिक्षकों की मेहनत का सुफल है।

शिक्षा विभाग शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से शिक्षार्थियों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के प्रति दृढ संकल्प है, परन्तु यह कार्य सामाजिक सरोकार से जुड़ी परिवार रूपी प्रथम इकाई के सहयोग के बिना अधूरा है। अत: आवश्यकता है प्रशासन, संस्थाप्रधान, शिक्षक, अभिभावक और छात्र सभी कड़ियों को मिलाकर एक श्रृंखला बनाने की.....

राष्ट्र निर्माता की भूमिका का निर्वहन करने वाले शिक्षकों के प्रति अपना सम्मान राज्य का शिक्षा विभाग राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन कर प्रकट करता है। शिक्षक सम्मान हेतु इस वर्ष भी सदैव की भाँति राष्ट्र, राज्य और जिले के साथ-साथ ब्लॉक स्तर से इस चयन प्रक्रिया को पूर्ण पारदर्शी बनाया गया है। शिक्षक सम्मान कार्यक्रम को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि शिक्षकों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को पहचान मिल सके एवं अधिकतम शिक्षक किए गए नवाचारों से प्रोत्साहित हों। नवाचारों की श्रृंखला में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती पर आरम्भ किए गए महात्मा गाँधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों का बढ़ता रूझान भी इस नवाचार के प्रति जनमानस की स्वीकृति के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र के बढते कदमों को गति प्रदान करने में एतिहासिक पहल है।

इतिहास साक्षी रहा है कि अबोध बालक की पहचान चन्द्रगुप्त मोर्य के रूप में बनाने वाले कुशल शिल्पी रूपी शिक्षक आचार्य चाणक्य ही थे। शिक्षक देश की दशा व दिशा बदलने का कार्य सदियों से करता आया है। अत: मुझे पूरी उम्मीद है कि शिक्षक अपने कर्तव्यों को दृढ संकल्प के साथ निभाऐंगे।

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

“इतिहास साक्षी रहा है कि अबोध बालक की पहचान चन्द्रगुप्त मोर्य के रूप में बनाने वाले कुशल शिल्पी रूपी शिक्षक आचार्य चाणक्य ही थे। शिक्षक देश की दशा व दिशा बदलने का कार्य सदियों से करता आया है।”

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 03 | भाद्रपद-आश्विन २०७९ | सितम्बर, 2022

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल
❁
वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला
❁
सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित
❁
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
❁
प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्यों को पहचान मिले 6
रपट
- अजमेर के विद्यालयों का निरीक्षण एवं संभाग स्तरीय बैठक : **जगदीश चन्द्र** 10
- मुख्य सचिव ने बच्चों से कहा, खूब पढ़े और जीवन में आगे बढ़े 11
- रेवत विद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव पर हुआ अनूठा आयोजन **छगनपुरी गोस्वामी** 12

शैक्षिक चिंतन
- डॉ. राधाकृष्णन् का शैक्षिक दर्शन **ओमप्रकाश सारस्वत** 13
- एक महान शिक्षक और दार्शनिक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन : **लक्ष्मी शर्मा** 15
- बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की प्राप्ति में ABL की भूमिका पर अनुप्रयोग **डॉ. भंवर लाल वैष्णव** 16
- महान शिक्षाविद् और दार्शनिक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, **देवेन्द्रराज सुथार** 17
- गुरु बिना ज्ञान कहाँ जग माही **कुसुम अग्रवाल** 19
- बधिर विद्यालय में संस्थाप्रधान की भूमिका **डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका 'फुलेता'** 20
- शिक्षक समाज के आदर्श : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, **डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी** 21
- दीक्षा : वन नेशन, वन डिजिटल प्लेटफॉर्म **जयश्री माथुर** 22
- प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता में मातृभाष उपादेयता : **डॉ. डी.डी. गौतम** 23
- गुरु बिना जीवन पथ कोरा **शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'** 26
- सुरक्षाकर्मी की सहृदयता : **डॉ. श्याम मनोहर व्यास** 27
- क्रियात्मक अनुसंधान और शिक्षा **हरीश सुवासिया** 28
- अनूठी पहल : शिक्षा नेग : **भूरमल सोनी** 29
- युग निर्माता है शिक्षक : **हँसराज नागर** 30
- शाला दर्पण : चिन्तन व अनुभव **सरदार सिंह चारण** 31
- गाँधीजी की साहित्यिक कृतियाँ **डॉ. बनवारी पारीक 'नवल'** 32
- रोजगारपरक भाषा बने हिंदी **ठाकराराम प्रजापत** 33
- भारतीय ज्ञान परम्परा सनातन काल से समृद्ध और गौरवशाली : **प्रकाश वया, भीण्डर** 34
- मैं शिक्षक हूँ...मेरा सफर... **रतन लाल बारूपाल** 36
- शिक्षा का गौरवशाली अतीत **भवानी शंकर तोसिक** 37
- गर्व से कहो हम शिक्षक हैं **नूतन बाला कपिला** 38
- गुणात्मक शिक्षा नौनिहालों के लिए **डॉ. राजरानी अरोड़ा** 39
- कहानियों का नाट्यीकरण : एक अनुभव **रविन्द्र मारू** 40
- आत्मविश्लेषण : **हीराराम चौधरी** 41
- शिक्षा और शिक्षक का दौरा **मुकेश कुमार बबेरवाल** 42
- Classroom Communication : Textbook Activity : **Dr. Ram Gopal Sharma** 43

हिन्दी विविध
- नहीं बनाना समझदार : **डॉ. संगीता पुरोहित** 45
- कसूर किसका? : **कैलाश गिरि गोस्वामी** 46
- शिक्षक की जादूगरी : **सलमा** 47
- भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्त्व **राजेन्द्र सिंह चौहान** 48
- 'लोकतंत्रोत्सव' एक स्मरण : **मनीषा शर्मा** 49
- कुदरत की दीपावली : **संदीप पाण्डे** 51
- मन की साधना : **गोविन्द नारायण शर्मा** 52
- अंतर : **श्रीपाल श्रीमाली** 53
- क्रांतिधर्मा प्रफुल्ल चाकी उर्फ दिनेशचंद्र राय **भगवान प्रसाद गौतम** 54
- शिक्षा और सरोकार : **भंवरलाल पुरोहित** 55
- ईर्ष्यावश : **अरनी रॉबर्ट्स** 56
- 1857 का स्वाधीनता संग्राम और लोकगीत **राजश्री भाटी** 57
- सफर से हमसफर : **अंकुर सिंह** 58
- भूमि दान : **रामगोपाल राही** 59

- व्यथा सांडों की : **महेन्द्र कुमार शर्मा** 60
- सोने का लूँग : **अनुजा गुप्ता** 72
- कठिन साधना : **पुष्पेश कुमार पुष्प** 74
- जवान है तू... दुनिया मेरे आगे 75
  हरीशचंद्र पाण्डे
- सिमरन के भगवान : **महेश कुमार चतुर्वेदी** 76
- महिलाओं से संबंधित विशेषाधिकार 77
  रश्मि नामदेम

हिन्दी कविता

- हे सरस्वती हम सब गुण हीना 78
  अशोक कुमार पारीक
- सच्चा गुरु : **राजेश कुमार शर्मा** 78
- मेरा पेशा : **श्रवण कुमार 'पयोल'** 79
- दत्तात्रेय के चौबीस शिक्षक : **मुकेश जैन** 79
- गौरवशाली शिक्षक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 79
  जगदीश चन्द्र शर्मा
- मैं शिक्षक हूँ : **विजय भारती** 80
- पोषाहार की योजना : **सुनील कुमार राठौर** 80
- अखबार का इन्तजार : **पारस चन्द जैन** 80
- माँ : **सम्पत लाल शर्मा 'सागर'** 81
- हे बालाओं! जोश दिखाओ : **सुमन लता** 81
- आजादी का अमृत महोत्सव : **सुनील तिवारी** 81
- गुरु अमृत आगार : **केदार शर्मा 'निरीह'** 81
- कुछ सौगात लिखूं : **पुष्प शर्मा** 82
- हारना नहीं, रुकना नहीं, रोना नहीं 82
  अदिति पुरोहित
- वरदान पुस्तकें : **जगदीश प्रसाद त्रिवेदी** 82
- पेड़ पर कुछ दोहे : **प्रज्ञा श्रीवास्तव प्रज्ञांजली** 83
- नव उमंग : **दिनेश कुमार** 83
- रंगबिरंगी पतंगे : **रेणुका गाँधी** 83
- मेरे देश का भविष्य ये बच्चे 83
  वीणा वैष्णव रागिनी
- हिन्दी : **गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'** 84
- विदाई गीत : **ब्रजपाल सिंह** 84
- मैं और मेरे ये मासूम विद्यार्थी 84
  संजय शर्मा 'तरूण'
- सच्चा साथी : पेड़ : **महीपाल सिंह 'खरडिया'** 85
- सदा सुरक्षित रहे तुम्हारा जीवन 85
  सोहन लाल कुमावत
- बचपन : **प्रतिभा पारीक** 85
- मैं कला शिक्षिका हूँ : **हिमानी शर्मा** 85
- सरस्वती वंदना : विनती : **परम जीत कौर** 86
- आओ नवनिर्माण करें... : **प्रेम प्रकाश शर्मा** 86
- जीवन एक पल है : **डॉ. लक्ष्मण सैनी 'सरल'** 86
- मैं शिक्षक राष्ट्र निर्माता हूँ : **दीपसिंह भाटी** 86
- शिक्षक : **सपना खत्री** 87
- प्लास्टिक पर रोक : **विजय कुमार** 87
- शिक्षा की महिमा : **इंद्रा** 87
- मेरे भाग्य विधाता : **प्रेम लता सोलंकी** 88
- गुरु : **अनिता चौधरी** 88
- बचपन की कलम : **पूरण मल तेली** 88
- चाहती हूँ मैं : **जयश्री तिवारी** 88
- नो बैग डे : **ओम प्रकाश खटीक** 89
- बच्चों तुमको पढ़ना होगा : **प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी** 89
- उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों के नाम एक संदेश (मार्गदर्शन) : **अंशुल शर्मा** 89
- यह बच्चें है अभी.. : **अजय कुमार कुलश्रेष्ठ** 90
- सात लघु कविताएँ : **सीताराम व्यास 'राहगीर'** 90
- शिक्षक : **सन्जू शृंगी** 90
- मेरे शिक्षक : **हर्षित पारीक** 91
- मायड़ भाषा है बहुमूल्य : **शालू मिश्रा** 91
- मेरे बच्चे : **मकसूदन बानो** 91
- भाषा हिन्दी : **संजय कुमार** 92
- प्रेरणा गीत : **प्रतिज्ञा भट्ट** 92
- जिसने हार नहीं मानी... : **डॉ. रन्जु कंवर** 92
- सृष्टि नव निर्माण : **विनीता स्वामी** 93
- गुरु महिमा : **सुनील कुमार वर्मा** 93
- अलार्म घड़ी : **दिनेश विजयवर्गीय** 93
- अहसास बेटियों का : **जगदीश कल्ला** 93
- सबके दिल में शिक्षक : **बद्री प्रसाद वर्मा** 94
- मैं तो हूँ भारत की बेटी : **राजेश कुमार जीनगर** 94
- आती रहना बिटिया : **कविता मुकेश 'स्वरांगन'** 94
- हम बालक नादान 95
  बुद्धि प्रकाश महावर 'मन'
- सरस्वती वंदना : **डॉ. अंजलि राकेश पंड्या** 95
- गीत : **डॉ. शिवराज भारतीय** 95
- जीवन पथ : **रामेश्वर लाल** 95
- शिक्षक होना सौभाग्य 96
  आचार्य बाबू लाल मीणा
- मेरी भाषा मेरा गौरव : **गोविन्द भारद्वाज** 96
- राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम 97
  कैलाश चन्द गुप्ता
- मुफलिसी ईमान : **लाड़ शर्मा** 97
- हिन्दी दिवस : **रमा माथुर** 97

राजस्थानी विविधा

- लोकदेवतावां री छावळियां : **कृष्णा आचार्य** 98
- राजस्थानी कहानी : **कमल कुमार जाँगिड़** 100
- महात्मा गाँधी अर मायड़ भासा 101
  डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
- किराये रै दांता स्यु गौठ : **डॉ. हरिराम बिश्नोई** 102
- फैसलो : **छगन लाल व्यास** 103
- शिक्षा रा डग भरतौ राजस्थान 106
  अशोक कुमार व्यास
- भणाई नो मोतियो : **विजय गिरी गोस्वामी** 106
- चोर री रूखाळी : **रामजीलाल घोड़ेला** 107
- मांगू बाबो : **डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत** 108
- मिनखां री माया-रूंखां री छाया 109
  नर सिंह सोढ़ा
- हिम्मत वाळी छोरी छूं : **शिवचरण सेन 'शिवा'** 109
- प्रतापसिंह बारहठ : **सुरेश कुमार सोनी** 110
- हळदीघाटी : **प्रहलाद सिंह झारेड़ा** 111
- शिक्षक रक्षक : **नगेन्द्र नारायण किराडू** 112
- नहीं पढ़ेलो जो जीवन भर पछतावलो 112
  रामस्वरूप रैगर
- शहीद सुजस : **मदन सिंह राठौड़** 112

बाल साहित्य

- हम बच्चे आखिर क्या करें?: **सुधा रानी तैलंग** 113
- रजत की शर्ट : **डॉ. चेतना उपाध्याय** 115
- प्रतिदिन परोपकार : **कल्याणमय आनंद** 116
- मेरी हरित पाठशाला : **निधि शर्मा** 117
- मैं उड़न परी : **रामेश्वर लाल** 117
- सच्चा मित्र : **गोविन्द भारद्वाज** 118
- बाल-बाल बचे : **रत्नकुमार सांभरिया** 119
- बादल राजा : **धर्मेन्द्र कुमार सैनी** 119
- मेरे प्यारे दिनकर : **डॉ. कमलेन्द्र कुमार** 120
- एफ.एल.एन. : **सुनील कुमार राठौर** 120
- पंचतत्व : **अंकित शर्मा 'इषुप्रिय'** 120
- रंगबिरंगी पतंगे : **रेणु गाँधी** 120
- प्यार के दो बोल : **राजेश अरोड़ा** 121
- आई दिवानों की टोली : **शिवचरण सेन 'शिवा'** 121
- लंबाई को मापी 121
  डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
- पुरुषार्थ : **दिनेश कुमार सनाढ्य** 121
- परीक्षा परिणाम और बच्चे : **व्यग्र पाण्डे** 121
- विचित्र आँखे उल्लू की : **शिवनारायण शर्मा** 122
- ध्रुवतारा सा जगमगाएं... : **सत्य भूषण शर्मा** 122
- मन मर्जी : **सनय बीकानेरी** 122
- रिश्ते : **सुमन सिंह** 122

स्तम्भ

- पाठकों की बात 9
- आदेश-परिपत्र 61-68
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 69
- प्रतिभाएँ जिनकी उपलब्धि पर हमें गर्व है.. 71
- बाल शिविरा 123
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 125
  रामकुमार सहू
- भामाशाह 127-128

पुस्तक समीक्षा 124

- सर्जन के विविध रंग और सहेजने का सुख
  लेखक : गोविन्द जोशी
  समीक्षक : **डॉ. मूलचंद बोहरा**

मुख्य आवरण : नारायण दास जीनगर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

▼ चिन्तन

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुंडलेन, दानेन
पाणिर्न तु कंकणेन।
विभाति कायः करुणापराणां,
परोपकारैर्न तु चन्दनेन।।

अर्थ- कानों में कुंडल पहन लेने से शोभा नहीं बढ़ती, अपितु ज्ञान की बातें सुनने से होती है। हाथों की सुंदरता कंगन पहनने से नहीं होती बल्कि दान देने से होती है। सज्जनों का शरीर भी चंदन से नहीं बल्कि परहित में किए गए कार्यों से शोभायमान होता है।

- शिविरा पत्रिका का अगस्त 2022 का अंक ऑनलाइन प्रस्तुत किया गया। पत्रिका के इस अंक में श्री विजय सिंह माली, प्रधानाचार्य द्वारा प्रस्तुत देश भक्ति भाव से पूर्ण रचना राष्ट्र जागरण का बीज मंत्र वंदे मातरम् एवं श्रीनारायण दास जीनगर द्वारा सुसज्जित भक्ति परक, पत्रिका का मुखावरण पाठकों में देशधर्म की श्रेष्ठता एवं देश प्रेम जागृत करने वाला है। प्रतिभाएँ जिनकी उपलब्धियों पर गर्व है....में मेधावी विद्यार्थियों से हुई बातचीत के अंश शिविरा पत्रिका का सार्थक प्रयास रहा है। पत्रिका में महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू के जीवन परिचय एवं शपथ ग्रहण के पश्चात संसद के दोनों सदनों को सम्बोधन के महत्त्वपूर्ण अंशों का भीष्म कुमार महर्षि, सहायक निदेशक द्वारा प्रस्तुत आलेख शिक्षा परक है। साथ ही बाल शिविरा की कविताओं तथा चित्रवीथिका के सुसज्जित चित्र मनमोहक रहे है। प्रशासनिक बाध्यताओं के बावजूद शिविरा पत्रिका अगस्त 2022 का डिजिटल अंक आनलाइन प्रकाशित करने के लिए शिविरा संपादक मंडल का आभार।

दिव्या डागा, चूरू

- माध्यमिक शिक्षा विभाग की एकमात्र शानदार पत्रिका शिविरा माह अगस्त 2022 का सुन्दर आवरण के साथ आनलाइन प्राप्त हुआ। अपनों से अपनी बात, मेरा संदेश एवं दिशाकल्प के माध्यम से शिक्षकों के लिए उत्तम संदेश व मार्गदर्शन मिला। विजयसिंह माली का आलेख देशभक्ति की भावना से ओत प्रोत 'राष्ट्र जागरण का बीज मंत्र-वंदे मातरम्, आदिवासी समाज को लेकर प्रगतिमय आदिवासी समाज का आलेख नारायण दास जीनगर का ज्ञानवर्द्धक रहा। पत्रिका में महामहिम राष्ट्रपति 'द्रोपदी मुर्मू' का जीवन परिचय एवं राष्ट्रपति तक के सफर से बहुमूल्य जानकारी के लिए लेखक भीष्म कुमार महर्षि का आभार व धन्यवाद। शिविरा पत्रिका के स्थाई स्तंभों को यथास्थान देकर तथा आनलाइन तैयार कर निरंतरता बनाए रखने के लिए शिविरा के संपादन मंडल को बहुत-बहुत बधाई एवं धन्यवयाद।

भागीरथ जनागल, बीकानेर

- शिविरा माह अगस्त 2022 आज ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हुई। आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक था। माननीय शिक्षा मंत्री जी की अपनों से बात 'राष्ट्र का भविष्य आगे आने वाली पीढ़ियों पर निर्भर करता है' बहुत ही प्रेरणादायी था। शिक्षा राज्य मंत्री महोदय का 'मेरा सन्देश' कुछ याद उन्हें भी कर लो जो लौट के फिर न आए आजादी की 1857 की क्रांति से लेकर आज तक का संक्षिप वर्णन बहुत ज्ञानवर्धक था। निदेशक महोदय का दिशाकल्प मेरा पृष्ठ: समझ कर सीखे के अंतर्गत नई शिक्षा नीति व राजस्थान के शिक्षा के बढ़ते कदम शिक्षकों और विद्यार्थियों का आह्वान प्रेरणादायी था। विविध आलेखों में सम्पादक महोदया का वर्चुअल शुभारंभ एवं फील्ड ओरिएंटेशन ज्ञानवर्धक था। विजय सिंह माली का राष्ट्र जागरण का बीज मंत्र: वंदेमातरम राष्ट्र भाव से ओत-प्रोत, नवसंचरण व समग्रता के भाव से ओतप्रोत था। विदेशी धरा में बहती देव भाषा संस्कृत की धरा व सूर्य प्रताप सिंह राजावत के महर्षि अरविंद पर विचार विचारणीय व प्रेरणा देने वाले थे। आंग्लभाषा के अंतर्गत डॉ रामगोपाल शर्मा के निरंतर आलेख और इस अंक का टेक्स्ट बुक एक्टिविटी प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों के लिए उपयोगी होगा। विभिन्न योजनाओं व आदेश परिपत्र भी विभागीय उपयोगिता की दृष्टि से उपयोगी होंगे। शिविरा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामनाएँ।

कमल कुमार जाँगिड़, नागौर

रपट

अजमेर के विद्यालयों का निरीक्षण एवं संभाग स्तरीय बैठक

❒ जगदीश चन्द्र

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जाटिया, ब्लॉक– श्रीनगर, जिला– अजमेर:– श्रीमान निदेशक महोदय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ने दिनांक 10.08.22 को 9.30 बजे शिक्षा के बढ़ते कदम योजना एवं सम्बलन के तहत् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जाटिया, ब्लॉक– श्रीनगर, जिला– अजमेर का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय विद्यालय प्रधानाचार्य श्री प्रेमशंकर, प्रधानाध्यापिका श्रीमती ममता, अजमेर जिला प्रभारी श्री दिलीप परिहार सहायक निदेशक, सीएसआर, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी नसीराबाद के साथ शाला परिसर का अवलोकन किया। जिसमें प्रवेशोत्सव के दौरान नव प्रवेश, शिक्षा के बढ़ते कदम योजना की प्रगति रिपोर्ट जिसमें वर्कबुक, बेसलाइन सर्वे, बेसलाइन सर्वे के आधार पर बच्चों के ग्रुप के बारे में जानकारी ली। संस्थाप्रधान ने बताया कि विद्यालय में 400 से अधिक का नामांकन है तथा प्रवेशोत्सव कार्यक्रम के दौरान 82 नए नामांकन हुए है। स्टाफ रजिस्टर का अवलोकन करने के पश्चात् कक्षा 10 एवं कक्षा 3 का अवलोकन किया। जिसमें बच्चो के शैक्षिक स्तर का आकलन किया गया। कक्षा 10 के विद्यार्थियों की गणित की दक्षता जाँचने के लिए श्यामपट्ट पर अभ्यास करवाया गया। कक्षा 3 के बच्चों से अंग्रेजी एवं हिन्दी विषय से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर उनका मूल्यांकन किया। स्टाफ के साथ मीटिंग कर उन्हें आवश्यक निर्देश दिए तथा शिक्षा के बढ़ते कदम योजना को सफल बनाने के लिए पूरा प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय स्तर पर अधिकतम प्रयास किए जाने हेतु शिक्षकों को हिदायत देते हुए विशेष जोर देते हुए कहा कि कोई भी बालक–बालिका शिक्षा से वंचित न रहें। इसलिए अध्यापन एवं संवाद को अनवरत बनाए रखने तथा भविष्य में ड्रॉप आउट जैसी स्थिति उत्पन्न न हों। उन्होंने शाला स्टाफ के आग्रह पर विद्यालय में एक पौधा लगाकर हरित विद्यालय–स्वस्थ विद्यालय में अपनी सहभागिता निभायी।

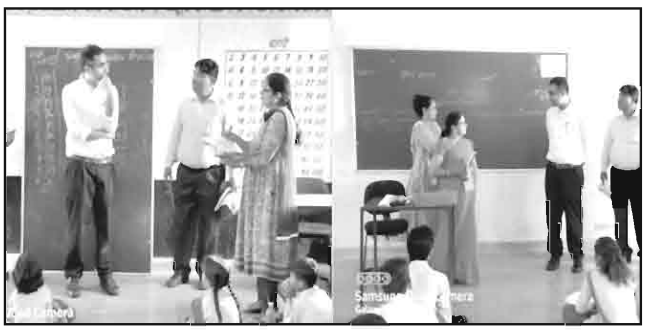

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बीर, ब्लॉक– नसीराबाद, जिला– अजमेर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बीर, ब्लॉक– नसीराबाद, जिला– अजमेर के आकस्मिक निरीक्षण के समय प्रधानाचार्य मुकेश कुमार एवं प्रभारी साधना ने बताया कि वर्तमान में विद्यालय में 680 का नामांकन है तथा 100 नये प्रवेश हुए है। निदेशक महोदय ने कक्षा 5 का अवलोकन किया जिसमें बच्चों के शैक्षिक स्तर जाँचने के लिए अंग्रेजी, गणित एवं हिन्दी विषय की वर्क बुक का अवलोकन किया तथा प्रश्न पूछे। बेसलाइन सर्वे एवं वर्कबुकों का कार्य अधूरा पाए जाने पर उन्होंने सम्बन्धित शिक्षक एवं संस्थाप्रधान को आवश्यक निर्देश दिए। भोजन व्यवस्था के तहत पोषाहार का निरीक्षण किया। उन्होंने पोषाहार खाकर जाँच की। पोषाहार वितरण एवं बैठक व्यवस्था सुधारने के लिए पोषाहार प्रभारी एवं संस्थाप्रधान को आवश्यक निर्देश प्रदान किए।

राजकीय उच्च माध्यमिक अंध विद्यालय आदर्श नगर, अजमेर:– प्रात: 11 बजे राजकीय उच्च माध्यमिक अंध विद्यालय आदर्श नगर, अजमेर का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान हॉस्टल के नव निर्मित कक्षों एवं सभागार का अवलोकन किया। साथ ही आजादी के अमृत महोत्सव में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की सभागार में विद्यार्थियों से मॉनिटरिंग की गई। विद्यार्थियों एवं स्टाफ ने देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी। हरित पाठशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत पौधा लगाकर विद्यालय में अच्छे नेतृत्व के लिए प्रधानाचार्य श्री अर्पण चौधरी को धन्यवाद दिया।

महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालय वैशाली नगर, अजमेर:– महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालय वैशाली नगर, अजमेर का निदेशक महोदय ने आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में नर्सरी कक्षा का अवलोकन कर बच्चों से विभिन्न प्रकार की राइम्ज़ पूछी गई तत्पश्चात कक्षा 8 का अवलोकन किया जिसमें

वर्कबुक कार्य की जाँच की तथा साथ ही विद्यार्थियों की नोटबुकें भी देखी। उन्होंने बच्चों के कार्य की प्रशंसा की। प्रधानाचार्य विजयलक्ष्मी यादव एवं समस्त स्टाफ के साथ विद्यालय परिसर में अशोक का वृक्ष लगाया।

उपर्युक्त विद्यालयों के निरीक्षण के दौरान मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं संस्थाप्रधानों को निर्देशित किया कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहें इसके लिए शिक्षक बच्चों एवं उनके अभिभावकों से निरन्तर सम्पर्क के प्रयास जारी रखें। जिन विषयों के अभी शिक्षक उपलब्ध नही है, उनके लिए ई-कक्षा के प्लेटफॉर्म का उपयोग करें ताकि बच्चों की पढ़ाई प्रभावित न हों। निरीक्षण के दौरान संस्थाप्रधान एवं स्टाफ द्वारा शाला में किए जा रहे रचनात्मक कार्यो, भवन सौन्दर्यीकरण, विद्यालय व्यवस्था, बोर्ड परीक्षा परिणाम, स्मार्ट क्लासरूम एवं राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम योजना के क्रियान्वयन के कार्यो की समीक्षा कर इन्हें निरन्तर प्रयास कर उत्कृष्ट बनाने के निर्देश दिए।

श्रीमान निदेशक द्वारा अजमेर संभाग के शिक्षा अधिकारियों के साथ बैठक:- श्रीमान निदेशक द्वारा विद्यालय निरीक्षण के पश्चात रीट सभागार सिविल लाइन अजमेर में अजमेर संभाग के चारों जिलों अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक एवं नागौर के शिक्षा अधिकारियों की बैठक लेकर राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम कार्यक्रम की मॉनिटरिंग की। जिन अधिकारियों की रेंकिंग न्यूनतम है, उनसे बात की और उन्हे आवश्यक सुधार करने के लिए कहा। प्रश्नों के माध्यम से सरकार की योजनाओं एवं शिक्षा कार्यक्रम के बारें में जानकारी ली एवं उन्हें आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान श्री दिलीप परिहार सहायक निदेशक, सीएसआर, माध्यमिक शिक्षा बीकानेर, श्री राजेन्द्र शर्मा संयुक्त निदेशक अजमेर एवं मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अजमेर, अजय कुमार गुप्ता एडीपीसी समसा, अजमेर, भागचंद मंडावरिया एडी, अजमेर एवं समस्त सीबीईओ, अजमेर संभाग ने अपनी उपस्थिति उपर्युक्त बैठक में दी।

वरिष्ठ अध्यापक
सहायक प्रभारी (सीएसआर) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9460779249

रपट

मुख्य सचिव ने बच्चों से कहा, खूब पढ़े और जीवन में आगे बढ़े

जयपुर, 27 अगस्त। मुख्य सचिव श्रीमती उषा शर्मा शनिवार को टोंक दौरे पर रही। इस दौरान उन्होंने उपखंड निवाई की ग्राम पंचायत मूड़िया में राजकीय उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय का निरीक्षण कर छात्र-छात्राओं को दी जा रही शिक्षण व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

मुख्य सचिव को कक्षा सात की छात्रा दिव्या मीणा ने कहानी सुनाई। उन्होंने छात्रा की हौसला अफजाई करते हुए सभी बच्चों को खूब पढ़ने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने राजीव गाँधी ग्रामीण ओलंपिक की जिले में तैयारियों को लेकर जिला कलेक्टर चिन्मयी गोपाल से जानकारी ली। इसके पश्चात मुख्य सचिव ने ग्राम पंचायत मूड़िया के मॉडल तालाब का निरीक्षण किया। मॉडल तालाब पर बने चबूतरे, लोगों की बैठने की व्यवस्था एवं तालाब में खिले हुए कमल के फूलों को देखकर मुख्य सचिव बेहद अभिभूत हुई। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों से बात भी की।

जिला कलेक्टर के नवाचार मिशन प्रेरणा को सराहा- मुख्य सचिव ने जिला कलेक्टर द्वारा किए गए नवाचार मिशन प्रेरणा एवं सभी ब्लॉक मुख्यालयों पर उत्कृष्ट लाइब्रेरी की स्थापना के नवाचार की सराहना की। उन्होंने जिला मुख्यालय स्थित महात्मा गाँधी राजकीय पुस्तकालय

का अवलोकन किया। पुस्तकालय में किए गए नवाचारों पर प्रसन्नता जाहिर की। इस दौरान जिला कलेक्टर ने बताया कि मिशन प्रेरणा के तहत पुस्तकालय में प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी को लेकर 150 विद्यार्थियों को निःशुल्क कोचिंग प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगी पुस्तकों, इंटरनेट सहित अन्य सुविधाएँ उपलब्ध करवाई।

इस दौरान विभिन्न विभागों के संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

-वरिष्ठ सम्पादक

रेवट

रेवत विद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव पर हुआ अनूठा आयोजन

❒ छगनपुरी गोस्वामी

भारत के 75 मानचित्र बनाकर 75 टोलियों ने भरे उनमें देश-प्रेम के रंग। विद्यालय का मैदान और बच्चों का मन हुआ सतरंगी। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत देशभर में अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। शिक्षा विभाग राजस्थान के निर्देशानुसार विद्यालयों में सप्ताह पर्यंत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इसी क्रम में जालौर जिले के रेवत ग्राम स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में सप्ताह भर में तिरंगा निर्माण, पोस्टर निर्माण, महापुरुष वेशभूषा, निबंध लेखन, सामूहिक देशभक्ति गीत गायन इत्यादि गतिविधियों का आयोजन भली प्रकार से हुआ ही साथ ही रेवत विद्यालय में हुआ विशेष कार्यक्रम देश भर में चर्चा का विषय रहा, उसकी रिपोर्ट यहाँ प्रस्तुत है।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवत जिला जालोर में एक विशेष कार्यक्रम भारत शृंगार का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने भारत के 75 मानचित्र बनाकर उन्हें बहुआयामी तरीके से सजाया। भारत के मानचित्र में शृंगार के लिए विभिन्न प्रकार के रंगों, पुष्पों, अनाज आदि का उपयोग किया गया। विद्यालय के व्याख्याता श्री संदीप जोशी के कुशल संयोजन में सम्पन्न इस कार्यक्रम में पूरे मैदान की साफ-सफाई कर समान आकार के 75 ब्लॉक बनाए गए जिन पर चूने से रेखांकन किया गया। 5 दिन पूर्व तीन तीन विद्यार्थियों की 75 अलग अलग टोलियाँ बनाई गई। उनके साथ लगातार संवाद करते हुए उन्हें रचनात्मकता और कल्पना शीलता का अवसर दिया गया विद्यार्थियों की इन टोलियों को स्वतंत्रता दी गई वह अपने इच्छित किसी भी सामग्री से भारत के मानचित्र का शृंगार कर सकती है। शिक्षक संदीप जोशी, अनिल कुमार, रमेश गर्ग के मार्गदर्शन में सर्वप्रथम विद्यार्थियों ने विद्यालय के मैदान में भारत के 75 मानचित्र तैयार किए इनकी बॉर्डर करने के लिए विद्यालय ने 30 किलो गुलाल की व्यवस्था की थी चूने द्वारा ब्लॉक निर्माण एवं लाल गुलाल द्वारा भारत के मानचित्र की बॉर्डर के निर्माण के बाद विद्यार्थियों के इन सभी दलों ने उन्हें अपनी कल्पनाशीलता से देश प्रेम की विभिन्न रंग संजोना शुरू किया।

यह पूरा आयोजन स्वराज-75 की थीम पर हुआ।इस वर्ष आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर पूरे देश भर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसी के तहत हमारे विद्यालय के इस आयोजन की थीम भी स्वराज 75 रखी गई। इसके तहत विद्यार्थियों की 75 टोलियाँ द्वारा 75 मानचित्र का निर्माण कर 75 प्रकार के सामग्री का उपयोग करते हुए मानचित्रों का शृंगार किया गया। प्रत्येक मानचित्र पर एक, ऐसे कुल मिलाकर 75 तिरंगे ध्वज लगाए गए। प्रत्येक मानचित्र में एक दीपक अर्थात कुल 75 दीपक भी प्रज्ज्वलित किए गए। एक खास बात यह भी रही कि मानचित्र निर्माण होने के बाद सवा घंटे में अर्थात 75 मिनट में विद्यार्थियों को उसका शृंगार पूरा करना था।

विद्यार्थियों ने भारत के इन मानचित्रों को सजाने के लिए विविध प्रकार की सामग्री का उपयोग किया जिसमें लाल, केसरिया पीला, आसमानी, सफेद, हरा, नीला, गुलाबी, सिंदूरी इत्यादि विभिन्न रंग,

गुलाब, गुलदाउदी, हजारा, विभिन्न प्रकार की कनेर, चंपा, चमेली, मोगरा, गुड़हल, अनार इत्यादि विभिन्न प्रकार के पुष्प, गेहूँ, बाजरा, चावल, मक्का, अरंडी, ओबरा, जौ, ज्वार, मूंग, मूँगफली, चना जैसे धान, विभिन्न फलों का उपयोग किया। इसके अलावा कुछ मानचित्रों को चॉकलेट, बिस्किट, माचिस की तीली, विविद्य खाद्य सामग्री, पठन सामग्री, खेल सामग्री आदि से भी सजाया गया।

मानचित्रों के मध्य 175 सेव (Apple) द्वारा स्वराज 75 लिखा गया जो विद्यार्थियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थाप्रधान छगनपुरी गोस्वामी ने आजादी की लड़ाई के संघर्ष पर विस्तार से प्रकाश डाला और विद्यार्थियों से आह्वान किया कि देश की आन, बान और शान जीवन पर्यंत हमारे लिए सर्वोच्च प्राथमिकता पर होनी चाहिए। लगभग 200 वर्षों तक संघर्षरत रहने और लाखों देशभक्तों के बलिदान से हमें यह स्वाधीनता प्राप्त हुई है अतः हमें इसका महत्त्व समझना चाहिए और देश के गौरव को बढ़ाने के लिए जीवन भर सक्रियता से कार्य करना चाहिए।

कलात्मकता रचनात्मकता और देशभक्ति के संस्कार के लिए कार्यक्रम- कार्यक्रम के संयोजक शिक्षक एवं राष्ट्रीय अध्यापक परिषद के सदस्य संदीप जोशी ने बताया कि राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर देश में विभिन्न स्थानों पर भारत के बड़े आकार के मानचित्र बनते हैं, साथ ही अनेक स्थानों पर विभिन्न प्रकार की रंगोलियाँ भी सजाई जाती है। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर हमने एक विशेष प्रयोग के तहत भारत के मानचित्र में रंगोली सजाने की प्रतियोगिता रखी। इससे विद्यार्थियों में कलात्मकता, सृजनशीलता और रचनात्मकता के विशेष गुणों के विकास के साथ-साथ उन्हें देश भक्ति के संस्कार भी सिंचित होते हैं।

विद्यार्थियों ने बहुत उत्साह के साथ कार्यक्रम में सहभागिता की। विद्यार्थियों के साथ साथ विद्यालय स्टाफ के लिए भी यह पहला अवसर था जब एक साथ इतने सारे सुंदर आकर्षक मानचित्र देखने को मिले। 75 मानचित्रों से सजे विहंगम दृश्य को देखकर विद्यार्थी और ग्रामवासी सभी अभिभूत हुए।

इस अवसर पर शिक्षक रमेश गर्ग अनिल प्रजापत शंकरलाल सुमित कुमार रणजीत सिंह मीणा अनीता तिवारी हरि प्रकाश नीरज भाटी समेत अनेक ग्रामवासी एवं पूर्व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवत, जालोर (राज.)
मो: 917014378491

शैक्षिक चिन्तन

डॉ. राधाकृष्णन् का शैक्षिक दर्शन

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

संस्कृति के संवाहक– डॉ. राधाकृष्णन् महान दार्शनिक और शिक्षाविद् थे। भारतीय संस्कृति को विश्व क्षितिज पर श्रद्धा एवं सम्मान दिलाने में अग्रणीय डॉ. राधाकृष्णन् एक आस्थावान विचारक थे। श्रीमद्भगवद्गीता सहित विविध ग्रंथों की सामयिक व्याख्या उन्होंने की थी। वे भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति रहे। राधाकृष्णन् ने 'एथिक्स ऑफ वेदान्त' पर अपनी थीसिस लिखी थी। उस समय उनकी उम्र महज बीस वर्ष की थी। एथिक्स ऑफ वेदान्त पर दुनिया भर में चर्चा हुई और वे विश्व स्तर पर एक शिक्षाविद् एवं चिंतक के रूप में जानने लगे।

उनका मानवीय पक्ष बहुत प्रबल था। विचार प्रकट करने और अपनी बात को तर्क सहित दूसरों को समझाने की योग्यता के कारण राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति कार्यकाल में वे तत्कालीन विश्व प्रसिद्ध राजनेताओं के नजदीक रहे। स्टालिन जैसे नेता उनके प्रबल प्रशंसक थे। वे दर्शनशास्त्र के अध्येता थे। उनका दार्शनिक अंदाज गजब का था। यह इसी बात से स्पष्ट हो जाता है कि जब वे विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों की कक्षा लेते तो उसमें अन्य संकायों के छात्र-छात्राएँ भी रुचिपूर्वक भाग लेते। विश्वविद्यालय में कार्यरत शिक्षक भी जिज्ञासुओं की भाँति उनसे पेश आते।

इन सब बातों में बड़ी बात यही है कि वे एक आदर्श संवेदनशील शिक्षक थे। शिक्षण उनके लिए कोई पेशा नहीं बल्कि एक मिशन था। वे स्वयं को शिक्षक कहलाकर प्रसन्न होते थे। शिक्षा को विविध पक्षों एवं पहलुओं से उन्होंने देखा और तदनुसार उसकी व्याख्या की थी। वे योग्य एवं शिक्षार्थियों के प्रति सदैव संवेदनशील शिक्षकों के पैरोकार रहे। शिक्षकों को उपदेश न देकर स्वयं की करनी के द्वारा वे उन्हें सीख देते। वे कहा करते थे कि शिक्षक वह नहीं जो विद्यार्थी के मस्तिष्क में जबरदस्ती कोई बात ठूंसे वरन् शिक्षक तो वह है जो प्रेम और आत्मीयता से अपनी बात उन तक सम्प्रेषित करें तथा उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना कर सकने के लायक बना देवे।

सम्पूर्ण विश्व एक ईकाई– राधाकृष्णन् ज्ञान और प्रेम में प्रेम को बड़ा समझते थे। वे कहते थे कि ज्ञान हमें शक्ति देता है मगर प्रेम हमें पूर्णता प्रदान करता है। वे वैश्विक मान्यता के पक्षधर थे। संपूर्ण विश्व को एक इकाई मानकर तदनुसार शिक्षा का ताना-बाना रचने की बात वे कहा करते थे। डॉ. राधाकृष्णन् ऐसे आदर्श प्रेम की कल्पना करते थे जो हमारे भीतर जाग्रत होता हो। वे बाहरी दिखावे में विश्वास नहीं करते थे। विश्व के चोटी के अद्भुत विद्वानों में शुमार (बल्कि कहना चाहिए कि शिरोमणि) होते हुए भी वे शुद्ध भारतीय लिबास में रहते थे। साधारण धोती-कुर्ता एवं सिर पर साफा धारण किए राधाकृष्णन् को देखकर यह अंदाजा लगाना मुश्किल था कि वे कितने उच्च कोटि के चिंतक एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। मगर दिल में प्रेम के मामले में वे बहुत धनी थे। उन्होंने कहा था- ''मनुष्य की समस्त कमजोरियों पर विजय प्राप्त करने वाली अमोघ वस्तु प्रेम मेरे विचार से ईश्वर की सबसे बड़ी देन है।'' प्रेम व आत्मीयता पर उनके एवं विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार समान थे। रवीन्द्र के अनुसार- ''हमारे अंतर में यदि प्रेम जाग्रत न हो तो दुनिया हमारे लिए एक कारागार बनकर रह जाएगी।'' भगवान श्री कृष्ण ने भी ऐसे निश्छल, बिना मिलावट के परिशुद्ध निर्मल-विमल प्रेम का संदेश दिया है। इस प्रकार प्रेम के प्रसंग में डॉ. राधाकृष्णन् का चिंतन श्री कृष्णा, महात्मा गाँधी, टैगोर, सुकरात और प्लेटो के दर्शन से मिलता-जुलता है। शिक्षकों को चाहिए कि वे सच्चे अर्थों में प्रेम के मसीहा बनकर प्रेम की रोशनी अपने विद्यार्थियों के हृदय में फैलाए।

अभिव्यक्ति की आजादी– डॉ. राधाकृष्णन् अभिव्यक्ति की आजादी के पक्षधर थे। वे अक्सर कहते थे कि कोई भी आजादी तब तक सच्ची आजादी नहीं होती जब तक उसे विचार की आजादी नहीं प्राप्त हो। वे सम्पूर्ण विश्व को एक यूनिट मानते थे। देश और प्रान्त तथा जाति और मजहब की दीवारें उनसे परे थे। बस सबका रास्ता वे शिक्षा में देखते थे। शिक्षा के सर्वोपरी उपकरण विद्यालय और उसके संचालक शिक्षक को वे बहुत महत्त्व देते थे। वे समूचे विश्व को एक ही विद्यालय मानते थे।

डॉ. राधाकृष्णन् सत्य के अन्वेषक और अनुयायी थे। सत्य उनके लिए ईश्वर से बड़ा था।

वे अपने विद्यार्थियों और राजनेता (राष्ट्रपति/उपराष्ट्रपति) बनने पर अपने अनुयायियों के माध्यम से दुनिया को सत्य का पाठ पढ़ाते रहे। वे इतने ओजस्वी वक्ता थे कि सुनने वाले उनकी सुनाई बातों पर दिल से विचार करते और तद्नुसार चलने का यत्न करते। ईश्वर और आराध्य के बारे में बात करें तो हमें लगेगा कि वर्तमान में पूजा-अर्चना उन लोगों की हो रही है जो ईश्वर के नाम पर कुछ बोलने का दावा करते हैं। यह उचित नहीं है। ईश्वर या अन्य महान् पुरुष तो एक विचार, एक प्रवाह है जिसमें प्रमुखता विचारों की है। हमें विचारों का समादर करना चाहिए और यहाँ आदर का आशय उत्तम जीवन व मानवता के लिए उपयोगी विचारों को अपनाने एवं उनका प्रचार-प्रसार करने से है। आत्म प्रशंसा व व्यक्ति पूजा का व्यवस्था में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। वर्तमान पीढ़ी के गुरुजन को शिक्षण संस्थाओं एवं विद्यार्थियों के माध्यम से ऐसे उत्तम विचारों का प्रचार-प्रसार करते हुए उनके अनुसार आचरण करने वालों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए।

आत्म प्रशंसा प्रगति के रास्तों को अवरुद्ध करने वाली होती है। यद्यपि यह सहज मानवीय स्वभाव है कि वह आत्मप्रशंसा के आगे घुटने टेक देता है। तथापि शिक्षक को शिक्षक होने के कारण स्व नियंत्रण कर इस प्रवृत्ति से बचना चाहिए। आत्म प्रशंसा सुनकर प्रशंसा का श्रेय अपने विद्यार्थियों, अभिभावकों, साथी शिक्षकों, संस्थाप्रधान आदि को देकर स्वयं को उससे परे रखने वाले शिक्षकों की महिमा निराली होती है। अपनी प्रशंसा सुनकर चुप रहने वाले, नजर झुका लेने वाले, धन्यवाद देते हुए उसका श्रेय अन्य को देने वाले गुरुजन को समाज का वास्तविक सच्चा आदर-सम्मान मिलता है।

नवोन्मेषी बनें शिक्षक- शिक्षक को नूतन शिक्षण विधियों का ईजाद करते रहना चाहिए। आज जो अच्छा लग रहा है, कल उससे भी Super Best आ सकता है। आज कोई काम जितनी सरलता व युक्तिपूर्वक हो सकता है, कल उससे भी सरल राह मिल सकती है। किसी टॉपिक को जितना प्रभावशाली आज पढ़ा सकते हैं, उससे भी बेहतर विधि अभी और मिल सकती है, इस भावना से शोध एवं अनुसंधान करते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिए। इसके लिए 'गहरे पानी पेठ' सिद्धांत में विश्वास करने वाले शिक्षकों को अपनी पाठ योजनाएँ बनानी चाहिए। डॉ. राधाकृष्णन ने लम्बे अध्ययन, मनन एवं विमर्श के उपरान्त कहा था- 'अगर हम विश्व के इतिहास को देखें तो हम पाएंगे कि सभ्यता का निर्माण उन महान ऋषियों, वैज्ञानिकों आदि के द्वारा हुआ है जो स्वयं विचार करने की सामर्थ्य रखते हुए देश और काल की गहराइयों तक गए, रहस्यों का पता लगाया और इस तरह से प्राप्त ज्ञान का उपयोग जगत के भले यानी लोक कल्याण के लिए किया।' हमारे जिन ऋषियों व विज्ञानियों की बात डॉक्टर साहब करते हैं, वह परम्परा जारी है। वस्तुतः शिक्षकों, चिकित्सकों, वैज्ञानिकों आदि पर अपने समय के गुरुजन का ऋण है जिससे मुक्त होने का तरीका केवल इसी बात में है कि उन्होंने जहाँ से, जिससे और जैसा सीखना प्रारंभ करके जो कोई मुकाम हासिल की है, उसमें चंद बढ़ोतरी करके भावी पीढ़ी के लिए अंतरण कर दें। ज्ञान का मूल्य दाम से नहीं बल्कि ज्ञान से ही उतारा जा सकता है। ज्ञान के समान पवित्र कर देने वाली कोई अन्य वस्तु संसार में है ही नहीं-'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।' -श्रीमद्भवगद्गीता 4/38

अमूल्य है पुस्तकें- पुस्तकों को ज्ञान का भण्डार कहा जाता है। वो ज्ञान दूत होती है। वे विभिन्न कालों का प्रतिनिधित्व भी करती है। वे उन लोगों के बारे में एक चित्र उकेरती हैं जिन्होंने उनकी रचना की थी। डॉ. राधाकृष्णन् पुस्तकों की महिमा बखानते हुए कहते हैं-'पुस्तकें वे साधन हैं जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं। पुस्तकें पढ़ने से हमें एकांत में विचार करने की आदत और सच्ची खुशी प्राप्त होती है।' महात्मा गाँधी ने भी कहा है-'पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं जबकि पुस्तकें अंतःकरण को उज्ज्वल करती है।

डॉ. राधाकृष्णन् के पुस्तकों के बारे में व्यक्त विचार हर किसी को आत्मसात् कर उन्हें जीवन में उतार लेना चाहिए। इधर सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के चमत्कारी विकास के कारण रीडिंग हेबिट में ह्रास हुआ है। पुरानी पीढ़ी के लोग नित्य कुछ न कुछ पढ़ते थे। मगर आज पढ़ने वालों की संख्या में चिंताजनक कमी आई है। कभी पुस्तकालयाध्यक्षों को सिर उठाने के लिए भी समय नहीं मिलता था, आज वे पाठकों के इंतजार में आतुर रहते हैं। गुरुजन को तो अपनी पढ़ने की आदत नहीं छोड़नी चाहिए। माध्यमिक सेटअप के विद्यालयों में पुस्तकों के रूप में बहुतेरा ज्ञान ढका पड़ा है। पुराने विद्यालयों में तो अद्भुत पुस्तकें सहेजी पड़ी है। पुस्तकालय के द्वार नित्य खुलने चाहिए। वहाँ पूर्ववत् चहल-पहल होनी चाहिए। स्कूलों में संस्थाप्रधान इसके सूत्रधार बन सकते हैं। पुस्तकें पढ़कर उनकी समीक्षा भी करनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि अब कोई भी शिक्षक पुस्तकें नहीं पढ़ता, अब भी हजारों शिक्षक पुस्तकें पढ़ते और उनसे लाभ प्राप्त करते हैं। वे और अधिक पढ़ें। नई-नई पुस्तकें पुस्तकालय में मंगवाए, स्वयं खरीदे, उन्हें पढ़े, उन पर उचित चर्चा करें, समीक्षा करें तथा अन्य उदासीन गुरुजन को पढ़ने के लिए प्रेरित करे। इससे उनका बौद्धिक स्तर ऊँचा उठेगा। वे अपने विषय के निष्णात् बनेंगे और समाज में उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। राधाकृष्णन् सर लिखते हैं-'किसी विद्यालय की महानता या गरिमा का निर्धारण उसकी इमारतों या उनमें संधारित उपकरणों से नहीं होता बल्कि उसमें कार्यरत शिक्षकों की विद्वता व चरित्र से होता है।'

सकारात्मक रखें सोच- डॉ. राधाकृष्णन् सकारात्मक सोच रखने के हिमायती थे। आप जैसा सोचेंगे वैसे ही बन जाएंगे। मैं यह काम कर सकता हूँ' या 'क्या मैं यह काम कर सकूँगा?' ये दोनों सोच उस सोच के अनुसार परिणाम का निर्धारण करते है। 'मैं यह काम कर सकता हूँ' सोच के साथ काम में जुटने वाला निश्चय ही सफल होगा और क्या मैं यह काम कर सकूँगा' जैसी सोच रखने वाले की सफलता अनिश्चित है। वह सफल भी हो सकता है और असफल भी हो सकता है बल्कि उसके असफल होने की संभावना अधिक रहती है। इसे जीवन में वय की विभिन्न अवस्थाओं से तुलना करते हुए डॉक्टर साहब कहते है- उम्र अथवा युवावस्था का काल उम्र से कोई लेना-देना नहीं है। हम उतने ही नौजवान या वृद्ध है जितना हम महसूस करते हैं। हम स्वयं के बारे में क्या सोचते हैं, यही मायने रखता है। बाल गंगाधर तिलक का दृष्टांत इस संदर्भ में दिया जाना उचित होगा। भारत की आजादी आंदोलन में तिलक महाराज ने हुंकार भरते हुए कहा था- 'स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा। (Freedom is my birth and I will have it.) यहाँ शब्दों पर ध्यान दीजिए। I will have it ऐसा संकल्प दर्शाता है जिसके साथ कोई विकल्प नहीं है। यह तो करना ही है अथवा इसे तो होना ही है, यह भाव काम करवाकर ही रहता है। डॉ. राधाकृष्णन के इस संदर्भ में व्यक्त विचार

हम शिक्षकों को अंगीकृत कर उन पर चलना चाहिए। एक गीत का मुखड़ा है–

संकल्पों के व्रत के आगे क्या काम कोई रूकता है,
शिक्षक चाहे तो भैया संसार बदल सकता है।।

बात सच्चे और पक्के संकल्प (With No Option) की है। शिक्षक संकल्प ले लें कि मेरे समस्त विद्यार्थी प्रथम श्रेणी के अंक हासिल करेंगे अथवा अमुक होनहार मेरिट में आएगा और उस संकल्प को सच्चा प्रमाणित करने के लिए साधनावत कार्य करें तो ऐसा होकर रहता है। हमने अपने शिक्षक जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण देखे हैं। अतः डॉ. राधाकृष्णन के इस उत्तम विचार पर चलकर हमें एक आदर्श समाज और देश की रचना में भागीदार बनना चाहिए।

पुरोधा शिक्षक, शिक्षकों के आदर्श– शिक्षक के लिए सहनशील, संवेदनशील, परिश्रमी और विद्यालय व छात्र हितैषी होना उसके चरित्र में सुनहरा अध्याय बनता है। डॉ. राधाकृष्णन् बहुत संवेदनशील और छात्र हितैषी शिक्षक थे। विश्वविद्यालय से उन्हें जो राशि वेतन–भत्तों के रूप में मिलती थी, उसका बड़ा भाग वे जरूरतमंद विद्यार्थियों को प्रदान कर देते थे। अपनी क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार शिक्षकों को निरपेक्ष भाव से अपने विद्यालय एवं छात्र–छात्राओं के हित में व्यक्तिगत रूप से भी मदद करनी चाहिए।

डॉ. राधाकृष्णन् सही मायने में आदर्श शिक्षक एवं उच्च कोटि के मानव थे। वे अपने लिए नहीं वरन् औरों के लिए चिंतनशील रहते थे। अपने जन्मदिन (5 सितम्बर) को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का उनका निर्णय शिक्षकों की महिमा को बढ़ाने वाला है। केवल शिक्षक दिवस के दिन ही नहीं वरन् बारहों मास, 365 दिन हम शिक्षकों को अपने मनोमस्तिष्क में डॉक्टर राधाकृष्णन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को ध्यान में रखकर शिक्षकोचित् काम करना चाहिए। शिक्षा दर्शन में उनके अद्भुत अवदान को जेहन में रखकर उसमें और वृद्धि के लिए ईमानदार प्रयास शिक्षकों एवं शिक्षा हितैषियों को करने चाहिए। इति शुभम!

पूर्व संयुक्त निदेशक एवं सदस्य राजस्थान
राज्य शिक्षा नीति समिति
ए–विनायक लोक, बाबा रामदेवजी रोड, गंगाशहर,
बीकानेर (राज.)–334401
मो: 9414060038

एक महान शिक्षक और दार्शनिक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

❐ लक्ष्मी शर्मा

भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति, भारत के दूसरे राष्ट्रपति और सबसे बढ़कर अब तक के सबसे महान शिक्षकों में से एक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को हिमरानी (तमिलनाडु) में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उन्हें एक अविश्वसनीय विद्यार्थी के साथ–साथ एक आदर्श शिक्षक माना जाता था, जिन्होंने अपना जीवन शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया था। वे एक प्रसिद्ध दार्शनिक भी थे और उन्हें सबसे प्रतिष्ठित विद्वान के रूप में जाना जाता था जिन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया था।

सन् 1963 में जब उन्होंने भारत के राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया, तब उनके कुछ शिष्य एवं घनिष्ठ मित्र उनके पास पहुँचे और उनसे निवेदन किया कि वे उन्हें अपना जन्मदिन मनाने की अनुमति दें तो राधाकृष्णन ने उत्तर दिया कि मेरे जन्मदिन को अलग से मनाने की बजाय इस 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए तो यह मेरे लिए गौरव एवं सौभाग्य की बात होगी। तब से उनकी जयंती यानी 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। बचपन से ही किताबें पढ़ने के शौकीन डॉ. राधाकृष्णन स्वामी विवेकानन्द से काफी प्रभावित थे।

विश्व के अनेक देशों में शिक्षकों को विशेष सम्मान देने के लिए शिक्षक दिवस का आयोजन किया जाता है। दुनिया के 100 से ज्यादा देशों में अलग–अलग तारीख पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

'माता–पिता की मूरत है गुरु,
इस कलयुग में भगवान की सूरत है गुरु।'

शिक्षक को समर्पित यह पंक्ति बहुत ही खूबसूरत है। वाकई गुरु का स्थान माता–पिता, भगवान सबसे ऊपर है। हमें जन्म भले ही माता–पिता से मिलता है, लेकिन हमें जीवन में जीने की शिक्षा, कामयाब बनने की शिक्षा सिर्फ और सिर्फ गुरु ही देता है। शिक्षक सिर्फ वह नहीं होता

है जो हमें सिर्फ स्कूल या कॉलेज में पढ़ाए, शिक्षक वो भी है जो हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। हम सबके जीवन में शिक्षक का अपना अलग ही महत्त्व होता है। कामयाबी तक तो हर कोई पहुँचना चाहता है लेकिन कामयाबी की उन सीढ़ियों पर चलना सिर्फ हमारे शिक्षक ही हमें सिखाते हैं। इस महान शिक्षक ने कहा कि पूरी दुनिया एक विद्यालय है, जहाँ से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। जीवन में शिक्षक हमें केवल पढ़ाते ही नहीं बल्कि हमें जीवन के अनुभवों से गुजरने के दौरान अच्छे, बुरे के बीच फर्क करना भी सिखाते हैं। वहीं शिक्षक हमारा मार्गदर्शन भी करते हैं कि जीवन में कभी भी कुछ अच्छा और ज्ञानवर्धक सीखने को मिले तो उसे तुरन्त ही आत्मसात कर लेना चाहिए।

श्री राधाकृष्णन अपने छात्रों को पढ़ाते समय उनको पढ़ाई कराने से ज्यादा उनके बौद्धिक विकास पर ध्यान देते थे। शिक्षण को जीवन में आत्मसात् करने वाले पूजनीय डॉ. राधाकृष्णन जी ने जीवनदर्शन का सार इन पंक्तियों में प्रस्तुत किया है–

1. पुस्तकें वह साधन है जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।
2. भगवान हम सबके भीतर रहता है, महसूस करता है और कष्ट सहता है और समय के साथ उसके गुण, ज्ञान, सौंदर्य और प्रेम हममें से हर एक के अन्दर उजागर होंगे।

प्रबोधक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय माताजी का खेड़ा,
पारोली, कोटड़ी, भीलवाड़ा (राज.)
मो: 9468606871

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की प्राप्ति में ABL की भूमिका पर अनुप्रयोग

❐ डॉ. भंवर लाल वैष्णव

शिक्षा सम्पूर्ण जीवन जीने का कौशल और उन्नत राष्ट्र विकास का एक सशक्त माध्यम है। राष्ट्र के सतत् विकास और प्रगति वहाँ की शिक्षा व्यवस्था से ही संभव है क्योंकि वैश्विक स्तर पर सामाजिक न्याय, समानता, आर्थिक विकास, वैज्ञानिक उन्नति और सांस्कृतिक संरक्षण शिक्षा से ही हो पाएगा। अतः जरूरी है कि उस देश के बालकों को उचित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सतत् रूप से मिलती रहनी चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए भारत में समय-समय पर शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन होते रहे हैं। इसी के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी गुणवत्तापूर्ण एवं बुनियादी शिक्षा की वकालत करती है ताकि उच्च शिक्षा प्राप्त करने से पूर्व ही बालकों में अपेक्षित दक्षताओं का विकास हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सभी बालकों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को प्राप्त करने की तत्काल आवश्यकता को इंगित करती है ताकि हर एक बालक/बालिका को कक्षा-3 तक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त हो सके। शिक्षा रोचक, आनंददायी और अधिगम आधारित हो ताकि प्रत्येक बालक अपनी-अपनी रुचि से स्वयं सहभागी रूप से सक्रिय होकर सीख सके। बच्चे जो भी वो सीख रहे हैं उसके साथ ही वे सीखना भी सीखे। शिक्षण प्रक्रिया बाल-केन्द्रित, जिज्ञासा, खोज, अनुभव संवाद के आधार पर संचालित होनी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में निपुण भारत के विकासात्मक लक्ष्य बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना, बालक एक प्रभावी संप्रेषक बने तथा सीखने के प्रति उत्साह को प्रकट करे और साथ ही अपने आसपास के परिवेश से उनका जुड़ाव हो की संप्राप्ति हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण (Activity Based Learning) की अवधारणा को एक सशक्त माध्यम के रूप में इसकी भूमिका को स्वीकार करती है।

RTE-2009 के सेक्शन 24 में शिक्षक के दायित्व की चर्चा की गई है जिसमें गतिविधि

आधारित और खोज आधारित शिक्षा को शामिल किया है ताकि बालकों में अक्षर, भाषा, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों के माध्यम से उनमें सामाजिकता, संवेदना, शिष्टाचार और मानवीय मूल्यों का विकास हो सके।

गतिविधि आधारित शिक्षण की बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को प्राप्त करने में प्रत्यक्ष रूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका है। एबीएल के शिक्षा में अनुप्रयोगों को मैंने ब्लॉक स्तरीय बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्रशिक्षण, ब्लॉक देवली (टोंक) जो कि कक्षा 1 से 5 तक शिक्षण करवाने वाले शिक्षकों के लिए आयोजित में मुख्य संदर्भ व्यक्ति (KRP) के रूप में साझा किए और गतिविधि आधारित शिक्षण को लेकर काफी प्रयोग किए। कक्षा आधारित सीखने के प्रतिफलों (Learning Outcomes) के आधार पर विषय वस्तु के चयन के बाद जब शिक्षक पाठ योजना का निर्माण कर लेंगे तब उस विषय वस्तु के प्रति बालकों की प्रभावी समझ बनाने के लिए गतिविधि चयन हेतु उन्हें निर्देशित किया और गतिविधि का चयन भी निपुण भारत के विकासात्मक लक्ष्यों को ध्यान में रखकर किया गया। इस दौरान मैंने शिक्षकों के साथ निम्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया ताकि वे कक्षा-कक्षीय शिक्षण में बालकों के साथ बेहतर तरीके से कार्य कर सके-

1. पर्यावरणीय सजगता एवं समझ आधारित गतिविधि- बालकों में पर्यावरण से सम्बन्धित अवधारणाओं, जीव-जंतुओं आदि की समझ विकसित हो सके इसके लिए विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों की पत्तियों से प्रशिक्षणार्थियों को जीव-जंतुओं की आकृतियाँ बनाने और उन्हें पहचानने हेतु उनके चित्र पोस्टर पर बनवाए गए तत्पश्चात् संभागियों द्वारा प्रस्तुतीकरण करवाया गया।

2. बिना रंगों के फूलों के संयोजन से चित्र बनाना- रंगों के प्रति समझ बनाने एवं विभिन्न रंगों की पहचान बालक कर सके इसके लिए मैंने प्रशिक्षण में संभागियों के समक्ष विभिन्न रंगों के फूलों के माध्यम से और रंगीन चार्ट/कागज के माध्यम से अलग-अलग आकृतियों के चित्र संदर्भ व्यक्ति अंशुल शर्मा के साथ मिलकर बनाए। इससे एक ओर तो बालकों में पर्यावरणीय रंगों के प्रति समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर विभिन्न प्रकार के पैटर्न और गणितीय आकृतियों को भी बालक समझ सकेंगे।

3. स्प्रे पेंटिंग से चित्र बनाना- बालकों का स्वास्थ्य अच्छा बना रहे और वे स्वयं के प्रति जागरूक बन सके तथा उनमें सकारात्मक आत्म छवि का विकास हो इसके लिए चित्रकला के द्वारा चित्र बनाना अत्यंत उपयोगी हो सकता है, इसके लिए मैंने प्रशिक्षण में स्प्रे पेंटिंग से विविध तरह के चित्र बनवाए। इसके लिए आवश्यक सामग्री नील, ब्रश, पोस्टर और सादा कागज लिए गए। सादा कागज या पत्तियों के माध्यम से पोस्टर पर विभिन्न तरह की आकृतियाँ बनाई गई। बाद में नील के घोल को ब्रश की सहायता से पोस्टर पर स्प्रे किया गया। फिर पत्तियों को हटा लिया गया। इस तरह से सुंदर चित्रांकन किया गया।

4. अनाज के दानों से चित्रण- संदर्भ व्यक्ति अंशुल शर्मा और संभागी तरुण सिंह राजावत के साथ मिलकर बालकों में पहचान का

कौशल, समूह बनाना, वर्गीकरण करना और दानों की पहचान के साथ ही साथ उनके आकार और रंगों की पहचान भी विकसित करने के लिए विभिन्न तरह के पक्षियों, जानवरों और राष्ट्रीय प्रतीकों के चित्र अनाज के दानों के संयोजन से बनाए गए ताकि संभागी इस कौशल से भली-भाँति परिचित हो जाए और अधिगम प्रक्रिया में इन्हें शामिल कर सके।

5. आइसक्रीम की स्टिक्स से आकृति निर्माण– स्वयं से गिनने का कौशल, विभिन्न पैटर्न की पहचान, गणितीय आकृतियों की समझ और हस्त-शिल्प के विकास हेतु बालकों की समझ बने और वे रुचि के साथ सीखना जारी रखे इसके लिए भी आइसक्रीम की स्टिक्स का उपयोग करके सुन्दर पैटर्न बनाए गए। बालक ऐसे पैटर्न देखकर उनको पहचान सकते है। (गतिविधि संचालन-अंशुल शर्मा के.आर.पी. एवं सभी संभागी।)

6. पोस्टर मेकिंग– अन्य विविध गतिविधियों को लेकर संभागियों ने विषय-वस्तु के आधार पर ज्ञानोपयोगी चार्टों का निर्माण किया एवं शिक्षण के दौरान कैसे उपयोग किया जाए की तकनीक से भी परिचित हुए।

7. प्रभावी सम्प्रेषण एवं संख्या ज्ञान हेतु गतिविधि संचालन– बालकों में भाषागत दक्षता और मौखिक भाषा के विकास के लिए भी प्रशिक्षण में बहुत सी गतिविधियों का प्रयोग किया गया। एक ही गतिविधि से प्रभावी संप्रेषण के साथ-साथ संख्या ज्ञान भी करवाया गया। गतिविधि आधारित शिक्षण शारीरिक क्रियाओं के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी होता है। इसके लिए निम्न गतिविधियों का संचालन किया गया ताकि शिक्षक बालकों को सिखाने में प्रभावी तरीके इस्तेमाल कर सके।

1. खाओ पिओ मौज करो।
2. पर्ची वाला खेल।
3. अंदर बाहर वाला खेल।
4. सम-विषम संख्याओं की पहचान।
5. एक कबूतर छत के ऊपर।

शिक्षक
मुख्य संदर्भ व्यक्ति (KRP)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चांदली,
देवली, टोंक (राज.)

महान शिक्षाविद् और दार्शनिक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

❐ देवेन्द्रराज सुथार

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की प्रमुख गत्यात्मक शक्ति है। लेकिन यह भी सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ, निर्देशन आदि सभी वस्तुएँ शैक्षिक कार्यक्रम में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। किंतु जब तक उनको अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नहीं की जाएगी तब तक वे निरर्थक रहेगी। शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती है। अतः कहा जा सकता है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर ही निर्भर है। शिक्षक का जीवन मर्यादा एवं सच्चरित्रता की बालू, सीमेंट व ईंट से बना होता है। अपने कार्यों के प्रति जागरूकता, कड़ी मेहनत एवं मधुर संभाषण शिक्षक का स्तर उठाने में सहायक होते हैं। छात्र ऐसे शिक्षक को अपना आदर्श बनाकर जीवन की सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उच्च स्तर प्राप्त करते हैं। भारतीय शिक्षाविद् और राजनीतिज्ञ हुमायूं कबीर का मत है कि शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है। अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्यंभावी है। अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है। दरअसल, शिक्षा की प्रक्रिया से गुजरा प्रत्येक इंसान जानता है कि शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय है। यह बात शिक्षा के सभी नीतिगत दस्तावेजों में बार-बार दोहराई जाती है। शिक्षक की यह भूमिका शिक्षार्थी में सोचने-विचारने की क्षमता, दुनिया के प्रति वैज्ञानिक नजरिया, कुछ अच्छी आदतें और नए रुचि एवं रुझान विकसित करने तथा मूल्यों के विकास में देखी जाती है। एक सामंजस्यपूर्ण एवं स्वस्थ समाज के लिए यह जरूरी है।

भारत के पहले उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपनी अप्रतिम विद्वता, चिंतन की ऊँचाई और उच्च मानवीय गुणों से भारत को गौरवान्वित किया। सत्य को जानने की तीव्र जिज्ञासा ने उन्हें धर्म ग्रंथों के अध्ययन में प्रवृत्त किया। उन्होंने भारत के साथ विश्व के प्रमुख धर्मों के ग्रंथों का गहन अनुशीलन किया। उन्होंने प्रमुख रूप से श्रीमद् भगवद्गीता, श्रीमद् भागवत, वेद, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र आदि का सांगोपांग अध्ययन तथा अंग्रेजी में प्रांजल अनुवाद किया और उन पर प्रामाणिक भाष्य लिखे। बीस वर्ष की अल्पायु में ही डॉ. राधाकृष्णन की पहली पुस्तक 'दि एथिक्स ऑफ वेदांत एंड इट्स मेटेरियल सपोजिशन' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक से उन्हें विश्वभर में कीर्ति मिली और उनकी गणना इस युग के महानतम मौलिक चिंतकों और दर्शनशास्त्र के प्रामाणिक भाष्यकारों में होने लगी। वैसे तो डॉ. राधाकृष्णन का चिंतन अपनी व्यापकता में मानव जीवन के सभी पक्षों को समेट लेता है, परंतु धर्म, विज्ञान, शिक्षा और इनके परस्पर संबंध पर उन्होंने जो कहा उसका आंशिक रूप में भी अगर मानव जाति पालन कर लें, तो हिंसा और प्रतिशोध की ज्वाला में जल रहा समस्त विश्व मानव के लिए आनंद लोक बन सकता है।

डॉ. राधाकृष्णन ने अपना जीवन शिक्षक के रूप में शुरू किया। देश के अनेक प्रतिष्ठित पदों की शोभा बढ़ाते हुए देश के राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर अधिष्ठित हुए। लेकिन जीवनभर उनका आदर्श शिक्षक ही रहा। शिक्षक के प्रति उनकी उदात्त भावना का सम्मान कर देश में उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। विज्ञान, शिक्षा और प्रौद्योगिकी में निष्णात और आध्यात्मिक, चारित्रिक और नैतिक रूप में समुन्नत मानव डॉ. राधाकृष्णन का सपना था। धर्म के विषय में आदमी आज जितना किंकर्त्तव्यविमूढ़ है, उतना कभी नहीं रहा। इस सदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी चमत्कारों की चकाचौंध में आज के मानव को धर्म, आत्मा, अध्यात्म आदि बीते कल की अप्रासंगिक बातें लगने लगी है। मनुष्य ने भौतिक सुख साधनों के विकास की धुन में अपने आंतरिक स्वरूप को

भुला दिया है। डॉ. राधाकृष्णन की दृष्टि में आधुनिक मानव की यह सबसे बड़ी भूल है विज्ञान और प्रौद्योगिकी से मनुष्य ने अपने लिए भौतिक सुख साधन तो जुटा लिए परंतु अपनी सहज अधोगामी वृत्तियों को ऊँचा करने का उसने कोई उपाय नहीं किया। इससे उसके चारित्रिक सद्गुणों का अधोगमन निरंतर होता रहा। फलस्वरूप जिस विज्ञान से हमारा जीवन अधिक सुखमय होना चाहिए वही हमारे अस्तित्व के लिए खतरा बन गया है। अतः रुग्ण चित्त के व्यक्ति के लिए सुख साधन विनाश ही लाते हैं। डॉ. राधाकृष्णन की दृष्टि में धर्म सही आस्था, सही भावना और सही कर्म है। धर्म के नाम पर विश्व में जितना अनर्थ हुआ है उतना किसी और के नाम पर नहीं। कारण सिर्फ यह है कि धर्म के मर्म को न समझ कर विभिन्न पूजा पद्धतियों, कर्मकांडों, नियमों, रीति-रिवाजों आदि बाह्य स्वरूपों को ही हम धर्म मानकर चलते रहे। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार उपर्युक्त प्रकार के धर्म के बाहरी स्वरूप भिन्न-भिन्न धर्मों में भिन्न होते हैं, परंतु उन सबका मात्र उद्देश्य आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, आंतरिक शुचिता और धर्म का विवेक प्राप्त करना है। धर्म मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास की पूर्ण संभावनाओं को प्राप्त करने का साधन है। यह बाहर से आई हुई वस्तु नहीं, वरन मानव के अंदर से जाग्रत एक आंतरिक अनुशासन है, जिसके तहत मानव संसार की सभी सुख-समृद्धियों का सम्यक् उपयोग करते हुए अपना जीवन सहजता में जी कर दिव्यता की ओर अग्रसर होता है।

समाज की सुख समृद्धि के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग के डॉ. राधाकृष्णन पूरी तरह हामी थे। परंतु मानव के श्रेष्ठ गुणों, आध्यात्म, चरित्र और जीवन के उच्च मूल्यों की कीमत पर सिर्फ विज्ञान और प्रौद्योगिकी के पीछे भागने को डॉ. राधाकृष्णन सबसे बड़ा अविवेक मानते थे। उनके अनुसार धर्म और विज्ञान एक-दूसरे के पूरक है। उन्होंने कहा कि बिना विज्ञान का धर्म अंधविश्वास के सिवा कुछ नहीं। इससे केवल भ्रम और असमंजस प्राप्त होता है। इसी तरह धर्म के बिना विज्ञान से मानव जाति के अस्तित्व के विनाश का खतरा सुनिश्चित है। विज्ञान हमारे सामने प्रकृति की संपदाओं और शक्तियों को उजागर करता है, जबकि धर्म हमें मानव जाति और प्राणी मात्र के हित में इन संपदाओं और शक्तियों का सदुपयोग करने का रास्ता बताता है। वे चाहते थे कि विज्ञान हमारे पाँव हो और धर्म हमारी आँख। भौतिक समृद्धि के साथ-साथ गहरे नैतिक बोध का पूर्ण समन्वय ही जीवन को अधिक दिव्य और आनंदपूर्ण बना सकता है। वे चाहते थे कि मानव विज्ञान का दास बनकर अपनी आत्मा की दिव्यता और श्रेष्ठता को पहचान कर विज्ञान का उपयोग सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय में करें। डॉ. राधाकृष्णन भारतवासियों को पश्चिम से सबक लेने की सलाह देते हैं। वहाँ जो वैज्ञानिक चमत्कार हुए हैं वे निःसंदेह अकल्पनीय हैं, पर वहाँ शाँति और आनंद का अभाव है। कारण सिर्फ यही है कि उन्होंने आध्यात्म को पिछड़ापन और दिमागी कमजोरी मान लिया। विज्ञान की प्रगति में वहाँ उच्च नैतिक गुणों व मानव मूल्यों का विकास पिछड़ गया। डॉ. राधाकृष्णन ने स्पष्ट कहा कि हमारी नियति का निर्धारण हमारी भौतिक समृद्धि से नहीं, हमारी आध्यात्मिक शक्ति से होगा।

देश की आजादी के बाद भारत में शिक्षा के स्वरूप और उसकी दिशा के संबंध में डॉ. राधाकृष्णन ने बहुमूल्य सुझाव दिए। यह और बात है कि देश आज भी उन सुझावों का अपनी शिक्षा नीति में ईमानदारी से समावेश नहीं कर सका। वे चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का चहुँमुखी और संतुलित विकास हो। शिक्षा के साथ व्यक्ति में अच्छे-बुरे का विवेक विकसित होना चाहिए। विवेक से उनका तात्पर्य शाश्वत और क्षणिक, यथार्थ और भ्रम, भले तथा बुरे की समझ है। वे चाहते थे कि भारत के युवक-युवतियों में विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा अन्य व्यावसायिक विषयों में दक्षता होने के साथ-साथ उच्च मानवीय और नैतिक गुणों का भी पूरा विकास हो। मानवीय गुणों के बिना भौतिक प्रगति का कोई महत्त्व नहीं है। बिना करुणा के कोरा शिक्षित व्यक्ति दानवीय हो जाता है। देश में शिक्षा के सही दिशा में विकास के लिए अधिकाधिक योग्य, मेधावी, चरित्रवान और शिक्षा के लिए समर्पित व्यक्ति इस क्षेत्र में आए। शिक्षकों को वे सलाह देते हैं कि वे विद्यार्थियों से सम्मान माँगने की बजाय अपनी योग्यता, उत्कृष्ट गुणों तथा शिक्षा के प्रति समर्पण से विद्यार्थी समुदाय और संपूर्ण समाज का सम्मान अर्जित करे। वे युवाओं को सलाह देते है कि किसी भी क्षेत्र में हो, पुस्तकें अवश्य पढ़ें। श्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ना सभी के लिए आवश्यक है। हर व्यक्ति वही करें जो वह कर रहा है, बस कहने के साथ गहरा नैतिक बोध जुड़ा होना चाहिए। चिकित्सक, वकील, इंजीनियर, श्रमिक, उद्योगपति, अधिकारी, राजनेता, वैज्ञानिक जो भी हो, जो वे कर रहे हैं यदि वे अपने कार्य को नैतिक बोध के साथ करें तो उनका कार्य राष्ट्र और मानव जाति के लिए भी मंगलकारी होगा।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षकों ने आरंभ से ही सामाजिक परिवर्तन लाने में पूरा सहयोग दिया है। यदि प्राचीन भारत पर दृष्टिपात किया जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि जब भी शिक्षकों ने सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव किया तब उन्होंने अपने आश्रमों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था में आश्चर्यजनक परिवर्तन किए। शिक्षकों के महत्त्व एवं उनकी सामाजिक सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए उन्हें समाज अथवा राष्ट्र का निर्माण कहा जाता है, पर खेद का विषय है कि आज शिक्षक को यह स्थान नहीं दिया जाता। यदि शिक्षक अपने थोपे हुए मान व प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करना चाहता है तो उन्हें बदलते हुए समाज तथा उसकी बदलती हुई आवश्यकताओं को पूरी तरह समझकर सामाजिक परिवर्तन में आवश्यक योगदान देना चाहिए। कारण यह भी है कि शिक्षण कार्य भी अन्य व्यवसायों की भाँति एक व्यवसाय बन गया है। जिसे केवल वही व्यक्ति अपना सकते हैं, जिन्हें अपने विषय का पूरा ज्ञान हो तथा जिन्होंने प्रशिक्षण भी प्राप्त किया हो। शिक्षक के संबंध में आर.ए. लैम्ब ने सटीक कहा है- ''विद्यालयी शिक्षक से मैं यह कहना चाहता हूँ कि उनको यह नहीं भूलना चाहिए कि उनका प्रमुख कार्य केवल निर्देश देना नहीं वरन शिक्षित करना है। उनको अपने शिष्यों के मस्तिष्कों में केवल ज्ञान नहीं भरना है वरन उनमें चरित्र की आधारशिला भी स्थापित करनी है। उन्हें उनके अंतःकरण में साहस, शिष्टता व मर्यादा की आधारशिला रखनी है।''

गाँधी चौक, आतमणावास, बागरा, जालोर
(राज.)-343025
मो: 8107177196

गुरु बिन ज्ञान कहाँ जग माही

❒ कुसुम अग्रवाल

स्वतंत्रता से पूर्व भारत की बात है। मद्रास के एक ईसाई मिशनरी स्कूल में एक प्रखर बुद्धि राधाकृष्णन भी पढ़ता था। एक दिन उनकी कक्षा में एक ईसाई अध्यापक अपना वक्तव्य दे रहे थे। शायद उनकी मानसिकता संकीर्ण थी। अतः वे अपने वक्तव्य में हिंदू धर्म को रूढ़िवादी, संकीर्ण एवं अंधविश्वासी बताकर कटाक्ष कर रहे थे और उसे नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे थे। इसके साथ-साथ वे ईसाई धर्म की अच्छाइयाँ बता कर उसके प्रचार-प्रसार की चेष्टा भी कर रहे थे।

बालक राधाकृष्णन को यह बात गवारा नहीं हुई। एक ब्राह्मण परिवार से संबंध रखने के कारण उसे भारतीय धर्मशास्त्र, वेद-पुराणों तथा गीता का समुचित ज्ञान था तथा वह भारतीय संस्कृति का सम्मान भी करता था। जब उसके सब्र का बाँध टूट गया तो उसने खड़े होकर अध्यापक से प्रश्न किया, ''श्रीमान जी, मेरा एक प्रश्न है। क्या आपका ईसाई धर्म दूसरे धर्मों की बुराई करने की इजाजत देता है?''

बालक का प्रश्न सुनकर अध्यापक चुप रह गए क्योंकि वे जानते थे कि हर धर्म दूसरों का सम्मान करने की तथा समरसता का संदेश ही देता है। जब उन्हें कोई जवाब नहीं सूझा तब उन्होंने बालक से प्रश्न किया- क्या तुम्हारा हिंदू धर्म दूसरे धर्मों का सम्मान करता है? इस पर बालक राधाकृष्णन ने सीना तानकर जवाब दिया- हाँ करता है। गीता में स्पष्ट लिखा है- भगवान की आराधना करने के अनेक तरीके है तथा अनेकों मार्ग हैं परंतु सभी का उद्देश्य एक है। क्या इस कथन में सभी धर्मों का सम्मान नहीं छुपा है?

बालक की बात सुनकर अध्यापक निरुत्तर रह गए तथा भविष्य में उन्होंने कभी भी हिंदू धर्म की निंदा न करने का संकल्प लिया। यही बालक राधाकृष्णन बड़ा होकर डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली नामक आदर्श शिक्षक बना क्योंकि उसका मानना था कि एक अच्छे शिक्षक को पता होना चाहिए कि वह अध्ययन के क्षेत्र में छात्रों में रुचि पैदा कैसे कर सकता है। उसे शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल होते हुए इस क्षेत्र में आ रहे

सारे परिवर्तनों की जानकारी भी होनी चाहिए।

डॉक्टर राधाकृष्णन सर्वपल्ली ने अपने जीवन के 40 वर्ष शिक्षक बनकर नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करने में व्यतीत किए। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को तिरुट्टनी, तमिलनाडु में हुआ था। बचपन से ही एक होनहार छात्र रहने के कारण इन्होंने मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज में दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया तथा उसके पश्चात मैसूर विश्वविद्यालय तथा कोलकाता विश्वविद्यालय में पढ़ाया भी। वे आंध्र विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

1954 में उन्हें भारत का सर्वोच्च सम्मान 'भारत-रत्न' भी प्रदान किया गया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का 27 बार नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकन भी हुआ तथा कई बार नोबेल शांति पुरस्कार के लिए भी नामांकन हुआ। वे 1952 से 1962 तक भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति तथा 1962 से 1967 तक भारत के द्वितीय राष्ट्रपति रहे। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने ब्रिटेन के एडिनबर्ग विश्वविद्यालय में दिए जाने वाले एक भाषण में कहा था- शिक्षा का संपूर्ण लक्ष्य मानव जाति की मुक्ति ही है। हमें विश्व शांति की स्थापना का प्रयास करना होगा।

डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन प्रतिभा व व्यक्तित्व के धनी थे। वे एक प्रसिद्ध विद्वान, शिक्षक, प्रखर वक्ता, कुशल प्रशासक, राजनयिक देशभक्त, दार्शनिक तथा शिक्षा शास्त्री थे। वे अपने छात्रों को ओजस्वी तथा बुद्धिमत्ता पूर्ण व्याख्यानों द्वारा दर्शनशास्त्र जैसे गंभीर विषय को भी रुचि पूर्ण बना देते थे। अध्यापन जैसे गंभीर कार्य के बीच प्रेरक प्रसंग तथा हास्य व्यंग्य की कहानियाँ प्रस्तुत करके छात्रों में सदैव शिक्षा के प्रति अभिरुचि बनाए रखने में कामयाब रहते थे। उनका कहना था कि सामाजिक बुराइयों को हटाने के लिए शिक्षा ही कारगर सिद्ध हो सकती है। उनके अनुसार शिक्षा का लक्ष्य है विज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरंतर सीखते रहने की प्रवृत्ति। यह ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान एवं कौशल दोनों प्रदान करती है। यह करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी करती है।

उनका कहना था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनना चाहिए जो सर्वाधिक योग्य और बुद्धिमान हों। जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक वह एक अच्छा शिक्षक साबित नहीं हो सकता। एक अच्छा शिक्षक केवल पढ़ा कर ही संतुष्ट नहीं होता है अपितु जब तक वह अपने छात्रों का स्नेह और सम्मान नहीं पा लेता तब तक उसका काम अधूरा ही रहता है।

1962 में जब भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने तो उनके कुछ शिष्य और प्रशंसक उनके पास आए। उन्होंने राधाकृष्णन जी से निवेदन किया कि हम आपके जन्मदिन को एक समारोह के रूप में मनाना चाहते हैं। तब उन्होंने उत्तर दिया कि तुम मेरा जन्मदिन मनाना ही चाहते हो तो यदि तुम इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाओगे तो मुझे ज्यादा खुशी होगी। तब से ही 5 सितम्बर (उनका जन्म दिवस) सारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। उनकी यह इच्छा उनके अध्यापन के प्रति समर्पण को दर्शाती है। वे भले ही किसी भी पदवी पर हो गए परंतु ताउम्र स्वयं को शिक्षक ही मानते रहे। वे सर्वोच्च पद पर पहुँचकर भी सादगी भरा जीवन जीते थे तथा अपनी आय का आधे से भी अधिक अंश राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करा देते थे।

डॉ. राधाकृष्णन अपने छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय थे। जब वे मद्रास छोड़कर

कोलकाता यूनिवर्सिटी पढ़ाने जाने लगे तब उनके छात्रों ने उनके लिए फूलों से सजी बग्गी का प्रबंध किया तथा खुद उसे खींचकर स्टेशन तक ले गए। डॉ. राधाकृष्णन ने राष्ट्रपति को आम लोगों तक पहुँचाने के लिए यह निर्णय लिया कि सप्ताह में दो दिन कोई भी व्यक्ति उनसे बिना पूर्व अनुमति लिए आकर मिल सकता है।

एक गंभीर व्यक्तित्व होने के साथ-साथ वे मनोविनोद से भी परिपूर्ण थे। 1962 में ग्रीस के राजा ने जब भारत का राजनयिक दौरा किया तो सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने उनका स्वागत करते हुए कहा- 'महाराज आप ग्रीस के पहले राजा हैं जो भारत में अतिथि की तरह आए हैं। सिकंदर तो यहाँ बगैर आमंत्रण के ही मेहमान बन गए थे।'

गुरु, शिक्षक, आचार्य, अध्यापक, टीचर ये सभी शब्द ऐसे व्यक्ति को व्यक्त करते हैं जो हमें ज्ञान देता है, ज्ञान सिखाता है। ऐसे सभी शिक्षकों को धन्यवाद देने के लिए 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। छात्रों के मन में अपने शिक्षक के प्रति आदर सम्मान और विश्वास होना जरूरी है तभी वे समुचित शिक्षा अर्जन कर सकते हैं। केवल धन देकर ही शिक्षा हासिल नहीं की जा सकती। शिक्षक दिवस का अर्थ केवल यह नहीं है कि इस दिन हम अपने शिक्षक को कोई उपहार या एक पुष्प भेंट कर दें बल्कि हमें शिक्षक दिवस के महत्त्व को समझते हुए सदा अपने गुरु का आदर करना चाहिए, उनकी बात ध्यान से सुननी चाहिए तथा यह धारणा रखनी चाहिए कि हम अपने गुरु से बहुत छोटे हैं। अतः यह हमारे लिए सदैव सम्माननीय हैं। यदि हम क्रोध, ईर्ष्या को त्याग कर त्याग व संयम के बीज बोएँ तो निश्चित ही हमारा व्यवहार हमें बहुत ऊँचाइयों तक ले जाएगा और शिक्षक दिवस मनाने का महत्त्व भी सार्थक होगा।

मैं उन सभी शिक्षकों का आभार व्यक्त करती हूँ कि जिनकी प्रेरणा से आज मैं इस योग्य बनी हूँ। मैं इस महत्त्वपूर्ण दिवस के बारे में कुछ लिख सकूँ।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।

90-महावीर नगर, 100 फीट रोड,
कांकरोली, राजसमंद (राज.)-313324
मो: 09461179465

बधिर विद्यालय में संस्थाप्रधान की भूमिका

❒ **डॉ. योगेन्द्र सिंह नरूका 'फुलेता'**

बधिर विद्यालय प्रबंधन, कार्य-योजना के दृष्टिकोण से सामान्य विद्यालयों से कुछ विशिष्ट होते हैं। ऐसे में बधिर विद्यालय के संस्थाप्रधान की भूमिका व कार्य भी विशिष्ट हो जाते हैं। बधिर विद्यालय के संस्थाप्रधान को अपना शैक्षणिक, सह शैक्षिक, वित्तीय प्रबंधन, निरीक्षण आदि कुशलता के साथ करना होता है।

संस्थाप्रधान को बधिर समुदाय की समझ, उनकी सांकेतिक भाषा, शिक्षण विधि, कार्य-योजना की क्रियान्विति आदि का ज्ञान होना आवश्यक है। बधिर विद्यालय के संस्थाप्रधान को सांकेतिक भाषा, होठ-पठन में दक्ष होना चाहिए जिससे बधिर बच्चों की शैक्षणिक व अन्य परेशानियों को स्वयं जान व समझ सके तथा उनसे अपने स्तर पर संवाद कर समस्याओं को हल कर सके।

संस्थाप्रधान को शैक्षणिक पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों की समझ होना आवश्यक है, इनके अभाव में वो शैक्षणिक मूल्यांकन उचित ढंग से नहीं कर सकेगा। ऐसे विशिष्ट विद्यालयों के संस्थाप्रधानों के लिए दक्ष वित्तीय व्यवस्थापक का होना भी आवश्यक है क्योंकि इस विद्यालय की वित्तीय आवश्यकताएँ सामान्य विद्यालयों से अधिक होती है, इसके लिए उसे विद्यालय विकास कोष को दानदाताओं व अन्य संस्थाओं के सहयोग से आवश्यक रूप से बढ़ाने की दक्षता होनी चाहिए।

बधिर विद्यालय का संस्थाप्रधान एक कुशल जनसम्पर्ककर्त्ता भी होना चाहिए जिससे विभिन्न आयोजन, अवसरों पर अपने विद्यालय में विशेष प्रतिभाओं, हस्तियों, संस्थाओं को आमंत्रित कर सके तथा बधिर बच्चों के अनुकूल कार्यक्रम करवा सके। संस्थाप्रधान को समय-समय पर बधिर बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण भी करवाना चाहिए। विशेषकर बधिर बच्चों को सुनाई नहीं देने के कारण कान की सफाई पर भी यह बच्चे ध्यान नहीं दे पाते इस कारण इनके कान में वैक्स जमा हो जाती है, जो आगे चलकर इन्फैक्शन पैदा करती है जिसके परिणाम भयंकर हो सकते हैं। हियरिंग ऐड लगाने वाले बच्चों के लिए ऑडियोमेट्री रूम, स्पीच थैरेपी के अलग से एक्सपर्ट नियुक्त करके व्यवस्था करनी चाहिए तथा समय-समय पर हियरिंग ऐड की जाँच करवाना चाहिए।

बधिर विद्यालय में डिजिटल क्लासरूम, डिजिटल लाइब्रेरी की व्यवस्था भी संस्थाप्रधान को करवानी चाहिए जिससे कि साइन लैंग्वेज में बने विभिन्न शैक्षणिक-सहशैक्षणिक वीडियोज बधिर विद्यार्थी देख सके। साइन लैंग्वेज की लैब भी बधिर विद्यालयों में संस्थाप्रधान को विकसित करनी चाहिए जिसमें विभिन्न देशों की साइन लैंग्वेज बधिर बच्चे आसानी से सीख व समझ सके।

संस्थाप्रधान को शैक्षणिक प्रबंधन इस तरह से करना चाहिए कि प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थी अनुपात नियमानुसार हो तथा शिक्षक कन्टेंट के साथ कक्षा में शिक्षण कार्य करवा सके। बधिर बच्चों के लिए सहशैक्षणिक गतिविधियों का संचालन भी उनकी शारीरिक, मानसिक क्षमता की अभिवृद्धि के लिए आवश्यक है। अतः विद्यालय में खेलों के लिए आउटडोर-इण्डोर प्लेग्राउण्ड आदि विकसित करना चाहिए। दक्ष प्रशिक्षकों, विभिन्न खेलों के कोच आदि को समय-समय पर विद्यालय में आमंत्रित करके बधिर बच्चों को विभिन्न खेलों का प्रशिक्षण प्रदान करवाना चाहिए। बधिर बच्चों के लिए आयोजित स्पेशल गेम्स का भी मालूम कर उन्हें उन खेलों में प्रतिस्पर्द्धा के लिए तैयार कर भिजवाना चाहिए।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, राष्ट्रीय सेवा योजना, स्काउट-गाइड में बधिर बच्चों को अधिक से अधिक भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बधिर विद्यालय के संस्थाप्रधान को वार्षिक कार्ययोजना बना कर कार्य करना चाहिए तथा विद्यालय के बधिर बच्चों की तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे उन्हें आगे चलकर रोजगार की समस्या ना हो। इसके साथ-साथ अपने पूर्व छात्रों के हित में रोजगार शिविर, वैवाहिक परिचय सम्मेलन आदि का भी आयोजन करना चाहिए।

प्रधानाचार्य व पीईईओ
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राहोली,
निवाई, टोंक (राज.) **मो: 9602942594**

शिक्षक समाज के आदर्श : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

❐ डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी

जीवन में शिक्षक का किरदार बहुत खास होता है, वे किसी के जीवन में उस बैकग्राउंड म्यूज़िक की तरह होते हैं, जिसकी उपस्थिति मंच पर तो नहीं दिखती, परंतु उसके होने से नाटक में जान आ जाती है। ठीक इसी प्रकार हमारे जीवन में एक शिक्षक की भी भूमिका होती है। चाहे आप जीवन के किसी भी पड़ाव पर हो। हमारी सफलता के पीछे हमारे शिक्षक का हाथ होता है। हमारे माता-पिता की तरह ही हमारे शिक्षक के पास भी ढेर सारे व्यक्तिगत कार्य होते हैं लेकिन फिर भी वह इन सबके साथ शिक्षा प्रदान करने का उत्कृष्ट कार्य करते हुए अपनी जिम्मेदारी का अच्छे से निर्वाह करते हैं।

भारत में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिवस भी कहा जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाने वाले डॉ. राधाकृष्णन एक महान शिक्षक होने के साथ-साथ आजाद भारत के पहले उपराष्ट्रपति तथा दूसरे राष्ट्रपति थे। इन पदों पर आसीन होने से पहले वे एक शिक्षक भी थे। जिन्होंने पूरे भारत में शिक्षकों को सम्मान देने के लिए शिक्षक दिवस के रूप में उनके जन्मदिन को मनाने का आग्रह किया था। उन्हें अध्यापन पेशे से बहुत प्यार था। एक बार उनके विद्यार्थियों ने उनसे उनका जन्मदिन मनाने का आग्रह किया। ये सुनकर डॉ. राधाकृष्णन ने अपने जन्म दिन को शिक्षक सम्मान का दिन बनाने का सुझाव दे दिया। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि शिक्षक ही देश के भविष्य का आधार होते हैं, इसलिए सिर्फ उन्हें नहीं बल्कि हर शिक्षक को सम्मान दिया जाना चाहिए। अतः यही वो दिन था तब से 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। 1962 में पहली बार 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया गया। तब से आज तक हर साल इसी दिन शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक महान शिक्षक थे जिन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष अध्यापन को दिए। वे विद्यार्थियों के जीवन में

शिक्षकों के योगदान और भूमिका के महत्त्व के लिए जाने जाते हैं। वे आर्थिक रूप से बेहद कमजोर परिवार से थे। पढ़ाई-लिखाई में उनकी बेहद रुचि थी। डॉ. राधाकृष्णन ने 12 साल की उम्र में ही बाइबिल और स्वामी विवेकानंद के दर्शन का अध्ययन कर लिया था। डॉ. राधाकृष्णन की प्रारंभिक शिक्षा तिरुवल्लुर के गौड़ी स्कूल और तिरूपति मिशन स्कूल में हुई। इसके बाद उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी की। 1902 में मैट्रिक स्तर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। डॉ. राधाकृष्णन ने 1916 में दर्शन शास्त्र में एम.ए. किया और मद्रास प्रेसीडेंसी कॉलेज में इसी विषय के सहायक प्राध्यापक का पद संभाला। वह 1931 से 1936 तक आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। इसके बाद 1936 से 1952 तक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर रहे। 1939 से 1948 तक वह काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर रहे। उन्होंने भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन किया। उन्होंने देश में बनारस, चेन्नई, कोलकाता, मैसूर जैसे कई प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों तथा विदेशों में लंदन के ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालयों में दर्शनशास्त्र पढ़ाया। अध्यापन पेशे के प्रति अपने समर्पण की वजह से उन्हें अपने बहुमूल्य सेवा की पहचान के लिए 1949 में विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति कमीशन के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। 1952 में उन्हें भारत का प्रथम उपराष्ट्रपति बनाया गया और भारत के द्वितीय राष्ट्रपति बनने से पहले 1953 से 1962 तक वह दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

कबीरदास द्वारा लिखी गई 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पांव, बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय' पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्त्व को बखूबी दर्शाती हैं। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु व शिक्षक परंपरा चली आ रही है। गुरुओं की महिमा का चित्रण ग्रंथों में भी मिलता है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, उनका ऋण हम किसी भी रूप में नहीं उतार सकते। लेकिन हमें समाज के बीच रहने योग्य हमारे शिक्षक बनाते हैं। हमारे सफलता की इबारत का जिम्मा उन्हीं की रखी नींव उठाती है। शिक्षा और राजनीति में उत्कृष्ट योगदान देने वाले डॉ. राधाकृष्णन को उनकी महानता के लिए ही 1954 में भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया था। डॉ. राधाकृष्णन को ब्रिटिश शासनकाल में 'सर' की उपाधि भी दी गई। इसके अलावा 1961 में इनहें जर्मनी के पुस्तक प्रकाशन द्वारा 'विश्व शांति पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। अपने महान कार्यों से देश की लंबे समय तक सेवा करने के बाद 17 अप्रैल 1975 को इनका निधन हो गया।

हमारे शिक्षक हमें शैक्षणिक दृष्टि से तो बेहतर बनाते ही हैं साथ ही हमारे ज्ञान, विश्वास स्तर को बढ़ाकर नैतिक रुप से भी हमें अच्छा बनाते हैं। जीवन में अच्छा करने के लिए वह हमें हर असंभव कार्य को संभव करने की प्रेरणा देते हैं। ये सर्वविदित है कि हमारे जीवन को सँवारने में शिक्षक एक बड़ी और महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सफलता प्रप्ति के लिए वो हमें कई प्रकार से मदद करते हैं जैसे हमारे ज्ञान, कौशल के स्तर, विश्वास आदि को बढ़ाते है तथा हमारे जीवन को सही आकार में ढालते है। अतः शिक्षक द्वारा दिए गए ज्ञान एवं कौशल का सही दिशा में उपयोग करके शिक्षक समाज के आदर्श डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचारों को वास्तविकता में बदलकर तथा भारत के भविष्य को संवारा जा सकता है।

वरिष्ठ अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
(अंग्रेजी माध्यम) वैशाली नगर, अजमेर
मो: 30257931716

दीक्षा : वन नेशन, वन डिजिटल प्लेटफॉर्म

❒ जयश्री माथुर

दीक्षा (डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग) स्कूली शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय मंच है, जो शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) नई दिल्ली द्वारा सितम्बर, 2017 में प्रारंभ किया गया था। दीक्षा को सीबीएसई सहित भारत के लगभग सभी राज्यों, केन्द्र शासित प्रदेशों, केन्द्रीय स्वायत्त निकायों/बोर्डों द्वारा अपनाया गया है। दीक्षा को देश के समस्त विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा एक्सेस किया जा सकता है। प्रत्येक राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश दीक्षा मंच पर अपने राज्य के पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्य सामग्री प्रसारित करते हैं। दीक्षा शिक्षाविद्, विषय विशेषज्ञ, संगठन, स्वायत्त संस्थान, गैर-सरकारी और निजी संगठन को देश के लिए बड़े पैमाने पर सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक सामान्य मंच में भाग लेने, योगदान करने और लाभ उठाने के लिए अवसर प्रदान करता है। भारत सरकार की पीएम ई-विद्या पहल के तहत, जिसे आत्मनिर्भर भारत के रूप में घोषित किया गया था, दीक्षा को 'वन नेशन, वन डिजिटल प्लेटफॉर्म' घोषित किया गया है।

दीक्षा ओपन सोर्स टेक्नोलॉजी पर बनाया गया है, जो भारत में और भारत के लिए बनी है, जिसमें रुचिकर, शिक्षण सामग्री शिक्षण अधिगम के लिए बनाई है।

NDEAR (नेशनल डिजिटल एजुकेशन आर्किटेक्चर) जो राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों द्वारा फेडरेटेड और इंटरऑपरेबल सिस्टम के विकास के लिए बिल्डिंग ब्लॉक्स प्रदान करता है। दीक्षा के मुख्य बिल्डिंग ब्लॉक्स में NDEAR के अधिकांश बिल्डिंग ब्लॉक्स शामिल हैं, जिन्होंने NDEAR के कुछ प्रयास जैसे सक्रिय पाठ्यपुस्तकें, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, सामग्री लेखांकन, सामग्री सोर्सिंग, इंटरैक्टिव-क्विज, प्रश्न-बैंक, चैटबॉट, एनालिटिक्स और डैशबोर्ड आदि को भी शामिल किया गया है।

COVID-19 महामारी के समय में, दीक्षा मंच ने देशभर में विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा अपनी पहुँच में अभूतपूर्व वृद्धि की है।

शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में सहायता के लिए डिजिटल सामग्री के लिए, एनसीईआरटी/सीबीएसई/राज्यों की विभिन्न सामग्री आवश्यकताओं के लिए विद्यादान के तहत व्यक्तिगत शिक्षकों, सामग्री भागीदारों, गैर सरकारी संगठनों, कार्पोरेट्स द्वारा विभिन्न संसाधनों का एक समृद्ध भंडार योगदान दिया गया था।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) के लिए शिक्षण और सीखने में सहायता के लिए, बड़ी संख्या में ऑडियो पुस्तकें, आईएसएल (भारतीय सांकेतिक भाषा) वीडियो और शब्दकोश सीडब्ल्यूएसएन के लिए दीक्षा पर उपलब्ध कराए गए हैं।

महामारी के दौरान दीक्षा के माध्यम से प्राथमिक ग्रेड के लिए बड़े पैमाने पर शिक्षक क्षमता संवर्धन कार्यक्रम निष्ठा 1.0 (संस्थाप्रधान और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) को ऑनलाइन लॉंच किया गया था। NISHTHA 2.0 और 3.0 माध्यमिक और मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता पर ध्यान केन्द्रित करता है। निष्ठा के अलावा, कई राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों ने अपने स्वयं के क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी तैयार किए हैं, जिन्हें दीक्षा के माध्यम से शिक्षकों तक पहुँचाया गया है।

एनसीईआरटी विद्यार्थियों के लिए 24x7 आधार पर पीएम ई-विद्या डीटीएच-टीवी चैनलों (कक्षा- I से XII तक एक कक्षा, एक चैनल) के माध्यम से सामग्री प्रसारित करता है। ये चैनल क्यूआर कोड के माध्यम से दीक्षा से जुड़ी कक्षा-वार सामग्री प्रसारित करते हैं। सुसंगतता को सक्षम करने के लिए, दीक्षा पर प्रसारण सामग्री भी उपलब्ध कराई जाती है, जहाँ यह सामग्री किसी भी समय, कहीं भी पहुँच योग्य होती है।

राजस्थान में भी दीक्षा-राइज नाम से अपना पोर्टल बनाया है, जहाँ शिक्षक एवं विद्यार्थी स्वयं लॉग इन करके दीक्षा पर अपने लिए उपयोगी सामग्री देख सकते हैं।

दीक्षा ई-बुक और ई-कंटेंट का स्टोर हाउस है जहाँ निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार ई-कंटेंट क्यूआर कोड के साथ मैप किया हुआ मिलता है। वन नेशन वन डिजिटल प्लेटफॉर्म की परिकल्पना के साथ, यह प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों, शिक्षकों व अन्य सभी के लिए ज्ञानवर्द्धक व रुचिकर शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराता है, जो कि निर्धारित पाठ्यक्रम के लिए प्रासंगिक है। इसके अंतर्गत कक्षा 1 से 12 के लिए पूरा कंटेंट क्यूआर कोड के साथ उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षण भी इसके माध्यम से आयोजित करवाए जाते हैं।

दीक्षा प्लान के अंतर्गत राजस्थान द्वारा सम्पादित कार्य के अंतर्गत राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा कॉमिक बुक का निर्माण, प्राथमिक स्तर के अधिगम को सहज, सारगर्भित एवं रुचिपूर्ण बनाने हेतु समस्त विषयों हिंदी, अंग्रेजी, गणित, पर्यावरण अध्ययन के चयनित पाठों के लिए दीक्षा पोर्टल पर किया गया है। ऑडियो बुक का निर्माण प्राथमिक स्तर कक्षा 1 से 5 के विशेषतः दृष्टिबाधित बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा विद्यालयों में संचालित पुस्तकों तक उनकी पहुँच को सुगम, सहज, रुचिप्रद एवं सुगम्य बनाने के उद्देश्य से समस्त विषयों हिंदी, अंग्रेजी, गणित, पर्यावरण अध्ययन की पुस्तकों को ऑडियो के रूप में निर्माण किया गया, जिसे दीक्षा पोर्टल पर अपलोड किया गया है।

वर्क बुक लिंकिंग व क्यूआर कोड राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित कार्यपुस्तिकाओं (प्रखर, प्रवाह, प्रयास एवं पहल) को इंटरेक्टिव क्विज के माध्यम से दीक्षा पोर्टल पर अपलोड किया गया है। इसी के साथ शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा वाणी पर प्रसारित कंटेंट को भी दीक्षा पोर्टल पर अपलोड किया गया है।

आप सभी शिक्षक साथी दीक्षा पोर्टल का उपयोग स्वयं करें व इस पर उपलब्ध सामग्री को अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को रुचिकर अधिगम बनाने के लिए अधिक से अधिक देखने के लिए प्रेरित करें। देश की विभिन्न भाषाओं में भी दीक्षा पर एनसीईआरटी की पाठ्यसामग्री उपलब्ध है जिसका उपयोग विद्यार्थी कर सकते हैं।

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण
परिषद्, उदयपुर (राज.)
मो: 9413915956

प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता में मातृभाषा की उपादेयता

❐ डॉ. डी.डी. गौतम

प्रस्तावना–शिक्षा जीवन की कुँजी है, जो व्यक्ति को मानवीय प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख करती है। शिक्षा का मूल उद्देश्य शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक पक्षों का विकास करना है। किसी देश की प्रग्रति की पहचान वहाँ की शिक्षित पीढ़ी से की जा सकती है। इसे मनुष्य का तीसरा नेत्र भी कहा जा सकता है। शिक्षा, सभ्य समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप में होती है। शिक्षा को किसी भी दृष्टिकोण से आदि और अन्त में पारिभाषित नहीं किया जा सकता है। हाँ, इसे अनौपचारिक एवं औपचारिक की श्रेणी में विभेदित किया जा सकता है। औपचारिक शिक्षा वह है जिसे प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी को किसी विद्यालय अथवा शैक्षिक संस्था में प्रवेश लेकर अधिगम के रूप में ग्रहण करते हैं, जबकि अनौपचारिक शिक्षा परिवेश में अन्त:क्रिया करते हुए अनुभव से प्राप्त करते हैं। बच्चे को औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत बाल्यावस्था में प्रारम्भिक शिक्षा के माध्यम से तालीम दी जाती है।

प्रारम्भिक शिक्षा व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित होती है जो कि 0 से 5 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को दी जाती है। प्रारम्भिक शिक्षा को first step towards entering in the world of education कहा गया है। इस आयु वर्ग के बच्चों में प्रारम्भिक शिक्षा के माध्यम से संस्कार, भाषात्मक, शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक पक्षों का विकास करना ही मूल उद्देश्य निहित होता है। शिक्षा शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिक एवं जीवन का व्यापक अनुभव रखने वाले सिद्धान्तों के अुनसार 0–5 वर्ष की आयु के बच्चों की मानसिक एवं संवेगात्मक विकास की गति शेष आयु की तुलना में तीव्र होती है। प्रारम्भिक शिक्षा ऐसी हो जिसमें बच्चे नवीन सोच, मन में पवित्रता, राष्ट्र प्रेम, मस्तिष्क में प्रकाश, शरीर में स्फूर्ति तथा दूरदर्शिता की ओर बढ़ें तभी सुनहरे भविष्य का सपना साकार हो सकेगा। NCF –2005 की रूपरेखा में शिशु की देखभाल एवं बच्चों के सर्वांगीण विकास को प्रारम्भिक शिक्षा के स्तर पर महत्त्वपूर्ण माना गया

है क्योंकि इसके द्वारा बच्चे To make confident की ओर उन्मुख होते हैं।

दर्शन शास्त्रियों, विभिन्न आयोग एवं शिक्षा नीति के दस्तावेजों में दिए सुझावों एवं प्रावधानों में प्रारम्भिक शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों को इस प्रकार का वातावरण मिलना चाहिए जिससे स्वतंत्र रूप से अनुभवों के द्वारा सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो सके। वर्तमान में सामान्यतया सामाजिक प्रतिस्पर्धा में माता–पिता अति उत्साही व अति महत्वाकांक्षा के कारण अल्प आयु में ही बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में प्रवेश दिला देते हैं। अधिकांश ऐसे विद्यालयों में न तो शत–प्रतिशत अंग्रेजी भाषा में शिक्षण व्यवस्था होती है और ना ही परिवार एवं परिवेश में इस प्रकार का वातावरण होता है। माता–पिता एवं परिवार में भी इस प्रकार माहौल नहीं होता और ना हीं बच्चों की परवरिश विद्यालयों के अनुरूप हो पाती है। ऐसी स्थिति में बालक अवसाद से ग्रसित हो सकता है जिससे प्रतिकूल परिणाम देखने को मिलते हैं। इसका कारण बच्चों में ज्ञान के स्थान पर भाषा व किताबों का बोझ परिलक्षित होना हैं।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों की अन्तर्निहित क्षमताओं, समझ, सीख और योग्यता को प्रखर बना दे। इस कार्य को संपादित करने में मातृभाषा मददगार होती है। मातृभाषा में संस्कृत एवं परिवेश की झलक समाहित होती है। सीखने में मातृभाषा अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती है। प्राथमिक कक्षाओं में तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मातृभाषा का विशेष महत्त्व है। इसके माध्यम से विद्यालय और समाज को एक विशेष बंधन में बांधा जा सकता है। शिक्षण अधिगम को सरल, सहज और प्रभावी बनाने के लिए मातृभाषा का उपयोग सर्वदा उपयुक्त है, क्योंकि बच्चा जन्म से ही घर परिवेश में सुनता है, सीखता है फिर बोलता भी है। विद्यालयों में कक्षा–कक्षीय वातावरण सरल व सहज होना चाहिए जो कि संकोच मुक्त, आत्मविश्वास और आत्म सम्मान में ओत प्रोत हो। इस कार्य में भी मातृभाषा मददगार होती है। यदि शिक्षा में भावना व संवेदना नहीं तो ज्ञान के परिणाम अलग ही प्रदर्शित होते हैं।

जब बच्चा पूर्व प्राथमिक अथवा प्राथमिक कक्षा में प्रवेश लेता है तो शिक्षण–अधिगम का माध्यम मातृभाषा में हो तो वो कक्षा–कक्षीय वातावरण को सहज महसूस करता है। उसे शिक्षण के दौरान सुनी हुई भाषा के भावनात्मक अर्थ स्वत: ही समझ आने लगते हैं। यदि मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा का उपयोग शिक्षण प्रक्रिया में किया जाए तो बच्चों को बड़ा उबाऊ और बोझिल लगता है। अर्थात जो भाषा दैनिक जीवन में आम तौर से बोली जाती है चाहे वो परिवार में, समाज में अथवा शिक्षण संस्था में यदि उसी भाषा में पढ़ना या लिखना भी होता है तो सर्वाधिक प्रभावी होगा। इसे ही मातृभाषा में शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया कहते हैं। भाषा का दिनचर्या में उपयोग किए बिना सही व सार्थक समझ विकसित नहीं की जा सकती है। भाषा वहीं प्रभावशाली और उपयोगी होती है जिसे जिस रूप में बोला जाता है वैसे ही लिखा व पढ़ा जाता है। विचारों के आदान–प्रदान के लिए सामान्य भाषा का प्रयोग होना नितान्त आवश्यक है। बच्चा मातृभाषा में शिक्षण कर अन्य भाषा को सीखने की ओर उन्मुख हो सकता है।

संविधान एवं आयोग की दृष्टि में शिक्षा का माध्यम– प्राथमिक स्तर पर शिक्षा

के स्वरूप में गुणात्मक एवं सकारात्मक परिवर्तन और शैक्षिक उत्थान के उद्देश्य से समय-समय पर निरन्तर होते रहे हैं। इस हेतु विभिन्न आयोग, नीति, NCF–2005, शिक्षा का अधिकार कानून 2009 तथा NCF–2020 में NCF के अन्तर्गत वर्णित प्रावधान एवं सिफारिश निम्नानुसार है :-

- खैर समिति (1938)
  प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दी जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)
  प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा हो।
- कोठारी कमीशन (1964)
  प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने की सिफारिश की।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF–2005)
  प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
- नई शिक्षा नीति–2022 (NEP)
  कम से कम कक्षा तक मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण।
  भारतीय भाषा में गणित और विज्ञान की पठन सामग्री उपलब्ध कराना।
- भारतीय शिक्षा आयोग (हंटर कमीशन 1882)
  शिक्षा का माध्यम देशी होना चाहिए।

मातृभाषा की परिभाषा–वह भाषा जो मनुष्य जन्म लेने के बाद घर से लेकर परिवेश में सुनता और सीखता है तथा व्यक्ति की सामाजिक भाषाई पहचान को दर्शाता है। जो समस्त स्वरस से पूर्ण होती है, मातृभाषा कहलाती है।

भारतेंदु हरिशचंद्र– निज भाषा उन्नति अहें, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय के सूल

अर्थात मातृभाषा के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। हमारी भाषा हमारी माँ कहलाती है। माँ और भाषा को समान दर्जा दिया गया है इसलिए इसे मातृभाषा कहा गया है न कि पितृभाषा। प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी–विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा में होनी चाहिए शिक्षा में भावना व संवेदना नहीं हो तो ज्ञान के परिणाम अलग ही होंगे।

शिक्षा में मातृभाषा के उद्देश्य

- विद्यालय को घर और परिवेश से जोड़ना।
- देश प्रेम की भावना जाग्रत करना।
- बच्चों में अभिव्यक्ति के स्वतन्त्र भाव का माहौल बनाना।
- शिक्षार्थी और शिक्षक में संवाद की अभिवृद्धि।
- अधिगम को सरल, सहज, रुचिकर व स्थाई बनाना।
- सामाजिक स्तर की पहचान का विकास।
- संस्कृति व परम्पराओं की निरन्तरता बनाए रखना।
- परिवार व परिवेश की झलक का प्रदर्शन।
- बच्चों की अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास।
- सहज भाव से स्वयं सीखने के लिए तत्पर।

विश्व के शिक्षाविद् एवं शिक्षाशास्त्री इस आशय पर एकमत रहे कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा मातृभाषा में हो। अनेक शोध निष्कर्ष में यह सिद्ध हो चुका है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा के माध्यम के अलावा दूसरी भाषा में शिक्षा देने का अर्थ है, बच्चों के सोचने-समझने के बजाय रटने की प्रवृति को बढ़ावा देना। क्योंकि मातृभाषा से बच्चों में सृजनात्मकता, प्रेरकता, कल्पनाशीलता, तार्किक एवं बौद्धिक विकास के कौशल को सहज विकसित किया जा सकता है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि संस्कृति और जीवन मूल्यों की वाहक है। बालक मातृभाषा में पढ़ना शुरू करता है तब इसे शिक्षण बोझ नहीं लगता बल्कि आनन्द महसूस करता है। पूरे विश्व में शिक्षण शास्त्र विशेषज्ञ मानते हैं कि प्राथमिक शिक्षण मातृभाषा में ही होना चाहिए।

मिसाइल मैन एवं पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम–मैं अच्छा वैज्ञानिक इसलिए बना क्योंकि मैने गणित और विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में प्राप्त की।

भाषा की महत्त्वता– भाषा का सबसे महत्त्वपूर्ण कौशल सुनना है अगर किसी भाषा को हम सीखना चाहते है, तो उसे सुनने और बोलने का मौका मिलने पर हम आसानी से उस भाषा को सीख सकते हैं। किसी बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में लोगों के साथ संवाद में भाषा में नौ (9) आधारभूत कौशल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो क्रमश: सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, विचारों को समझना, व्याकरण की जानकारी, खुद से सीखना, भाषा का उपयोग और शब्द कोश पर पकड़ इत्यादि हैं।

संस्कृति के संरक्षण में भाषा के बाद दूसरा स्थान शिक्षा का है। हमारे देश में शिक्षा मुख्यत: तीन स्तर पर प्रदान की जाती है– प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च। इसमें कक्षा 1–5 तक की शिक्षा (प्राथमिक शिक्षा) को शिक्षा की नींव माना जाता है। हमारे संविधान के अनुच्छेद 350 (क) में घोषणा की गई है कि प्रत्येक राज्य और प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी का यह दायित्व है कि वह भाषाई दृष्टि से बच्चों की शिक्षा को प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा की समुचित सुविधाए उपलब्ध कराएँ। वस्तुत: होना यह चाहिए कि सभी बच्चों को प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाए क्योंकि इस स्तर पर शारीरिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास पर बल देने की जरूरत है न कि विषय ज्ञान पर। सांस्कृतिक मूल्यों में ही जीवन के मूल्य निहित होते हैं। सभी भाषाओं का संबंध बुद्धि से होता है किंतु मातृभाषा का संबंध हृदय से होता है। हमारे देश में 45 प्रतिशत लोगों की बोलचाल की भाषा हिंदी है, दूसरा स्थान बंगाली भाषा और तीसरे स्थान पर तेलुगू है।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के मातृभाषा में माध्यम के लाभ

- विचारों के आदान-प्रदान में सहजता।
- सीखने की क्षमता में अभिवृद्धि।
- सीखना सहज, सरल और प्रभावी।
- मूर्त से अमूर्त ज्ञान का विकास।
- संस्कृति एवं परिवेश की झलक का प्रदर्शन।
- विद्यालय व समाज में बन्धन की पहल।
- पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों का प्रवाह।
- कक्षा-कक्षीय वातावरण में सहजता।
- स्वत: ही समझने की प्रवृति का विकास।
- बच्चों में आत्मविश्वास और आत्म

सम्मान का विकास।

- संस्कृति, इतिहास और सामाजिक परम्पराओं को जोड़ने का माध्यम।
- शिक्षार्थी एवं शिक्षक के मध्य संवाद की स्थिति बेहतर व मजबूत।

शिक्षा में मातृभाषा के माध्यम में चुनौतियाँ

- शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों में स्थानीय भाषा की समझ का अभाव।
- अभिभावकों में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के प्रति रुझान एवं होड़।
- सुदृढ़ कार्य योजना के समुचित क्रियान्वयन का अभाव।
- क्षेत्रीय स्तर पर स्थानीय भाषा में विविधता।
- स्थानीय/मातृभाषा में पठन सामग्री की उपलब्धता का अभाव।
- शिक्षा में मातृभाषा के माध्यम के प्रचार-प्रसार का अभाव।

शिक्षा में अन्य भाषा के माध्यम से प्रतिकूलता– प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के अलावा किसी भाषा के माध्यम को अपनाया जाए तो बच्चे असहज महसूस करते हैं। वर्तमान में हमारे देश के ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक व्यवस्था एवं अभिभावकों में अति महत्त्वाकांक्षा एवं प्रतिस्पर्धा के कारण अन्य भाषा के माध्यम का बोझ डाल देते हैं जो Biological development of child में बाधक सिद्ध हो सकती है। शारीरिक व मानसिक रूप से कमजोरी का कारण बनती है साथ ही ऐसी स्थिति में बालक अवसाद से ग्रसित हो सकता है। उनकी सीखने की प्रवृत्ति, खोज करने की शक्ति, विचार करने की ताकत, साहस, धीरज, बहादुरी, निड़रता इत्यादि गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अत: प्राथमिक स्तर तक शिक्षा के अन्तर्गत बच्चों के ज्ञान व समझ को विकसित करने के उद्देश्य से मातृभाषा में शिक्षण करवाया जाना नितान्त आवश्यक है जिससे सीखना सरल व सहज होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी हो। जिससे बच्चों के भाषात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक एवं भावनात्मक के मूल्यों का विकास संभव हो सके।

शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा/Home Language के प्रयोग के उदाहरण– राजस्थान के सिरोही जिले के एक विद्यालय की कक्षा-2 में छात्र को चित्र की सहायता से बोलने के लिए कहा बच्चे ने चित्र देखकर बोला बंदर दवाई सोंट रहा है अर्थात बंदर दवाई का छिड़काव कर रहा है। इस वाक्य में बच्चे ने हिन्दी भाषा के साथ स्थानीय भाषा के शब्दों को समाहित करते हुए जवाब देने का प्रयास किया। अत: इस प्रकार यदि बच्चे प्रारम्भ में मातृभाषा का इस्तेमाल करते हैं तो, उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि स्थानीय भाषा के द्वारा संवाद के अवसर प्राप्त कर अपनी बात कह सके। यदि उन्हें ऐसा करने से रोका जाएगा तो हीन भावना से भी ग्रसित हो सकते हैं। अत: प्राथमिक स्तर पर शिक्षण-अधिगम कार्य स्थानीय के साथ-साथ मातृभाषा में किया जाना अपेक्षित है। इसी मंशा की नई शिक्षा नीति-2020 में FLN के अन्तर्गत व्याख्या की गई है जिससे बच्चे निड़र होकर अधिगम कर सके।

राजस्थान के धौलपुर में ग्रामीण परिक्षेत्र में प्राथमिक स्तर की कक्षा 1 व 2 में शिक्षक शिक्षण के दौरान यदि किसी बालक को हिन्दी भाषा में किसी वस्तु को धकेलने के लिए कहे तो शायद पूरी मंशा न समझ पाए और मूल बनकर प्रतिक्रिया करेगा और यदि इसी वाक्य को लाला जा समान हीर दे तो बच्चा अपने विवेक एवं स्थानीय भाषा के अनुभव से वस्तु को धकेलने का प्रयास करेगा। अर्थात प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में शिक्षण प्रक्रिया में भाषाओं का समावेश की महती भूमिका है। अत: बच्चे जिस भाव एवं भाषा को अपने परिवेश में इस्तेमाल करते है और समझते है यदि इसी माध्यम में शिक्षण करवाया जाए तो बच्चों के लिए सरल, सहज और प्रभावी प्रतीत होगा। अत: प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता के लिए भाषा का माध्यम, एक महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में स्थान रखती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा की उपादेयता एवं महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए महत्वांकित किया गया है।

हमारे वेदों में भी मातृभाषा की वरदायिनी देवी के रूप में व्याख्या की गई है। स्वामी अवधेशानंद गिरी के द्वारा मातृभाषा का अर्थ आत्माभिव्यक्ति से है। अर्थात ऐसी भाषा जिसमें स्वयं की संस्कृति, संस्कार और व्यवहार को सही अर्थों में अभिव्यक्त किया जा सके। मातृभाषा लोक संस्कृति एवं उज्ज्वल सांस्कृतिक परम्पराओं की संवाहक होती है। हमारी व्यवस्थाओं और नियमों में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण अधिगम के प्रावधान किए गए है, लेकिन इनका क्रियान्वयन अपेक्षित क्षमताओं से नहीं हो पा रहा है। यही कारण है कि वर्तमान परिदृश्य में सामाजिक प्रतिस्पर्धा और आपसी होड़ में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में अभिभावक अंग्रेजी माध्यम से बच्चों को अध्ययन करने के लिए प्रेरित करते हैं, लेकिन ऐसे विद्यालयों में ना तो शत-प्रतिशत अंग्रेजी भाषा को व्यावहारिक अपनाया जाता है और ना ही अध्यापन कार्य करवाने वाले शिक्षक वांछित भाषा की अच्छी समझ रखते है। यहाँ तक कि परिवार व परिवेश में भी उपयुक्त वातावरण नहीं मिल पाना है। ऐसी व्यवस्था में बच्चों के सम्मुख असमंजस की स्थिति उत्पन्न होती है जिससे बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव परिलक्षित होता है।

हाँ! यहाँ इस बात से कोई ऐतराज नहीं है कि मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा में शिक्षण व्यवस्था उपयोगी नहीं है, लेकिन प्राथमिक स्तर पर बच्चों को उसी भाषा में अधिगम करवाना चाहिए जो भाषा घर, परिवार व समाज में बोली जाती है तथा बच्चा जिसमें रहकर सुनता और बोलता है इसी भाषा को शिक्षा में माध्यम के रूप स्वीकार किया जाना न्यायोचित होगा। भाषा बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने एवं सर्वांगीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण घटक माना गया है। मातृभाषा में दी जाने वाली तालिम संकोच मुक्त, आत्मविश्वास और आत्मसम्मान से ओत-प्रोत होती है। अत: हमें संस्कृति संरक्षण, शिक्षा के उन्नयन एवं बच्चों को सचेष्ट बनाने के लिए प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के माध्यम से किए जाने के समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी ताकि एक प्रगतिशील और नवीन राष्ट्र निर्माण का सपना साकार हो सके।

अति. मुख्य ब्लाक शिक्षा अधिकारी
कुम्हेर-भरतपुर
मो: 9413671118

गुरु बिना जीवन पथ कोरा

❐ शशिकांत द्विवेदी 'आमेटा'

कहा जाता है कि 'यस्य स्मरण मात्रेण ज्ञानमुत्पद्यने स्वयम्' के अनुरूप 'श्री गुरुवे नमः' के विचार से एक विशेष ऊर्जा का आभास होता है। भारतीय संस्कृति में गुरु की गुरुत्ता (समता) और प्रभुता को स्वीकारा गया है। 'गुरु शरणं गच्छामि' की परम्परा का निर्वहन करते हुए शिक्षक को सम्माननीय माना गया है। रामचरित मानस के उत्तरकाण्ड में गुरु को भवसागर तारण कहा गया है। 'गुरु बिनु भवसागर तरई न कोई।' जो विरंचि संकर राम डाई।।' भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोपरि माना गया है। यहाँ गुरु को 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का संदेशवाहक ही नहीं बल्कि ज्ञान रूपी आलोक में प्रज्ज्वलित दीया माना है। पुराणों में ईश्वर के पश्चात् माता-पिता एवं शिक्षक को ही सबसे बड़ा गुरु माना है क्योंकि वे ही बालक में सुसंस्कार पैदा करते हैं। बिना गुरु के उसे सुसंस्कृत नहीं बनाया जा सकता है। ज्ञान प्रदान करने से ही गुरु पूज्य है।

गुरु शब्द अपने आप में गुरुत्व का एक सुबोध है। मूलतः गुरु बिना ज्ञान नहीं मिलता है। गुरु के मार्गदर्शन से ही राह सरल बनती है। 'गुरु बिना जीवन पथ कोरा' की कहावत चरितार्थ होती है। गुरु विशिष्ट गुणों एवं ज्ञान का वह खजाना है जिससे शिष्य को कुछ न कुछ प्राप्त होता ही रहता है। अथर्ववेद में एक स्थान पर कहा गया है कि गुरु आध्यात्मिक एवं बौद्धिक पिता होता था और शिष्य को अपनी मानसी संतान मानता था। वस्तुतः गुरु उच्च कोटि की गरिमा का जनक है। प्राचीनकाल में गुरु का आदर था क्योंकि शिक्षण उनका धंधा (व्यवसाय) नहीं था, वह उनका आनन्द था। धंधा बना लेने से अध्यापक ने गुरु की हैसियत खो दी है। गुरु बने बिना सम्मान मिल नहीं सकता और गुरु वह है नहीं। भारतीय संस्कृति में गुरु स्थान हमेशा वंदनीय रहा है। वह प्रजापति है, निर्माता है, पीढ़ियों का रचयिता है एवं संस्कृति का सूत्रधार है।

'सा विद्या या विमुक्तये या विद्या ददाति विनयं अथवा विद्या मानवस्य भूषणं' जैसे अमृत वचनों को प्रकाशित करने वाली अग्निशलाका

का नाम है शिक्षक....सुदामा और श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व को निखारने वाली संजीवनी का नाम है शिक्षक.... इसलिए यह कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि अध्यापक विद्यालय का दर्पण है।' शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है, उसे समाज का दर्पण भी कहते हैं। शिक्षक राष्ट्र की धरोहर है। वह अच्छा न्यायाधीश है।

गुरु तो ज्ञान के अथाह सागर है। शिक्षक गौरवपूर्ण कर्म के कारण ही शायद उसे गोविन्द से भी बड़ा बताया गया है। गुरु का महत्त्व सर्वकालिक है। गुरु का स्थान भारतीय संस्कृति में सर्वोपरि रहा है। हमारा अतीत अत्यंत गौरवमय रहा है। प्राचीनकाल में गुरु का पद सम्माननीय था। गुरु पद की महिमा अनन्त रही है। शिक्षक पद सर्वोपरि रहा है। हमारा भारतवर्ष जगद्गुरु के पद को अलंकृत करता रहा है। यह वह देश था जहाँ के नालन्दा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालयों में देश ही नहीं विदेशों से सहस्रों छात्र शिक्षा अर्जित करने आते थे और अपने आप को धन्य मानते थे।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कारवान शिक्षक ही राष्ट्र का आभूषण है। विनय, विवेक, विद्या, विनम्रता, विचारशीलता उसके ज्योति स्तंभ है। जो व्यक्ति ज्ञान और विवेक का आराधक हो और सत्य साधक हो, उसे शिक्षक या शैक्षिक चिन्तक न माने तो क्या संज्ञा दें। अगर भारतीय समाज में कोई सुधार एवं सद्परिवर्तन ला सकता है तो वह केवल शिक्षक ही है, इसमें सभी एकमत हैं।

विगत कुछ वर्षों से हमारी संस्कृति में बदलाव आया है। वातावरण में परिवर्तन हुआ है। पर्यावरण प्रदूषित हुआ है। परिवर्तन जीवन का शाश्वत नियम है- प्रगति और विकास का सशक्त माध्यम है। किसी भी देश में परिवर्तन करने का शिक्षा ही सशक्त माध्यम है। शिक्षा का लक्ष्य सम्पूर्ण मानव का निर्माण करना है। व्यक्ति की अंतर्निहित शक्ति को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। महान दार्शनिक एवं चिंतक प्लेटो के अनुसार शिक्षा नए समाज की रचना का, समाज के नवनिर्माण का सर्वश्रेष्ठ साधन है। शिक्षा को विकास का पर्याय माना गया है। यह वह साधना है, यह रचनाशीलता और नवोन्मेष वाली है और इस नवोन्मेष में प्राप्ति के स्थल है विद्यालय। विद्यालय राष्ट्र निर्माण का कारखाना है। इसमें तैयार होने वाला बालक कल का भारत है। विद्यालय अध्ययन अध्यापन का केन्द्र है। आज राष्ट्र को, समाज को आदर्श एवं चरित्रवान नागरिकों की अत्यंत आवश्यकता है। आदर्श नागरिकता का निर्माण करने के लिए उनकी नींव को आदर्श बनाया जाना जरूरी है। उसकी शुरूआत विद्यालय से ही होती है पर यह तभी संभव है जब विद्यालय आदर्श हो। वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा में नित नये परिवर्तन होकर गुणात्मकता की बात कर रहे है। विद्यालय में शैक्षिक पर्यावरण, शिक्षक की सकारात्मक भूमि महत्त्वपूर्ण है। विद्यालय की प्रसिद्धि और समाज का प्रभाव, कार्य करने वाले अध्यापकों पर निर्भर करता है।

मानव जीवन में शिक्षा का सर्वोच्च स्थान है। शिक्षा से तात्पर्य मात्र पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं अपितु चरित्र निर्माण भी है। शिक्षा और चरित्र निर्माण एक ही सिक्के के दो पहलू है। आज के मशीनी युग में बालकों के गिरते चरित्र के प्रति विद्वान चिंतित नजर आते हैं। संस्कारहीनता के भँवर में फँसे समाज को अब शिक्षकों से ही एक उम्मीद रही है। इस गुरुत्तर दायित्व का निर्वाह गुरुजन ही कर सकते हैं। अतः शिक्षकों को इस दिशा में चिंतन करना चाहिए।

समाज एक जीवित संस्था है। अतः परिवर्तन उसकी नियति है। शिक्षा समाज नहीं बदलती अपितु इसी परिवर्तन को स्थायी बनाने के साधन तथा क्षमता प्रदान करती है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार 'शिक्षा व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया है जो बच्चे को संस्कार देती है और

उसमें उपस्थित दिव्यता का प्रकटीकरण करती है।' हमें वह शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र बनता है, मन की शक्ति बढ़ती है, प्रतिभा का विस्तार होता है और आदमी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करना होता है। शिक्षा का नाता है- जीवन में श्रेष्ठतर मूल्यों का जन्म।

आज शिक्षा का तंत्र है शिक्षक, विद्यालय में सही शिक्षण आत्ममंथन बस इसी बिन्दु से शुरू होगा। शिक्षा की आज प्रमुख माँग है सुआचरण। आचरण चाहे अभिभावक का हो चाहे अध्यापक का, बच्चों के लिए सफल और सशक्त आदर्श वही है, जिसका आचरण श्रेष्ठ है। रविन्द्रनाथ टैगोर का इस सम्बन्ध में कहना था-''बालकों को शिक्षा शिक्षक ही दे सकता है। उसे उनके सम्मुख आदर्श आचरण का उदाहरण बनना चाहिए।

इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन में वर्णित है- हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र निर्माण होता हो। शिक्षक एवं अभिभावक का उत्तरदायित्व है कि बालक को सद्प्रवृत्तियों की ओर प्रेरित किया जाए ताकि उसे आत्मज्ञान हो सके। भारतीय संस्कृति में चरित्र को जीवन की धुरी माना गया है। हमारा जीवन चरित्र से ही चलता है। राष्ट्रीय सोच एवं राष्ट्रीय चरित्र निर्माण चाणक्य जैसे विचारशील, मननशील, अध्यापक ही कर पाते हैं। अतः शिक्षकों एवं उनके विभाग को इस दिशा में निर्णायक पहल करनी होगी।

शिक्षक सदैव समाज का हित चिंतन करता रहता है। शिक्षक समाज का निर्माता बाद में पथप्रदर्शक पहले है। आज आवश्यकता है कि श्रेष्ठ लोग शिक्षा के कार्य को सम्पन्न करें। बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। शिक्षक जो समाज में गुरु के रूप में आदर व सम्मान पाता था। आज वह इसलिए दुःखी है कि सम्मान के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। शिक्षक स्वयं विचार करे कि ऐसा क्यों हुआ? हमारा शिक्षकत्व क्यों संदेह के घेरे में पड़ गया? अधिक से अधिक आर्थिक लाभ उठाने की लालसा ने कर्त्तव्यपरायणता को भुला दिया है। गुरु हो या शिष्य, सबको अपने-अपने कर्त्तव्य का भली भाँति निर्वाह करना चाहिए। कर्त्तव्यपरायणता ही प्रगति का सूचक है। पर वर्तमान में एक गुरु अपनी गुरुता खो बैठा है। शिक्षक समग्र रूप से अपने दायित्वों का पालन करें तो राष्ट्र उत्थान हेतु अच्छे नागरिकों को तैयार कर सकता है। शिक्षकों का आदर्शवान एवं चरित्रवान होना-शिक्षक की भूमिका सबसे बड़ी है इस युग में। चरित्र की पृष्ठभूमि में सबसे अधिक महत्त्व शिक्षक का है।

उत्तरोत्तर प्रगति के लिए जरूरी है कि शिक्षक अपनी क्षमता का आकलन करें। इस क्षमता को नमन करते हुए एवं सम्मानित करने की परम्परा स्वागत योग्य है। शिक्षक राष्ट्र निर्माण की ओर कदम उठाएगा तो राष्ट्र का हर नागरिक अपनी अंतरात्मा से कह उठेगा- 'तन समर्पित, मन समर्पित और अपना जीवन समर्पित चाहता हूँ, हे शिक्षक तुझे मैं करना सब कुछ अर्पित।' सहयोग रहा व कार्य में दक्षता रही तो एक दिन फिर भारत जगत गुरु कहलाएगा। इस प्रकार से हमारा संयुक्त प्रयास ही इन बालकों को कंचन बना सकेगा। हमें अपनी मानसिकता छोड़नी पड़ेगी कि बच्चे नासमझ होते हैं। वे हममें अपना आदर्श खोजना चाहते हैं। अगर उन्हें इसकी प्राप्ति नहीं हुई तो वे भटक जाते हैं और फिर जन्म होता है एक ऐसी उच्छृंखल पीढ़ी का जो घर-परिवार, समाज व देश के लिए सिरदर्द बन जाती है।

प्रायः लोग कहते हैं कि शिक्षक के पास क्या है? उसके पास कुछ नहीं हो लेकिन वे लोग भूल जाते हैं कि शिक्षक को जो सम्मान मिलता है, उसे अरबपति सेठ भी खरीद नहीं सकता। आज देश में धन-दौलत की कमी नहीं है। कमी है अच्छे इंसान की। राष्ट्र निर्माता, शिक्षकों के लिए डॉ. राधाकृष्णन का जन्म दिवस आत्मविश्लेषण का दिवस है। शिक्षक दिवस का अवसर हो और आत्म मंथन न किया जाए तो फिर इस दिवस का महत्त्व ही क्या है? मैं भी शिक्षक रहा और आप तो अध्यापक हैं ही। आप पूजनीय हैं क्योंकि ज्ञानी हैं, गुणी है।

मैं अपेक्षा करता हूँ कि शिक्षक अपने स्वाध्याय, चिंतन एवं सृजन की जोत जलाएँ रखेंगे। क्योंकि साहित्य से जुड़ने का अर्थ जीवन से जुड़ना, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करना एवं समाज को दिशा देना है।

सेवानिवृत्त प्राध्यापक (हिन्दी)
फोरेस्ट चौकी के पास लोहारिया, बाँसवाड़ा-327605
मो: 9460116012

सुरक्षाकर्मी की सहृदयता

❑ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

बात काफी पुरानी है। मैं अपने परिजनों के साथ उत्तराखंड की यात्रा के लिए हरिद्वार, ऋषिकेश, गंगोत्री-यमुनोत्री की यात्रा करने के पश्चात् बद्रीनाथ जी की यात्रा के लिए बस से रवाना हुआ। उस समय बद्रीनाथ मन्दिर तक बस चालू हो चुकी थी। शाम को 5 बजे बद्रीनाथ पहुँचे तो वहाँ पहले से ही बहुत भीड़ थी, लम्बी कतारे थी। परिजन कतार के पीछे पूजा की थाली लेकर खड़े हो गए। अस्वस्थ होने के कारण मैं कतार (लाइन) में खड़ा नहीं हो सका।

निराश होकर मै पास ही पड़ी एक बेंच पर बैठ गया। सोच रहा था कि अब भगवान बद्री विशाल के दर्शन कैसे करूँगा? इसी सोच-विचार में था कि मंदिर का एक सुरक्षाकर्मी मेरे पास आया और बोला - 'बाबूजी! आप उदास लग रहे हैं। क्या भगवान ब्रदीनाथ के दर्शन नहीं करेंगे?' मैंने अपनी विवशता उसे बताई उसने मेरा हाथ पकड़ा और बोला- 'चलिए मेरे साथ में आपको दर्शन कराता हूँ।'

यह कहकर उसने मुझे मंदिर की सीढ़ियों के पास खड़े व्यक्तियों की पंक्ति में खड़ा कर दिया। अन्य लोगों ने आपत्ति की तो वह बोला- 'भाई देखो ये बुजुर्ग व बीमार है। हम सबका कर्त्तव्य बनता है कि ऐसे व्यक्ति की सहायता करें।' इस पर फिर कोई कुछ नहीं बोला।

मैं पूजा की थाली लेकर ममगृह में गया और दर्शन कर लौट आया। आते समय मैंने उस सुरक्षाकर्मी को धन्यवाद दिया और कुछ इनाम देना चाहा तो उसने इंकार कर दिया और कहा :- बाबूजी! यह तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम बुजुर्गजन की सेवा करें। आपका आशीर्वाद चाहिए, मुझे पैसे नहीं केवल प्रसाद दे दीजिए। उसने मुझसे प्रसाद लेकर उसे ग्रहण किया। सच है सेवा धर्म सबसे बड़ा धर्म हैं।

पूर्व शिक्षा उपनिदेशक एवं प्राचार्य (डाइट)
15 पंचवटी, पो-उदयपुर (राज.) 31300
मो. 7506375336

क्रियात्मक अनुसंधान और शिक्षा

❑ हरीश सुवासिया

हमारे भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधान कार्य की आवश्यकता है। अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण और सविचार प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य ज्ञान को बढ़ाना और परिमार्जित कर उपयोगी बनाना है। मानव ज्ञान के विकास के लिए अनुसंधान अत्यावश्यक है और तभी जीवन का विकास संभव है। अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण बौद्धिक क्रिया है, इसकी प्रक्रिया वैज्ञानिक होती है।

क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यावहारिक कार्यकर्ता वैज्ञानिक विधि से अपनी समस्याओं का अध्ययन, अपने निर्णय और क्रियाओं में निर्देशन सुधार और मूल्यांकन करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में समस्याएँ बहुत है। क्रियात्मक अनुसंधान कक्षा-कक्ष की विभिन्न स्थितियों की समस्याओं का हल खोजने, निदानात्मक मूल्यांकन और उपचारात्मक उपाय करने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण, उपयोगी और सामयिक सिद्ध होता है। निःसंदेह शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान का लक्ष्य नवीन शैक्षिक ज्ञान की खोज है जो उन समस्याओं को हल करने हेतु अनुसंधान शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं के निदान एवं उपचार में पर्याप्त सीमा तक उपयुक्त एवं कारगर सिद्ध होता है।

क्रियात्मक अनुसंधानों का अभिप्राय उन अनुसंधानों से है जिनका प्रमुख उद्देश्य शिक्षण संस्थानों की व्यावहारिक समस्याओं का हल खोजना है। शिक्षण के क्षेत्र में अब तक प्रायः मौलिक अनुसंधान एवं व्यावहारिक अनुसंधान होते आए हैं। इन दोनों प्रकार के अनुसंधानों में अनुसंधान कर्ता के लिए विद्यालय के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होना आवश्यक नहीं है। इस समस्या को हल करने के लिए शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान का विकास हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान का विचार सबसे पहले अमेरिका के कुछ शिक्षाशास्त्रियों द्वारा आरंभ किया गया था। इसमें प्रमुख रूप से कोलियर, लुइन, हेरिकन और स्टोफेन कोरे शामिल थे। स्टोफेन कोरे के मुताबिक क्रियात्मक अनुसंधान का अभिप्राय

उस प्रतिक्रिया से है जिसके द्वारा अभ्यासकर्ता अपने निर्णयों तथा प्रतिक्रियाओं का पथ-निर्देशन एवं मूल्यांकन करने के लिए अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने के प्रयत्न करते हैं।

किसी भी व्यवस्था के भली प्रकार संचालन के लिए उसके सदस्य ही उत्तरदायी होते है। उनके समक्ष समस्याएँ आती है, उसकी गहनता को कार्यकर्ता ही भली प्रकार समझ सकता है। अतः कार्यकर्ता को कार्यप्रणाली की समस्या के चयन करने तथा उसके समाधान ढूँढ़ने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वह अपने कार्य कौशल का विकास कर सकता है। कार्यकर्ता द्वारा स्वयं की कार्यप्रणाली की समस्या का चयन करने उसका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने एवं समाधान ढूँढ़कर वर्तमान क्रिया में सुधार करने की प्रक्रिया को क्रियात्मक अनुसंधान कहते है।

क्रियात्मक अनुसंधान इस प्रकार अनुसंधान की नवीनतम शाखाओं में से एक है। संक्षेप में कह सकते हैं कि क्रियात्मक अनुसंधान का अभिप्राय विद्यालय में संपादित की गई उस क्रिया से है जिसके द्वारा विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार, संशोधन एवं प्रगति के लिए विद्यालय के ही अभ्यासकर्ता जैसे शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रबंधक तथा निरीक्षक विद्यालय की समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान की प्रमुख विशेषता– क्रियात्मक अनुसंधान में विद्यालय की समस्याओं का विधिपूर्वक अध्ययन होता है। इसमें अनुसंधानकर्ता विद्यालय के शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रबंधक और निरीक्षक स्वयं ही होते हैं। इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य विद्यालय की कार्यप्रणाली में संशोधन कर सुधार लाना है। क्रियात्मक अनुसंधान संपादित करने में शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रबंधक और निरीक्षक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हैं। अनुसंधान के अंतर्गत तत्कालीन प्रयोग पर अधिक बल देते हैं। क्रियात्मक अनुसंधान के उत्पादक और उपभोक्ता दोनों ही स्वयं शिक्षक, प्रधानाध्यापक, प्रबंधक और निरीक्षक होते हैं। वीवी कामत ने अपने एक लेख में (कैन ए टीचर डू रिसर्च टीचिंग, 1975) भारत में अनुसंधान के कुछ क्षेत्रों का उल्लेख किया जो इस प्रकार है- भिन्न-भिन्न भाषाओं में विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों का शब्द भंडार, भारत में पब्लिक स्कूल, भाषा सीखने में भूले, विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों की ऐच्छिक क्रियाएँ, विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों की लंबाई, भार तथा अन्य शारीरिक लक्षण, भूगोल एवं इतिहास की अध्यापन पद्धतियाँ शामिल हैं। बालकों एवं बालिकाओं की अध्ययन अभिरुचियाँ, कुशाग्र बुद्धि बालकों की शिक्षा, मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की शिक्षा भी शामिल करने पर जोर था। भारतीय शिक्षाशास्त्रियों का शैक्षणिक क्षेत्र में योगदान, माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न आयु वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की मनपसंद क्रियाओं (हॉबीज) पर भी जोर दिया गया था। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताएँ, नगर तथा ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की उपलब्धियों में अंतर, शिशु विद्यालयों में पढ़े हुए तथा न पढ़े हुए बच्चों का तुलनात्मक अध्ययन की बात कही गई थी।

इन सूचियों पर गौर करने से इनमें कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जो क्रियात्मक अनुसंधान के अंतर्गत आती है। उन पर अनुसंधान होने से शिक्षा की अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं का समाधान संभव होगा और वे अनुसंधान राष्ट्र के

विकास में सहायक होंगे। शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान की समस्याओं का स्रोत स्वयं स्कूल होता है। स्कूल की कार्यप्रणाली में प्रत्येक समस्या का उद्‌गम खोजा जा सकता है। समस्या का उचित चयन करने के बाद उसके स्वरूप का विश्लेषण जरूरी है। इसका अभिप्राय समस्या को निश्चित रूप से स्थापित करना है। ऐसा करना अनुसंधान की सफलता के लिए आवश्यक चरण है। समस्या को परिभाषित करने के बाद उसका मूल्यांकन करना बहुत जरूरी है। इस मूल्यांकन में अनुसंधानकर्ता को समस्या के अपेक्षित परिणाम का ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, प्रबंधकों तथा निरीक्षकों को क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा कार्य करते हुए सीखने का अवसर मिलता है, जो ज्ञान कार्य करते हुए अर्जित किया जाता है वह अधिक स्थायी तथा व्यावहारिक होता है।

अनुसंधान जरूरी– भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अनुसंधान कार्य भी जरूरी है। शिक्षा के क्षेत्र में इसकी अधिक आवश्यकता है, क्योंकि अन्य क्षेत्रों में होने वाली उन्नति शैक्षिक क्षेत्र में उन्नति पर अवलंबित रहती है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा में कुछ नवीन और विशिष्ट अनुसंधान किए जाने आवश्यक है। इन अनुसंधानों में क्रियात्मक अनुसंधान को प्रमुख स्थान देना होगा, क्योंकि इस प्रकार के अनुसंधानों का स्कूलों की गतिविधियों तथा कार्य करने वाले व्यक्तियों से प्रत्यक्ष संबंध होता है। हमारे स्कूल और शिक्षा तब तक परंपरागत लीक पर ही कायम रहेंगे जब तक शिक्षक, शैक्षिक प्रयास, अभिभावक और खुद छात्र इसका मूल्यांकन नहीं करेंगे। शिक्षित व्यक्ति विद्यालय से बाहर आकर समाज एवं कार्यक्षेत्र में अपने को स्थापित नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति के लिए शिक्षा को जवाबदेह माना जाता है, इसलिए इसमें सुधार होना आवश्यक है। इस लिहाज से सभी के सहयोग से क्रियात्मक अनुसंधान किया जाना आवश्यक है। खुद छात्र भी क्रियात्मक अनुसंधान से लाभान्वित होंगे। साथ ही वे इसमें सहयोग और अपनी शैक्षिक क्षमता तथा योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित होंगे।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाला,
बिलाड़ा, जोधपुर (राज.)

अनूठी पहल : शिक्षा नेग

❐ भूरमल सोनी

'शिक्षा नेग' आर्थिक रूप से कमजोर होनहार विद्यार्थियों को काबिल बनाने का संबल है। उनका आत्मविश्वास जगाने वाली अनूठी योजना है। इसे सभी वर्गों को अपनाकर शिक्षा की अलख जगाने में अपनी भागीदारी तय करने की जरूरत है।

इसकी शुरूआत के लिए खास मकसद यह है कि समाज के आर्थिक रूप से कमजोर पढ़ाई में होनहार व अव्वल छात्र-छात्राओं को उच्च स्तरीय शिक्षा के मुकाम तक पहुँचाया जा सके और वे काबिल बन देश समाज की सेवा करें। देश में वैसे तो हर राज्य, शहर, गाँव एवं जाति धर्म के अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं को माना जाता है। राजस्थान में शादियों के अवसर पर कई नेगचार होते हैं, उनमें देवी-देवताओं, मंदिर, गौशालाओं, सेवा आश्रमों में सामर्थ्य अनुसार वर-वधू दोनों पक्षों द्वारा नगद रुपए उनके निमित्त किया जाता है।

सात फेरे सम्पन्न होने के बाद बेटी की विदाई देने से पहले समठणी परंपरा का प्रचलन राजस्थान के कई समुदायों में किया जाता है जिसमें वर-वधू बारातियों का स्वागत कर उन्हें सीख देने का रिवाज है, उस वक्त उपहार व आपस में लेन-देन होता है। लेन-देन के वक्त सर्वप्रथम देवी-देवताओं, मंदिर, धर्मशाला, श्मशान, पंडित, सफाईकर्मी, अनाथालय, पशु-पक्षियों के लिए श्रद्धानुसार राशि की घोषणा दोनों पक्ष स्वेच्छा से करते है। यह परम्परा सदियों से विभिन्न समाजों में आज भी निभाई जाती है। ठीक वैसे ही किसी के स्वर्गवासी हो जाने पर दान पुण्य की परम्परा के अलावा बाहरवें दिन उठावणी का रिवाज है। उस दिन भी मृत आत्मा की स्मृति में दान पुण्य के साथ नगद राशि श्मशान घाट, धर्मशाला, मंदिर गौशालाओं, सेवा आश्रमों में सामर्थ्य अनुसार धर्मार्थ संस्था के नाम से अलग से दी जाती है।

ऐसे में राजस्थान के जागरूक समाजों की अनूठी पहल की सराहनीय शुरूआत है। शादियों और गंगा प्रसादी के खर्च में से 'शिक्षा नेग' नाम से राशि एकत्र कर जरूरतमंद विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जा रही है। ताकि आर्थिक अभाव में वे उच्च शिक्षा से वंचित न रहे।

सर्वप्रथम 'शिक्षा नेग' जैसी शुरूआत राजस्थान के मारवाड़ में पाली के राजपूत समाज द्वारा आरंभ की। फिर इससे प्रेरित होकर अन्य समाजों ने भी इसी अनूठी पहल को अपनाकर अपने समाज के होनहार विद्यार्थियों को काबिल बनाने की ठानी। राजपूत समाज ने तो शिक्षा कोष ही बना डाला जिसमें समाज के लोगों ने विवाह व गंगाप्रसादी के खर्च में से शिक्षा नेग के रूप में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेकर राशि के लिए होड़ा-होड़ी मचने लगी है।

बाकायदा 'शिक्षा नेग' के लिए आचार संहिता बनाई गई है। ताकि किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो सके। विभिन्न समाजों में इस कार्य की सराहना करते हुए प्रचार-प्रसार करना शुरू कर दिया जिससे देश-विदेश से लोग अपने पूर्वजों की स्मृति में शिक्षा नेग के लिए राशि भेजने लगे हैं। राजपूत, राजपुरोहित, सीरवी समाज में तो शिक्षा नेग की अलख जगने लगी हैं। जरूरत है अन्य समाजों को भी ऐसे शिक्षा संकल्प की जो जरूरतमंद विद्यार्थियों को काबिल बनाने में अपना योगदान दे सकें।

अक्षय पात्र एवं भामाशाहों के प्रोत्साहन से सरकारी स्कूलों में लोगों द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है जिससे विद्यालयों का विकास किया जा रहा है। इसी प्रकार से अगर विभिन्न समाजों के लोग अगर 'शिक्षा नेग' जैसा कार्य मांगलिक अवसरों विवाह, विवाह वर्षगांठ, जन्मदिन, नामकरण संस्कार, सेवा निवृत्ति, गृह प्रवेश, नया व्यापार व गंगा प्रसादी आदि अवसरों पर भी 'शिक्षा नेग' के लिए राशि एकत्रित कर बच्चों के शिक्षा में सहायता करना चालू कर दे तो वाकई कोई प्रतिभाशाली विद्यार्थी आर्थिक अभाव के कारण अपनी पढ़ाई पूरी कर अपना भविष्य खुद बना पाएगा।

विवाह में दूल्हे-दुल्हन की बान भरवाई जाती है, स्टेज पर लिफाफा देने का रिवाज परवान पर है क्यों न अपने-अपने समाज में एक शिक्षा नेग देने की शुरूआत की जावे। स्कूलों तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए ऐसी पहल गाँव व शहर के बच्चों के भविष्य को निखारने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

कला शिक्षक
विश्वकर्मा गेट के बाहर, राम मंदिर के सामने,
बीकानेर (पश्चिम) राज.-334004
मो: 9079979733

युग निर्माता है शिक्षक

❐ हँसराज नागर

अध्यापक है, युग निर्माता। छात्र राष्ट्र के भाग्य विधाता। दुनिया के अधिकांश देशों में शिक्षकों को बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। क्योंकि लोगों का मानना है कि शिक्षक ही राष्ट्र के नागरिकों को सुसंस्कृत, सभ्य एवं शालीन बनाता है। वह अपने ज्ञान के द्वारा राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में योगदान देता है। इसलिए शिक्षकों को अन्य कार्मिकों की अपेक्षा अधिक प्रेम, स्नेह और सम्मान मिलता है। क्योंकि वह देश में भावी पीढ़ी को बेहतर नागरिक बनाने की शिक्षा देता है। शिक्षक का उद्देश्य सिर्फ रोजी कमाना नहीं होता है अपितु सामाजिक क्रान्ति करना होता है। इसलिए शिक्षक की नौकरी की तुलना पद और वेतन से नहीं की जाती अपितु मिलने वाले सम्मान से की जाती है।

प्राचीन काल से ही हमारे देश में शिक्षक के पद की गरिमा रही है। उस काल में भी शिक्षकों का बहुत सम्मान था। ज्यादातर राजा या सम्राट अपने गुरु अथवा शिक्षक से मिलने उनके गुरुकुल या आश्रम में जाया करते थे। यदि किसी कारणवश शिक्षक को राजा के पास आना पड़े तो राजा खड़े होकर उनका अभिवादन किया करते थे। तत्पश्चात उनको ससम्मान आसन दिया करते थे। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति में शिक्षक का पद आदरणीय रहा है। माता-पिता के बाद गुरु का ही स्थान हुआ करता था।

शिक्षकों ने इस देश का इतिहास बदला है। चन्द्रगुप्त जैसे साधारण बालक ने अपने गुरु चाणक्य की सहायता से मगध देश के नंदवंश को समाप्त कर विशाल साम्राज्य स्थापित किया और चक्रवर्ती सम्राट बनकर उन्होंने विदेशी आक्रांताओं से भारत भूमि की रक्षा की, यह सब उनके गुरु चाणक्य की नीति का ही कमाल था। यदि समर्थ गुरु रामदास जैसे शिक्षक नहीं होते तो छत्रपति शिवाजी जैसे राजा हमको कहाँ मिल पाते। वो स्वामी रामकृष्ण परमहंस ही थे, जिन्होंने नरेन्द्रनाथ दत्त जैसे साधारण युवक को विवेकानंद बना दिया। हमारा प्राचीन इतिहास

शिक्षकों के ऐसे गरिमापूर्ण कार्यों से भरा पड़ा है।

हमारे देश में प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन बड़ी संख्या में शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है। यह सम्मान उन शिक्षकों को मिलता है। जिन्होंने अपने गुण, कर्म और स्वभाव से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया हो। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में शिक्षकों को सम्मान देने के लिए शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

हमारे देश में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाने के पीछे एक इतिहास जुड़ा हुआ है। भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को हुआ था। डॉ. राधाकृष्णन अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों में एक शिक्षक एवं दर्शनशास्त्र के बड़े विद्वान थे। उनके छात्र उन्हें बहुत प्रेम करते थे। उनका मानना था कि शिक्षकों का दिमाग देश में सबसे अच्छा होना चाहिए क्योंकि देश को बनाने में उन्हीं का सबसे बड़ा योगदान होता है। सन् 1962 में उन्होंने भारत के राष्ट्रपति का पद संभाला तब उनके मित्र और शिष्य सहित अनेक लोग उनके पास गए और उनसे उनका जन्मदिन मनाने का आग्रह किया। तब डॉ. राधाकृष्णन ने इच्छा जाहिर की कि उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए। तब से भारत में डॉ. राधाकृष्णन को सम्मान देने के लिए उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

परंपरा यहीं नहीं रूकती उनके बाद भी भारत में कुछ राष्ट्रपति हुए जो अपने जीवन के शुरूआती दिनों में शिक्षक थे। बाद में राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद पर पहुँचे थे। इनमें डॉ. अब्दुल कलाम का नाम भी आता है। जो एक शिक्षक से वैज्ञानिक और फिर राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए। उन्होंने देश के परमाणु विकास कार्यक्रम को नई दिशा दी। वे शिक्षकों का कितना सम्मान करते थे। इसका एक उदाहरण उनके शपथग्रहण समारोह में देखने को मिला। जब डॉ. कलाम से पूछा गया कि आप शपथ ग्रहण समारोह में किसको बुलाना चाहोगे। तब उन्होंने उन शिक्षकों को बुलाया जिन्होंने बचपन में कलाम साहब को पढ़ाया था और उनका आशीर्वाद प्राप्त कर राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की। उनके शिक्षकों के लिए इससे बड़े गौरव की बात और क्या हो सकती थी? यहीं नहीं राष्ट्रपति के कार्यकाल की समाप्ति के बाद भी कलाम साहब ने शिक्षक के रूप में पढ़ाना जारी रखा और जीवन के अंतिम क्षणों तक वे बच्चों को पढ़ाते रहे।

यह तो कुछ उदाहरण है, जिससे पता चलता है कि देश में शिक्षकों के प्रति कितना सम्मान है। शिक्षक राष्ट्र के निर्माता होते हैं, जो देश की भावी पीढ़ी को गढ़ते हैं। शिक्षक की तुलना उत्कृष्ट साँचे से की जा सकती है। जिसमें देश के भावी नागरिकों को ढाला जाता है। शिक्षक केवल शिक्षा ही नहीं देता वरन वह बहुत सारे सामाजिक सरोकार के कार्य भी करता है। आज भी हमारे देश में ऐसे हजारों शिक्षक-शिक्षिकाएँ हैं जो शिक्षण के साथ-साथ सामाजिक सरोकार के कार्य कर रहे हैं। एक अच्छा शिक्षक अपने कार्यों की सुगंध चारों ओर फैलाता रहता है जिससे पूरा देश और दुनिया सुगंधित होते रहते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पीपलखेड़ी,
शाहाबाद, बारां (राज.)

शाला दर्पण : चिन्तन व अनुभव

❒ सरदार सिंह चारण

विभाग के आला अफसर श्रीमान नरेशपाल जी गंगवार साहब की नवाचारी सोच से शाला दर्पण 2016 में जब विभाग में प्रथम बार प्रकट हुआ। तब ऐसा प्रतीत हुआ था जैसा माननीय भूतपूर्व युवा प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने जब 1985 में देश में कम्प्यूटर युग व डिजिटल क्रांति की बात की थी, ठीक ऐसा ही दूसरा उदाहरण एक दशक पूर्व जब बैंकिंग के सभी कार्यों में कम्प्यूटर का आगमन आम-जन के लिए एक चर्चा का विषय बना, नकारात्मक सोच वाले लोगों की जुबान पर विभिन्न तर्कों से असंभव से कार्य को बिना संसाधनों व बिना धरातल निर्माण के हथेली पर सरसो उगाने जैसा प्रतीत हुआ था। लेकिन सशक्त मनोदशा, परिवर्तन की आकांक्षा, लीक से हटकर नवाचारी काम करने की सोच व नए कार्य करने के जज्बे व जुनून ने शाला दर्पण को आज बुलंदी के इस मुकाम पर पहुँचाया है।

यह उपलब्धि पूर्ण कार्य अथक प्रयासों, आदेशों की बदौलत ही पल्लवित होकर आज अपने यौवन की दहलीज पर पहुँच कर विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। हमारा शाला दर्पण देश व राज्य के अन्य विभागों के लिए एक आदर्श उदाहरण व प्रेरणा का स्रोत, मार्गदर्शक बन चुका है। शिक्षा के इस क्षेत्र में आई इस डिजिटल क्रांति ने विभाग के सभी अधिकारियों, शिक्षकों व लिपिक वर्ग तथा आमजन के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ, इसके आगमन से कार्य का सरलीकरण व विभागीय कार्य द्रुतगति व सटीकता से सम्पन्न होने लगे। स्कूल शिक्षा जगत में शाला दर्पण डिजिटल नवाचार एक मील का पत्थर बन चुका है। इसके आगमन से कार्यालय पद्धति का भी सरलीकरण हो गया, जैसे स्थाईकरण, प्रतीक्षाकाल प्रकरण इत्यादि तथा इसने 'स्कूल मेरे मोबाइल में' को विभाग का टैगलाइन बना दिया।

इसी से सम्बन्धित दूसरा आदेश प्रत्येक कार्मिक को कम्प्यूटर का बेसिक कोर्स (RSCIT) करने के निर्देश का परिणाम भी विभाग के लिए सार्थक सिद्ध हुआ। आज राज्य का प्रत्येक शिक्षक कम्प्यूटर का उपयोग बड़ी सहजता व सरलता से कर लेता है। जो विभाग के लिए एक सुखद संदेश है। स्टाफ लॉगिन से स्माइल-3 से विद्यार्थियों के नम्बरों का अंकन प्रत्येक शिक्षक द्वारा करवाने का नवाचार भी इस सत्र की बड़ी उपलब्धि रहा तथा संस्थाप्रधानों के लिए एक सुखद व सुकून भरा शीतल हवा का झोंका सिद्ध हुआ, काम से जी चुराने वाले के लिए सजग करता यह नवाचारी संदेश बहुत ही प्रशंसनीय लगा, भविष्य में सभी प्रभारी शिक्षकों के लिए शाला दर्पण पर इस प्रकार की व्यवस्था कर ऑन मॉड्यूल को इसमें जोड़ा जाना चाहिए जिससे प्रत्येक प्रभारी अपने प्रभार का ऑनलाइन कार्य स्वयं ही करे तथा उक्त मॉड्यूल केवल विद्यालय के अंतराल समय से ही ऐक्टिवेट होकर कुछ समय पश्चात बंद हो जाना चाहिए या सुबह शाम एक्टिव होना चाहिए जिससे विद्यालय का शिक्षण कार्य बाधित नहीं होगा तथा एक नये प्रभावी नवाचार के रूप में विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ विद्यार्थियों को शाला दर्पण पर फिडिंग सूचनाओं के आधार पर ऑटो जनरेट मिलना चाहिए। जिससे अकादमिक स्टाफ कक्षा शिक्षण कार्य पर अधिक ध्यान दे सके। भविष्य में शाला दर्पण पर दैनिक पोषाहार कार्य, शिक्षक दैनन्दिनी, अभिभावक फीड बैक विषयवार तथा अभिभावक फीड बैक मॉड्यूल संस्थाप्रधानवार भी किया जाना चाहिए।

विभिन्न मदवार प्राप्त राशियों व उसके आदेश तथा उपयोगिता प्रमाण पत्र भी शाला दर्पण पर ऑनलाइन किया जाना चाहिए। ऑनलाइन दीक्षा/अन्य सभी ट्रेनिंग का समय भी विद्यालय समय पूर्व या पश्चात होना चाहिए। खेलों में गिरते स्तर सुधार हेतु शाला दर्पण पर खेल सामग्री का मॉड्यूल दैनिक खेल कार्यक्रम का दैनिक लाइव वीडियो अपलोड करने का तथा खेलों में संकुल, ब्लॉक, जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर सहभागिता का विवरण व प्रगति रिपोर्ट का मॉड्यूल बनाकर अपलोड की अनिवार्यता के साथ सम्मिलित किया जाना चाहिए तथा एपीआर भी शाला दर्पण से कार्य के आधार पर ऑटो जनरेट सिस्टम करना चाहिए।

प्रत्येक शिक्षक का दिन में एक कक्षा में पूरे कालांश शिक्षण वीडियो अपलोड का भी प्रावधान शिक्षक दैनन्दिनी के साथ जोड़ते हुए किया जाना चाहिए तथा एपीआर भी शाला दर्पण से कार्य के आधार पर ऑटो जनरेट सिस्टम करना चाहिए तथा शिक्षक दैनिक उपस्थिति को जीपीएस बेस बनाकर आगमन प्रस्थान का स्टाफ लॉगिन से की जाए तथा संस्थाप्रधान द्वारा उसे साप्ताहिक प्रमाणित करने का प्रावधान रखा जाना चाहिए तथा उक्त उपस्थिति को वेतन बिल के साथ लगाने व बनाने की अनिवार्यता की जाए।

विभाग के उच्चाधिकारियों द्वारा सदैव यह आदेश जारी होते रहे हैं कि समस्त सूचनाएँ शाला दर्पण से ऑनलाइन निकालेंगे लेकिन नीचे के स्तर पर अभी भी हार्ड कॉपी में सूचना माँगने की वाट्सअप ग्रुप पर बाढ़ आई रहती है। पीईईओ तो इन सूचनाओं के मक्कड़ जाल से ऊभर ही नहीं पाता तब तक नई सूचनाएँ नए टिड्डी दल की तरह और जन्म ले लेती है। जो राज्य की शिक्षा व शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर रही है। जिस ओर विभाग का ध्यान कम सूचना प्राप्ति पर अधिक हो रहा है। वर्तमान में जो देश व भावी पीढ़ी के ज्ञानप्राप्ति के मार्ग में बड़ी बाधा सिद्ध हो रहा है।

शिक्षक पुरस्कार व उत्कृष्ट विद्यालय पुरस्कार हेतु डाटा शाला दर्पण पर प्रत्येक शिक्षकवार व स्कूलवार प्रगति रिपोर्ट से ऑटो जनरेट कर मॉड्यूल में प्रावधान किया जाना चाहिए। आवेदन माँगने का प्रावधान हटाना चाहिए।

शिविरा पत्रिका का डिजिटल रूम स्टाफ लॉगिन के माध्यम से प्रत्येक शिक्षक तक पहुँच बनाए तो एक साहित्यिक नवाचार सिद्ध हो सकता है। शाला दर्पण पर एक सर्च मॉड्यूल को भी एड किया जाना चाहिए। कई शिक्षकों को कार्य करने में आसानी रहेगी व बार-बार होम पेज हिन्दी व अंग्रेजी में बदलने को रोकने ऑप्शन भी लेनदेन चयन के रूप में दिया जाना चाहिए।

वर्तमान शाला दर्पण को देखने व उपयोग के बाद जो सुझाव व कठिनाइयाँ मुझे समझ में आई उसके अनुसार निम्न सुझाव वास्ते परिवर्तन हेतु सादर प्रेषित है अभी और भी कई सुझाव इसमें आ सकते है और मेरे सुझाव हटाए भी जा सकते हैं।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिशनगढ़,
सायला, जालोर (राज.)-343042
मो: 9001165745

गाँधीजी की साहित्यिक कृतियाँ

❐ डॉ. बनवारी पारीक 'नवल'

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी सर्वतोमुखी प्रतिभा में अन्यतम है। उनका साहित्यानुराग एवं साहित्य सृजन, जिनका स्वयं का सारा जीवन ही साहित्यामृत है, उन गाँधी विरचित पुस्तकों की संख्या कम नहीं, करीब चालीस हैं। आपकी इन कृतियों का प्रकाशन सर्वसेवा संघ, सस्ता साहित्य मंडल, नवजीवन, सर्वोदय मंडल आदि ने करवाया। आत्मकथा के अतिरिक्त राष्ट्रपिता की महत्त्वपूर्ण रचनाओं में अनासक्ति योग, सर्वोदय, मेरे सपनों का भारत, विद्यार्थियों को संदेश, महिलाओं से, पंचरत्न, रामनाम, दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, बापू की सीख, हिन्द स्वराज्य इत्यादि उल्लेखनीय हैं। 'नवजीवन' नामक अखबार भी गाँधीजी ने निकाला था।

आत्मकथा लेखन साहित्य की अनूठी विधा है, जिसमें लेखक ईमानदारी से स्वयं के बारे में लिखता है। बापू की आत्मकथा में उनके जीवन, सिद्धांत व कार्यपद्धति वर्णित है। इतनी सच व बेबाक स्वोद्घोषणा विश्व के किसी ग्रंथ में शायद ही मिले। यह लेखक के पारदर्शी व्यक्तित्व से ही संभव है। इस संबंध में जाने-माने चिंतक व साहित्यसेवी कमल किशोर गोयनका का कथन है-'आदर्श पुरुषों में एक बड़ी सिफ़त (विशेषता) यह होती है कि वे अपनी गलती तस्लीम करने (मानने) में जरा भी आगा-पीछा नहीं करते।' गाँधी सरीखे विशुद्ध आत्मालोचक के लिए प्रसिद्ध पाश्चात्य वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन कहते हैं- 'आने वाली पीढ़ियाँ मुश्किल से विश्वास करेगी कि हाड़-माँस का ऐसा चलता-फिरता आदमी हुआ था।' चाहे बीड़ी पीने की लत हो, माँसाहार की बात हो, चोरी की कुटेव हो, औसत विद्यार्थी होना हो, विषयासक्ति हो, गोरे अफसरों द्वारा अपमानित होने के वाकिये हो...आदि सारी बातें बिना लाग-लपेट के अपनी इस आत्मकथा में साफ-साफ लिखी हैं। वे मानते थे कि इससे आत्मनिरीक्षण होता है, जो आत्म परिष्कार का पथ प्रदर्शित करता है और यही तो सत्य के प्रयोग हैं।

बापू का अनासक्ति योग ग्रंथ गीतानुवाद है, जो उन्होंने अपने ढंग से किया है। इस अनुसृजन की प्रेरणा उन्हें तिलक की कृति 'कर्मयोगशास्त्र' से मिली। गाँधी कहते हैं कि गीता में भौतिक युद्ध के बहाने मनुष्य मात्र के हृदय में हर वक्त चलने वाला द्वंद्वयुद्ध ही वर्णित है। वे मानते हैं कि मानव शरीर ही कुरुक्षेत्र है, जिसमें भली-बुरी वृत्तियाँ कौरव-पांडवों की भाँति लड़ती रहती हैं। इस अनूदित कृति में गाँधी ने कर्म को धर्म के स्तर पर लाकर धर्म को संकीर्णता के घेरे से बाहर निकालने का पुण्य किया। उनके अनुसार निष्काम कर्म पथ पर चलना आदमी का परम धर्म है, जिससे सुख-शांति मिलती है।

द. अफ्रीका के जोहान्सबर्ग से नेटाल की रेलयात्रा में गाँधी ने प्रख्यात लेखक जॉन रस्किन की पुस्तक 'Unto This Last' पूरी पढ़ डाली और नई दृष्टि पाई। इस किताब पर सर्वोदय नामक आपकी अनूदित कृति आई, जिसकी मुख्य बातें है-सबके भले में हमारा भला है, वकील व नाई के काम की कीमत समान होनी चाहिए, मजदूर-किसानों का सारा जीवन ही सच्चा जीवन है। इस पुस्तक में राष्ट्रपिता ने सत्य को 'पारसमणि' माना। वे मानते थे कि सत्यपथ पर चलकर देशवासी इस पुण्यधरा को वापस स्वर्णभूमि (सोने की चिड़िया) बनाएँगे।

'मेरे सपनों का भारत' भी बापू की अन्यतम रचना है। इसकी भूमिका के बारे में हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने कहा-'स्वतंत्रता तो हमने गाँधीजी के नेतृत्व में प्राप्त कर ली, अब आगे की जिम्मेदारियों को निभाना हमारा काम है।' आप आगे कहते हैं-'गाँधी के उसूलों पर चलते हुए अब हमें इस देश का नवनिर्माण करना है, राजनैतिक-सामाजिक आदि सर्वतोमुखी विकास करना है।' इस ग्रंथ में महात्माजी भारत को भोगभूमि नहीं, कर्मभूमि मानते हैं। अपने-पराए का भेद भूलकर सादा जीवन और ऊँचे चिंतन पर बल देने वाले गाँधी ने यह श्रमनिष्ठा, साध्य की प्राप्त्यार्थ साधन की शुद्धता, कर्त्तव्य व अधिकार में तारतम्य, सांप्रदायिक ऐक्य, धार्मिक सहिष्णुता आदि पर जोर दिया। उक्त मंशाओं के लिए आपने 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' इस उपनिषद मंत्र का उद्घोष करते हुए सत्याग्रह, ग्रामोद्योग, नई तालीम, नारी उत्थान जैसी बातें भी की है।

गाँधीजी ने एक अन्य पुस्तक 'महिलाओं से' में नारियों का आत्मसम्मन लौटाने का प्रयास किया है। साथ ही साबित भी किया गया है कि अवसर मिले तो वे भली भाँति जिम्मेदारी उठा सकती हैं। तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती व राष्ट्रीय संत स्वामी विवेकानन्द को रेखांकित करते हुए उन्होंने 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' की तरह कहा कि स्त्रियों का सम्मान करके ही कोई देश उन्नत हो सकता है। नीतिशतककार भर्तृहरि के 'केयूराणि न भूषयन्ते न हारा न चन्द्रोज्ज्वला...' की छाया में गाँधी इसी पुस्तक में आभूषण प्रिय भारतीय नारियों से कहते हैं कि धातु व पत्थरों को लादने से शरीर की सजावट नहीं होती, वह तो हृदय की पवित्रता एवं आत्मा की सुन्दरता से होती है।

महात्मा गाँधी अपनी पुस्तक विद्यार्थियों को संदेश में भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के उपासक पूर्वोक्त यूरोपीय विद्वान मैक्समूलर को उद्धृत कर कहते हैं-'हमारा धर्म 'Duty' (कर्त्तव्य) के चार वर्णों में समाया है, न कि 'Right' (अधिकार) के पाँच वर्णों में।' आप साक्षरता की बजाय चरित्र निर्माण वाली शिक्षा के हिमायती थे। जैसा कि ऊपर भी कहा, वे स्वदेशी भाषाओं में शिक्षण के प्रबल पक्षधर थे। उनके अनुसार अंग्रेजी भाषा के अनेक नुकसानों में से एक हमारी सांस्कृतिक प्रतिभा का हनन भी है।

अपनी एक अन्य महत्त्वपूर्ण कृति पंचरत्न में बापू ने मुस्तफा कमाल पाशा के राष्ट्र प्रेम का सजीव शब्दचित्र खींचा है। यहाँ वे कहते हैं-'मेरे प्यारे देश! मेरा प्यार, रक्त, श्वांस, बुद्धि, व्यक्तित्व, विचार और दिल ये सभी मैं तुझे सौंपता हूँ। तू ही मेरा जीवन है।' 'हृदय नहीं पत्थर है वह, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' कविवर रामधारीसिंह दिनकर की इस काव्योक्ति

की भाँति ही पाशा के विचारों से अभिभूत गाँधी का कथन है-'वे पत्थरदिल दया के पात्र नहीं, जिनमें स्वदेश प्रेम का जोश ही नहीं।'

राष्ट्रपिता की एक प्रमुख पुस्तक नीति धर्म है। इसमें नीति की स्पष्ट व्याख्या करते हुए आपने कहा कि मशीनी कार्य व विवेकी कार्य में अंतर होता है। इस ग्रंथरत्न में वे आगे कहते हैं कि जो मनुष्य शुद्ध है, द्वेषरहित है, अनुचित लाभ नहीं उठाता, पवित्र मन से आचरण करता है, वही सुखी और धनी है। आग रहित माचिस की तिल्ली भला लकड़ियों को कैसे सुलगा सकती है। ऐसे ही अनैतिक आदमी अन्यों को क्या सिखाएगा?

इसी तरह बापू की अन्य कृतियाँ भी अत्यंत प्रेरणादायी हैं। इन सबके अध्ययनोपरांत एक बात समझ में आती है कि वे जरूरत पड़ने पर 'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्' की मान्यता वाले बन जाते थे। अर्थात कुछ पुराने (अप्रासंगिक) विचारों को छोड़कर तत्परता से नए विचार अंगीकार कर लेते थे। एक जगह आप लिखते हैं- 'एक ही विषय पर मेरे दो लेख पढ़ने पर विरोध लगे, तो बाद वाले लेख को प्राणभूत मानें।' गाँधीजी उक्त गद्य रचनाओं के साथ ही पद्य लेखन में भी सिद्धहस्त थे। यथा-उनकी कविता- 'सेवक की प्रार्थना' की कुछ पंक्तियाँ-

हे नम्रता के सम्राट,
दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी
ताकि देश को हम ज्यादा समझें
और ज्यादा चाहे।।

इस प्रकार विराट व्यक्तित्व के स्वामी, महात्मा गाँधी के भीतर बिराजे मंजे हुए साहित्यकार के दर्शन किए हमने। आपकी कृतियों के अनुशीलन कर्ता को अनायास ही बहुत कुछ मिल सकता है। किन्तु यह प्रतिफल उन्हें सुलभ होगा जिनका जीवन खुली किताब हो। ये महात्मा कृत्रिमता से सर्वथा परे, सच्चे धार्मिक, ईमानदार राजनेता एवं वास्तविक जनसेवक थे। उनकी साहित्यिक सुरसरी में अवगाहन देशभक्ति का पुण्य मिलना सुनिश्चित है।

प्राध्यापक-भूगोल
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फतेहनगर,
उदयपुर (राज.) मो: 9602329966

रोजगारपरक भाषा बने हिंदी

❐ ठाकरराम प्रजापत

अगर हम देश में हिंदी को लेकर लोगों के मन में भाव देखें तो तस्वीर बिल्कुल धुंधली नजर आती है। रीडरशिप सर्वे और प्रसार संख्या के आंकड़ों के जारी होने के बाद एक बार फिर से यह बात साबित हो गई कि पूरे देश में हिंदी के पाठक सबसे ज्यादा हैं। हिंदी और अंग्रेजी के अखबारों के बीच प्रसार संख्या और पाठक संख्या दोनों का फासला भी बहुत बड़ा है। बावजूद इसके देश का हिंदी भाषी मानस अंग्रेजी को अपनाने के लिए ताबड़तोड़ कोशिश कर रहा है।

आज हिंदी भाषी प्रदेशों में तकरीबन हर माता-पिता की इच्छा होती है कि उनकी संतान किसी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़े। नतीजा यह हुआ कि हर गली मोहल्ले में अंगेजी माध्यम के स्कूलों की भरमार लग गई है। इन स्कूलों में ना तो बच्चों को ठीक से हिंदी पढ़ाई जाती है और ना ही अंग्रेजी। बच्चों के भाषा संस्कार का विकास ही नहीं हो पाता है। कहावत है ना कि 'माया मिली ना राम' ना अंग्रेजी मिल पाती है और हिंदी से भी वे दूर होते चले जाते हैं।

दरअसल यह एक मानसिकता है। आप अपने आसपास ही देखें तो पाते हैं कि मोहल्ले की परचून की दुकान पर हिंदी में बात करने वाला शख्स जब किसी मॉल में खरीदारी के लिए पहुँचता है तो वहाँ वह फौरन हिंदी का त्याग कर देता है और मॉल की दुकान में घुसते ही एक्सक्यूज मी। टूटी फूटी अंग्रेजी बोल कर भी उनका सीना चौड़ा हो जाता है। यह हमारी वह मानसिकता है जो आजादी के पचहत्तर साल बाद अब तक गुलाम है। अंग्रेजी में बोलना फैशन नहीं है बल्कि अपने को श्रेष्ठ साबित करने की तमन्ना है। अपनी कुंठा को छुपाने का तरीका है। हम अपनी भाषा की अस्मिता और उसकी ताकत को पहचान पाने में बुरी तरह विफल रहे हैं।

सवाल इस बात का अवश्य है कि हमें हिंदी के व्याकरण और उसके नियम कानूनों की रक्षा करनी चाहिए तथा हिंदी को विश्व में उसकी सही जगह दिलाने के लिए हमें थोड़ा लचीला रुख अपनाना होगा। आज हिंदी के तमाम लोग जिन पर हिंदी को बढ़ाने का दायित्व है वे बाजार को कोसते हुए घर बैठे हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए क्या कर रहे हैं, यह ज्ञात नहीं है। बाजार के अपने नियम और कायदे होते हैं। वे अपने हिसाब से हर चीज का उपयोग करना चाहती हैं। लेकिन बाजार आज एक हकीकत है, उससे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता, ना ही बाजार की ताकत से टकराया जा सकता है। तो ऐसे में सही रणनीति तो यही होनी चाहिए कि बाजार की ताकत का इस्तेमाल अपने हक में करें। आज हिंदी को बढ़ाने के लिए बाजार का इस्तेमाल करने की जरूरत है, बाजार को कोसने कि नहीं।

आज जरूरत इस बात की है कि हिंदी के विकास के लिए बनाई गई संस्थाएं एकजुट होकर रणनीति बनाएँ और बाजार को औजार के रूप में इस्तेमाल करते हुए उसके साथ गए लोगों को जोड़ने की पहल करें। हिंदी को अगर ताकतवर बनाना है तो उसको नए क्षेत्रों में लेकर जाना होगा। हिंदी को अन्य भारतीय भाषा के दुश्मन के तौर पर पेश नहीं करके उसको दोस्त की तरह से स्थापित करना होगा। सरकार से हिंदी के विकास और अहिंदी भाषाई क्षेत्रों में हिंदी के फैलाव के प्रयास की अपेक्षा करना व्यर्थ है। इस दिशा में हिंदी के लोगों को खुद ही आगे बढ़कर पहल करनी होगी। एक ऐसी पहल जिसमें हिंदी के लोगों को अपनी भाषा को लेकर आत्मविश्वास बढ़े और गैर हिंदी भाषियों के बीच हिंदी को लेकर दुश्मनी का भाव खत्म हो। हिंदी बाजार की भाषा बनने की राह पर बहुत आगे निकल गई है, और अब जरूरत है कि इस भाषा को रोजगार से जोड़ा जाए। जिस दिन हिंदी को रोजगार की भाषा बनाने में हम कामयाब हो गए उस दिन हिंदी की ताकत कई गुना बढ़ जाएगी और साथ ही हिंदी की स्वीकार्यता और इज्जत दोनों बढ़ जाएगी।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीमरलाई
गाँव, पं.स.-बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राज.)
मो. 9680775712

भारतीय ज्ञान परम्परा सनातन काल से समृद्ध और गौरवशाली

❒ प्रकाश वया, भीण्डर

व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र जीवन की ऊर्ध्वगति के लिए शिक्षा का महत्त्व और उपादेयता आइने की तरह स्पष्ट है, जग जाहिर है। शिक्षा, संस्कृति और संस्कार भारतीय जीवन दर्शन का मूलाधार हैं- चूँकि शिक्षा मनुष्य को एक सच्चे और अच्छे इंसान के रूप में गढ़ने और तराशने का ईश्वरीय कार्य करने के निमित्त हमारी संस्कृति के अनुरूप उसमें संस्कारों का आरोपण करती है और उन्हीं संस्कारों से उसके व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रकटीकरण होता है। वस्तुतः संस्कार व्यक्ति के सर्वांगी जीवन का परिष्करण और परिशोधन है और उसे शाश्वत जीवन मूल्यों को आत्मसात् कर जीने का अभ्यासी बनाते हैं। सनातन काल से भारतीय जीवन दर्शन में विद्या, ज्ञान और शिक्षा जैसे सात्विक शब्दों का महत्त्वपूर्ण पक्ष रहा है। इन शब्दों में सुधोपम जीवन रस भरा पड़ा है जो कि मानव जीवन की अपेक्षा से संसार सागर से पार उतारने का आध्यात्मिक उपक्रम है।

जैन दर्शन में सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र जिनको 'त्रिरत्न' की संज्ञा से निरूपित किया गया है, यहाँ सम्यक शब्द शुद्धता का पर्याय है इस अपेक्षा से इस रत्नत्रयी ज्ञान, दर्शन, चरित्र की जो शुद्धता है वो तीनों की एक रूपता का दिग्दर्शन कराती है और इनमें कोई परस्पर विरोध नहीं है।

सभी धर्मों में ज्ञानार्जन को प्रमुखता दी गई है जिसके माध्यम से मानव देहधारी जीवात्माएँ अपने असली स्वरूप को समझ सकती है, श्रीमद् भागवत गीता में योगेश्वर कृष्ण ने तेरहवें अध्याय के श्लोक संख्या 8 से 12 में ज्ञान को परिभाषित करते हुए मनुष्य जीवन की सार्थकता के लिए कुछ शाश्वत जीवन मूल्यों को ज्ञान रूप घोषित किया है-

(8)

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम।
आचार्योपसानं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः।।
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्यु जराव्याधिदुः खदोषानुदर्शनम्।।

(10)

आसक्तिरन भिष्वगंहः पुत्रदार गृहादिषु।
नित्यं च सम चित्तत्व भिष्टानिष्टोपयत्तिषु।।

(11)

मये चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वभर तिर्जनसंसदि।।

(12)

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानम् यदतोऽन्यथा
(क्षान्तिः)

विनम्रता, दंभहीनता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता (आर्जव) प्रामाणिक गुरु के पास जाना, पवित्रता, स्थिरता, आत्मसंयम, इन्द्रियतृप्ति के विषयों का परित्याग, अहंकार का अभाव, जन्म, मृत्यु, वृद्धावस्था तथा रोगों के दोषों की अनुभूति, वैराग्य, संतान, स्त्री, घर तथा अन्य वस्तुओं की ममता से मुक्ति, अच्छी तथा बुरी घटनाओं के प्रति समभाव, मेरे प्रति अनन्य भक्ति, एकान्त स्थान में रहने की इच्छा, जन समूह से बिलगाव, आत्म साक्षात्कार की महत्ता को स्वीकारना तथा परम सत्य की दार्शनिक खोज- इन सबको मैं ज्ञान घोषित करता हूँ।

भगवान कृष्ण द्वारा घोषित ज्ञान के चौबीस तत्व ही मानव जीवन की सफलता के प्रमुख कारक हैं, जिनके अभाव में 'मनुष्य' पशुता से ऊपर नहीं उठ सकता है जो कि शाश्वत सत्य है जिसको कोई धर्म और दर्शन नकार नहीं सकता। असल में इन चौबीस ज्ञान तत्वों से आपूरित शिक्षा और विद्या ही मानव जीवन के लिए फलदाई और शुभंकर साबित हो सकती है। सामान्यतया शिक्षा द्वारा मनुष्य प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान को हासिल कर सकता है, सच्चाई यह भी है-भारतीय ज्ञान परम्परा सनातन काल से काफी समृद्ध और गौरवशाली रही है, मानव सभ्यता के विकास का इतिहास इस बात का साक्षी है कि तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि शिक्षण संस्थाओं की वैश्विक प्रतिष्ठा रही है और कई ख्यातनाम विदेशी यात्रियों ने इन विश्वविद्यालयों में बौद्ध धर्म के साथ ही चिकित्सा विज्ञान, दर्शन, तर्कशास्त्र, गणित, ज्योतिर्विज्ञान और व्याकरण का अध्ययन किया जो प्रामाणिक तथ्य है।

ऐसी समृद्ध ज्ञान सम्पदा के रहते अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय ज्ञान, परम्परा और तात्विक चिंतन को शैक्षणिक पाठ्यक्रम में नजरअंदाज किया, जो कि एक साजिश और षड्यंत्र का हिस्सा था।

अंग्रेजों ने बड़ी चालाकी और चतुराई से भारतीय ज्ञान परम्परा और भारतीय भाषाओं को पाठ्यक्रमों से अलग करने का दुष्कृत्य कर भारतीय मनीषा के साथ जो छल किया निश्चित रूप से विचारणीय है, सच्चाई यह भी है कि इस प्रकार का कार्य इन आक्रांताओं ने भारत में ही नहीं किया अपितु उन सभी देशों में किया जिन्हें उन्होंने अपना उपनिवेश बनाया। असल में देखा जाए तो शिक्षा व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र जीवन की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करने का कार्य करती है, सही अर्थों में शिक्षा हमें हमारे पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के अनुरूप जीना सिखा कर एकता के सूत्र में बाँधे रखती है। भारतीय शिक्षा का इतिहास अतिशय उज्ज्वल रहा है, इसमें निहित तत्व ज्ञान ने भारत को विश्व मंच पर विश्व गुरु के रूप में प्रतिस्थापित करने का महनीय कार्य कर राष्ट्र की मनीषा को गौरवान्वित किया है। इतिहास के

पृष्ठ साक्षी हैं कि इस महान राष्ट्र की तपोभूमि पर चतुर्वेदों की रचना की गई, उपनिषद जो कि ज्ञानामृत के कलश हैं की रचना हुई, इस देव धरा पर आदिकवि वाल्मीकी, वशिष्ठ विश्वामित्र, शुक्राचार्य, बृहस्पति, द्रोणाचार्य, विष्णुगुप्त, चाणक्य, समर्थ गुरु रामदास और रामकृष्ण परमहंस जैसे उद्भट गुरुजनों का अविर्भाव हुआ जिन्होंने अपने ज्ञानालोक से अनेकानेक ज्ञान पिपासुओं की तृषा को शांत कर उन्हें श्रेय मार्ग की ओर प्रशस्त कर अपने गुरुत्व को सार्थक किया तो दूसरी ओर राम, कृष्ण, अर्जुन, एकलव्य, युधिष्ठिर, चन्द्रगुप्त, अशोक, बुद्ध गौतम, गणधर, विवेकानन्द जैसे अनेकानेक तेजस्वी और ओजस्वी शिष्यों ने सच्चे और शाश्वत ज्ञान की प्राप्ति के लिए सद्गुरु की तलाश में दर-दर भटकना स्वीकार किया।

प्राचीनकाल में आश्रमों एवं गुरुकुलों के उन्मुक्त और शांत वातावरण में पूर्णत, अनौपचारिक शिक्षा जो कि स्व और पर कल्याणी होती थी, विद्यार्थियों को दी जाती थी। विलक्षण और अपूर्व प्रतिभा के धनी-वैज्ञानिक आर्यभट्ट, वराह मिहिर और सुश्रुत विदेशों में प्राप्त करने के लिए नहीं गए थे अपितु इस पुण्य धरा पर अवस्थित गुरुकुलों और आश्रमों में ही रहकर अपनी मेधा शक्ति को धार देकर मानव जाति को उपकृत करने का ईश्वरीय कार्य कर अपने मनुष्य जीवन को अमरत्व प्रदान किया था। असल में गुरुकुल और आश्रम व्यवस्था में बालक को बाल्यावस्था में ही गुरु को शिक्षा संप्राप्ति के लिए सौंप दिया जाता था, जहाँ बालक को संस्कार युक्त जीवनोपयोगी शिक्षा दी जाती थी परन्तु विडम्बना यह रही कि विदेशी आक्रांताओं ने हमारी गौरवशाली शैक्षिक परम्पराओं को ध्वस्त करने का छल और पाप कर हमारी अस्मिता और पहचान को मिटाने का प्रयास किया जिसमें उनको किसी हद तक सफलता भी मिली, परन्तु गिरना, उठना और संभलना हमारी नियति बन चुका था। 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर चलकर अंग्रेजों व ब्रिटिश सरकार ने इस गौरवशाली राष्ट्र के विभिन्न असंगठित रियासतों के बँटे होने की हमारी इस कमजोरी का फायदा उठाकर इसे औपनिवेशिक राष्ट्र बना लिया, विडम्बना यह भी रही कि तत्कालीन सभी छोटी-बड़ी रियासतें एक दूसरे की सीमाओं के अतिक्रमण और विस्तारवादी मानसिकता से ग्रस्त थी जिसका खामियाजा हमारी शिक्षा व्यवस्था को भोगना पड़ा और शिक्षा में एकरूपता का नितांत अभाव देखने को मिला जिससे उसका सार्वभौमीकरण एक तरह से संदिग्ध हो गया। शिक्षा को लेकर अंग्रेजों की साजिश और षड़यंत्र सुनियोजित होकर हमारी मानसिकता को कुंद करने और उसे गुलामी की ओर धकेलने का प्रयास था जिसमें उन्हें किसी हद तक सफलता भी मिली।

सच्चाई यह भी है कि आजादी के 74 वर्षों बाद भी हम भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति के अनुरूप सम्यक् शैक्षिक ढाँचा खड़ा नहीं कर पाए जो कि हमारे लिए चिंता और चिंतन का विषय है, असल में इतने वर्षों बाद भी मैकाले की दकियानुसी और गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाए हैं और आज भी कॉन्वेन्ट स्कूल्स, अंग्रेजों के मानसिक गुलाम तैयार करने में पूरी ताकत से लगे हुए हैं और विडम्बना यह है कि हम ऐसे विद्यालयों में अपने बालकों को दाखिला दिलाकर गर्वानुभूति कर रहे हैं, हकीकत तो यह है कि 12 सौ वर्षों की परतंत्रता के परिणामस्वरूप हम हीन भावना से ग्रस्त होकर अपने गौरवशाली अतीत और परम्पराओं को भूलकर विश्ववंद्य गुरु कहलाने वाली तपो भूमि जो कि हमारी कर्मभूमि है, का यशोगान करना भूल गए, हमारी यह भूल आज भी हमारे लिए भारी पड़ रही है।

इस सच्चाई को सापेक्ष इस महान और गौरवशाली राष्ट्र के शिक्षा के पण्डितों को चिन्ता और चिंतन करना चाहिए और इस देश की वर्तमान पीढ़ी को हमारे गौरवशाली अतीत और परम्पराओं का अभिज्ञान करवाकर ही हम उनमें आत्मविश्वास और स्वाभिमान को जगा पाने में समर्थ हो सकेंगे तभी जाकर उनके अंतस में मिथ्या धारण से व्युत्पन्न कुंठा और हीनता के भावों को तिरोहित कर सकेंगे। सन् 1835 में मैकाले ने भारत में नई शिक्षा पद्धति लागू करते समय पूरी सावधानी बरती कि हमारी भावी पीढ़ी को अपने पूर्वजों का मानव जाति को अनमोल अवदान और उनकी महानता की हवा तक न लग सके। सच्चाई यह भी है कि हम पर इस थोपी हुई शिक्षा ने हमें बौद्धिक और भावनात्मक रूप से हमारी मूल परम्पराओं से काट कर रख दिया, मैकाले ने इंग्लैण्ड के अपने एक रिश्तेदार को लिखे पत्र में उल्लेख किया कि- 'मैं भारत में एक ऐसा नया शिक्षा क्रम लागू करने वाला हूँ जिससे कि कुछ वर्षों में भारत के लोग रंग और रक्त से ही भारतीय रह जाएँगे परन्तु उनकी अभिरुचि, विचार, नीति की संकल्पनाएँ व बुद्धि सब कुछ यूरोप के लोगों जैसा हो जाएगा।' वस्तुतः मैकाले का शिक्षाक्रम हमारी आत्म विस्मृति का कारण बना और इसके प्रतिफलन में हमारे मन-मस्तिष्क में मानसिक दासता पनपती गई जिसका असर आजादी के 75 वर्षों बाद भी साफ तौर पर दिखाई दे रहा है और हम अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजियत का मोह नहीं छोड़ पा रहे हैं क्योंकि मैकाले का शिक्षा क्रम हम भारतीयों को दिया गया धीमा ज़हर था।

आजादी के इतने सालों बाद भी हमारे सामने यह प्रश्न खड़ा है कि क्या हमें मैकाले के इस षड्यंत्र से मुक्त होकर हमारे सत्व को नहीं पहचानना चाहिए? सच्चाई यह भी है कि जब तक हम समर्थ, आत्म निर्भर और स्वावलंबी नहीं बनेंगे तब तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तथाकथित स्वयंभू शक्तिशाली राष्ट्र हमें कमजोर समझ कर हमारा बौद्धिक और आर्थिक शोषण करते रहेंगे इसलिए हमें जागना पड़ेगा, 'बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय' इस उक्ति के सापेक्ष विचार करें तो 'जब जागे तब सवेरा।' इसलिए हमें शिक्षा का पूरी तरह से भारतीयकरण करना पड़ेगा, उसको हमारी गौरवशाली सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्पराओं से आप्लावित कर व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के फलदाई और शुभंकर बना सकते है, असल में शिक्षा व्यक्ति, परिवार, समाज राष्ट्र निर्माण की शाश्वत प्रक्रिया है। सम्प्रति सुखद आश्चर्य यह भी कि भारत की प्रबुद्ध मनीषा दुनिया में अपने बुद्धि कौशल और प्रतिभा से अपना लोहा मनवा रही है, आधुनिक तकनीकी ज्ञान-विज्ञान की जबरदस्त प्रतिस्पर्धा में अंगद की तरह पाँव गड़ाए खड़ी है जो कि पुनश्च विश्व गुरु बनने की ओर सकारात्मक कदम हैं।

प्राध्यापक हिन्दी (सेवानिवृत्त)
रामगोपाल बस स्टेण्ड भीण्डर, उदयपुर
(राज.)-313603
मो: 9413208719

मैं शिक्षक हूँ.....मेरा सफर....

❒ रतन लाल बारूपाल

मैं एक शिक्षक हूँ, समाज और राष्ट्र मुझे गुरुवर, अध्यापक जी, मास्टर जी, माट् साहब आदि नामों से संबोधित करते हैं, मैंने अतीत से लेकर वर्तमान तक का सफर काफी उतार-चढ़ाव के साथ तय किया है, मुझे याद है जब मेरे शिष्य जंगल में गुरुकुल में बने घास-फूस के बने झोंपड़े में मेरे पास ज्ञानार्जन के लिए आते थे और मैं उन्हें निस्वार्थ भाव से शिक्षा देता था, धीरे-धीरे शिक्षा की ज्योत प्रज्ज्वलित होती गई और मेरे शिष्यों ने मुझे समाज के बीच लाकर कच्चे-पक्के भवन में जिसे पाठशाला का नाम दिया गया, वहाँ पर लाकर बच्चों को शिक्षा देने का आग्रह किया और मुझे समाज के स्नेही लोगों के बीच लाकर बिठा दिया। समाज का मुझे भरपूर स्नेह और आदर मिला और मेरे पास भी शिक्षा देने के अलावा किसी भी प्रकार का कोई अन्य कार्य नहीं था, तो बस मैं, मेरे पूरे मनोयोग से शिक्षा देने का कार्य करता, शिक्षा देने के साथ ही बच्चों का शारीरिक विकास करने के लिए बच्चों को विद्यालय समय के पश्चात पारंपरिक खेल भी खिलाता जिससे विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहते। विद्यार्थियों को दिया जाने वाला गृह कार्य स्लेट पर खड़िया से लिखकर वो इसे बचाते हुए विद्यालय आते कि कहीं गृहकार्य मिट न जाए और हाथ में कपड़े की थैली या लोहे का बक्सा जिसमें पढ़ने से संबंधित अन्य सामान हुआ करता था लेकर तथा खादी या लट्ठे की नेकर व शर्ट पहनकर विद्यालय समय पूर्व ही पहुँच जाते।

कुछ बच्चे खेलने में व्यस्त हो जाते या कुछ बच्चे अपना पाठ याद करने लग जाते थे और मेरे बुलाने पर घर से लाई हुई दरी बिछाकर ज्ञानार्जन के लिए मेरे सामने बैठ जाते तथा कुछ बच्चे अपने कक्ष की सफाई करने लग जाते तथा कुछ बच्चे पेड़-पौधों को पानी पिलाने का काम करते, बड़ा ही मनोरम दृश्य हुआ करता था। विद्यार्थियों को शिक्षा देते समाज के सामने मुझे पूजनीय व आदरणीय बना दिया और समाज के भामाशाह ने मुझे विद्या के कच्चे मंदिर से उठाकर पक्के व सुविधा युक्त भवनों में आसीन कर दिया जहाँ पर विद्यार्थियों के लिए सभी प्रकार की

सुविधाएँ उपलब्ध हुई तथा मेरी सेवा का दायरा सामाजिक स्तर तक का हो गया।

धीरे-धीरे मैंने सरकारों का ध्यान शिक्षा के मंदिर की तरह आकर्षित करने का प्रयास किया और सरकार द्वारा मांगी जाने वाली सूचनाओं को कागज पर हाथ से ही बनाकर भेजने लगा तथा मेरे ही जैसे अनेक शिक्षाविदों, अध्यापकों, गुरुजनों ने शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं को सरकारों के सामने रखा और सरकारों ने विभिन्न आयोगों का गठन कर सभी समस्याओं का समाधान करने के उचित प्रयास किए इसी का परिणाम रहा कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने में, मैं भी भागीदार रहा।

मेरा सफर यहीं तक नहीं रहा। मैं गाँव-शहर की हर गली-गली व प्रत्येक घर-घर घूमकर शिक्षा से वंचित बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास करता रहा विशेषकर बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए समाज के सामने अपना आदर्श प्रस्तुत किया और समाज ने मुझ पर भरोसा जताया और बालिका शिक्षा के क्षेत्र में भी श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया, इसी का परिणाम है कि आज बालिकाएँ भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना बढ़-चढ़कर योगदान दे रही हैं और राष्ट्र को गौरवान्वित कर रही है। आज शिक्षा के इस रूप को देखकर मेरा मन अति प्रफुल्लित होता है कि आज तक के सफर में मैंने इतने परिवर्तन देखे कि-

- विद्यार्थी दरी पट्टी से लेकर आधुनिक मेज कुर्सी तक।
- कपड़े की थैली या लोहे के बक्से से लेकर आधुनिक बैग तक।
- बच्चों का पहनावा खादी लट्ठे की नेकर व शर्ट से लेकर टेरीलीन पॉलिस्टर तक।
- खड़िया व स्लेट से लेकर टेबलेट लैपटॉप तक।
- पारंपरिक शिक्षा से लेकर कंप्यूटर शिक्षा आईसीटी लैब तक।
- घर से भोजन लाते या नहीं लाते तब से लेकर विद्यालय में गरमा गरम भोजन मिलने तक।
- बालिकाओं को घर की चारदीवारी के अंदर रखने से लेकर आज बराबरी तक उच्च शिक्षा प्राप्त करने तक का सफर।
- उच्च शिक्षा प्राप्त करने की समस्याओं से लेकर ग्राम पंचायत स्तर पर उच्च माध्यमिक विद्यालय तक का सफर।
- कुछ ही पारंपरिक खेलों से लेकर विभिन्न प्रकार के खेलों को बढ़ावा देने हेतु राजकीय खेल ग्रांट देने तक।
- खेल के छोटे मैदानों से लेकर स्टेडियम निर्माण तक का सफर।
- अभिभावकों के विद्यालय में आने के संकोच से लेकर एसएमसी., एसडीएमसी., पीटीए., एमटीए के आयोजन से सुझाव तक का सफर।
- गरीबी के कारण पुस्तकें नहीं खरीद पाने से लेकर निःशुल्क पाठ्य पुस्तक तक।
- दूरी के कारण विद्यालय छोड़ने वाली बालिकाओं से लेकर निःशुल्क साइकिल व स्कूटी वितरण तक का सफर।

मैं शिक्षक हूँ और मेरे जीवन के इस सफर में इतने परिवर्तन देखकर मेरा मन अभिभूत है और मेरी सेवा का दायरा केवल विद्यालय स्तर तक का ही नहीं रहा बल्कि सामाजिक स्तर तक का हो गया है। मुझे आज इस बात की प्रसन्नता है कि मैंने शिक्षा का जो बीज बोया था वह आज फल फूल रहा है। मेरा यह सफर यहाँ तक ही समाप्त नहीं होगा। सदियों-सदियों तक यह सफर जारी रहेगा और इस सफर को जारी रखने के लिए मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ।

प्राध्यापक (भौतिक शास्त्र)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुलथाना,
रोहट, पाली (राज.)
मो: 9413083575

शिक्षा का गौरवशाली अतीत

❐ भवानी शंकर तोसिक

प्राचीन भारत के आदर्श पुरुषों ने मानव जीवन को भव्य बनाने के लिए मानवता, अस्मिता, तेजस्विता, भावप्रेम, दिव्यता और लोकोत्तर जैसे महान गुणों की स्थापना की थी। तुलसी, सूर, विवेकानंद, माघ, वृंद, कबीर, कालिदास, पतंजलि, वात्स्यायन, पाणिनी, वराह मिहिर, चाणक्य आदि मनीषियों ने शुभ और कल्याणकारी साहित्य का सृजन किया।

जीवन-मरण, पर्यावरण, ज्ञान-विज्ञान, आत्मा-परमात्मा, भूगोल-खगोल एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के बारे में जिन गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित किया उसी का परिणाम है कि विश्व में भारत को जगत् गुरु बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। योग के क्षेत्र में तो भारत का एकाधिकार था। योग के माध्यम से अनेक विधाओं और विद्याओं का ज्ञाता था भारत, जब विश्व के अनेक देशों को सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान भी नहीं था।

शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत विश्व में अग्रणी था। यहाँ ऐसे अनेक विश्व विख्यात विश्वविद्यालय थे जहाँ हजारों की संख्या में विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। चीन, जापान, श्रीलंका, टर्की, कोरिया, इंडोनेशिया, पर्शिया आदि विदेशों के अनेक विद्यार्थी इन विश्वविद्यालयों में ज्ञानार्जन करने आते थे। इन सबके लिए शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था थी।

यहाँ चिकित्सा, योग, अध्यात्म, खगोल, दर्शन, संगीत, राजनीति, पर्यावरण, युद्ध विद्या, गुप्तचरी, ज्योतिष, वास्तु, आयुर्विज्ञान, व्याकरण, अध्यात्म, भाषा आदि व्यवहारिक विषयों की क्रियात्मक शिक्षा प्रदान की जाती थी। नालंदा और तक्षशिला के अतिरिक्त पुष्पगिरी विश्वविद्यालय, सोमपुरा विश्वविद्यालय, जगद्दल विश्वविद्यालय, वल्लभी, विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय, ओदंतपुरी विश्वविद्यालय आदि सम्पूर्ण विश्व में शिक्षा के प्रमुख केन्द्र माने जाते थे। महिला शिक्षा का स्तर उन्नत था।

वैदिककाल में विश्वास, तारा, निनावरी, अपाला, घोषा, मैत्रेयी, कात्यायनी आदि विदुषियां पुरुषों से शास्त्रार्थ करने में कभी पीछे

नहीं रहती थी। ये वे विदुषियां थी जो न केवल वेदों की ऋचाओं का गायन करती थी बल्कि नवीन ऋचाओं का सृजन करने में भी दक्ष थी। हर जगह विद्वानों की प्रशंसा की जाती थी। उनको सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। विद्याहीन नागरिक पशु समान समझा जाता था। इसलिए हर नागरिक शिक्षा प्राप्त करने में ही अपना कल्याण समझता था।

पाँचवी शताब्दी में स्थापित नालंदा महावीरा विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस आवासीय विश्वविद्यालय में 10000 विद्यार्थी और 1500 शिक्षक थे। शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था थी। हर्षवर्धन, नागार्जुन, धर्मपाल, पद्मसंभव जैसी महान हस्तियों ने यहाँ शिक्षा अर्जन की। महान चिकित्सक राहुल श्रीभद्र जो इस विश्वविद्यालय के प्रिंसिपल थे, तब 1193 में बख़्तियार ख़िलजी ने नालंदा महावीरा विश्वविद्यालय पर आक्रमण कर न केवल हजारों भिक्षुओं एवं शिक्षार्थियों का ही नरसंहार किया बल्कि इस इमारत का भी नामोनिशान मिटा दिया।

हाँ, मैं एक शिक्षक हूँ।
संस्कारों का संरक्षक हूँ।।
राष्ट्र-यज्ञ का हविष्य तैयार करता हूँ।
मैं भारत का भविष्य तैयार करता हूँ।।

विश्व की सबसे समृद्ध लाइब्रेरी जिसमें नब्बे लाख पुस्तकें थी। आग लगा दी गई, जो 3 महीने तक निरंतर जलती रही। इसके पश्चात विक्रमशिला और ओदंतपुरी विश्वविद्यालय को भी नष्ट कर दिया गया।

मानव जाति के उत्थान और विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा नैतिक विकास की सीढ़ियाँ कहलाती है। मानव की आत्मा का दर्पण होती है। शिक्षा एक ऐसी चिंगारी है जो जिज्ञासा और कुतूहल की आग जलाती है। शिक्षार्थी सच्चे अर्थों में जीवन के सृजनकर्ता होते हैं। इनमें जिज्ञासा की आग प्रतिपल जलती दिखाई देती है जो असीम सामर्थ्य क्षमताओं और संभावनाओं को उत्पन्न करने की क्षमता रखती है।

प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय इसके ज्वलंत उदाहरण रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय लेखक, विचारक एवं शिक्षाविद् वसीली सुखोम्लीन्स्की ने कहा था- 'शिक्षा मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण चरण है। शिक्षार्थी का जीवन मौलिक जीवन है, जो सारी उम्र फिर कभी लौट कर नहीं आता है। यह चरण विद्यालय में ही व्यतीत होता है।'

शिक्षा के पुराने गौरव को स्थापित करने के अनेक नवाचार और प्रयास किए जा रहे हैं। सन् 2006 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण का सुझाव दिया। स्वर्गीय कलाम के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि अब नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना कर दी गई है। इस विश्वविद्यालय के माध्यम से यह प्रयास किया जा रहा है कि शिक्षा के क्षेत्र में भारत का जो वैभवशाली अतीत और ख्याति रही है उसी ख्याति को पुनः अर्जित किया जाए।

प्राध्यापक हिंदी (सेवानिवृत्त)
राजकीय मो.इ. उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर
स्थायी पताः आदर्श कॉलोनी, पीसांगन,
अजमेर (राज.)-305204
मो: 9414746591

गर्व से कहो हम शिक्षक हैं

❐ नूतन बाला कपिला

आशा की किरण है शिक्षक
स्वच्छ स्वस्थ हरित भारत का
संदेश देता है शिक्षक
दुनिया में परिवर्तन का
बिगुल बजाता है शिक्षक
कड़ी परीक्षा कोरोना काल की
जन मानस के पास था शिक्षक।।

नमन गुरु जी नमन मास्टर जी को। भारतीय संस्कृति में गुरु का बड़ा स्थान है। गुरु का नाम सुनते ही ऐसे व्यक्तित्व का आभास होने लगता है जो हमारे लिए आदर्श है। जिसके बताए रास्ते पर अग्रसर होने के लिए हम प्रेरित होते हैं। गुरु जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए, जो निराशा से आशा की ओर ले जाए।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति में शिष्य गुरु के पास रहकर अध्ययन करते, जीवन शिक्षा पाते थे। गुरुकुल के नियमों का पालन करते हुए विभिन्न विद्याओं में निपुणता एवं सामाजिक गुणों की समझ को सीखकर शिष्य ब्रह्मचर्य आश्रम की अवस्था पूर्ण कर माता-पिता के पास लौटता था। गुरु की उसके जीवन पर अमिट छाप दिखती थी। अंग्रेजी के आने के बाद ये व्यवस्था समाप्त होती गई और गुरुकुलों के स्थान पर स्कूल/विद्यालय आ गए। विद्यालयों में शिक्षण पद्धति के अनुसार मास्टर जी का आगमन हुआ। मास्टर जी उर्फ शिक्षक जो पढ़े-लिखे हैं, उनका गाँव में, समाज में उच्च स्थान या कहे प्रतिष्ठित स्थान है। हमें आज भी वो शिक्षक याद हैं जिन्होंने पहली कक्षा में पढ़ाया था, हमारा हाथ पकड़ कर लिखना सिखाया था, इतना ही नहीं, हम कह सकते हैं कि हमें इंसान बनाया था। उनके प्रति हमारा सम्मान कभी कम नहीं हो सकता। तभी तो भारत के राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को शपथ ग्रहण के पूर्व पूछा गया कि आप अपने घर में किन्हें समारोह में बुलाना चाहते हैं, उन्होंने अपने शिक्षक का नाम बताया।

हमारे देश के राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन, भारत रत्न से सम्मानित स्वयं एक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा मात्र किताबी ज्ञान व तथ्यों की सूचना देना नहीं है शिक्षा व्यक्ति को जीवन का ज्ञान सिखाती है।

शिक्षा व्यक्ति को इंसान बनाती है। धन्य है वे शिक्षक जिन्होंने अपने व्यवहार व ज्ञान से सैंकड़ों विद्यार्थियों के जीवन में प्रकाश ला दिया, वे सदैव वंदनीय है।

आज देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। प्रथम भारतीय महिला शिक्षिका सावित्री बाई फूले को नहीं भुलाया जा सकता जिन्होंने बालिका शिक्षा के लिए विद्यालय के द्वार खोले और बालिका शिक्षा और बालिका अधिकारों के लिए संघर्ष किया। साथ ही इस अवसर पर उन समाज सुधारक शिक्षकों को भी याद करने की आवश्यकता है। जिन्होंने इस देश से बाल विवाह सती प्रथा जैसी कुरीतियों को समाप्त करने के लिए आवाज उठाई।

आजादी के बाद शिक्षा को और अधिक दूरी तक पहुँचाने की जिम्मेदारी शिक्षकों पर थी। धन्य है वे शिक्षक जिन्होंने सामाजिक रुढ़िवादिता बालक-बालिका में भेदभाव को मिटाकर दोनों को एक साथ विद्यालय में शिक्षा दी। सर्व शिक्षा अभियान हो या शिक्षा का अधिकार हो, चहुँ ओर शिक्षक है जिसने शिक्षा की मशाल लेकर गाँव के, ढाणी के गरीब बालक को स्कूल लाकर शिक्षित ही नहीं किया, संस्कारशील भी किया।

अब वो घना अंधियारा नहीं
जहाँ शिक्षा का उजियारा नहीं।।

आज हम गर्व करते है कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। ऐसे महापुरुष को उनके शिक्षक होने पर, शिक्षा के प्रति उनके अपार लगाव, दर्शन, स्नेह के कारण याद किया जाता है। इसी कड़ी में वर्तमान राष्ट्रपति भारत की प्रथम नागरिक श्रीमती द्रौपदी मुर्मू भी अध्यापिका रह चुकी है।

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है। राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जाने वाले नागरिकों का निर्माता है। शिक्षक विश्व में राष्ट्र की पहचान बनाने वालों निर्माता है। जब राष्ट्र अंधविश्वासों की बेड़ियों में जकड़ा हो, तब मुक्त करता है। शिक्षक से उम्मीद की जाती है कि वह समाज में बदलाव ला सकता है।

हम शिक्षक है,
दरिया की धारा बदल सकते हैं।
समाज की दिशा बदल सकते है।

नकारात्मकता को सकारात्मकता में यदि कोई बदल सकता है, तो वह शिक्षक है। गिलास पानी से आधा भरा है, पूरा भरा है, आधा खाली है। इन उत्तरों में से सही सकारात्मक जवाब शिक्षक ही अपने शिष्यों से सही प्राप्त कर सकता है। शिष्य के मनोविज्ञान को समझ कर विद्यार्थी की ऊर्जा को सृजनात्मक प्रवृत्तियों की ओर लगाने वाला शिक्षक ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा देता है जहाँ उजाला ही उजाला होता है।

पिछले दिनों कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा का प्रचलन बढ़ा। उस समय का विकल्प वही था। लेकिन अब स्पष्ट हो गया कि कक्षा-कक्ष शिक्षण, आमने-सामने विद्यालय के शिक्षण का स्थान ऑनलाइन शिक्षण नहीं ले सकता। टैक्नोलॉजी के युग में शिक्षक के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं और उसकी जिम्मेदारी और बढ़ गई है, कैसे आज शिष्यों को साइबर क्राइम से बचाए। उम्मीद हमें शिक्षक से हो रही है। विद्यार्थी को आत्म विश्वास से भर कर, ऊर्जा से भर कर सुयोग्य नागरिक बनाना है। शिक्षक अपने जीवन में सैंकड़ों विद्यार्थियों से मिलता है, सभी को ज्ञान देकर प्रेम व समर्पित भाव से, आगे बढ़ाता है। गर्व से कहो हम शिक्षक हैं।

पूर्व अति. निदेशक
प्राथमिक शिक्षा, बीकानेर
मो. 9928083401

गुणात्मक शिक्षा नौनिहालों के लिए

❐ डॉ. राजरानी अरोड़ा

'शिक्षक की नौकरी करना और शिक्षक के चरित्र में ढल जाना, दो इतर बात है, विद्यार्थी तो शिक्षक के हस्ताक्षर होते हैं।' बहुत सटीक कथन है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के परिणामों ने पराकाष्ठा को छू लिया है। 100% अंक अपने आप में अविश्वसनीय सच है। अब वह 60-70 का जमाना नहीं रहा। 80-90 से ऊपर बात ठीक लगती है। गुजरे जमाने में 60-70 में भी गुणात्कता हुआ करती थी। हाल ही में राजस्थान के 8वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में भी सी ग्रेड प्राप्त एक विद्यार्थी ने आत्महत्या जैसा घातक कदम उठा लिया। वहीं झुंझुनूं जिले की एक दिव्यांग बालिका ने 100% अंक प्राप्त कर सबको चौंका दिया जिसने जिला ही नहीं पूरे राजस्थान में 10वीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर गौरवान्वित किया है। कवि दुष्यंत कुमार की पंक्तियाँ याद आ रही हैं-

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।।

इस प्रतिस्पर्धा के युग में बालकों में सकारात्मक चिंतन कौशल विकसित करने की आवश्यकता है। उच्च अंकों के साथ उच्च सपने संजोए जाते हैं। एक बार असफल होते ही निराशा का आवरण अपने आगोश में ले लेता है। ऐसे में अभिभावकों और शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ चिंतन-मनन करने की महत्ती आवश्यकता है। बालकों में कम अंकों की नकारात्मकता को पहले दूर करें फिर उसे उच्च अंकों के सकारात्मक परिणाम बताएँ। हमारे अभिभावक और शिक्षक श्रेष्ठ परीक्षा परिणामस्वरूप उच्च शिक्षा के सब्जबाग देखते और दिखाते हैं। जबकि बालकों में गुणात्मक शिक्षा के साथ जीवन-कौशल जैसी शिक्षा का विकास भी होना चाहिए। उनमें आत्मबल और जीवन जीने की सकारात्मक भावना विकसित करते हुए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए। जीवन यापन के अनेक विकल्प हैं उनको भी आपसी विचार विमर्श से साझा करने चाहिए। बालकों को स्वयं को जीतने और जीने की कला सिखाती है। उनका नजरिया बदलने की जरूरत है। किसी ने ठीक ही कहा है-

अगर आप कुछ बदलना चाहते हैं तो सबसे पहले अपना नजरिया बदलिए।

सत्य ही कहा है सिक्के के दोनों पहलुओं पर विचार करना जरूरी है। वह नजरिया ही है जो हमारे विचारों को प्रभावित करता है। स्वप्न देखने चाहिए लेकिन यथार्थ को कभी नहीं भूलना चाहिए। बालक के सर्वांगीण विकास की बात करें तो जीवन जीने की कला सिखानी जरूरी है। एक शिक्षक होने के नाते हमारा ये कर्त्तव्य है कि हम विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को विकसित करें तथा उसकी विचारात्मक क्षमता को बढ़ाएँ। यहाँ आचार्य रजनीश के विचारों का उल्लेख करना चाहूँगी-

'छात्रों को विचार मत दो, विचार करना सिखाओ, शिक्षक चित्र बनाने की कला सिखाएगा। चित्र नहीं, आचार्य कल्पना शक्ति विकसित करेगा कल्पना नहीं देगा।'

बिल्कुल सत्य कहा जब तक कल्पना शक्ति का विकास नहीं होगा तब तक विचारात्मक शक्ति का विकास भी कैसे होगा? यथोचित मानसिक विकास जीवन को सफलता की ओर ले जाता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक को एक उपयोगी इकाई बनाना है न कि अंक लाने वाली यांत्रिक मशीन। दुनियां में छोटे से लेकर बड़े तक सभी कार्य सेवा आदि का अपना महत्त्व है शर्त ये है कि उनको जीवन जीने की कला आनी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना होता है। हरबर्ट स्पेंसर के अनुसार- **'पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।'**

आज चारों तरफ प्रतिस्पर्धा के वातावरण में एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ सी लगी है। उच्च पद-मान-प्रतिष्ठा की लालसा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हम चाहे शिक्षक हो या अभिभावक अपने बच्चों को भावात्मक रूप से मजबूत बनाएँ। व्यावसायिक शिक्षा भी एक बेहतर विकल्प हो सकती है, जहाँ हमारे विद्यार्थी स्वयं को स्वरोजगार से जोड़ सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक पाठ्यक्रम अपने आप में एक उपयोगी आयाम है। हमारा प्रथम कर्त्तव्य है बालक की प्रतिभा को पहचानना व उसको सही मार्गदर्शन देना। हमें बालकों के लिए प्रेरक बनने का कार्य करना है उत्प्रेरक का नहीं। प्रेरणा दीजिए, उदाहरण प्रस्तुत कीजिए जिससे सुंदर भविष्य का निर्माण हो सके। आत्मबल बढ़ाने का बेहतर उपाय प्रस्तुत करें। आज के वातावरण में जहाँ युवा पीढ़ी निराशा के कारण गलत कदम उठा रही है वहाँ उनके पथप्रदर्शक बनें। भूतपूर्व राष्ट्रपति, वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब के विचार दृष्टव्य हैं जो हम सब शिक्षकों पर सटीक बैठते हैं- **'शिक्षा एक महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य को आकार देता है।'**

हम भी रचनाकार हैं जो इस नई पीढ़ी के जीवन को आकार प्रदान करते हैं। हम मेहनती बच्चे तैयार करें, साहस और आत्मविश्वास की पराकाष्ठा को छूने वाले होनहार योग्य नागरिक बनाने का प्रयास करें। बालक का हौंसला बढ़ाने वाली मजबूत पीठ बनें। यही वह समय है जब हम राष्ट्र के कर्णधार तैयार कर रहे हैं। हम भावी पीढ़ी के युग निर्माता हैं, नई पीढ़ी के रचनाकार हैं। आओ मिलकर एक संकल्प लेते हैं-

सर्वश्रेष्ठ त्याग, अपने लाडलों के लिए।
गुणात्मक शिक्षा, नौनिहालों के लिए।।

प्रधानाचार्य
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय खण्डेला,
सीकर (राज.)
मो: 9460863798

कहानियों का नाट्यीकरण : एक अनुभव

❒ रविन्द्र मारू

शिक्षा संबंधित दस्तावेजों में इस बात की खुलकर पैरवी की गई है कि बच्चों को अभिव्यक्ति के अधिकाधिक अवसर दिए जाने चाहिए, नई शिक्षा नीति 2020 में तो बच्चों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के महत्त्व पर बहुत जोर देकर बताया गया है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए बच्चों में अनुभवात्मक अधिगम सुनिश्चित करने के उद्देश्य से महात्मा गाँधी विद्यालय शिव, बाड़मेर में ग्रीष्मकालीन शिविर के दौरान दो दिवसीय नाट्य गतिविधियों को भी शामिल किया गया इस कार्यशाला में 35 बच्चे प्रतिभागी थे।

प्रथम दिवस बच्चों के साथ सक्रिय सहभागिता और कल्पनाशीलता पर कार्य किया गया जिसके अंतर्गत बच्चों को नाटकीय गतिविधियाँ करवाई गई। बच्चों को नम्बर्स गेम, हावभाव सम्बन्धित खेल, स्टिल ईमेज (स्थिर चित्र) का अभ्यास करवाया गया।

स्टील ईमेज (स्थिर चित्र) के अभ्यास में गतिविधियाँ

- बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों को एक-दूसरे के साथ मिलकर बनाने का अभ्यास।
- वर्ग, आयत, वृत्त और त्रिभुज आदि गणित सम्बन्धित आकृतियों को बनाना।
- झोंपड़ी, मेज, कुर्सी, सोफा, टेबल आदि वस्तुएँ बनानां
- सजीव स्थिर चित्र बनाना जैसे पेड़, बैल गाड़ी, ऊँट, मगरमच्छ आदि।

''बौद्धिक विकास के विषय सिखाने से पहले हृदय का विकास करने वाले विषय सिखाए जाने चाहिए, क्योंकि अगर मनुष्य का हृदय विकसित होगा तो उसकी बुद्धि उसे सन्मार्ग पर ले जाएगी।''

इस प्रक्रिया में बच्चे क्या सीख रहे थे...?

- बच्चों ने इस प्रक्रिया में मिलजुल कर आकृतियाँ बनाई।

- वे निर्णय ले पा रहे थे कि कौन कहाँ खड़ा होगा, हाथ कौन पकड़ेगा, बैठेगा कौन आदि।
- इस प्रक्रिया में बच्चे एक-दूसरे को सहयोग कर रहे थे, वे एक-दूसरे से जुड़ पा रहे थे।
- बच्चे दूसरों के निर्देशों को सुन कर समझ पाने के साथ ही उस पर अनुक्रिया भी कर रहे थे।
- बच्चे अपने समूह के साथियों के प्रति संवेदनशील और जागरूक थे।
- वे इस प्रक्रिया में सामूहिक आनन्द ले पा रहे थे।
- बच्चे अपने समूह में एक ही उद्देश्य के प्रति सजग थे।
- बच्चे इस आकृति निर्माण की प्रक्रिया में पहल कर पा रहे थे।
- समूह में एक स्तर की सहमति व साझा समझ बन रही थी।

द्वितीय दिवस बच्चों को सामूहिक रूप से वार्मअप खेल खिलाया गया और उनकी स्मृति में उपस्थित स्थिर चित्रों का सदुपयोग करते हुए बच्चों को इम्प्रोवाइजेशन के खेल खिलाए गए। इम्प्रोवाइजेशन जिसे नाट्य तुरन्ति भी कहा जाता है इस गतिविधि में प्रतिभागियों को छोटे-छोटे समूहों में कोई सिच्वेशन (काल्पनिक घटना) बताई जाती है, जिसे बच्चे नाटक के रूप में जीवंत करने का अभ्यास करते हैं। इस गतिविधि के अभ्यास से बच्चे नाटक करने में पक्के होने लगते हैं।

इसके बाद बच्चों को समूह में बाँट कर उन्हें अपने पसंद की कोई कहानी अथवा घटना को नाटक में करके दिखाने का ग्रुप टास्क दिया गया। जिसमें बच्चों ने बहुत बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। बच्चों ने प्यासा कौवा, अनोखी सूझ, नेताजी का भाषण और नकलची बंदर कहानियों पर नाटक बना कर दिखाया।

बच्चे जिस प्रकार से प्यासा कौवा, अनोखी सूझ, नेताजी का भाषण व नकलची बंदर और टोपी वाला व्यापारी जैसी कहानियों को नाटक के रूप में पूरे हावभाव के साथ प्रस्तुत कर रहे थे, वह काबिले तारीफ था। बच्चों द्वारा कम समय में स्वाभाविक अभिनय को सीख लेना मेरे लिए अचरज भरा दृश्य था। इस रचनात्मक प्रक्रिया में बच्चों ने चिह्नित कहानी पर साझा समझ बनाने में सामूहिक रूप से सामंजस्य बनाया। वे अपनी ही भाषा और तकनीक के माध्यम से दर्शकों के समक्ष नाटक को सहज ही संप्रेषित करने में दक्ष लग रहे थे। बच्चों ने अपने आसपास की चीजों को रचनात्मक तरीके से उपयोग में लेने की कला को बखूबी दर्शाया जैसे- बड़े पत्थरों को लड्डू के रूप में इस्तेमाल करना, कागज की टोपियों का बेहतर उपयोग, स्कूल के बर्तनों का नाटक में उपयोग करना आदि। आत्मविश्वास से लबरेज बच्चों के नाटकों की कुछ झलकियाँ यहाँ प्रस्तुत है-

प्यासा कौवा- बच्चों ने बहुत ही रचनात्मक ढंग से प्यासा कौवा की कहानी को दर्शाया। इसके लिए उन्होंने एक बाल्टी ली जिसमें थोड़ा पानी भी रखा और फिर उसमें कंकड़ डालते हुए कहानी का मंचन किया।

अनोखी सूझ- यह कहानी बच्चों के पाठ्यक्रम में भी है। कहानी में देवता और दानवों में श्रेष्ठता के द्वंद्व को बखूबी उकेरा गया और अंत में बच्चों ने नाटक में दिखाया कि जो बुद्धिमान है और आपस में प्रेम और सहयोग से रहता है वही श्रेष्ठ है।

नकलची बन्दर और टोपी वाला

व्यापारी– इस कहानी को भी बच्चों ने ठीक से प्रस्तुत करने का प्रयास किया। रचनात्मक बात यह लगी कि जो बच्चा पेड़ बना उसकी सहानुभूति व्यापारी के प्रति प्रकट हो रही थी, बन्दरों ने अखबारों की न केवल टोपियाँ बनाई बल्कि उनकी पूँछ भी दिख रही थी।

नेताजी का भाषण– इस कहानी में एक नेताजी लोगों को कैसे बेवकूफ बनाते हैं। इसका बहुत ही हास्य व्यंग्य प्रदर्शन बच्चों द्वारा किया गया। कहानी में नेताजी को भाषण देना नहीं आने के कारण बार-बार बहाने बनाने की कला को कलात्मक ढंग से उकेरा गया था।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में कलाओं को स्थान दिया जाना अति आवश्यक प्रतीत होता है। शिक्षा में कलाओं की उपेक्षाओं के कारणों से ही तो आज मानवमात्र के रिश्तों में खटास, परिवारों में उदासीनता, समाज में विकृतियाँ और धार्मिक कट्टरता चरम पर है। पूरे जगत की भीषण समस्या तो यही है कि मानव, मानवता के प्रति जागरूक नहीं है।

शिक्षा में कला एक ऐसा माध्यम है जो बच्चों को प्रेम और मानवता से लबालब कर देता है। ये नाट्य प्रक्रियाएँ बच्चों को न केवल अनूठे अनुभवों से साक्षात्कार करवाती है बल्कि उन्हें अहसास दिलाती है आजादी का। आजादी, जो बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। कलाएँ बच्चों के संवैधानिक अधिकारों और मूल्यों से सरलता पूर्वक रूबरू करवा देती है।

नाट्य कला के आँगन में बच्चे हँस सकते हैं, बोल सकते हैं, कूद सकते हैं, नाच सकते हैं, गा सकते हैं, बिना भय के संप्रेषित कर सकत हैं स्वयं को। उन्हें अपनी पहचान का अहसास होता है। नाटक बच्चों के लिए सृजन की सारी संभावनाएँ खोलने का कार्य कर देता है।

जिस प्रकार के कल्पना संसार की रचना शिव ब्लॉक के महात्मा गाँधी स्कूल के बच्चों ने की है, शायद उसी खुशनुमा और भय मुक्त माहौल का ख्वाब हमारे शिक्षा दस्तावेजों का मूल सार भी है।

रिसोर्स पर्सन
ड्रामा इन एज्युकेशन, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन,
बाड़मेर (राज.)

आत्मविश्लेषण

❐ हीराराम चौधरी

राष्ट्रकवि प्रदीप जी ने बहुत ही सुंदर लिखा है कि–

कभी-कभी खुद से बात करो,
कभी-कभी खुद से बोलो।
अपनी नजर में तुम क्या हो?
ये मन की तराजू पर तोलो।।

उक्त पंक्तियाँ जीवन को अनूठा प्रदर्शन प्रदान करती है। हम दूसरों के बारे में तो बहुत कुछ कह जाते हैं, हम दूसरों का नख से शिख तक सब कुछ बयां कर देते हैं लेकिन स्वयं के बारे में कभी भी चिंतन नहीं करते हैं। औरों के बारे में कहने के बजाय अपने बारे में भी कुछ अपने आप से कह लेते तो जीवन ही संवर जाए। हम दूसरों के भीतर झाँकने का व्यर्थ ही प्रयास करते हैं, अपने भीतर हम झाँक लेवे तो...! सचमुच हम मानव से महामानव हो जाए। हम दूसरों की बुराइयों के बारे में तो सबकुछ कह जाते हैं लेकिन दिल की सच्चाई एवं ईमानदारी से अपनी आत्मा पर हाथ रखकर पूछिए कि-क्या अपने अंतर्मन की बुराइयों के बारे में आपने स्वयं का विश्लेषण किया? यदि आपने स्वयं का विश्लेषण किया है तो आप सचमुच इस धरा के सबसे श्रेष्ठ इंसान हो। आप अभिनंदन के अधिकारी हो। आप साधुवाद के पात्र हो।

यदि आपने स्वयं का विश्लेषण नहीं किया है तो आप आज ही अपनी आत्मा की अदालत में अपने को पेश करे और अपने आपसे प्रश्न करे कि क्या मेरा आचरण-व्यवहार, विचार, खान-पान, रहन-सहन, भाषा सही है या नहीं? यदि सही है तो आप श्रेष्ठवान हो और यदि नहीं तो आप अपने को श्रेष्ठवान बनाने में पीछे क्यों हो? यह विश्लेषण जरूर करे। जीवन में सदा स्वयं को कल से बेहतर बनाने का प्रयास करे। कबीरदासजी के इस दोहे में गजब का दर्शन है कि-

मैं अपराधी जन्म का, नख-शिख भरा विकार।
आप दाता दुःख भंजन मेरा करो संहार।।

हे प्रभो! मैं तो जन्म से ही अपराधी हूँ। नख से शिख तक अर्थात पाँव से सिर तक विकार ही विकार भरे हैं। आप ज्ञानी-ध्यानी हो, दुःख का निवारण कर्ता हो, आप ही मेरे जीवन को संभालिए। जिस दिन हम अपने अंतर्निहित विकारों का अर्थात बुराइयों के बारे में चिंतन कर उसे दूर करने का सार्थक प्रयास कर लेंगे उस समय जीवन एक महकदार पुष्प की तरह महक जाएगा। जीवन एक खूबसूरत सफर है, इस सफर को स्वर्णिम बनाने के लिए अपने स्वयं के विश्लेषण की जरूरत है। हम दिल की सच्चाई से स्वयं का साक्षात्कार करे कि हमने इस जीवन में क्या किया? हमने जो किया वह उचित है या अनुचित? यह आत्मविश्लेषण जीवन को स्वर्णिम बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। आत्मविश्लेषण ही वह विद्या है जिससे हम अपने आप को कल से आज बेहतर कर सकते हैं। आत्म-अवलोकन के द्वारा हम अपने मनुज जीवन को सार्थक व श्रेष्ठ बना सकते हैं। जीवन उन्हीं का सफल है या उन्हीं का धन्य है-जो स्वार्थ के लिए नहीं परमार्थ के लिए जीते हैं। जीवन में जो भी अवसर मिले उसे अपने श्रेष्ठ व नेक सद्कर्मों से यादगार बनाए। आप शिक्षक बने तो एक श्रेष्ठ शिक्षक का गुरुत्तर दायित्व निभाए। आप सरपंच बने तो एक श्रेष्ठ मुखिया बनकर गाँव को खुशहाल बनाए। आप जो भी बने उस पद के अनुरूप अपना उत्तरदायित्व पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण भाव से निभाए। अपने लिए जीना कोई जीना नहीं है। जीना तो उन्हीं का सफल है जिन्होंने परमार्थ के लिए अपना सर्वोत्तम अर्पण किया हो। जीवन में जो भी अवसर मिले या जो भी कर्त्तव्य मिले उसे पूर्ण ईमानदारी से निभाए। भारत के महान संत-महात्माओं और ऋषि मनस्वियों ने आत्मनिरीक्षण को साधना का प्रथम सोपान बताया है। उन्होंने बताया कि व्यक्ति मनसा-वाचा-कर्मणा एकत्व और स्वयं के प्रति जागरूक रहे। अमरता आत्मा में निहित सभी शक्तियों की परिणति है। हर मनुज को चाहिए कि वह आत्मावलोकन जरूर करे और अपने श्रेष्ठ सद्कर्मों से जीवन रूपी पुस्तक के हर पृष्ठ को सुंदर व श्रेष्ठ पढ़ने योग्य तथा अनुकरण करने योग्य बनाए। हम ईश्वर प्रदत्त मनुज जीवन की महत्ता को जाने समझे और कर्म करें।

यह जिंदगी उपहार है, उपहार का उपयोग कर।
यह दिव्य जीवन दिया है जिसने, उम्रभर उसे याद कर।।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सोडावास,
पाली (राज.)-306503

शिक्षा और शिक्षक का दौर

❒ मुकेश कुमार बबेरवाल

प्राचीनकाल से ही शिक्षा और शिक्षक के संबंध का अपना एक अलग ही इतिहास रहा है। बदलते समय के साथ इनके रूप और अवधारणाओं में भी काफी बदलाव देखने को मिला। शिक्षा की अवधारणाओं का अपना एक विस्तृत प्रकरण है जिस पर टिप्पणी करना यहाँ उचित न होगा। यहाँ पर यह कहना ही उचित होगा कि इन अवधारणाओं की विशिष्टताओं को सम्मिलित करते हुए आज हम शिक्षा जगत को जिस बुलंदी पर परचम लहराते देख रहे हैं। इसके विशिष्टीकरण पर गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। इसकी प्रगति पर दंभ भरते हैं। यदि इसका वास्तविक विश्लेषण करें तो पाते हैं कि हम विराटता की तुलना में तुच्छता व नीरसता की ओर ही आगे बढ़ रहे हैं।

शिक्षा जगत् के इतिहास में शिक्षक के लिए गुरु शब्द का उपयोग किया जाता था। जिसका अर्थ है- बड़ा, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला, जिज्ञासा पैदा करने वाला और ज्ञान देने वाला आदि। यहाँ गुरु शब्द किसी एक व्यक्ति विशेष के लिए न होकर एक विराट सृष्टि के प्रत्येक प्राणी या वस्तु के लिए था, जिनसे हमें कोई सीख मिलती थी। मानव सदियों से भला प्रकृति की पूजा क्यों करता था? हमने पहाड़ों से सुरक्षा, नदियों से जीवन की गतिशीलता, पेड़ों से परहित, फूलों से हँसना, झरनों से खिलखिलाना और प्राणियों से साहचर्य जो सीखा था। उस समय ये सभी गुरु की श्रेणी में आते थे। प्रकृति ने अपने विभिन्न रूपों व विकट प्रहारों से मानव को अनुकूलन करते हुए सजग व सचेत रहना सिखाया था। उस समय हम, प्रत्येक प्राणी या वस्तु के व्यवहार से कुछ न कुछ सीखा करते थे। तब हम विराटता की ओर थे।

हमने सीखने को संक्षिप्त नहीं किया था परन्तु बदलते समय और विकसित होते हुए मानव मस्तिष्क ने इस विराटता को संक्षिप्त कर एक व्यक्ति विशेष तक सीमित कर दिया जो आज एक कक्ष में बैठकर कुछ बच्चों को विषय वस्तु का औपचारिक ज्ञान देता है। क्या यह संभव है कि एक कक्ष में बैठकर हम इस विराट सृष्टि के साहचर्य को समझ सकते हैं? हमने प्रकृति की विराटता को एक कक्ष में सीमित कर दिया जो आज एक कक्ष में बैठकर कुछ बच्चों को विषय वस्तु का औपचारिक ज्ञान देता है। क्या यह संभव है कि एक कक्ष में बैठकर हम इस विराट सृष्टि के साहचर्य को समझ सकते है? हमने प्रकृति की विराटता को एक कक्ष में सीमित कर दिया। यह तो प्रकृति के प्रति अलगाव ही है और अलगाव का भाव लेकर प्रकृति के इस विराट साहचर्य को कैसे समझा जा सकता है? बदलते समय के साथ-साथ शिक्षक का क्षेत्र सीमित होता गया और विषय वस्तु का दायरा बढ़ता गया। परिस्थितिवश जो अंतर पैदा हो गया है, उसे पाटना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा लगता है।

आज के शिक्षक का दायित्व तब और अधिक बढ़ जाता है। जब विद्यार्थियों के समक्ष शिक्षा का एकमात्र सहारा वह स्वयं ही होता है और वह उन बच्चों के लिए अति विश्वसनीय प्राणी भी। जिनको वह एक कक्ष में बैठाकर प्रकृति के बारे में जानकारी देता है, लेकिन अनुभव नहीं। क्योंकि आज के बच्चों का जीवन सीमेंट कंक्रीट की दीवारों में कैद होकर रह गया है और वे प्राकृतिक अनुभव से दूर हो गए हैं। उनका प्राकृतिक बचपन उनसे छीन लिया गया है। वे आज एक मशीन की तरह काम करते हुए देखे जाते हैं। जैसे मशीन को कोई निर्देश मिलने पर वह निर्देश के अनुसार अपना कार्य करती रहती है, वैसे ही बच्चों की दिनचर्या भी काफी हद तक निश्चित हो गई है। फलस्वरूप वे बाहरी दुनिया की हलचल से अनजान रहते हैं। जिसके कारण आज के बच्चे मौसम के लाभ-हानि तो बता सकते हैं पर उसका भरपूर आनन्द नहीं ले सकते।

रघुवीर सहाय ने अपनी कविता (वसंत आया) में लिखा है-

कल मैंने जाना कि वसंत आया।
और यह कैलेंडर से मालूम था
अमुक दिन अमुक बार
मदनमहीने की होवेगी पंचमी
दफ्तर में छुट्टी थी-यह था प्रमाण।

अर्थात् उत्सव और त्योहारों का पता मौसम में परिवर्तन के साथ बदलती हवाओं के रुख से और उसकी सोंधी खुशबू से ही चल जाता था क्योंकि उस समय हम प्रकृति में रचे-बसे थे। साक्षात् उसका अनुभव हमारे साथ हमेशा रहता था, पर प्रकृति से दूर रहने के कारण आज हम इनको केवल कैलेंडर में छपी सूचनाओं को देखकर ही पता कर पाते है या फिर दफ्तर में छुट्टी की सूचना से। लोग तर्क देते हुए कहते हैं कि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कक्ष में बैठकर प्रकृति के रहस्य को नहीं जानना चाहिए। क्योंकि कुछ विषय अतिसंवेदनशील, राष्ट्रीय सुरक्षा व परहितार्थ-जनहितार्थ होते हैं।

बिल्कुल ठीक है, लेकिन मेरे विचार से ऐसे संवेदनशील विषयों को प्रकृति की संपूर्णता के साथ समझने से हम इन विषयों के प्रति और अधिक संवेदनशील हो जाएँगे जो हमारे राष्ट्र की सुरक्षा और परहितार्थ-जनहितार्थ के लिए अधिक उचित होगा। क्योंकि जब हमारी संवेदनाएँ किसी विषय वस्तु से जुड़ती है तो उसके प्रति लगाव व अपनापन बढ़ता है और जिसके साथ हमारा लगाव व अपनापन होता है उसका हम अहित कर ही नहीं सकते। इसलिए प्रकृति के इन गुप्त रहस्यों को प्रकृति के साहचर्य के साथ समझिए ताकि इसकी गुरुता व महत्ता बढ़े और मानव की नीरसता व एकाकीपन दूर हो। महान विचारक व दार्शनिक रूसो ने भी कहा था- 'प्रकृति की ओर लौटो।'

आज का शिक्षक वातानुकूलित कमरे में बैठकर एकाकी बनकर इस विराट सृष्टि का औपचारिक व्याख्यान करता है। विशिष्टीकरण के कारण एक-एक भाग को बाँटकर उसके प्रभाव व दुष्प्रभावों की जानकारी देता है। पर फिर भी उसमें सम्पूर्णता का अभाव होता है। जिससे वह निष्प्रभावी साबित होता है। जैसे- किसी स्वस्थ व्यक्ति में किसी रोग के प्रारंभिक लक्षणों को हम वहम समझकर नजरअंदाज कर देते हैं परन्तु आगे चलकर वह प्रारंभिक

नजरअंदाज करने वाली लापरवाही एक दिन उस स्वस्थ व्यक्ति के लिए इतनी बड़ी समस्या बन जाती है कि अपना अर्जित सब कुछ गंवा देने पर भी पहले जैसा स्वास्थ्य प्राप्त नहीं कर पाता और असमय ही उसका अस्तित्व तक मिट जाता है। यदि इस रोग की भयावहता की संपूर्णता का पता उस व्यक्ति को होता तो शायद वह ऐसी लापरवाही नहीं करता। ठीक इसी प्रकार प्रकृति के भोगों के विशिष्टीकरण के व्याख्यान में हम छोटे-छोटे दुष्प्रभावों को तुच्छ समझकर नजरअंदाज करते हुए आगे बढ़ते हैं, क्योंकि हम इसकी सम्पूर्णता से बेखबर हैं। यह छोटे-छोटे प्रभाव सम्पूर्ण प्रकृति के लिए बड़े व प्रलयकारी प्रभावों के जनक बनते जाते हैं। यह हमें प्रकृति के साहचर्य व सम्पूर्णता के साथ ही पता चल सकता है। जहाँ पर आज का एकाकी व नीरस शिक्षक निरुत्तर रह जाता है।

शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है। लेकिन आज विभाग और सरकार द्वारा विभिन्न जिम्मेदारियों की पूर्तिवश उसके कार्य की महत्ता को न समझते हुए उसे अनेक कार्यों का उत्तरदायी बनाकर उसको वास्तविक कार्य से दूर किया जा रहा है। आज आर्थिक युग होने के कारण शिक्षक को अपने व्यवसाय पर तलवार लटकी हुई नजर आती है और इसी भयवश आज वह शिक्षण कार्य के साथ-साथ अनेक कार्यों का निर्वहन कर अपनी कार्य क्षमता प्रकट करने को मजबूर है। इससे वह अपने विभाग और सरकार से वाह वाही तो प्राप्त कर लेता है, लेकिन उसके अपने वास्तविक कार्य की गुणवत्ता गिर जाती है। फलस्वरूप उसके आत्मसम्मान में गिरावट आने लगी है।

ऐसे में हमें चाहिए कि शिक्षक के कार्य की महत्ता को देखते हुए उसको एकाकीपन के सीमित वातावरण व अतिरिक्त कार्य भार के दबाव से निकालकर प्रकृति के साहचर्य में छोड़ा जाए। जिससे उसमें सम्पूर्णता, गुरुता का भाव पैदा हो और उनके द्वारा दी गई शिक्षा प्रभावकारी व आनन्ददायी हो सके ताकि वास्तविक अर्थ में वह स्पष्ट राष्ट्र निर्माता बनकर समाज और देश को एक नई दिशा दे सके।

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लोचू का बास,
शाहपुरा, जयपुर (राज.)

Classroom Communication: Textbook Activity

❒ Dr. Ram Gopal Sharma

Communication within the classroom is important for students to learn effectively and should be put in place from an early stage of learning. Talking or conversation is the medium through which most teaching takes place. Successful whole-class discussion stimulates the students to communicate. Two students may disagree and talk back and forth to each other during such discussions. It also occurs when students work in groups or pairs to complete assignments. Here are some expressions for reading, writing and drawing class.

Textbook Activity: Reading

A. General expressions

- Read the passage silently.
- Read the text to yourselves.
- Study the chapter on your own.
- Prepare the next three paragraphs.
- Have a look at the next section?
- Check the new vocabulary from the list the back.
- If there any word you don't know, please ask.
- Familiarize yourselves with the text.
- Don't worry about any words you don't know, just ignore them.
- It's a good idea to read through the whole text first to get an idea about the content.
- What word from the question will probably be in the text and be easy to scan for ……..
- Read what it says at the top of the page first.
- Underline the important information in text.

B. Let's read

- Let's read the text aloud.
- I'll read it to you first.
- First of all, I'll read it to you.
- You start (reading), Karan.
- Kavita will begin.
- Start reading from line 6.
- Read the sentence aloud.
- Now we'll read it again. Manoj, you can be Mr Brown.
- Anuj, you read the part of Mrs. Brown this time.
- Let's read the conversation again with you Manu, read the part of Mr. Raju.
- Let's try it again, but this time with Varsha as Mrs. Brown.
- Read the first ten lines.
- Read as far as/down to the end of the chapter.
- Three lines each (starting with Pawan)
- Three sentences for each of you
- Read one sentence each.
- Let's take turns/it in turns to read/reading.
- One after the other, please
- Another sentence, please
- Finish the sentence (off)
- Read to the end of line 5.
- Don't stop in the middle of the sentence.
- Stop there, please.
- That's enough, thank you.
- That will do (fine), thank you.
- Go on reading, Mukul.
- Read the next bit/section/paragraph, will you, Manoj.
- How do you pronounce…….?
- Next, please
- Next one, please
- You go on, Vikas.
- Someone else, please
- Years are read as two separate numbers
  1977 = Nineteen hundred seventy-seven
  1950 = Nineteen hundred fifty
  1902 = Nineteen hundred two
  1900 = Nineteen hundred

C. Understanding

- Do you understand everything?
- Is there anything you don't understand?
- Do you know the meaning of all the words?
- Are there any words you don't know the Hindi for?
- Are there any phrases you don't know the meaning of?
- Can I help you with any words or phrases?
- Are there any strange words or expressions?
- Is everything clear?
- Are there any questions on this text?
- Has anybody got anything to ask (about this text)?
- Is there anything else you would like to ask about?
- Are there any points you're not sure of?
- Are there any words you are unfamiliar with?
- Would you like anything to be explained?
- We'll look at some difficult points in this text.
- Let's have a look at some of the difficult points.
- Let's start with a look at the difficulties in this text.
- There are one or two difficult points we should look at.

- I'd like to point out some difficult constructions.
- Let's look at the passage in more detail.
- Perhaps we should have a detailed look at this again.
- This is a good opportunity to revise the past tense.
- Perhaps we can do some quick revision.

D. Pause and Notice…

- Look at line 4 for a moment.
- If you look at line 4, you will notice that the adjective .
- In line 4 you can see the word 'best'.
- Look at the first/last line of the first paragraph.
- Look at the end of the very first line.
- Second paragraph, first line, the word 'fast'
- A little further down, about two lines from the bottom...
- I'd like to draw your attention to the word 'drag' in line 26
- It's worth noticing how the word 'sicken' is used in line 5.
- This means (more or less) the same as 'she left'.
- The meaning of this sentence is something like 'he didn't understand'
- What is the difference between ..... and ....
- How do we spell.....

Textbook Activity: Writing

Some general expressions

- Copy this down in your notebooks.
- Take this down in your exercise books.
- Put/take/get/write/copy that down.
- Make a note of this somewhere/in your books.
- Don't forget to write that down.
- Write it in the margin.
- Write it in the empty space at the top.
- Underline the new words.
- Jot this down somewhere so that you don't forget it.
- Write it in block letters.
- Write it in block/ capitals.
- Write it in capital letters.
- Write it neatly.
- Write it out legibly at home.
- Make sure I can read your handwriting.
- Rewrite it neatly.
- Your handwriting is illegible, Samridhi.
- Write out this exercise neatly in your notebooks.
- Finish/complete this exercise today.
- Do the exercise in pencil.
- Do the exercise in writing.
- Try it in ink.
- Rewrite it in ink.
- Use a pen/pencil.
- Has anybody got an extra pencil?
- Have you got a spare pen/pencil with/on you?
- Come out and sharpen your pencil.
- Has anybody got a pencil sharpener on him/her?
- Could you lend Vikas a pen or a pencil?
- We'll do the exercise orally.
- Let's try it aloud before you write it down.
- Today, try to write a speech on your own.
- Vaibhav, why are you not writing?
- Don't think much.
- Start writing whatever comes to your mind.
- Keep in mind the format.
- Krishan has written a letter.
- You have skipped the Salutation part, Manu.
- Where is the enclosure part in your letter?
- Today, let's practice article.
- Pay attention to your writing.
- Whatever you write should be properly readable.
- Pay attention to your spellings.
- Do write the correct form of the verbs.
- Fill in the suitable modals.

Textbook Activity: Drawing

- Take out your colored pencils.
- Take out your crayons.
- Take out your drawing things.
- Have you all got your colored pencils with you?
- Let's draw some pictures.
- Let's do some drawing.
- Now we'll do some coloring.
- Color the bus red.
- Draw a circle/……..(shape)
- Join these dots to complete the picture.
- Make a forward slanting/back slanting line/any geometric shape.
- For eyes, make circle/oval.
- Start making features in face.
- For nose, we will make a small circle/inverted triangle/…….
- Try to insert waves.
- For outline, you can use……(colour)
- Make border first.
- Use scale for drawing a straight line.
- You can try making a circle by using a bangle/compass/bottle cap……
- For water, use blue colour.
- Draw a right/left curve.
- Draw a bus and color it red.
- Draw a cat and give it a black tail.
- Draw a house with a red door.
- Draw a dog. Now draw a black tail for it.
- Use crayons.
- Bring your own paint brushes.
- Ragini ,please don't bother Ravi.
- Do your own drawing.
- Let Ravi use your color tray.
- Who can draw sketch of Lord Ganesha?
- Wow! What a good painting Ritu has made!
- Radha make use of scale.
- Use pencil colours.
- You can make use of oil paints.

Miscellaneous Expressios:

- It's been keeping me awake at night.
- I'm really nervous.
- I've got butterflies in my stomach.
- I'm absolutely dreading.
- How boring / tedious / dull !
- What a bore!
- It bores me.
- It does nothing for me.
- I can't see what all the fuss is about.
- I'm afraid I don't share your enthusiasm.
- I can't say that I find it interesting.
- (Actually,) I've changed my mind.
- On second thoughts...
- Come to think of it...
- I've had a change of heart.
- Did I really say that?
- What was I thinking?
- After further consideration...
- Cheer up!
- Smile!
- It's not the end of the world.
- Worse things happen at sea.
- Look on the bright side.
- Every cloud has a silver lining.
- Practice makes perfect.
- There are plenty more to eat here.
- There's no use crying over spilt milk.
- Look, who's talking!
- Take a look in the mirror sometime.
- People living in glass houses should not throw stone on others.
- That wasn't very clever.
- What were you thinking of?
- I bet you wish you hadn't done that.
- Why on Earth did you go and do that?
- What a total disaster!
- You put your foot in it (there)
- Well, you see...
- Now, let me see.
- Just a moment / Just a second
- How shall I put it?
- What's the word for it.
- Now, let me think...
- It's on the tip of my tongue..
- That's an interesting question...
- No chance!
- Never in a million years!
- You'll be lucky!
- I'm not sure about that!
- You could be right, but...
- (I'm afraid) I don't agree.
- That's an interesting idea, but…
- Do you really think..?
- You can't be serious!
- As a matter of fact, I think..

Chief Block Education Officer Bajju, Bikaner (Raj.)
Mob.: 9460305331

नहीं बनाना समझदार!

❑ डॉ. संगीता पुरोहित

गर्मी की तेज दोपहरी में भी पास के कमरे से लगातार चिर्र-घिर्र, ठक-ठक की आवाजें आ रही थी। पिछले दो महीनों से घर में लकड़ी के दरवाजे खिड़कियां और फर्नीचर बनाने का काम चल रहा था। शंकर लकड़ी के काम में गजब का कारीगर था, मस्तिष्क की कल्पना को साकार रूप देने में सिद्धहस्त। स्वभाव से शान्त पर जब भी बात करता एक निश्छल मुस्कुराहट चेहरे पर सदैव तैरती रहती। सन्तोषी इतना कि थोड़ा है ''थोड़े की जरूरत है'' कहावत मानो उसी के लिए बनी है। पिछले कुछ दिनों से देखकर लगता था मानो कोई बात उसे अन्दर ही अन्दर घुन की तरह खाए जा रही है। आज बिलकुल अनमने ढंग से कार्य करते देख मुझसे रहा नहीं गया मैंने माहौल को हल्का करने की नीयत से उससे बातचीत शुरू करते हुए पूछा ''शंकर भाईसाहब आपके परिवार मे कौन-कौन हैं? उसने कहा माँ, पिताजी, मेरी पत्नी और दो बेटे। मैंने फिर सवाल किया आपके बच्चे कौनसी कक्षा में पढ़ते हैं? उसने बहुत संक्षिप्त जबाब दिया ''पहले पढ़ते थे अब मैंने पढ़ाई छुड़वा दी''। मैंने महसूस किया कि शब्दों में तल्ख़ी के साथ-साथ गहरा दर्द छिपा था।

जिज्ञासावश मैंने उससे पूछा ''बच्चों ने 12 वीं पास कर ली''? बोला नहीं। अब मुझसे रहा नहीं गया मैंने समझाते हुए कहा अरे! यह क्या कर रहे हो शंकर भाई आप! बच्चों को पढ़ाई क्यों छुड़वा दी? आपको पता है आपके बेटे पढ़ाई करेंगे तो होशियार और समझदार हो जाएंगे और फिर अच्छी नौकरी लग जाएंगे, बुढ़ापे में आपको काम नहीं करना पड़ेगा। आपका बुढ़ापा सुधर जाएगा, आप चिंताओं से मुक्त हो जाओगे। शंकर ने खिन्न मन से कहा तभी तो पढ़ाई छुड़वा दी कि मेरे बेटे संस्कारी बने समझदार नहीं, समझदार बन गए तो मेरा बुढ़ापा बिगड़ जाएगा। मुझे उसकी बातें बड़ी बे सिर पैर की लग रही थी सोच रही थी मूर्ख कहीं का पढ़ाई के महत्त्व को नहीं जानता तभी एसी बातें कर रहा है। मैंने समझाने का प्रयास करते हुए कहा भाई साहब आप इन लड़कों का भविष्य खराब मत करो इनका वापस एडमिशन करवा दो उसने बिलकुल अड़ियल रूख अपनाते हुए कहा नहीं,

मैं अपने पिताजी की गलती को दोहराना नहीं चाहता हम जैसे हैं वैसे ही ठीक हैं। बोलते-बोलते शून्य में खो गया। कई देर दीवार की तरफ ताकता रहा। मैंने फिर कुरेदा आखिर बात क्या है? आप क्यों नहीं अपने बेटों को आगे पढ़ाना चाहते? तब उसने जो कहा उसने मेरी आत्मा को झकझोर दिया और मैं सोचने पर विवश हो गयी कि हम किस दिशा की ओर बढ़ रहे हैं?अतीत में खोते हुए उसने धीरे-धीरे बोलना शुरू किया पिताजी वाटर वर्क्स में चपरासी थे। हम चार भाई बहिन थे सबसे बड़े संजय भैया थे हम प्यार से उनको संजू भाई कहते थे दूसरे नम्बर पर मैं और मुझसे छोटा विनोद और सबसे छोटी सुनिता। संजू भाई पढ़ने मैं बहुत होशियार थे पिता जी को उनसे बहुत उम्मीद थी। पिताजी सुबह जल्दी और शाम को ऑफिस से आने के बाद लकड़ी की कारीगरी का काम घर पर ही करते थे, मैं और विनोद उनको बराबर सहयोग करते दिन में भी हम दोनों भाई कोशिश करते की पिताजी का काम करके रखें। सुनिता घर में माँ का हाथ बंटाती। बड़े भाई तैयार होकर अच्छी स्कूल में जाते उनकी शाम को ट्यूशन होती और घर में भी उनका काम सिर्फ पढ़ाई करना होता हम तीनों बहन भाई पास की स्कूल में माँ की सबको पढ़ाने की जिद के कारण आठवीं तक पढ़ाई कर पाए फिर बहन की शादी हो गई और हम काम पर लग गए। इधर संजू भाई भी परीक्षा पास कर अच्छी नौकरी लग गए थे तो घर में उनका रूतबा और बढ़ गया और हमारी नजरों में उनका सम्मान। घर में सामान्य हिसाब किताब की बात होती तो भी पिताजी संजू भाई से सलाह लेते और बैंक

ऑफिस के कार्यों में सब कुछ जैसा वो बताते वैसा ही पिताजी करते।

सब कुछ अच्छे से चल रहा था पिताजी का रिटायटमेन्ट हुआ हम दोनों भाईयों ने सोचा कि जीवन भर पिताजी ने साइकिल चलाई है तो क्यों न उनको दुपहिया गाड़ी लाकर दे दें। हमने भाई से बात की तो उन्होंने कहा कि जितनी रकम लगेगी उसके तीन हिस्से कर लेंगे पर मोटरसाइकिल लाएंगे। हमने उनको पैसे जोड़कर दे दिए, मोटर साइकिल आ गई पर पिताजी के कभी काम नहीं आई भाई साहब उस पर रोज ऑफिस जाने लगे बाद में पता चला कि बाईक के कागजात भाई साहब के नाम ही है। पिताजी ने घर के तीन हिस्से किए अपनी तरफ से परन्तु कागजात रजिस्ट्री के बनाने वाले तो भाई साहब थे, घर भी उन्होंने अपने नाम करवा लिया था। रिटायरमेन्ट के पैसे को पिताजी ने बहुत सूझ-बूझ के साथ छः भागों में बांटा था तीन हिस्से हम भाईयों के एक हिस्सा सुनीता का जिससे आगे चलकर उसके बच्चों के मायरे आदि सामाजिक रीति-रिवाज पूरे किए जा सके। और एक स्वयं का व एक माँ का कि कल को पिताजी को कुछ हो जाए तो माँ को बेटों के आगे हाथ ना फैलाना पड़े। परन्तु रजिस्ट्री के बैंक के सारे काम तो हम भाई कम पढ़े-लिखे होने के कारण और पिताजी का अत्यधिक विश्वास होने के कारण संजू भाई ही करते थे तो वे सभी रुपये उन्होंने अपने स्वयं के नाम जमा करवा लिए। एक आड़े वक्त में काम आए इस भाव से पिताजी ने जमीन खरीदी थी वो भी भाई ने अपने नाम करवा ली। मैंने आश्चर्य से पूछा भाई ने कुछ तुम लोगों के लिए छोड़ा कि नहीं उसने कहा अभी सुनीता बाकी है ना! उसके पति की बिजली विभाग में नौकरी थी खम्भे पर चढ़ कर वह लाईट के तार ठीक कर रहे थे अचानक किसी ने पीछे से लाईन चालू कर दी और सुनीता के पति मौके पर ही 85% झुलस कर खम्भे से जमीन पर गिर गए। तीन दिन लगातार मृत्यु से संघर्ष करने बाद चौथे दिन वे चल बसे। सुनीता के दोनों बेटे उस वक्त 10 और 14 वर्ष की आयु के थे तो पिताजी ने भाई साहब को हमेशा की तरह उनके मुआवजे व अन्य राशियों को जमा कराने का काम सौंपा वह भी पैसा उन्होंने अपने और अपनी पत्नी के नाम से जमा करवा दिया। मैंने आश्चर्य से पूछा इस सब घटनाक्रम का आप में से किसी को पता भी नहीं चला? शंकर ने शून्य में देखते हुए कहा नहीं पता चला ना! मैंने पूछा कब? उसका जबाब था जब पिताजी ने आत्महत्या करने की कोशिश की और घर पर पुलिस आई तब। मैं और विनोद दोनों काम पर गये हुए थे बाद में हमें पिताजी ने बताया कि कई दिनों से संजू भाई हम दोनों भाईयों को घर से निकालने के लिए पिताजी पर दबाब बना रहे थे तो पिताजी ने कहा कि मेरी बैंक की एफ.डी. तुड़वा दो जिससे मैं उस जमीन पर इनको छोटा-मोटा बैठने लायक घर बना कर दे दूंगा तब उन्होंने पिता जी को बताया कि जमीन तो उन्होंने अपने नाम पर करवा ली। यह पता चलने पर पिता के होश उड़ गए और उन्होंने तिजोरी में से कागजात निकाले। पिता जी ने पड़ोसी शर्मा जी से अब तक के जमा पूंजी के सारे कागजात पढ़वाए तो पता चला कि परिवार में किसी के नाम कुछ भी नहीं है सब कुछ संजू भाई और उनकी पत्नी के नाम है। इस सारे घटनाक्रम के पता चलने पर घर में बहुत घमासान हुआ और अन्त में उन्होंने हमें घर से निकाल दिया, अब हम सब किराए के मकान मे रहते है। आप ही बताइए हमारी सात पीढ़ियों में पिताजी ने इतनी मेहनत कर इनको पढ़ाया। पढ़ लिखकर भाई इतने होशियार हो गए कि पूरे परिवार को समझदारी के साथ धोखा देने में उन्हें कोई ग्लानि नहीं हुई, तब से हमारे परिवार ने सोच लिया कि अब अपने बच्चों को ज्यादा नहीं पढ़ाएंगें। हम कम पढ़े-लिखे ठीक है कम से कम हमारे मन में बहिन-बेटी और माता-पिता के प्रति समान का भाव तो जीवित है हम उन्हें कष्ट में नहीं डालना चाहते। अपने घर में दूसरा संजू भाई बने ये देखने की हमारे अन्दर हिम्मत भी नहीं रही। अब आप ही बताइए पढ़कर आदमी इतना समझदार हो जाता है तो मैं अपने बेटों को समझदारी के साथ-साथ संस्कार भी दूंगा। शंकर की कहानी सुनकर अब सोचने की बारी मेरी थी की क्या यह मूल्यविहीन शिक्षा हमारी उन्नति कर पाएगी? क्या हमारी शिक्षा का आधार मात्र भौतिक चकाचौंध है, जिसमें बड़े घर लम्बी गाड़ियां, मोटा बैंक बैलेंस तो हो पर जीवन भर कमाई करने वाले वृद्ध पिता के कापते हाथों, मोतिया बिन्द से रोशनी खोती माँ की पनीली आँखें दिन रात लकड़ी छीलते भाई की मेहनत और पापड़ बेल कर जीवनयापन करती विधवा बहिन के हाथों के छालों का जीवन में कोई स्थान तक नहीं हो! पढ़ लिखकर भाई इतने होशियार हो गए कि पूरे परिवार को समझदारी के साथ धोखा देने में उन्हें कहीं ग्लानि नहीं हुई तब से हम दोनों भाईयों ने सोच लिया कि अब अपने बच्चों को ज्यादा नहीं पढ़ाएंगे हमें घर में दूसरे संजू भैया नहीं चाहिए। कहते-कहते शान्त रहने वाले शंकर के जबड़े क्रोध से भिंच गए थे।

शंकर ने जो बताया उसे सुनकर में किम्कर्त्तव्य विमूढ़ बनी खड़ी थी, निश्चय नहीं कर पा रही थी कि मैं सही थी या शंकर सही था? यही यक्ष प्रश्न आज के समाज के लिए भी है कि हम कौनसी अंधी दौड़ में शामिल हो गए?

सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर (राज.)
मो: 9950956577

कसूर किसका?

❑ कैलाश गिरि गोस्वामी

आज सकते में आ गया था विद्यालय प्रशासन। अनुशासन को लेकर कड़ी निगाहें थी शिक्षकों की छात्रों पर। आज विद्यालय में कोई आला अफसर/निरीक्षक जो आ रहा था। पेयजल का पुख्ता प्रबन्ध किया गया था। संस्थाप्रधान ने हिदायत दी कि कोई विद्यार्थी इधर-उधर घूमता हुआ नज़र न आए। शारीरिक शिक्षक विद्यालय के मुख्य गेट पर खड़े थे। अध्ययन-अध्यापन का कार्य जोरों पर था। कक्षा आठवीं का एक छात्र लघुशंका के लिए कक्षाध्यापक की अनुमति से कक्षा से बाहर निकल कर सीधे गेट पर पहुँचा। ज्यों ही गेट से बाहर निकलने लगा त्यों ही शारीरिक शिक्षक ने कान उमेठा। संयोगवश उसी समय निरीक्षक महोदय भी आ धमके। बालक से बाहर जाने का कारण पूछने पर लघुशंका हेतु बाहर जाना बताया। निरीक्षक पूछ बैठा- 'क्या आपके विद्यालय परिसर में मूत्रालय नहीं है?'

तभी एक शिक्षक तपाक से बोला- 'अरे साहब! यहाँ सभी प्रकार का माकूल बंदोबस्त है। मूत्रालय, शौचालय, पेयजल आदि आदि...।' निरीक्षक सीधे मूत्रालय की ओर पहुँचे। देख कर अवाक रह गए। पूछ बैठे- 'यह मूत्रालय है या खुला शौचालय?' शिक्षक निरुत्तर थे। बालक अपराधी की तरह सिर झुकाए खड़ा था। निरीक्षक मन ही मन सोच रहा था- 'आखिर कसूर किसका है?'

प्राध्यापक (हिन्दी) मु.-बोदिया, तहसील-गढ़ी, जिला-बाँसवाड़ा (राज.)

शिक्षक की जादूगरी

❐ सलमा

अच्छे शिक्षक किस्मत की तरह होते है, जो ईश्वर की प्रार्थना करने से हमें मिलते हैं। ये कोटेशन आपने यदाकदा सुना ही होगा। 'पंकज शाह' के लिए यह कोटेशन बिलकुल फिट बैठता है। पंकज शाह!!! कौन पंकज शाह? अभी तक हमने यह नाम नहीं सुना हो सकता है, लेकिन मैं यह यकीन से कह सकती हूँ कि इनके बारे में जानकर अच्छा लगेगा और खुशी भी होगी कि हमारे बीच में कुछ ऐसे शिक्षक भी जो अपने आप से जिद करके कुछ अच्छा करने में लगे हैं।

सरकारी शिक्षक पंकज शाह सरल और शालीन स्वभाव के हैं। हम इन्हें जादूगर भी कह सकते हैं। अरे! नहीं, यह कोई जादूगर का खेल नहीं दिखाते। बस अपने स्कूल में कुछ इस तरह की जादूगरी करते हैं कि स्कूल की सूरत बदल देते हैं। यह कोई एक स्कूल की बात नहीं है वे जिस भी विद्यालय में ट्रांसफर होकर जाते है कुछ ही दिनों में उस विद्यालय की काया पलट कर देते है, तो हुए ना पंकज शाह जादूगर।

गैर सरकारी संस्था में काम करते हुए सरकारी स्कूलों में काम करने का अवसर मिला तो वहाँ शिक्षकों और विद्यालयों को करीब से जानने का मौका मिला। ऐसे ही एक शिक्षक पंकज शाह से मेरी मुलाकात होती है उनके काम के तरीके से मैं ही क्या कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

अक्सर हमने सुना है कि सरकारी विद्यालयों में केवल वे बच्चे पढ़ते है जिनके माता-पिता प्राइवेट विद्यालयों की फीस नहीं भर पाते है। पंकज शाह का स्कूल एक अलग ही कहानी पेश करता है। इनके विद्यालय में आर्थिक रूप से सम्पन्न (बड़े-बड़े होटल्स के मालिक है) परिवारों से बच्चे पढ़ रहे है और अभिभावक इस विद्यालय के काम से काफी खुश है।

वर्तमान में शिक्षक पंकज शाह राजस्थान के डूँगरपुर जिले के आसपुर ब्लॉक में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय रोड़ेवाला में कार्यरत है। शाह के शब्दों में ''जब मैं इस विद्यालय में पिछले वर्ष (मार्च 2021) ट्रांसफर होकर आया तब विद्यालय में 18 बच्चों का नामांकन था उसमें से केवल 2 या तीन बच्चे ही रेगुलर आते थे। मुझे विद्यालय की इस स्थिति ने विचलित किया और घबराहट भी हुई। मैंने इस विद्यालय की स्थिति को बेहतर करने की ठान ली। इसके लिए एक व्यवस्थित योजना बनाई और क्रियान्वयन की दिशा में अपनी कोशिश शुरू भी कर दी।''

सबसे पहले गाँव के लोगों से मिला और मेल-मिलाप को सतत किया। जब अभिभावक मिलते तब उनके साथ बैठकें आयोजित करता। परिणामस्वरूप बच्चे विद्यालय में रेगुलर रहने लगे। जो भी बच्चा एक दिन से ज्यादा स्कूल से गायब रहता, मैं उसके घर पहुँच जाता।

बच्चे आने लगे तो उनकी पढ़ाई-लिखाई पर अधिक ध्यान दिया। अब उनकी पढ़ाई पर फोकस कर काम करने की संभावनाएँ बनने लगी थी। विद्यालय को बाल मित्र विद्यालय बनाने के प्रयास शुरू किए। बच्चों की गतिविधियों के साथ पढ़ाना, पढ़ाने में नई तकनीकी का उपयोग, विद्यालय में बंद पड़ी शिक्षण सामग्री की पहुँच बच्चों तक करना, शिक्षण सामग्री का निर्माण और कक्षा-कक्षों में उपयोग करना शुरू किया। सीखने का वातावरण बनाने के लिए विद्यालय में प्रत्येक जगह शिक्षण सामग्री को चस्पा किया। इससे बच्चों के लिए सीखने का वातावरण बना। बच्चों के स्तर के अनुसार किट्स तैयार किए गए। जब बच्चा एक किट को सीख लेता है तब उसे दूसरा किट दिया जाता है। यह प्रक्रिया लगातार जारी है।

शाह आगे कहते हैं कि शुरूआत के दिनों में पढ़ाई के साथ-साथ भौतिक सुविधाओं और साफ-सफाई पर भी पूरा ध्यान दिया। कक्षा-कक्षों की छतों में पानी टपकता था, खिड़कियाँ टूटी-फूटी थी, पीने के पानी की उचित व्यवस्था नहीं थी, शौचालयों की छतें टूटी थी। इसके लिए गाँव के लोगों और शाला प्रबंधन समिति के साथ व्यवस्थित और सकारात्मक चर्चा की गई।

शाह आगे बताते हैं, मैंने अपनी बचत के लगभग 25000 रुपए शुरूआत में इन कार्यों के लिए दिए। भामाशाहों से संपर्क किया। इस प्रक्रिया में लोग प्रेरित होकर धनराशि देने लगे। शाला प्रबंधन समिति के साथ लगातार बैठकें होती रही। बैठकों में उनकी भूमिका और जिम्मेदारी को लेकर समझ बनाने का कार्य किया। आज शाला प्रबंधन समिति बजट के अनुसार विद्यालय में बेहतरीन कार्य कर रही है। बच्चों में हो रहे शैक्षिक और सह-शैक्षिक सकारात्मक बद्लावों को अभिभावकों और शाला प्रबंधन समिति के साथ साझा किया जाता है।

बच्चों की अभिव्यक्ति और शैक्षिक प्रगति को देखकर अन्य अभिभावक भी प्रेरित हुए और उन्होंने अपने बच्चों को इस विद्यालय में दाखिला दिलवाना शुरू किया। आज इस विद्यालय का नामांकन 18 से बढ़कर लगभग 50 हो गया है।

शाह ने लॉकडाउन की स्थिति को भी स्पष्ट करते हुए बताया कि अगर एक शिक्षक चाहे तो वो किसी भी परिस्थिति में बच्चों के शिक्षण कार्य को सुचारू रख सकता है। हमारे विद्यालय में हमने लॉकडाउन के दौरान प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक रेगुलर कक्षाएँ संचालित की। बच्चों के घरों में लगातार संपर्क रखा और कई बार मोहल्ला कक्षाओं का आयोजन भी किया। मैंने लॉकडाउन के दौरान बच्चों के लिए कई तरह की शिक्षण सामग्री का निर्माण किया और विशेष तौर से कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए 'मेरा पहला खिलौना' गतिविधि आधारित किताब बनाई। इस किताब पर एक दिन का प्रशिक्षण अभिभावकों के साथ किया और उन्हें बच्चों को घरों में पढ़ाने हेतु गाइड किया। हमने प्रत्येक घर में बच्चों के लिए एक लर्निंग कॉर्नर बनवाएँ, जिससे घरों में बच्चों को सीखने का वातावरण मिल सके। मेरे विद्यालय में प्रत्येक बच्चे के स्तर के अनुसार ही पढ़ने-लिखने की शुरूआत की जाती है और प्रतिदिन आधा घंटा विद्यालय में बच्चे स्मार्ट टीवी और प्रॉजेक्टर से पढ़ाई करते हैं।

शाह आगे बताते हैं, लगातार कोशिश की जाती है कि बच्चों को रोज होम वर्क भी मिले। अगर किसी दिन हम में से कोई शिक्षक कक्षा में होम वर्क नहीं दे पाता है तो बच्चे विद्यालय की छुट्टी होने के बाद भी इंतजार करते रहते हैं। मैं कार्यालय में चाहे कितना भी महत्त्वपूर्ण काम कर रहा हूँ या किसी अधिकारी के साथ भी बैठा हूँ। बच्चे कार्यालय में आकर भी होमवर्क लेकर ही जाते हैं।

शाह कहते है कि सबसे ज्यादा जरूरी है

कि विद्यालय के कामों में बच्चों की सहभागिता होना। सहभागिता से बच्चों की अभिव्यक्ति का विकास तो होता ही है साथ ही उन्हें विद्यालय के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास भी होता है। हमारे विद्यालय में हमने बाल संसद के बच्चों के साथ रेगुलर बैठकें की और उनको छोटे-छोटे प्रोजक्ट्स करवाए। हमारी स्कूल की बाल संसद ने कई तरह के सर्वे गाँव में किए हैं।

उन्हें इस तरह से काम करने की प्रेरणा कहाँ से मिली? इस सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि मेरी पूरी पढ़ाई सरकारी विद्यालय से ही हुई है। मेरे विद्यालय में एक गुरुजी थे जो हम सभी बच्चों को फ्लेश कार्ड का एक छोटा डिब्बा देते थे। जो हमें बताते थे उसे हमें याद करके आना पड़ता था। एक डिब्बा याद करने के बाद ही हमें दूसरा डिब्बा मिलता था। वे सप्ताह के एक दिन पढ़ाई में हमें पढ़ाई नहीं करवाते थे। उस दिन चित्र बनाना, खेल खेलना, गीत गाना या बनाना आदि गतिविधियाँ ही करवाते थे। इन सबमें मुझे बड़ा आनंद आता था। जब मैं शिक्षक बना तब से मेरे दिमाग में था कि मुझे सीखने के जिस तरीके में आनंद आता था मैं भी कुछ वैसे ही तरीके बच्चों को सिखाने में उपयोग करूँगा और वो मैं लगातार कर रहा हूँ।

जब उन्होंने अपने अनुभव सुनाए तब मेरे सामने वह दृश्य घूमने लगे। उस वक्त उन्होंने कई स्थितियों को संभाला होगा और कितनी ही तरह की चुनौतियाँ आई होगी लेकिन आज इनके विद्यालय में गेट के अंदर जाते ही मन लुभावने दृश्य देखने को मिलते हैं। जहाँ चारों तरफ पेड़-पौधे लगे हैं। बच्चों के हाथ धोने के पानी का भी निस्तारण इस तरह से किया गया जिससे उसका अन्य उपयोग हो सके। विद्यालय में एक पोषण वाटिका बनाई गई है जिसमें कई तरह की सब्जियाँ उगाई गई है। विद्यालय में पीने के पानी के लिए आरो मशीन लगी है, शौचालय की उचित व्यवस्था है। आते-जाते बच्चों के मुँह से हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों का उपयोग भी सुनाई पड़ता है।

अब आप ही बताइए भला इतने बेहतरीन विद्यालय में जाकर और पंकज शाह जैसे शिक्षक से मिलने के बाद उनकी तारीफ किए बिना कोई कैसे रह सकता है?

सामाजिक कार्यकर्ता, राजस्थान
मो: 9602772004

भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्त्व

❐ राजेन्द्र सिंह चौहान

भारत में सदियों से गुरु परंपरा समाज और देश का मार्गदर्शन करती रही है। अनेक ऐसे महापुरुष हुए है जिन्हें संवारने और उनके जीवन को नई दिशा देने में उनके गुरुजी की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। बदलते समय में गुरु परंपरा और शिक्षक शिक्षक का स्वरूप भले ही बदल गया है लेकिन सभ्य समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक की भूमिका आज भी उतनी ही मूल्यवान है।

आज के दौर में शिक्षण को एक व्यवसाय मान लिया गया है। लेकिन गहरे अर्थो में देखे तो यह केवल व्यवसाय नहीं है। एक शिक्षक अपने शिक्षण द्वारा पूरे समाज में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। हमारे भीतर सामाजिक एवं नैतिक मूल्य रोपता है और इस तरह सुसंस्कृत समाज और सशक्त राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यही कारण है कि शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता भी कहाँ जाता है। शिक्षकों के इसी योगदान को याद करने के लिए हम हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाते हैं। यह दिन हमारे देश के महान शिक्षाविद् और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन होता है। उन्हीं की इच्छानुसार उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की परंपरा शुरू हुई।

भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत गुरु (शिक्षक) अपने शिष्य को शिक्षा देता है या कोई विद्या सिखाता है। बाद में वही शिष्य गुरु के रूप में दूसरों को शिक्षा देता है। यही क्रम चलता जाता है। यह परम्परा सनातन धर्म की सभी धाराओं में मिलती है। गुरु-शिष्य की यह परम्परा ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है, जैसे-अध्यात्म, संगीत, कला वेदाध्ययन वास्तु आदि। भारतीय संस्कृति में गुरु का बहुत महत्त्व है। कही गुरु को 'ब्रह्मा-विष्णु-महेश' कहा गया है तो कही 'गोविन्द'। 'सिख' शब्द संस्कृत के 'शिष्य' से व्युत्पन्न है।

'गु' शब्द का अर्थ है अंधकार (अज्ञान) और 'रु' शब्द का अर्थ है प्रकाश ज्ञान। अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्म रूप प्रकाश है, वह गुरु है। आश्रमों में गुरु-शिष्य परम्परा का निर्वाह होता रहा है। भारतीय संस्कृति में गुरु को अत्यधिक सम्मानित स्थान प्राप्त है। भारतीय इतिहास में गुरु की भूमिका समाज को सुधार की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शन के रूप में होने के साथ क्रान्ति को दिशा दिखाने वाली भी रही है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर माना जाता है।

'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वराः।
गुरु साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

प्राचीन काल में गुरु और शिष्य के संबंधों का आधार था गुरु का ज्ञान, मौलिक और नैतिक बल उनका शिष्यों के प्रति स्नेह भाव तथा ज्ञान बाँटने का निःस्वार्थ भाव शिक्षक में होती थी।

गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा गुरु की क्षमता में पूर्ण विश्वास तथा गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण एवं आज्ञाकारिता, अनुशासन शिष्य का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण माना गया है

आचार्य चाणक्य ने एक आदर्श विद्यार्थी के गुण इस प्रकार बताए हैं।

काकचेष्टा, बको ध्यानं, श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्।।

गुरु और शिष्य के बीच केवल शब्दिक ज्ञान का ही आदान प्रदान नहीं होता था बल्कि गुरु अपने शिष्य के संरक्षक के रूप में भी कार्य करता था। उसका उद्देश्य रहता था कि गुरु उसका कभी अहित सोच भी नहीं सकते, यही विश्वास गुरु के प्रति उसकी अगाध श्रद्धा और समर्पण का कारण रहा है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण जी ने गुरु-शिष्य परम्परा को 'परम्पराप्राप्तम योग' बताया है। गुरु-शिष्य परम्परा का आधार सांसारिक ज्ञान से शुरू होता है, परन्तु इसका चरमोत्कर्ष आध्यात्मिक शाश्वत आनंद की प्राप्ति है, जिसे ईश्वर प्राप्ति व मोक्ष प्राप्ति भी कहा जाता है। बड़े भाग्य से प्राप्त मानव जीवन का यही अंतिम व सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए। गुरु एक मशाल है, शिष्य प्रकाश।

वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गामड़ी, सावला
मो: 9413282201

'लोकतंत्रोत्सव' एक स्मरण

❐ मनीषा शर्मा

लोकतंत्र का शब्दिक अर्थ लोगों का शासन है। संस्कृत में लोक का अर्थ जनता तथा तंत्र का अर्थ शासन था। जिसे आज हम प्रजातंत्र के नाम से भी जानते हैं।

कुछ इसी तरह की वास्तविकता का अनुभव मुझे तब हुआ, जब दिसंबर 2018 के विधानसभा के चुनाव में मेरी ड्यूटी लगी थी। पहली बार ड्यूटी लगने के कारण मेरे मन में एक रोमांच भी था तो एक अनजाना भय भी, कि इतना महत्त्वपूर्ण कार्य करते समय कहीं कोई त्रुटि ना हो जाए। हालांकि इसके पूर्व हमें दो प्रशिक्षण दिए जा चुके थे। लेकिन आज का प्रशिक्षण फाइनल था, उसके बाद हमें अपने-अपने मतदान केंद्रों पर ही पहुँचना था।

हमें सुबह सात बजे जिला मुख्यालय के पॉलिटेक्निक कॉलेज में उपस्थित होने का आदेश दे दिया गया था। लिखित ऑर्डर हमारे पास थे। हमारी यात्रा सुबह चार बजकर तीस मिनट की बस से आरंभ हुई। इस बस में लगभग सभी मतदान कर्मी ही थे जिनकी ड्यूटी चुनाव में लगाई गई थी। दिसंबर माह होने के कारण ठंड का आगमन हो चुका था। हम सभी शिवाजी बस स्टैण्ड पहुँच चुके थे। सभी मतदानकर्मी के आ जाने के बाद बस जिला मुख्यालय के लिए रवाना हो चुकी थी। ठंड के कारण बस की सभी खिड़कियाँ बंद थी। पीआरओ स्टॉफ के अन्य सदस्य भी हमारे साथ थे। जिनमें पुरुष व महिला मतदान कर्मचारी शामिल थे।

बस में सुबह जल्दी उठने की चाय नाश्ते की बातों के अलावा चुनाव की चर्चा भी चल रही थी। जो बीच-बीच में वी वी पैट मशीन की बात व उसे मतदान के समय सेट करने की चर्चा भी चलती रही। एक स्टाफ मेंबर ने बतलाया कि वे किस तरह सुबह जल्दी नहीं उठ पाई थी और किस तरह भागदौड़ कर बस पकड़ने में सफल हुई। उनके बात कहने के अंदाज से हम सभी हंस पड़े थे।

हम सभी महिला मतदान कर्मी अपना ग्रुप बना कर बैठ चुकी थी क्योंकि बस का सफर लगभग दो घंटे का था। हम सभी महिला मतदान कर्मी में सुरेखा जी कुछ उम्रदराज थी। घन्टा करीब बीत जाने पर ठंड के कारण सुरेखा जी ने गर्म चाय पीने की इच्छा व्यक्त की। उनकी इस चाय पीने की बात का सभी ने समर्थन किया। इस ठंड में चाय मिल जाए तो फिर भला और क्या चाहिए। सुरेखा जी ने ड्राइवर से किसी होटल के आगे चाय पीने के लिए, बस रोक लेने की बात कह दी थी। गुरुजन से जब चाय के लिए पूछा गया। उन्होंने ने भी चाय पीने की इच्छा व्यक्त की। वे भी कह उठे 'नेकी और पूछ पूछ आपने तो हमारे मुँह की बात छीन ली मैडम..।'

सामने दिखाई देते होटल के आगे, किनारे पर ड्राइवर ने बस रोक ली थी। सभी लोग नीचे आ चुके थे। बाहर का मौसम और भी ठंडा व हाड़ कंपकपा देने वाला था। सभी बेंत की बनी कुर्सियों पर बैठ चुके थे और गर्म चाय का मजा ले रहे थे।

तभी सुरेखा जी ने कहा ''जरा चाय पीने की जल्दी कीजिएगा.. देर ना हो जाए। वहाँ समय से पहले पहुँच जाना ही उत्तम रहेगा। ''उनकी इस बात से सभी ने सहमति जताते हुए कहा, हाँ हाँ यह बात बिल्कुल सही है। सभी अपनी बातचीत को विराम देते हुए, चाय खत्म कर चुके थे। गुरु पेमेंट कर ही रहे थे कि सुरेखा जी ने तेजी से आगे बढ़ते हुए कहा- ''नहीं गुरुजी आप रहने दीजिए, आज की चाय मेरी तरफ से।'' कहते हुए उन्होंने चाय का बिल चुकता कर दिया। तभी मैंने कहा क्या बात है, आज कुछ विशेष है क्या? सुरेखा जी.. मेरी बात सुनते ही सुरेखा जी मुस्कुराते हुए बोली ''हाँ विशेष ही तो है। हमारे देश का उत्सव लोकतंत्र की बुनियाद का उत्सव। तभी तो हम सब इकट्ठा जिला मुख्यालय पर उपस्थित होने जा रहे हैं।'' उनकी इस बात से सभी ने अपनी सहमति ओर खुशी जताई थी।

बस अपनी रफ्तार से चली जा रही थी बस की रफ्तार से बाहर के पेड़-पौधे खेत सभी तेजी से दौड़ते नजर आ रहे थे। हल्का दिन निकलने लगा था। कहने को अभी भी कुछ कोहरा था लेकिन फिर भी कुछ दिखाई दे रहा था। राजस्थान के इस इलाके की मुख्य फसल बाजरा मोठ, मूंग, सरसों, तिल चना है। मगर अब यहाँ के इलाके में पानी की आवक हो जाने के कारण अब यहाँ चावल, रुई, नरमा, कपास, व गेहूँ की खेती भी होने लगी है।

हमें अब सामने बड़ी-बड़ी लाइट्स व रोशनी का हुजूम नजर आ रहा था। लगता था हम गंतव्य स्थल तक आ पहुँचे हैं। चारों और गाड़ियाँ व तेज रोशनी से जगमगाती मर्करी लाइट्स व पुलिस की गाड़ियाँ और अलसुबह पहुँचते ही पॉलिंग कर्मचारी चारों ओर यही सब नजारे नजर आ रहे थे। मैदान बहुत बड़ा और विस्तृत था। पूरे मैदान मे अलग-अलग टेन्ट लगे हुए थे। हमारी बस आगे जाकर अपने स्थान पर रुक गई थी। एक-एक करके हम सभी बस से नीचे उतर चुके थे और टेण्ट की ओर बढ़ने लगे थे।

थोड़ी ही दूर पर बने टेन्ट में माइक से बार-बार सूचनाएँ व जानकारियाँ दी जा रही थी। जिससे हमें पता चला कि वहीं सामने बने शिविर में अपनी उपस्थिति दर्ज करवानी थी। सभी ने अपने-अपने हस्ताक्षर किए और उसके बाद हम सामने बने विशाल टेंट की ओर बढ़ने लगे थे। बहुत भीड़ थी। ठंड भी काफी बढ़ चुकी थी। हमें सामने टेंट में जाने का आदेश दिया गया था। अब हम महिलाओं को दो ग्रुप में, पाँच-पाँच लोगों के दो ग्रुप थे यानी अब हम दस महिलाओं का एक ग्रुप था। हम सामने लगे विशालकाय टेंट की ओर बढ़ने लगे थे। यहाँ कम से कम हजारों लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। व्यवस्था बहुत अच्छी व नियोजित तरीके से की गई थी। इसके बाद अब हमें हमारे मत का प्रयोग करना था। जिसे डाक मत पत्र कहते हैं। जितने भी कर्मचारियों की चुनाव में ड्यूटी थी उन सभी के लिए डाक मत पत्र की व्यवस्था थी। हम सभी डाक मत पत्र शिविर की ओर चल पड़े थे। जहाँ सभी ने अपने मत का प्रयोग किया। लिफाफे में सील पैक कर वहाँ बने बॉक्स में हमने मतदान किया। मेरे लिए डाक मत पत्र का यह पहला अनुभव था। बाकी तो कभी सुना था या पत्र-पत्रिकाओं में ही पढ़ा था। मन बहुत प्रसन्न था। इसके बाद हम सामने बने विशाल टेंट की ओर चल दिए जहाँ सभी के बैठने की व्यवस्था थी। सभी कुर्सियों पर मतदान कर्मी के ग्रुप नंबर व मतदान कर्मी संख्या का क्रम भी लगा हुआ था। तभी माइक से आवाज आई। 'कृपया सभी महिला मतदानकर्मी आगे की ओर लगी कुर्सियों पर अपना स्थान ग्रहण करें।'

माइक पर के निर्देश सुनकर हम सब उसी ओर जाने लगे थे। ठंड के कारण सभी शॉल और

स्वेटर से अटे पड़े थे। अब सभी महिलाकर्मी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ चुकी थी। पुरुष मतदानकर्मी भी सामने की ओर अपना स्थान ग्रहण कर चुके थे। यहाँ हमें डीआईजी, एडीएम, जिला कलेक्टर साहब व प्रशिक्षण शिविर प्रभारी ने मतदान संबंधी आवश्यक सूचना व महत्त्वपूर्ण निर्देश दिए। सभी ने बारी-बारी हमें संबोधित किया। उनके संबोधन में अपने काम के प्रति पूरी जिम्मेदारी सजगता, कर्त्तव्यनिष्ठा झलक रही थी। हर तरह से चौकस व बिना किसी डर के भय के मतदान प्रक्रिया सम्पन्न करवाने के निर्देश दिए गए थे। समय पर मॉकपोल करवाना, कोई भी परेशानी होने पर तुरंत सूचना देना किसी भी वोटिंग उपकरण में कोई तकनीकी खराबी होने पर तुरंत सूचना देना व बिना किसी घबराहट के मतदान प्रक्रिया संपन्न करवाना आदि। सब सुझाव दिए गए जो कि हमें अपने कार्य के प्रति सतर्क रहने की प्रेरणा दे रहे थे।

निर्देशों की अनुपालना अनुसार सभी को अपने-अपने मतदान केन्द्रों पर सीपीयू, वी.वी. पैट मशीन बुलेट सामान आदि लेकर जाना था। टैग नम्बर और मशीन नंबर के मिलान की विशेष हिदायत दी गई थी। मॉक पोल को मतदान के दिन सुबह समय पर व बहुत सावधानी से करवाने के अलावा तीनों मशीनों को बहुत अच्छे तरीके से सेट करने, ऑन ऑफ बटन के बारे में पूरी सावधानी बरतने के बारे में भी आवश्यक निर्देश दिए गए थे।

मैंने देखा चारों तरफ किसी मेले का सा दृश्य लग रहा था। वहाँ अलग-अलग टेंटों में हर तहसील के लिए अलग बोर्ड लगे हुए थे। प्रबंधक व एक्टिव पोलिंग पार्टी का अलग और रिजर्व पार्टी के लिए अलग प्रकोष्ठ बने हुए थे। हम सभी मतदान कर्मी निर्देश सुनने के बाद वहाँ के कॉलेज के अन्य कमरे, जहाँ प्रत्येक तहसील अनुसार मतदान संबंधी सभी सामान, कागजात के बंडल, सील पैक मशीन आदि पंक्तिबद्ध रूप से सामान प्राप्त करने की व्यवस्था थी, पहुँचे।

प्रत्येक मतदान केन्द्र के लिए पाँच सहकर्मी थे दो तो पीठासीन अधिकारी भी थे। इसी बीच दो-तीन जगह चाय बिस्किट कॉफी आदि की व्यवस्था थी। चूंकि समय काफी हो चुका था। अब पेट में चूहे दौड़ रहे थे। हम में से कुछ मैडम टिफिन भी लाई थी इसलिए हमारे दोनों ग्रुप ने मिल जुल कर जलपान ग्रहण किया। तभी माइक पर से निर्देश दिए गए कि सभी पोलिंग पार्टियाँ अपने ग्रुप के साथ तहसील के अनुसार ही बैठेंगे और बसों की तरफ रवानगी करेंगे।

निर्देशानुसार अब हमें बसों की तरफ जाना था, थोड़ा आगे चलकर किनारे के दरवाजे से निकलते ही बहुत बड़ा ग्राउंड दिखाई दिया। वहाँ हमें दूर-दूर तक बसें ही बसें खड़ी दिखाई दे रही थी। सैंकड़ों की संख्या में लगी बसें, जो कि किसी बसों के मेले का सा दृश्य प्रस्तुत कर रही थी। एक साथ लगी इतनी बसें देखने का मेरा यह पहला अनुभव था और यह सब कुछ अलग ही दृश्य उत्पन्न कर रहा था। इसके अलावा पुलिस व होमगार्ड के जवान भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। प्रत्येक बस के आगे तहसील का नाम मतदान कर्मियों के कहाँ से कहाँ तक के नंबर व उसकी संख्या एक विशेष रंग नेम प्लेट पर बस के आगे के शीशों के किनोर चिपका दिए थे। प्रत्येक बस का एक हेड भी था। एक्टिव पोलिंग बूथ कर्मचारी के पोलिंग मशीनों के साथ-साथ उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस दल व हथियार लिए होमगार्ड भी थे। जो कि उसी बस में थे जिसमें एक्टिव पोलिंग कर्मचारी थे। यह व्यवस्था सुरक्षा के मद्देनजर की गई थी। धीरे-धीरे सभी मतदान कर्मी अपनी-अपनी बसों में अपने पोलिंग बूथ के सामान के साथ, एक पूर्ण जिम्मेदारी व पूर्ण विश्वास के साथ प्रस्थान करने लगे थे। वापसी प्रस्थान के समय हमारे दो रिजर्व ग्रुप थे, हमारी पार्टी, एक्टिव पार्टी के साथ रिजर्व पार्टी में थी। हमें भी अलग बस के साथ गंतव्य स्थान पर जाने को कहा गया था। हम जिस बस में सवार हुए, वह बस काफी कोशिश के बाद भी स्टार्ट नहीं हो पाई थी।

एक गुरुजी बोले लगता है-'यह भी रिजर्व में है इसे धक्का ही लगाना पड़ेगा।'

उनकी बात सुनकर सभी हँसने लगे थे। तभी फोन द्वारा जैसे ही व्यवस्थापक को बस खराब होने की सूचना भेजी गई, तुरंत ही हमें दूसरी बस भेजने का आश्वासन मिला और उसके करीब दस मिनट बाद ही एक दूसरी बस हमारे सामने खड़ी हो गई थी जिसमें इस बार सिर्फ महिला मतदान कर्मी को ही बैठने का निर्देश दिया गया था। जिसमें हम कुल बारह-तेरह महिलाएँ थीं। पूरे सफर में खूब हँसी मजाक गाना गुनगुनाना भी चलता रहा। पहली बार पूरी बस में सिर्फ महिला ही थी ऐसे में सफर करने का मजा ही कुछ और था।

शाम ढलने के साथ अंधेरा होने लगा था। हम तहसील मुख्यालय पर पहुँचे। जब हमारी बस ने तहसील कार्यालय में एंट्री की, उस समय कुछ ऐसा लगा कि हमारी भूमिका भी लोकतंत्र के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण है। तहसील कार्यालय के कर्मचारी हमारी राह देख रहे थे। उन्हें भी रिजर्व ग्रुप के आने की जानकारी दे दी गई थी। हम सभी ने कार्यालय में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

इस बार के मतदान में एक खास बात यह भी थी कि इस बार महिलाओं को ही व्यापक संख्या में ट्रेनिंग के लिए बुलाया गया था। 'पिंक बूथ' मतदान केन्द्र भी बनाए गए थे जिसका नाम बाद में बदलकर 'शक्ति बूथ' कर दिया गया था। तहसील कार्यालय के बाद हम एक्टिव पोलिंग पार्टी के पास शक्ति पोलिंग बूथ पर पहुँचे थे। जहाँ की विशेषता यह थी कि वहाँ की सभी मतदान कर्मी, महिला कर्मचारी ही थी। पोलिंग का पूरा कार्यभार उन्हीं पर था।

इसके साथ-साथ शक्ति बूथ की एक और विशेषता थी जिसने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। वह था शक्ति बूथ को किसी शादी समारोह की तरह सजाना संवारना। पिंक कलर, पिंक लाइट, पिंक गुब्बारे, पिंक साड़ियों से बने आकर्षक द्वार व दीवारों की सजावट आदि अद्भुत दृश्य उत्पन्न कर रहे थे। जैसे किसी बारात के आगमन की व्यवस्था की गई हो। वहाँ एक बड़ा सा वोट का होर्डिंग भी बना हुआ था, जो कि जनता को वोट देने का संदेश दे रहा था। उसके साथ कोई भी वोटर सेल्फी भी ले सकता था। हमारे लिए यह एक बेहद आकर्षक व खुशनुमा माहौल था। पहली बार ऐसे बूथ को देखकर सभी के चेहरों पर उत्सुकता व प्रसन्नता थी। हमें भी इस बात की खुशी थी कि इस शक्ति बूथ के हम पहले मतदान कर्मी बने थे।

पोलिंग बूथ का निरीक्षण कर हम सभी महिला मतदान कर्मी अपने-अपने घरों की ओर चल दिए। जहाँ से अगले दिन प्रातः छः बजे हमें पुनः यहाँ लौटना था। अपने देश के लिए इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपनी भूमिका अदा करना बेहद रोमांच भरा था। वैसे तो चुनौतीपूर्ण कार्य करने का मजा ही कुछ और होता है। अब हमें बेहद उत्सुकता से कल होने वाले मतदान या कहिए कि महान देश के महान लोकतंत्रोत्सव का इंतजार था।

वरिष्ठ अध्यापक
तिवारी क्लॉथ हाऊस, गणेश चौक, नोहर,
हनुमानगढ़ (राज.)-335523
मो: 9694360848

कुदरत की दीपावली

❐ संदीप पाण्डे

मीनू एक साल से अपने शहर से बाहर पढ़ाई कर रही थी। उसको पिछले कुछ दिनों से दीपावली का बेसब्री से इंतजार था। उसके घर से हॉस्टल दो घंटे की दूरी पर था मगर उसका मन करता था कि पंख लगाकर उड़ जाए और अपने परिवार के पास आ जाए।

दीपावली के तीन दिन पहले वो बस से रवाना हो गई थी। सारे रास्ते वो बस अपने परिवार को ही याद कर रही थी।

उसको यह ख्याल ही नहीं था कि बस में कितनी सवारियां चढ़ीं, धूम्रपान करने वालों को कंडक्टर ने कितना जुर्माना लगाया आदि।

मगर जब वो बस से उतरी तो उसने देखा बस स्टैंड पर पेड़ के चारों तरफ सजावट थी। रंगीन फूलों की माला लिपटी हुई थी। नीचे किसी ने दीपक रखने की जगह बना रखी थी। ना जाने यह देखकर मीनू को किस बात की याद आई कि वो अपनी नम आँखों को रूमाल से पोंछने लगी।

तभी मीनू ने दिमाग पर जोर लगाया और उसको याद आ गया कि जब वो बारहवीं में पढ़ रही थी तब उसके पापा ने नया घर बनवाया था। बरामदे में बहुत सुंदर से गमले लगा दिए थे। घर पर सब लोग उन गमलों में उग रहे पौधों से प्रेम करते साथ ही माली आते और पौधों की निराई गुड़ाई कर जाते थे। उसे याद आया कि काका हर पौधे से बात करते रहते थे और इस तरह बतियाते कि मीनू को हँसी आ जाती थी वो कहते ''उनसे सुन मेरे भाई और कैसे हालचाल है माली काका से पूछा कि, '' माली काका आप इनसे बातचीत करते हो?'' तो इसका जवाब देने से पहले माली काका ने उसको बैंगन के दो पौधे रोपने को दे दिए मीनू को बहुत मजा आया उसने गीली माटी से लबालब गमले में एक पौधे को रोप दिया फिर सारी मिट्टी बराबर कर दी वैसा ही दूसरे गमले के साथ किया। अब मीनू ने बगैर देरी किए अपनी वही बात दोहराई और कहा कि माली काका माली काका पहले एक बात तो बताओं ना उन सब पौधों से आप बातें करते हो पर कैसे? माली काका ने कहा–कि बेटी

यह सब प्रेम की भाषा जानते हैं एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हुए हैं जगदीश चंद्र बसु वो कहते

थे कि पौधे सब महसूस करते हैं जो हम इंसान महसूस कर सकते हैं। इस पर उन्होंने प्रमाण भी दिए हैं ''हाँ जी माली काका यह तो मैंने सातवीं में विज्ञान की किताब में पढ़ा है'' बहुत अच्छा बेटी तो चलो अब सर्दी में यह सब्जी तो देंगे ना इस दीपावली यहाँ पर एक दीपक इन पौधों के पास रखो यह तुमको अपना फल यानि ताजा ताजा बैंगन देंगे।

और एक बैंगन का यह पेड़ कम से कम दस साल तक कायम रहेगा, अरे सच काका, ''हाँ, हाँ, हो सकता है कि बारह साल भी। ''तो मीनू बेटी तुम इनसे भी एक रोशनी का बंधन जोड़ लो।'' अच्छा–अच्छा जरूर जरूर कहकर मीनू ने वहाँ चार मुँह का दीपक रख दिया। न जाने ऐसा क्या महसूस हुआ कि वो उनको हाथ लगाती तो लगता वो हंस–हंस कर कह रहे हैं हैलो मीनू कैसी हो'' अब होले–होले मीनू को उन पौधों से खास लगाव हो गया। मगर बारहवीं के बाद से वो बाहर थी। आज हर एक मिनट बाद उसको पौधे याद आ रहे थे। उसको सब याद आ रहा था। माली काका कहते थे कि ''यह पेड़ हमें भाई जैसी सुरक्षा देते हैं और अपनी पूरी जिंदगी हमें दे देते है। कोई मौसम हो फल, फूल, पत्ती, तना, छाल सब चीजें अपने अंगों से तोड़कर छीलकर ले जाने वाले को कुछ भी नहीं कहते।'' माली काका की इस बात पर वो हमेशा ही सहमत होती थी। इस पेड़ पर दीपावली मनाने का किसी का सपना देख उसे सब याद आने लगा। घर पर आई और सारा परिवार खुश था और मीनू की बहुत सेवा हो रही थी मगर मीनू का मन कहीं खो सा गया था।

जब सभी ने जोर देकर कारण पूछा तो मीनू ने बता दिया कि ''माँ, घर पहुँची तो बहुत अजीब लगा माँ, आज बरामदे से गमले हटा दिए और मुझे अपने बैंगन के पौधों की रह रहकर याद आ रही है। माँ तुरंत बोली,'' अरे, दीपावली की रंगाई–पुताई की वजह से। पर मीनू मुझे अच्छा लगा तुमको पौधों से प्यार है।

शाबाश जरा छत पर जाना और उन सभी पौधों को भी सजाकर आना वहाँ भी रात को तीन दिन दीपक लगाना सबको रोशन करना उनको भी जो बैंगन के नहीं है। ''छत पर हैं'' अरे, माँ, सच माँ, हाँ पर दूसरे बड़े गमले में लगा दिए हैं उसकी इच्छा को सुनकर माँ ने कहा, माँ की बात सुनकर मीनू उछल पड़ी।

वो अपने भाई राजू के साथ बहुत ही खुशी–खुशी छत पर चली आई थी।

छत पर कम से कम सौ गमले रखे थे। बैंगन, मिर्ची, नींबू, अनार वाह! माँ मीनू तो उछल पड़ी, अब माँ ने कहा कि मीनू बरामदे में एक दिन बंदरों का समूह आ गया और गमले तोड़ दिए बरामदा बहुत छोटा था। बस दस गमले ही आ सकते थे। माली काका ने छत पर बोगनबेलिया की बाड़ लगा दी और इतने गमले लगा दिए। अब यहाँ बंदर आ सकते है पर नुकसान नहीं कर सकते बोगनबेलिया के डर से वो दूर से ही भाग जाते हैं।''

मीनू को यह सब सुनकर बहुत आनंद आ रहा था। वहाँ हॉस्टल में भी उसने पौधा लगा रखा था। मीनू को आज रात को दीपक की यह थाली सजाने में बहुत ही आनंद की अनुभूति हो रही थी। रंग–बिरंगी जगमगाते दीपक की थाली दूर से और भी इंद्रधनुषी हो रही थी।

जब वह और उसके भाई छत पर दीपक लगाकर पौधो को प्यार देकर तथा आनंद मनाकर वापस लौटने लगे तो लगा कि वो रोशनी और हवा भी बैगन के पौधे पर गा रही थी। माँ ने कहा ''मीनू हमारी छत पर जगमगाती दीपक की महफिल। यह दीपावली तो संगीतमय हो गई। ''मीनू की आँखें फिर भर आईं। आज उसने यादगार दीपावली मना ली थी।

पुष्कर रोड़, कोटरा, अजमेर
(राज.)–305004
मो: 9414070143

मन की साधना

❐ गोविन्द नारायण शर्मा

'चन्द्रमा मनसो अजायत्'। चन्द्रमा की उत्पति मन से मानी गयी है। चन्द्र प्रकृति स्वभाव शीतलता शान्ति धवलता व ज्योतिर्मय है। प्रत्येक मानव के तन में एक मन होता है। सांख्य दर्शन में मन को ग्याहरवीं इन्द्री माना गया हैं; जो कि ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों के मध्य सेतु का कार्य कर संतुलन एवं तारतम्य बनाए रखता हैं। ध्यान की एकाग्रता भी मन पर ही निर्भर करती है। योगी जति; मुनि; वैरागी; संन्यासी और भक्त गण सभी मन की एकाग्रता के लिए सहस्रों वर्षों तक वन एवं पर्वत कन्दराओं में तपस्या लीन रहते थे और मन को साध कर मानव कल्याण में निरत रहते। मन की कटुता मानव मात्र के लिए अहितकारी अभिशाप एवं अनर्थकर होती है। जैसे कि मन नही मिलने से कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य 18 दिनों तक भयकंर महा विनाशकारी संग्राम हुआ जिसमें लाखों शूरवीरों; धनुर्धरों; रथियों महारथियों अतिरथियों का बलिदान हुआ कर्ण जैसा महादानी पराक्रमी धनुर्विद्या में निष्णात अर्जुन से लोहा लेने वाला महाप्रतापी महाबली वीर गति को प्राप्त हुआ। द्रोपदी जैसी पंच कन्याओं में से एक पवित्रतमा नारी के शील को भंग करने की कुत्सित मानसिकता का खुला प्रदर्शन धृतराष्ट्र पुत्रों कौरवों के द्वारा हस्तिनापुर की भरी सभा में किया गया जिसमें गंगा पुत्र भीष्म (देवव्रत), नीति विषारद विदुर, धर्मराज युधिष्ठिर, गाण्डीव धारी अर्जुन, गदाधारी वायु पुत्र भीम, भी किंकर्त्तव्यविमढ़ू से रह गए और द्रौपदी अतुल्या पवित्र नारी का चीर हरण मन की दद्रिता के कारण ही हुआ। 'वचने का दरिद्रता' अर्थात वाणी में कैसी कंजूसी जब हम किसी परिचित अपरिचित व्यक्ति के साथ वार्तालाप करे तो भाव माधुर्य रखे एवं प्रसंगानुकूल मनोनुकूल शब्दों का प्रयोग करे। वाणी में संयमितता लाएँ ताकि वार्ता में माधुर्य कायम रहे।

मन को जीतने से सम्पूर्ण दुनिया को आसानी से जीता जा सकता हैं। मन की गति अनन्त एवं असीम है;

मन बिना लगाम का घोड़ा है जो अपनी इच्छित वस्तु को अपनी बनाने के लिए ललचाता हैं। इस सम्बन्ध में कवि शिरोमणि बिहारी जी ने लिखा है:-

समै समै सुन्दर सबै रूपु कुरूपु न कोई।
मन की गति जेति जिते तित तेति रूचि होई।।

अर्थात् इस जगत में सभी वस्तुएँ सुन्दर से सुन्दरतम हैं; लेकिन जिस समय मन जिस वस्तु को चाहता हैं वह उसे ही सुन्दरतम और जिसे नही चाहता उसे असुन्दर एवं कुरूप मान लेता है। जबकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तुएँ अनिन्द्य सुन्दरतम हैं। जिस प्रकार कोयल का रंग काला हैं फिर भी बसन्त ऋतु में जब वन उपवन में उसकी कुहु कुहू की संगीतमयी स्वर लहरियों गुंजरित होती है तो कर्णप्रिय ध्वनि से रसिक जनों के मन रमणियों के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित हो जाते हैं। मेघाच्छादित नभों मण्डल में जब बलाहक विचरण करते है तो मोर का मन आहल्लादित हो जाता है और वह नेत्र मुन्द कर पंख फैलाकर नृत्यलीन हो जाता हैं-

जल में बसे कुमुदनी चन्दा बसे आकाश।
जो जाहि को भावता सो ताहि के पास।।

मन के हारे हार है; मन के जीते जीत। जिस व्यक्ति का मन किसी कार्य को करने के जिए दृढ़ निश्चयी हो जाता है। तो उसे निश्चय ही विजय श्री वरण कर लेती है और यदि वह अपने मन में हार मान बैठता है तो उसे कभी भी लाख कोशिश करने के बाद भी लेश मात्र भी सफलता नही मिलती हैं। जैसे की राम चरित मानस के सुन्दर काण्ड में वर्णन मिलता है कि जब हनुमान जी को उनके अन्तर्निहित पराक्रम का स्मरण करवाया गया तो वे सौ योजन समुद्र को भी गोपद (गाय के पंजें के निशान) के समान लाँघ गए और जस जस सुरसा बदन बढ़ावा। तासु दुन कपि रूप दिखावा। शत जोजन तेहि आनन कीन्हा अतिलघु रूप पवनसुत कीना।। लंकापुरी का दहन कर राख कर दिया। यह सब मन की प्रबलता के कारण ही संभव हुआ। जब लंका विजय के समय मेघनाद के शक्ति बाण से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए तब हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने गए और उनको जब पूरा पर्वत ही दीपक की तरह जगमगाता हुआ दिखाई दिया तो पूरे पर्वत को ही उखाड़कर ले आए।

इसी प्रसंग में एक और दृष्टान्त मन की अनन्यमनस्किता का यह है कि भगवान कृष्ण जब नीति विशारद विदुर जी के घर दुर्योधन का मेवा त्याग कर साग विदुर के घर खाए; उस समय विदुर जी की भार्या पुंसवती इतनी भाव विभोर एवं आनन्दातिरेक में निमग्न हो गयी की भगवान को जब उन्होंने फलाहार करवाया तो कदली की गिरी को तो फैंक दिया और छिलके भगवान को खाने को दिए भगवान ने उसे भक्त का अनन्य प्रेम समझकर प्रसाद मानकर ग्रहण कर लिया और मन ही मन मुस्कुराते रहे। ये है प्रेम की पराकाष्ठा भक्त और भगवान का उच्च कोटि का निश्छल नि:स्वार्थ प्रेम। प्रेम के अतिरेक में रागी और अनुरागी एकाकार हो जाते है। प्रेम दोनों और पलता है कीट भी जलता है तो दीपक भी जलता है। मन साधकों के वश में रहता है और उनके निर्देशन में काम करता है। मन चंचल घोड़े के समान होता है। जिसे किंचित भी चाबुक लगा दिया जाए तो वह बिदक जाता है और असावधान सवार को गिरा देता है। लेकिन चतुर अश्वारोही स्वयं चाबुक मारकर भी घोड़े को तेज दौड़ाकर भी उस पर सवारी करता रहता है। अर्थात् कुशल साधक मन को अपने नियंत्रण में रखता है। उससे वही काम लेता है जो स्वयं साधक के लिए कल्याणकारी एवं समष्टि के लिए हितकारी हो। मंगल प्रदान करने वाला मोक्षदायी हो। मन में वासनाएँ क्यों उत्पन्न होती है। वासनाओं के उत्पन्न होने के मूल कारण ज्ञान की दृष्टि से वासना के मूल स्वरूप का दर्शन ही नही किया जिसे भोग का सही ज्ञान हो जाता है। उसकी भोग वासना स्वत: मिट जाती है और मन बड़ी सरलता से निर्विकार निश्छल हो जाता हैं। वासनाओं के समूह का नाम ही मन है। समस्त वासनाओं को नष्ट कर देने से मन मर जाता है और तब साधकों को काम क्रोध; मोह ; ईर्ष्या; डाह और मत्सर जैसे अवगुण नही सताते और वह निष्काम निर्मोह ईर्ष्या विहीन हो जाता है। वासनाओं का अन्त निज ज्ञान एवं यथार्थ ज्ञान से ही सम्भव है। यथार्थ ज्ञान हृदय के शुद्ध होने पर ही सम्भव है। जब हम निर्विकार हो जाते है तो जीवन के इकतारे से वही ध्वनी झंकृत होने लगती है जिससे मधुरिमा निसृत होती है। मधुरिमा ही जीवन का आनन्द होती है।

वाणी एक अमोल है जो कोई जाणै बोल।
पहिले हिय तराजू तोल के फिर मुख बाहिर खोल।।

जीवन के सत्य को प्रकट करने के लिए वाणी उसका साधन है मन उसकी शक्ति है। भव उसका प्राण है बुद्धि उसे विवेक प्रदान करती है ऐसे साधकों की वाणी जब प्रकट होती है तो लगता है अमृत बरस रहा है। वाणी के द्वारा हमारे मानस में हलचल मचाने वाले भावों की ही अभिव्यक्ति होती है। मन तो कारण है कर्ता नही हम जिन विचारों को प्रिय मानकर हृदय में स्थान देते है। वे ही समय पाकर मुख से प्रकट होते है। विषयों में भोग की रूचि के कारण इतनी बड़ी भूल हो जाती है कि जिन पदार्थों मे जीवन देने की शक्ति है ही नही उनमें जीवन मान बैठते है।

मन में स्वभावत: कोई विकार नही है जब हम कुविचारों एवं असद् विचारों का समर्थन करने लगते हो तब हमारा मन भी विकृत हो जाता है। जिसका जीवन के सत्य से कोई लेना देना नही है। एक विद्वान के उद्‌गार है। बीते समय पर आँसु बहाना कायरों का काम हैं। परिस्थितियों को कोसना अपने आप को धोखा देना है। इस प्रकार से अपनी शक्ति का अपव्यय मत कीजिए। सदैव नयी आशा दृढ़ विश्वास साहस का सम्बल लेकर कार्य करते रहेंगे तो सफलता के दीपक की ज्योति से निश्चय ही आपका जीवन जगमगा उठेगा। सफलताएँ बिना संघर्ष किए नही मिलती है। कोई भी मंजिल बिना भटके नही मिलती है। काई भी उद्देश्य बिना परिश्रम पूरा नही होता है। वस्तुत: जीवन की सफलता का मूल मंत्र है परिश्रम अध्यवसाय एवं उद्यम'उद्यमेन ही सिध्यन्ति कार्याणि न हि मनोरथै: सुप्तस्य सिंहस्य मुखे न प्रविशन्ति मृगा:।।'' अर्थात् परिश्रम करने से ही कार्य में सफलता प्राप्त होती है केवल मन ही मन कपोल कल्पित मनोरथ मन में पालने से नही सोये हुए सिंह के मुख में शिकार के रूप में कोई भी जानवर (मृगा:) चलकर नही जाता है। भले ही वह जंगल का राजा है। हमारे सतत प्रयास में ही जीवन की सफलता निहित है। सुख शान्ति स्वाध्याय और सन्मयता सभी परिश्रम के आधीन है। जीवन उसी का सफल एवं सुखमय है जो अहर्निश गतिशील है। मानसिक निर्बलता से जीवन में निराशा एवं शुष्कता का समावेश हो जाता है, इसलिए हम आत्मा की शक्ति को समझकर मन को इतना सबल बनाए कि जीवन के संघर्षों में विचलित न हो सके। विघ्न बाधाओं से घबराए नही अपितु हँसते हुए उनका सामना करे। दु:खों से जूझना एवं कष्टों में मुस्कराना सीखे तभी हम अपने जीवन में सफल हो सकते है। फूल काँटों में खिलता है धूप के साथ फलता है पानी के साथ बढ़ता है हवा के साथ हँसता हैं माली उसे तोड़ता है। परन्तु फिर भी अपनी सुन्दरता एवं सुगन्ध नही छोड़ता है;

इसी प्रकार मनुष्य के चारों ओर विघ्न बाधाओं के काँटे लगे हुए है। दु:खों की धूप में उसे झुलसना पड़ता है; पर यदि वह ऐसे अवसर पर भी पुष्प की भाँति हँसता खिलता है और अपनी स्मित मुस्कान बिखेरता रहे तो जीवन की कसौटी पर स्वर्ण आभा की तरह खरा और भास्वित होता है। किसी के रोने या हँसने से संसार का चक्र नही रूकता है। जिस प्रकार जन्म के साथ मृत्यु बन्धी हुई है; उसी प्रकार दु:ख के साथ सुख; हार के साथ जीत और निराशा के साथ आशा सुनिश्चित है। हँस-हँस कर रहो; या रो-रोकर यदि संसार में रहना है तो सभी कुछ सहना पड़ेगा। अत: सफलता एवं बहादुरी इसी में है कि मुस्कुराते हुए कष्टों का सामना करो।

जीवन की सफलता के सन्दर्भ में एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि छोटे-छोटे कार्यों को भी तुच्छ या हेय दृष्टि से ना देखे क्योंकि तुच्छता में भी महानता छीपी रहती है। लघुता में भी प्रभुता का स्वरूप है। भगवान कृष्ण ने गोचारण किया और राम वन वन भटके फिर भी मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए।

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से ना मिले मिले गांठ पड़ जाय।

प्रेम करना मन का विषय है और प्रेम मन से किया जाता है; प्रेम के विना भगवान भी भक्त के वशीभूत नही है। प्रेम है तो भगवान भी भक्तों के लिए नंगे पाँव दौड़े हुए आते हैं। सुदामा का नाम सुनते ही अनन्त श्री से विभूषित ब्रह्माण्ड नियामक द्वारकाधीश भगवान श्री कृष्ण अपने सिंहासन से उठकर नंगे पाँव दौड़े आए और 'पानी परात को हाथ छुयो नही नयन के जल से पग धोये।'

मूंड मुण्डाले चाहे केसर तिलक लगाय।
प्रेम बिन रिझे ना भगवान।

भक्त और भगवान साधक साध्य भाव में प्रेम की पराकाष्टा सर्वोपरि होती है। अत: प्रेम करने के लिए मन की साधना नितान्त आवश्यक है। मन की साधना अति दुर्लभ कर्म हैं।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (सीबीईओ.)
केकड़ी, अजमेर
मो: 9660408232

अंतर

❐ श्रीपाल श्रीमाली

बाप साठ का, बेटा तीस का। दोनों की उम्र में तीस साल का अंतर। दोनों एकही बस से उतर कर दूसरी बस के इंतजार में खड़े। प्यास लगने से पानी की चाह हुई।

समीप की होटल पर जाकर बैठते ही पानी की बोतल मांगी तो पिता ने कहा-मटके से पी लेता हूँ। पुत्र ने आनाकानी करते हुए कहा दो-चार रुपये के लोभ में सेहत खराब करना समझदारी नहीं कही जा सकती।

कुछ नाश्ता कर लें पापा!

पापा प्रत्युत्तर देते इसके पूर्व ही उसने दो कचौरी व दो चाय का आदेश दे दिया।

चाय-नाश्ता लेने के बाद बेटे ने सौ का नोट दिया तो कुछ पल में लड़का एक दस का नोट व कुछ सिक्के हिसाब के नाम ले आया। युवा ने सीधे जेब के हवाले किए तब बाप ने पूछा-कितने ले लिए? देखकर, पूछ कर खरीदी करनी चाहिए।

बेटे ने कहा-चाय, कचौरी, पानी की बोतल के भी कोई भाव पूछे जाते हैं।

बस आने पर बस के चारों तरफ लड़के आवाज लगाते-दस की बोतल। दस में गर्मागर्म कचौरी! सिर्फ पाँच रुपय की चाय। पिताजी मन ही मन हिसाब लगाते-दो कचौरी बीस, दो चाय दस, बोतल दस। चालीस के स्थान पर पिचासी ले लिए! ठग।

बेटा कहने लगा-इसमें और उसमें रात-दिन का अंतर है। अब तक कंडक्टर आ गया था उसे दस का वह नोट दिया। तो उसने तुरंत लौटाते हुए कहा-ये फटा हुआ है। दूसरा दो। सिक्के भी ध्यान से देखने पर पाँच के स्थान पर चार ही थे, उनमें भी एक पचास पैसे वाला! जिसे सभी खोटा सिक्का कहा कर नकारते।

पिता के सामने रह-रह कर होटल की तस्वीर आती और चेहरे परे चिंता की रेखाओं में पसीना छूटता। उधर सोचता-कमाने के यही जतन। लगता उम्र का यही अंतर। होटल व घुमक्कड का यही भेद। पूछ-परछ नहीं करने से हो रही नित-लूट।

खंडप जिला, बाड़मेर (राज.)
मो. 9413171217

क्रांतिधर्मा प्रफुल्ल चाकी उर्फ दिनेशचंद्र राय

❐ भगवान प्रसाद गौतम

मुजफ्फरपुर (बिहार) : 30 अप्रेल 1908 की रात। यही कोई 8:30 के आस-पास का समय। जिला न्यायाधीश डगलस किंग्सफोर्ड के बंगले के सामने सुनसान रास्ते पर दो किशोर सरीखे युवक टहल रहे थे। बीच-बीच में वे पेड़ों के झुरमुट के निकट ठहरकर कुछ बतियाने भी लगते। ऐसे में ही सुरक्षा में तैनात एक गार्ड ने उन्हें टोका, एतराज जताते हुए थोड़ी पूछ-ताछ भी की और उम्र, हुलिए, उनके तौर-तरीके से संतुष्ट होने के बाद चले जाने के लिए कह दिया। वे चल तो दिए पर कुछ आगे जाकर झाड़ियों में इधर-उधर छिपते-दिखते रहे और आजू-बाजू व पास-दूर की टोह लेते रहे।

तभी एक बग्घी क्लब बिल्डिंग से बाहर निकली। दोनों लड़के तुरंत अपनी पिस्तौले संभालते हुए पेड़ों से लगे-लगे न्यायाधीश के बंगले की आरे बढ़ने लगे और ज्यों ही बग्घी बंगले के पास पहुँची, वे फुर्ती से सड़क पर आ गए और एक ने बिना समय गंवाए बग्घी पर बम दे मारा। धमाका ऐसा था कि आस-पास का इलाका ही दहल उठा और बग्घी के कल-पुर्जे बिखर गए। जब दोनों आश्वस्त हो गए कि 'टार्गेट पूरा हो गया, वे जूते-चादर छोड़-छोड़कर भाग छूटे। पर थोड़ी दूर पहुँचते ही उन्होंने अपने रास्ते बदल लिए। एक तो पटरी-पटरी भागा बेनी गाँव की ओर, जबकि दूसरा पहुँच गया समस्तीपुर। कौन थे ये दोनों नौजवान? एक था खुदीराम बोस और दूसरा प्रफुल्ल चाकी उर्फ दिनेशचंद्र राय।

यहाँ इससे पूर्व के माहौल और घटनाओं को समझना भी जरूरी है। वह कालखंड था ब्रिटिश राज की दमनकारी नीतियों को मनचाहे ढंग से हिंदुस्तानियों पर थोपने का, किसी भी रूप में उनके जन-धन-मन को क्षति पहुँचाने का। ऐसे हालात में कोलकाता (तब कलकता) का चीफ मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड तो इन मामलों में सुर्खियों में ही बना रहता था। इस हैवानियत की वजह से ही कुछ क्रांतिकारियों ने उस पर पुस्तक बम से हमला करने की कोशिश भी की थी किंतु सही समय सीमा में वह फटा नहीं और 'चीफ' बच गया।

पर निरंतर बढ़ते जन-आक्रोश के कारण हुकूमत के सामने अपने प्रिय और प्रमुख अधिकारियों की सुरक्षा भी एक चुनौती बनती जा रही थी। ऐसे में ही फेर-बदल के चलते किंग्सफोर्ड को कोलकाता से हटाकर मुजफ्फरपुर के जिला न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किया गया था। मगर यहाँ भी वह क्रांतिकारियों को फूटी आँखों नहीं सुहा रहा था। उसके सरकारी आवास से कुछ ही दूरी पर एक क्लब चलता था जहाँ रोज-रोज संध्या समय अंग्रेज अफसर और शहर के तथाकथित गणमान्य लोग अलग-अलग मनोरंजक गतिविधियों के लिए जुटते थे। किंग्सफोर्ड भी सपत्नीक वहाँ पहुँचता था।

इधर 30 अप्रेल को हुए बम विस्फोट की खबर रातों-रात आग की तरह फेल गई थी। हर जगह पुलिस बल चुस्त और चौकस था। जब खुदीराम बेनी गाँव पहुँचा, तो उसने स्टेशन पर ही रात गुज़ारी और सुबह-सुबह बाहर निकला तो पुलिसकर्मियों की काना-फूसी से वह मन ही मन स्तब्ध रह गया। सोचने लगा, बल्कि मुँह से निकल भी पड़ा- किंग्सफोर्ड बच गया? ऐसा कैसे?

दरअसल जिस बग्घी पर उसने बम फेंका था उसका रंग-आकार किंग्सफोर्ड की बग्घी से मिलता-जुलता था और उसमें एक अंग्रेज वकील प्रिंगल केनेडी की पत्नी व बेटी मौजूद थीं। पर वे दोनों निर्दोष महिलाएँ अनजाने ही मारी गई, इसका उसे बहुत दुःख हुआ। किंतु उसके हाव-भाव से पुलिस सचेत हो गई और उसे उसी समय अपनी गिरफ्त में ले लिया। फिर तो उसे मुजफ्फरपुर ले जाया गया। उस पर मुक़दमा चला। अदालत ने फैसले में मृत्युदंड का ऐलान किया और हबीबपुर निवासी पिता त्रैलोक्य नाथ बोस व माता लक्ष्मीप्रिया के परिवार में 3 दिसंबर 1889 को जन्मे खुदीराम बोस को 11 अगस्त 1908 को फाँसी दे दी गई। .. और उस 18 वर्ष 8 माह के नौज़वान के देश की आजादी की लड़ाई में सबसे कम उम्र के पहले शहीद का गौरव प्राप्त हुआ। ध्यातव्य है कि खुदीराम जहाँ दुबला-पतला और साधारण कद-काठी वाला लड़का था वहीं प्रफुल्ल डील-डौल की दृष्टि से काफी तंदुरुस्त व हट्टा-कट्टा लगता था। उसका जन्म बंगाल प्रेसीडेंसी, उत्तरी बंगाल के बोगरा जिले (अब बांग्लादेश) के बिहारी गाँव में 10 दिसंबर 1888 को एक बहुत ही साधारण परिवार में हुआ था। वह दो साल का हुआ होगा कि पिता राजनारायण चाकी अनायास ही चल बसे। माँ स्वर्णमयी देवी ने जैसे तैसे बड़ी कठिनाइयों से जूझते हुए उसका लालन-पालन किया।

वैसे यह भी संयोग ही रहा कि विद्यार्थी जीवन में ही वह स्वामी महेश्वरानंद द्वारा स्थापित गुप्त क्रांतिकारी संगठन से परिचित हो गया। वहाँ स्वामी विवेकानंद का साहित्य भी पढ़ने को मिला और उससे काफी प्रभावित भी हुआ। रुचि के अनुकूल ही दूसरे क्रांतिकारियों का साहित्य भी मिलता तो उसे भी पढ़ता। साथ ही जनमानस में भी स्वतंत्रता के लिए छटपटाहट ज़ोर पकड़ती रही। तभी बंगाल विभाजन का वह दौर आ गया, जिसके विरोध में कई नेता तत्काल उठ खड़े हुए। विरोध प्रदर्शनों में कई छात्रों ने भी बड़ी निर्भीकता से बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

ऐसे समय में प्रफुल्ल कैसे चुप रह सकता था? उसकी अपनी भागीदारी भी बरबस बढ़ती चली गई। यही वह समय था जब वह रंगपुर जिला स्कूल में नवीं कक्षा का छात्र था। लेकिन उसी आंदोलन में भागीदारी की वजह से उसे स्कूल से निष्कासित कर दिया गया। अब उसके पास कोई चारा नहीं था। वह करता तो क्या करता? ऐसे में उसकी प्रतिभा और हौसले को देखकर सशस्त्र आंदोलन करने वाले संगठन 'युगांतर' से जुड़े सक्रिय व्यक्तित्व बरिन घोष उसे कोलकाता ले आए और प्रमुख पार्टी कार्यकर्ताओं से मिलवाया। आखिर वह 'युगांतर' से जुड़ गया और उसी के लिए कार्य करने लगा।

उसे पहला काम मिला पूर्वी बंगाल व असम के पहले गवर्नर सर जोसेफ बॉम्पफील्ड फुलर की हत्या करने का। हालांकि यह योजना कुछ कारणों से क्रियान्वित नहीं हो सकी। पर इसकी आहट से सरकार सतर्क हो गई। यह सब और आमजन के क्रोध को देखते हुए ही उसने किंग्सफोर्ड की सुरक्षा में और बढ़ोतरी कर दी। साथ ही उसे जिला सत्र न्यायाधीश बनाकर मुजफ्फरपुर भेज दिया। लेकिन इस कार्यवाही से क्रांतिकारी और अधिक भड़क गए। अब तो वे उस पर बदतर से बदतर 'एक्शन' लेने के लिए, यहाँ तक कि उसे मौत के घाट उतारने के लिए कटिबद्ध थे।

'युगांतर' ने यह काम प्रफुल्ल और खुदीराम को सौंप दिया। बस फिर क्या था, वे दोनों उसके पीछे-पीछे मुजफ्फरपुर जा पहुँचे और एक धर्मशाला मे ठहर गए। यही नहीं, एक सप्ताह तक दिन-रात किंग्सफोर्ड के आवागमन और क्रिया-कलापों की निगरानी करते रहे।

बम विस्फोट के बाद प्रफुल्ल समस्तीपुर

पहुँचा, अपने कपड़े बदले, नए जूते पहने, टिकट खरीदा और मोकामा घाट जाने वाली ट्रेन में चढ़ गया। मगर यह क्या? उसी बोगी में एक दारोगा पहले से ही बैठा था। वह था नंदलाल बनर्जी। अब तो प्रफुल्ल की बेचैनी बढ़नी ही थी। पर वह अगले ही स्टेशन पर उतरकर दूसरी बोगी में जा बैठा। दारोगा को कुछ शक हो गया। उसके लड़के का हुलिया पहनावा आदि बताते हुए मुजफ्फरपुर पुलिस मुख्यालय को टेलीग्राम से सूचना भेजी तो उतर मिला–संदिग्ध को फौरन अरेस्ट किया जाए।

अगले ही स्टेशन पर पुलिस बल तैयार था। प्रफुल्ल को लगा कि उसे गिरफ्तार किया जा सकता है इसलिए उसने भागना चाहा। मगर प्लेटफॉर्म पर सिपाहियों को धकेलता हुआ रेल्वे लाइन की ओर जाने लगा तो उधर भी पुलिस बल तैयार। आखिर उन्होंने उसे दबोच ही लिया, पर वह हताश नहीं हुआ। जैसे–तैसे उसने पूरी ताकत से एक हाथ छुड़ाया, अपनी पिस्तौल निकाली और खुद पर दो फायर कर डाले। एक गोली लगी ठुड्डी में और दूसरी धंसी कंधे की हड्डी में। अपने ही ऊपर किए इस हमले में जीवन लीला समाप्त कर उसने अपने सम्मान की रक्षा तो कर ली, लेकिन इस आत्मबलिदान से उसकी तत्काल पहचान नहीं हो सकी, क्योंकि एक तो वह उस समय खुदीराम के साथ नहीं था और दूसरे उसने दिनेशचंद्र राय जैसे छद्मनाम से ही यह खतरा उठाया था। इतिहासविद एवं लेखक कालीचरण घोष ने भी अपनी पुस्तक 'रोल ऑफ ऑनर' में लिखा कि खुदीराम बोस के साथ किंग्सफोर्ड से बदला लेते समय प्रफुल्ल चाकी ने अपना नाम बदलकर दिनेशचंद्र राय रख लिया था।

उल्लेखनीय है कि यह घटना 1 मई 1908 की है। बिहार के मोकामा स्टेशन के पास प्रफुल्ल चाकी की मौत के बाद पुलिस उपनिरीक्षक एस.एन. बनर्जी ने चाकी का काटकर अलग किया हुआ सिर प्रमाण स्वरूप मुजफ्फरपुर की अदालत में पेश किया था। यह एक ऐसी घिनौनी हरकत थी जो ब्रिटिश शासन काल की जघन्यतम घटनाओं में शामिल हैं।

फिर भी क्रांतिधर्मा प्रफुल्ल चाकी उर्फ दिनशचंद्र राय ने अपने नाम से ऊपर अपने देश की आन–बान को रखा। देशभक्ति की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है? कोलकाता के 'विनय–बादल–दिनेश बाग' में उसकी प्रतिमा आज भी मौजूद है।

1–त–8, अंजलि, दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)–324009
मो. 9461182571

शिक्षा और सरोकार

❒ भंवरलाल पुरोहित

शिक्षा वह सर्वोपरी क्षेत्र है जिस पर स्वाधीनता की पहली किरण पड़नी चाहिए थी किन्तु शिक्षा में बदलाव लाने हेतु आयोग पर आयोग बनते गए किन्तु बदलाव की किरण जो इस देश की जरूरत है यह बदलाव नहीं आ पाया। उपर्युक्त बदलाव में जो विशालता, व्यापकता होनी चाहिए न तो शिक्षक ला सके न ही आयोग ला सके।

कहते तो हम खूब हैं कि चीर कर धरती को हमें मोती ढूँढ़ लाना है, पढ़–लिख कर हमको चाँद पर जाना है। लेकिन इस ओर प्रयास की कमियाँ ही नहीं अपितु पंक्तियों का आत्म बोध शिक्षक–विद्यार्थी नहीं कर पाते है। चाँद पर जाने की सार्थकता को सिद्ध करने के लिए जुड़े कारकों को मेहनतकश बनने की तैयारी भी करनी होगी क्योंकि शिक्षा हिन्द की धरोहर है, शिक्षा पवित्र मान सरोवर सी है जो अपने अंदर कला, संगीत, शिल्प, खेल योग एवं व्यवसाय को समाहित करती है।

शिक्षा दौलत ही नहीं अपितु एक मुकाम, एक मेहनतकश इंसान बनाकर इतिहास को बदलने की क्षमता रखती है। हमें शिक्षा को विज्ञान बनाकर प्रयोगों की कसौटी पर वास्तविक पहचान कराने की आवश्यकता है। पाठयक्रम से परे जाकर संशोधन विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

झण्डा ऊँचा रहे हमारा यह नहीं बताकर यह कहना होगा झण्डा ऊँचा है हमारा। तो बात, कविता देश धर्म की शिक्षा का स्वाभिमान बढ़ेगा। प्यारो कवि की कहानी में पानी की महत्ता को बताना होगा कि बूंद–बूंद पानी जीवन के लिए कितना आवश्यक है खेल–खेल की चोट में अस्पताल या स्वास्थ्य किट की महत्ता के स्थान पर वतन की माटी को हल्के हाथों से बारीकी से घाव पर लगाना सिखाना होगा तभी तो वह मेडल जीत पाएगा। बढ़ते रेगिस्तान, जंगल का महत्त्व समझा कर उसको पाटना होगा।

अर्थात् शिक्षक–शिक्षार्थी के मन एक दूसरे से मिल जाए और मानवीय मूल्यों का विकास हो सके। बिन्दु से रेखा और रेखाओं से

भाव चित्र बनाने के कौशलों को विकास कर चाँद पर पहुँच जाए। एक इन्वेस्टीगेटर की ललक कि पत्थर भी शाश्वत बनता है।

शून्य को आकाश में नहीं अपितु मेरे भारत की कल्पना में साकार करना होगा। मनोज कुमार के गीत की पंक्तियों को चरितार्थ करना होगा, मेरे भारत ने जीरो दिया, विश्व को गिनती करना सिखाया, गणित की सार्थकता, उद्योग, घर व समुदाय से संबंधित समस्याओं का समाधान करवाने खोजने में करवाना होगा।

शिक्षा देने की चीज नहीं है, उससे संस्कार कैसे प्राप्त हो यह देखना होगा शिक्षा तो मुक्तिदायिनी है, जो विमुक्त करे। गिजू भाई बधेका कहते है कि हमें बालक को ढोंगी नहीं बनाना है, शांति और गंभीरता के भाव प्रसन्नता के विरोधी नहीं होते, ये दोनों भाव शिक्षक के चेहरे पर स्पष्ट रूप से दिखने चाहिए। हंसता हुआ मन खेल–खेल में स्वतंत्र भाव से सीखते रहे, हम दृष्टा के भाव, प्रेरक की भांति उसके मार्ग–दर्शक बने रहे क्योंकि शिक्षा का सीधा अर्थ सुसंस्कारिता का प्रशिक्षण है, अतः उसे प्रत्येक विषय का शिक्षण मानकर समग्र शिक्षण से गूंथकर चलाना चाहिए उसे यथार्थता का ज्ञान बनाना चाहिए। चंचल मन में जो भाव आए उसे बहने का अवसर दे जहाँ रुके वहाँ भावों को पैदा कीजिए यही भाव एक रचना गीत–संगीत बन जाएँगे, रचना धर्मिता शिल्प के जरिए चेतना, को जागृत करेंगे मन झंकृत हो जाएगा जो पाना चाहते है पाएँगे सार्थक हो जाएँगे।

आत्मा ने गीत गाया वेद हो गया,
वेद का लहरा चला विश्व हो गया।
ऋग्वेद हो गया, सामदेव हो गया,
अथर्ववेद हो गया, यजुर्वेद हो गया।।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
नई धनारी सरूपगंज, सिरोही (राज.)

ईर्ष्यावश

❐ अरनी रॉबर्ट्स

रूकमणी बाई कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय जयपुर, राजस्थान का जाना माना विद्यालय था। लगभग बारह सौ छात्राएं वहां पढ़ती थीं। वैसे तो ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षा में कला, विज्ञान व कृषि सभी संकाय थे, पर विज्ञान के अन्तर्गत बालिकाएँ गृहविज्ञान लेना अधिक पसंद करती थी। गृहविज्ञान सचमुच बहुत रूचिकर विषय था। विद्यार्थियों को पाक विद्या का गहन अध्ययन कराने के साथ-साथ प्रेक्टिकल में तरह-तरह खाने पकाने में ट्रेनिंग दी जाती थी। विभिन्न प्रकार के खाने पकाने में बालिकाओं को बड़ा आनन्द आता था। बाद में इन्ही बालिकाओं में से कई बालिकाएँ होटल प्रबंधन कॉलेज में कोर्स करने चली जाती थीं।

इस सत्र में ग्यारहवीं कक्षा में साठ बालिकाएँ होमसाइंस विषय पढ़ रही थी। बारहवीं कक्षा का बोर्ड एक्जाम हो चुका था, अब ग्यारहवीं कक्षा का होम एक्जाम चल रहा था। वैसे तो बहुत सारी छात्राएँ पाक कला में होशियार थी परन्तु मोनिका, दिव्या, भारती, सोनम और फातिमा खाने बनाने में श्रेष्ठ थी। यह सब छात्राएँ आपस में घनिष्ठ सहेलियाँ भी थी। इनमें ईर्ष्या रखने वाली छात्राएँ भी कम नहीं थी। विशेषकर सुप्रिया, चंदा, एलिजा और मोहनी इनसे बहुत ईर्ष्या रखती थीं। भरसक प्रयत्न करने के बाद भी सुप्रिया और उसके ग्रुप को अर्द्धवार्षिक परीक्षा में द्वितीय स्थान पर ही रहना पड़ा था, और इस ग्रुप द्वारा बनाया गया मूंगदाल का हलवा मोनिका ग्रुप द्वारा बनाए गए गाजर के हलवे से मात खा गया और मोनिका ग्रुप को अंकों के मामले में प्रथम स्थान मिला था।

सुप्रिया ग्रुप की चंदा, एलिजा और मोहनी अब इस फिराक में थी कि कैसे मोनिका ग्रुप को नीचा दिखाएं और प्रथम स्थान प्राप्त करें। मंथली टेस्ट में भी मोनिका और उसकी सहेलियाँ बहुत अच्छे अंक पाती थी।

बहुत कुछ विचार करने के बाद सुप्रिया ने अपने ग्रुप की लड़कियों से कहा, 'गर्ल्स हमें हमेशा मोनिका ग्रुप से कम अंक मिलते हैं और हम टॉप पर पहुँचने से वंचित रह जाती है। मैंने सोच लिया है अबकी इन लोगों को मजा चखाना है। सुना गर्ल्स अब वार्षिक परीक्षा आ गई है, इस बार हम ऐसा कुछ करेंगे कि ये हम से पार न पाएँगी?' एलिजा ने पूछा, 'ऐसा क्या प्लान है तुम्हारा जो इनसे बाजी मार लेंगे हम?'

मोहनी ने कहा, 'वही प्लान होगा कि हम उनके द्वारा तैयार की जा रही रेसेपीज़ में नमक, मिर्ची या शक्कर अधिक मात्रा में चुपके से मिक्स कर देंगे।' 'नो...नो... ऐसा कुछ नहीं, ये सब, पुराने हथकंडे हैं, मैंने कुछ नया सोचा है।' एलिजा ने उत्सुकता से पूछा, 'क्या नया सोचा है? जल्दी बताओ।'

'लड़कियों ध्यान से सुनो उन्हें कोई ऐसी रेसिपी मिलती है जिसमें कुछ नमकीन बनाना है या मीठा.... कढ़ाई में घी या तेल तो गर्म होगा ही ग्रुप की सभी लड़कियाँ चूल्हे के इर्द-गिर्द जमा होगी तभी मैं जग में पानी लेकर आऊँगी और ठोकर खाने का झूठ-मूठ दिखावा करूँगी और पानी कढ़ाई में गिरा दूँगी। उनकी रेसेपी तो बिगड़ेगी ही वे लड़कियाँ भी तेल या घी के उछलने से जल जाएँगी। कैसा लगा आइडिया?'

सुप्रिया की सभी सहेलियों ने खुश होकर एक स्वर में कहा, 'बहुत बढ़िया।'

प्रेक्टिकल एक्जाम के दिन कक्षा की सभी लड़कियों को तेरह ग्रुप के अनुसार रेसिपीज बनाने को दे दी गई। किसी ग्रुप को बैंगन का भुर्ता, किसी को ढोकला, किसी को मूंग दाल का हलवा तो किसी को दाल फ्राई बनाने को कहा गया।

मोनिका ग्रुप को लौकी के कोफ्ते और सुप्रिया ग्रुप को भरवां भिंडी बनाने को कहा गया। प्रिंसिपल मैडम के साथ-साथ विद्यालय की अन्य टीचर्स वहाँ मौजूद थीं। प्रत्येक ग्रुप की इंचार्ज एक टीचर को बनाया गया था।

सब ग्रुप अपनी-अपनी रेसिपीज बनाने में व्यस्त हो गईं। सबके अपने-अपने गैस सिलेंडर और चूल्हे थे। प्रत्येक ग्रुप को डेढ़ घंटे में अपनी रेसिपी तैयार करनी थी। सुप्रिया ग्रुप की लड़कियाँ अपनी रेसिपी तैयार करने में व्यस्त थी जबकि सुप्रिया की नज़र मोनिका पर थी कि वह कब कोफ्ते तैयार करके उनको कढ़ाई में तलेगी। उसने मोहनी को भेजा यह देखने के लिए कि मोनिका ने कढ़ाई में तेल डाल दिया या नहीं और क्या वह गर्म हो गया। मोहनी ने उधर जाते ही इशारा किया की तेल गर्म हो चुका है। बस इशारा मिलते ही सुप्रिया जग लेकर नल पर गई और पानी भर के आई। जैसे ही वह मोनिका ग्रुप के पास आई और ठोकर लगने का दिखावा किया। उसे ठोकर लगती देख मोनिका और उसकी साथी लड़कियाँ पीछे हट गईं। इधर मोनिका की तेल की कढ़ाई में सुप्रिया से पूरा जग ही गिर पड़ा। सारा तेल उछलकर सुप्रिया के चेहरे, गले और हाथों पर लगा और वह बुरी तरह जल गई और 'बचाओ-बचाओ' चिल्लाने लगी।

एक्जाम हॉल में हलचल मच गई। टीचर्स ने उनको शांत करवाया और दो टीचर्स तुरन्त सुप्रिया को लेकर हॉस्पिटल गई। एक्जाम समाप्त होते ही प्रिंसिपल भी हॉस्पिटल पहुँच गई। सुप्रिया की आँखें तो बच गई थी परन्तु हाथों, गले व चेहरे पर फफोले पड़ गए थे। डॉक्टर्स उसका इलाज कर रहे थे। प्रिंसिपल मैडम को देखते ही सुप्रिया जोर-जोर से रोने लगी। प्रिंसिपल मैडम ने सांत्वना देते हुए कहा, 'बेटी रोओ मत... सब ठीक हो जाएगा, घबराने की जरूरत नहीं है।' 'मुझे एक बात कहनी है।'

'हाँ बोलो सुप्रिया क्या कहना चाहती हो?'

'मैडम जो कुछ हुआ वह मेरी ईर्ष्या और बदला लेने की भावना के कारण हुआ। मैं और मेरे ग्रुप की लड़कियाँ मोनिका ग्रुप से ईर्ष्या रखती थीं क्योंकि वे लोग लगातार चाहे टेस्ट हों या अर्द्धवार्षिक परीक्षा, होम साइंस प्रेक्टिकल में नंबर वन पर रहती थीं, इसलिए हमने सोचा उनकी कढ़ाई के गर्म तेल में पानी डालकर उन्हें जला दें। लेकिन मेरे खोदे हुए गड्ढे में मैं खुद गिर पड़ी। मैं आपसे क्षमा माँगती हूँ.... भविष्य में ऐसा नहीं होगा।'

प्रिंसिपल मैडम ने कहा, 'बेटी जो कुछ तुमने किया वह बहुत गलत किया। पढ़ाई में स्पर्धा होनी चाहिए पर यह स्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए न कि नफरत पर आधारित। सजा तुम्हें मिल चुकी है और तुमने अपनी गलती मान भी ली है बस भविष्य में ऐसा न हो क्योंकि बदले की भावना से नुकसान ही होता है लाभ नहीं।'

'यस मैडम आप ठीक कह रही हैं....'

उसी समय ग्यारहवीं कक्षा की अन्य छात्राएँ भी सुप्रिया को देखने वहाँ आ गई। जब सुप्रिया ने रोते हुए मोनिका और उसके ग्रुप की लड़कियों से क्षमा याचना की तो उन्होंने उसे गले से लगाते हुए कहा, 'गलती सबसे होती है सुप्रिया नेवर माइंड... हम सब सहपाठी है, हमें हिल-मिल कर और मैत्री भाव से काम करना है।'

सुप्रिया ने मुस्कुराते हुए सहमति में सर हिलाया।

पोस्ट ऑफिस रोड, भीमगंज मंडी,
कोटा (राज.)-324002

1857 का स्वाधीनता संग्राम और लोकगीत

❒ राजश्री भाटी

1857 का स्वाधीनता संग्राम लोक परंपराओं और लोकगीतों में अंग्रेजों के खिलाफ लिखी गई और गाने जाने वाली कई परिस्थितियों से होकर गुजरा है।

खासकर क्लासिक एजिंग में जब भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सिराजुद्दौला अंग्रेजों से हारे, तभी से लोग शेर लिखने लगे इसमें उन्हें विरोध का सामना भी करना पड़ा।

उर्दू के अलावा खड़ी बोली भोजपुरी और मगही में तो बहुत कुछ लिखा और गाया गया। लोकगीत लिखित रूप में कम ही सामने आए हैं बल्कि लोग संग्राम से जुड़े होने का सबूत गाकर देते थे।

राम गरीब चौबे नाम के साहब जिन्होंने दिलचस्प लोक कथा लिखी थी देखें उसका कोई रिकॉर्ड नहीं मिला।

विलियम फ्रेजर जो दिल्ली में रेजिडेंट थे वह हिंदू-मुसलमानों से काफी घुलमिल कर रहते थे, लेकिन उनका व्यक्तित्व दूसरा था। वह काफी अय्याशी थे, उनके इस रवैये से परेशान होकर आसपास के लोग जंगलों में चले गए। वह लड़कियों को उठवा लेता था।

सृजन-फ्रेजर के नाम से मशहूर लोकगीत है।

जुबेर के बारे में कहा जाता है कि वह सिर्फ प्रेम की शायरी किया करते थे, लेकिन वर्ष 1757 में सिराजुद्दौला की हार के बाद यहाँ हालातों को बयां किया गया है। उनकी एक शायरी...

समझे न अमीर इनको कोई, न वजीर
अंग्रेज की क़फ़स में है कबीर
जो कुछ वह पढ़ाएँ सो मुँह से बोले
बंगाल की मैना है, यह पूरब के अमीर।

स्वाधीनता आंदोलन में लुटे-पिटे जुझारू और संघर्षशील लोगों को महात्मा गाँधी ने संत व्यक्तित्व मैं अपनी स्वातंत्र्य कामना की पूर्ति की है। लोक कंठ गां उठा।

गाँधी तेरो सुराज सपनवॉ
हरि मोर पुरा करिहं ना
सोने की थारी में ज्यॉना परोस्यॉ
सबका जैवाई के जैइहं ना।

एक चैता मैं छाती पीट-पीटकर विलाप करती हुई भारत माता अपनी मुक्ति के लिए महात्मा गाँधी का आह्वान करती है, साथ ही यह कहा गया कि स्वाधीनता की यज्ञ में आहुति देने के लिए महात्मा गाँधी, नेहरु और समस्त देशभक्त धूनी रमा कर योगी हो गए हैं-

1857 के स्वाधीनता संग्राम में विदेशी शासन की बर्बरता ही इस संग्राम का कारण थी लूटेरे शोषण और जालिम फिरंगी शासन ने देश को इस प्रकार कंगाल बना डाला था कि किसान आम जनता ही नहीं राज परिवार तक रो रहे थे। जनता को विरोध करने पर विवश किया।

गलियाँ गलियाँ रेयत रोवै
हटिया बनिया बजाय थे
महल मै बैठी बेगम रोवै
देहली पर रोवै आवास रै
मोती महल की बैठक छुट्टी
छुटै हैं मीना बजार रे
बाग बगनिया री सैर छुट्टी
छुटै मुलुक हमार रै।

1857 के रणबांकुरे शहीदों को संबोधित भारत माता की बेटियों के उद्‌गार तो आज भी रोमांचित कर देने वाले हैं-

बीरन तेरी लाश पे बहना हो जाती कुर्बान
टीका, झुमका, कंगन, पहुँची सब पर कर धिक्कार
खोद जो होता मेरे सिर पर, हाथ में जो होती तलवार
घोड़े को एड लगाती पहुँचती मेरठ के बाजार।

राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना का अनुशीलन करना चाहिए, जिसमें अनु प्रमाणित होकर लोकगीत की एक ग्रामीण स्त्री केवल इस उद्देश्य के लिए माँ बनना चाहती है कि उसे स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाकर देशभक्त बना सकती

एगो बालक मोड़ते गोदिया में, खेलती ननदी।
स्वतंत्रता की पाठ पढ़ती,देश भगत बढ़ती।
विजय विश्व तिरंगा देखें, विजयी विश्व बढ़ती।

सरदार भगत सिंह और नेताजी सुभाष चंद्र बोस की सशस्त्र क्रांति मार्ग को और जलियांवाला बाग और सरदार भगत सिंह लोकगीतों में कैसे भुलाए जा सकते हैं

परिह झुलायॅ मजरेट भगतसिंह मरदनवा।
हँसि-हँसि फाँसी ऊपर झुलाया गरदनवा।....
जलिया वाले बाग में कितने ललनवा
गोली खाकर मरेंगे भारत माँ के वीर ललनवा।
कितने घर में बिन सजनवा
वीर ने तन मन धन अरपनवा।

जिन के कारनामे तारीख के पन्नों में दर्ज नहीं जिनकी जान जिनकी धन की कीमत आज तक नहीं समझी गई, शुभा उत्तर प्रदेश के जिला चंदौली की मसूरी गाँव की गायिका जिन्होंने चुन-चुन के फूल ले लो अरमान रह न जाए जैसे क्रांतिकारी गीत लिखे तथा गा-गा कर मतवालों को प्रेरित किया।

रात को 9:00 बजे तक मुजरे से मिले पैसे है। आजादी के आंदोलन को दे देती थी।

नामचीन तवायफ गौहर जान को भी आज कहिए जिन्होंने कोलकाता में मुजरा किया और आजादी के लिए चलाए जा रहे आंदोलन के लिए आधा पैसा दान कर दिया।

संग्राम के समय घुमंतु समुदाय के लोग जो देश के लिए शहीद हो गए। कितने ही किसान और कितने ही तवायफ़ों के घर और कमाया हुआ पैसा जिनसे धर्मशालाएँ बनी, अस्पताल बना कर दान किए गए। इस देश की बेहतरी के लिए इन सब लोगों का भी योगदान रहा, लेकिन विडंबना यह है कि इतिहास के पन्नों में ऐसे लोगों का नाम आज भी दर्ज नहीं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सिपाही विद्रोह

और भारतीय विद्रोह के नाम से जाना जाता है। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह था यह 2 वर्षों तक चला था।

लोकगीतों में ही बेनाम योद्धाओं के बलिदान की गाथाएँ हैं बहुआयामी पक्षों को संदर्भ में विश्लेषण कर अज्ञात और अनसुलझे रहस्य सुलझाए जा सकते हैं। लोकगीत युग-युग की धड़कनों के साथ-साथ तत्कालीन मानवीय संघर्ष और वेदना को जानने के बेहतर माध्यम हो सकते हैं। लोकगीत सामाजिक और राजनीतिक चेतना और संगठनों से जुड़े होकर मानव पात्र की वेदना की अभिव्यक्ति होते हैं-

1842 से 57 तक बुंदेले हरबोलों के गाँव-गाँव और घर घर जाकर जन जागृति करने का काम महारानी लक्ष्मी बाई के स्वराज्य पाने की ललक दर्शाती है-

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी....

साधु सन्यासी इन वीर गाथाओं में पीछे नहीं थे उनका साहस का वर्णन रेवाराम नाम नामक लोक कवि की रचना में दिखता है।

स्याह मल गिर मोरारी आ धमके
तीन साहस साधु ले जाते
अंग्रेजन पै बमके, कानपुर से बग्गी फिरंगी पून
बिठूर जा चमके।

बिहार के मैथिली भाषा में भी ऐसे लोकगीत चेतना का उदाहरण है

गजब हम मेघ जका बरिसब हम पानी जकां,
उड़ाए देव लंदन के हुंकार में,
बिजली थकान कड़कि कड़कि,
आंधी जंका तड़की तड़की,
भगा देव गोरा ने टंकार में।

इस प्रकार स्वाधीनता आंदोलन में भोजपुरी अन्य भाषाओं में भी इस तरह के गीत गाए गए और आंदोलनकारियों को इससे संबल मिलता था। चरखे के गीत भी गाए गए।

क्रांतिकारियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाया। अधिकतर लोगों के कंधों से उठते बैठते क्रांतिकारी गीतों की ध्वनियाँ निकलती रहती थी।

मोहिनी विला, राणीसर वास,
एम.एस. कॉलेज रोड़, बीकानेर (राज.)
मो. 958809148

सफर से हमसफर

❐ अंकुर सिंह

ये सीट मेरी है, विजयवाड़ा स्टेशन पर इतना सुनते अमित ने पीछे मुड़कर देखा तो एक हमउम्र की लड़की एक हाथ में स्मार्टफोन और दूसरे हाथ में बैग पकड़े खड़ी थी। जी मेरी सीट ऊपर वाली है ये शायद आपकी है अमित ने कहा। ठीक है, अब आप अपना सामान हटा लीजिए और बैठने दीजिए मुझे मेरी सीट पर। इतना सुनते अपना सामान हटाते हुए अमित कहने लगा, मेरा नाम अमित है और मुझे बनारस तक जाना है, आप कहाँ तक जाएँगी? उधर से कोई प्रतिक्रिया आते ना देख अमित चुप हो गया। थोड़ी देर बाद अपना बैग सीट के नीचे रखकर मोबाइल को चार्ज में लगाते हुई वह लड़की बोली मेरा नाम सुमन है और मैं कॉलेज की छुट्टियों में मम्मी के यहाँ पटना जा रही हूँ। अच्छा तो आप बिहार से है और यहाँ विजयवाड़ा में पढ़ाई करती है, अमित को इतने पर रोकते हुए सुमन ने कहा मैं बिहार से हूँ लेकिन केरला में एमटेक की पढ़ाई करती हूँ और विजयवाड़ा में अपने दोस्त के शादी में आई थी। अब छुट्टियों में घर जा रही हूँ, आप क्या करते हो अमित, सुमन ने पूछा। आपकी तरह मैं भी इंजीनियर हूँ और माँ की तबियत सही नहीं है इसलिए गाँव जा रहा हूँ माँ से मिलने। क्या हुआ आपकी माँ को सुमन के पूछने पर अमित ने बताया कि माँ की तबियत अकसर खराब रहती है और इस समय थोड़ा ज्यादा खराब हो गई है इसलिए गाँव जा रहा हूँ। इतने में टिकट-टिकट कहते हुए टीटी की आवाज सुनाई पड़ती है, अमित ने अपना टिकट टीटी को दिखाकर सुमन से कहा कि मेरी सीट ऊपर वाली है और थोड़ी देर में डिनर करके मैं अपनी सीट पर चला जाऊँगा। कोई बात नहीं मैं भी डिनर के बाद सोऊँगी तब तक बैठ सकते हैं आप। थोड़ी देर बाद अपनी टिफिन खोलते हुए अमित ने कहा आप भी लीजिए। नहीं आप खाइए, मैं टिफिन साथ लाई हूँ सुमन से इतना सुनते अमित ने कहा चलिए फिर साथ में डिनर करते हैं। डिनर के बाद सुमन ने अमित से कहा आपका खाना तो काफी अच्छा था, आपने खुद बनाया था? नहीं-नहीं ऑफिस से पैक कराया था मैंने अमित ने जवाब दिया। चलो अच्छा है आप हिंदी बोल लेते हो। शायद पूरी बोगी में हम दो ही हिंदी भाषी है। आपकी सीट पास में नहीं होती तो मैं बोर हो जाती। इतना सुनते अमित ने कहा अरे ऐसे कैसे? आप बोर न हो तभी तो भगवान ने मुझे यहाँ भेजा हैं, इतने पर दोनों जोर से हँस पड़े।

पूरे सफर में दोनों एक-दूसरे के पसंद-नापसंद, परिवार, पढ़ाई इत्यादि को लेकर ऐसे बात कर रहे थे जैसे उनकी ये पहली मुलाकात नहीं बल्कि बरसों पुरानी जान-पहचान हो। अगले सुबह भोर में अमित का स्टेशन आ गया, उसने सुमन की तरफ देखा वह सो रही थी, उसकी नींद खराब न हो इसलिए अमित ने उसे जगाना जरूरी नहीं समझा और सीट के नीचे से अपना बैग निकालने लगा। इसी बीच सुमन घबरा कर उठी और नींद में कौन हो, कौन हो कहने लगी। अरे सुमन, मैं अमित मेरा स्टेशन आ गया और मैं अपना बैग निकाल रहा था। क्या बनारस आ गया, अमित? मुझसे बिना मिले जा रहे थे तुम, जगाना भी जरूरी नहीं समझा? अरे, सुमन! मैंने सोचा तुम्हें क्यों परेशान करूँ इतना सुनते ही सुमन बोल पड़ी बिना मिले जाते तो मैं क्या परेशान नहीं होती? सुमन के इन शब्दों से अमित को वही अहसास हुआ जो उसके दिल में हो रहा था। फिर उसने सुमन से कहा- सुमन, चाहता तो मैं भी नहीं था कि बनारस स्टेशन इतनी जल्दी आए पर अब मेरी मंजिल आ गई है और हमारा सफर यहीं खत्म हुआ। कैसा सफर अमित, हमारा तो ट्रेन का सफर खत्म हुआ है दोस्ती का नहीं, सुमन ने जवाब दिया। इतने में ट्रेन ने बनारस छोड़ने का हॉर्न बजा दिया और अमित सुमन को बाय कहते हुए अपना बैग निकाल कर चल पड़ा सुमन भी दरवाजे तक अमित को बाय-बाय कहते हुए छोड़ने आई।

अगले कुछ महीनों तक दोनों एक-दूसरे से बात करते रहे और कुछ महीनों बाद सुमन ने भी अपनी पढ़ाई पूरी कर ली और अब नौकरी करने लगी। फिर एक दिन दोनों ने निश्चय किया क्यों न इस दोस्ती के सफर को कभी न खत्म होने वाला सफर बना लें। फिर दोनों अपने-अपने घर में एक-दूसरे के बारे में बताकर शादी करने की बात कही। घर वालों ने भी उनकी खुशी के लिए उनको एक-दूसरे का हमसफर बना दिया।

जीवन के कई साल साथ बिताने पर जब अमित और सुमन अपने खुशी से भरे परिवार और बच्चों को देखते हैं तो उनकी जुबां से निकल पड़ता है कि ये बच्चे, हमारे जीवन में ट्रेन के उस डिब्बे की तरह है जिसके सफर ने हमें हमसफर बना दिया।

हरदासीपुर, चंदवक, जौनपुर (उत्तर प्रदेश)-222129
मो. 8792257267

भूमि दान

❐ रामगोपाल राही

दुकान के सामने अपनी उम्र से अधिक लोगों को खड़े देखकर विधवा कमला ने घूंघट निकाल लिया और अपने काम में व्यस्त हो गई। इतने में वार्ड मेम्बर अमोलक चन्द निकट आया और हाथ जोड़ बोला। कहा चाची हम सब आपसे कुछ निवेदन करने आए हैं।

कमला ने सोचा माला या सब्जी लेने का काम होगा? घूँघट निकाले कमला ने अमोलक चन्द को हाथ के इशारे से बताते हुए धीरे से कहा अन्दर बैठो।

अन्दर बेंच पर बैठने के बाद वार्ड पार्षद अमोलक चंद बोला–चाची बड़े स्कूल के पास आपका खाली पड़ी ज़मीन का बहुत बड़ा प्लाट है (जमीन) है। आप वहाँ मकान दुकान नहीं बना रही बहुत दिनों से आपकी वो जमीन वैसे ही वीरान पड़ी है। वहाँ झाड़ ही झाड़ उग रहे हैं। सूअर बैठते हैं। लोग गंदगी करते हैं।

इतने में साथ आए लोगों में से वृद्ध व्यक्ति बोला बड़े स्कूल में कमरों की कमी है बच्चे दुःख पाते हैं। हम सब आपसे हाथ जोड़कर निवदेन करते हैं आप आपकी वो खाली पड़ी जमीन स्कूल के लिए दान करने की कृपा करें। उस ज़मीन पर स्कूल में बच्चों के पढ़ने के लिए चार पाँच कमरे बन जाएंगे। इतने में साथ में आए और सभी लोग बोले, भलाई का काम है परोपकार का काम है, दान–धर्म का काम है कमला जी।

सारे लोगों की बाते सुन कमला सारी बात समझ गयी, सोचने लगी। मन ही मन सोचा क्या कहूँ मैं इन लोगों से? इस पर कमला ने इतना ही कहा अमोलक जी मैं सारी बात समझ गई मैं विचार कर लूँगी मैं बता दूँगी।

कमला का अपना दांपत्य जीवन सुख से चल रहा था पर संतान नहीं हुई थी। नियति में कुछ और लिखा था, इसी के चलते पति की मृत्यु हो गई थी। किसे सहारा माने देवर है जो अलग रहता है। आज जब सब लोगों ने ज़मीन की बात कही। विधवा कमला को अपने स्वर्गीय पति की याद आई और आँसू छलक आए। आज ही क्या कमला आए दिन सोचती है क्या काम आयी खरीदी ज़मीन जिसके कागजात लेने

गए थे पर अनहोनी ने प्राण ही ले लिए। क्या करूँ इस खरीदी लम्बी चौड़ी जमीन का। रहने को बड़ा मकान है दुकान है, खेती की अस्सी बीघा जमीन है, कुआं है, बोरिंग है क्या करूँ इन सब का? मन ही मन कहती जीना भी तो अपने लिए ही है। आए दिन कमला को पति के साथ बीते दिन याद आते, पति पत्नी खेती करते थे सब्जियाँ उगाते थे, गुलाब की खेती किया करते थे। गुलाब की माला बनाकर बेचा करते थे। विधवा हो जाने पर भी उसने भी यही धंधा अपनाया। रोज (खेती बाड़ी) खेत पर से सब्जियाँ लाती, गुलाब के फूलों की माला बना कर लाती। फल लाती और बेचा करती है। विधवा जीवन शाप से कम नहीं होता। कमला का वैधव्य का आंतरिक दुख अपनी जगह पर जीने का सहारे में जो है वह शकुन से कम नहीं। दुकान के पास ही स्कूल है। स्कूल के बच्चे खेल घण्टे में आते ही दुकान पर भीड़ हो जाती, कोई बालक गाजर लेता, कोई अमरूद, कोई बेर, कोई अनार लेता। कमला बच्चों को देख बहुत खुश होती किसी बच्चे के पास पैसे नहीं होते कमला उसे भी फल खाने को दे देती। विद्यालय के सभी बच्चे कोई उसे दादी कहते, कोई चाची, कोई ताई। देवर सुरेन्द्र के दोनों बच्चे भी आ जाते कमला उन्हें भी फल खिलाती। पास बिठा दुलार करती, प्यार करती। विधवा कमला के वैधव्य के दिन इसी तरह व्यतीत हो रहे थे। दुकान में बीस, पच्चीस हजार मुनाफे के मिल जाते। कमला को उधर खेती में उसे बहुत काम करना होता। सात दिन हो गए विधवा कमला को भूमि दान करने के बारे में सोचते। कमला ने यह तो सोच लिया कि उसके अपने बेटा–बेटी तो है नहीं, इतनी लम्बी–चोड़ी ज़मीन का वह क्या करेगी? तनिक फिर सोचती अब मुझे कितने साल जीना! कमला की मन की बात कंठ तक आती और रुक जाती। वह फिर सोचने लगती यह ज़मीन पति की निशानी तो है। मेरे अपने बेटे–बेटी नहीं पर देवर के तो हैं, उन्हीं को दे दूँगी। फिर विचार आता देवर के भी ज़मीन मकान सब कुछ है। ऐसे ही नकारात्मक विचारों के चलते कमला निर्णय नहीं कर पा रही थी।

इसी के चलते विद्यालय अभिभावक समिति के लोग फिर कमला से मिलने चले आए। सबने वो ही बात दोहराई समिति अध्यक्ष रामकिशन ने कहा आप बच्चों की दादी हैं, चाची हैं, उन्हीं बच्चों के लिए भूमि दान करने से आपको बहुत बड़ा पुण्य मिलेगा, फिर कहा पीढ़ी दर पीढ़ी आपका नाम रहेगा। साथ आए लोगों में से और भी बोले आपका यह बहुत बड़ा परोपकारी काम होगा। भूमि दान का पुण्य धन दौलत से कहीं अधिक होता है धरती का दान बहुत बड़ा धर्म है कमला। विद्यालय के बालक गाँव वाले गुण गाएंगे आपके।

कमला सब की बात सुन वार्ड पार्षद अमोलक चन्द से बोली मैंने विचार कर लिया है। जल्दी ही आपको बता दूँगी, फिर कहा आज देवर जी से मिलूँगी। उनसे भी पूछ लेती हूँ। सुन समिति के लोग बोले ठीक है हम जल्दी ही फिर आपसे मिल लेंगे।

सब आपस में बतियाते हुए बोले इनका देवर सुरेन्द्र स्वयं अध्यापक है, समझदार है।

उधर भूमि दान की चर्चा सुरेन्द्र भी सुन चुका था। उसने सोचा वो आगे हो भाभी माँ से कुछ नहीं कहेगा। इतने में कुछ देर बाद कमला खुद देवर सुरेन्द्र के घर चली आई।

अपने घर पर भाभी माँ को आए देख सभी बहुत खुश हुए। पति–पत्नी दोनों ने भाभी माँ के पैर छुए। भाभी माँ सुरेन्द्र के दोनों बालकों को अपनी गोदी में बिठा प्यार–दुलार करने लगी। कमला साथ में फल लाई थी बच्चों को फल खाने को दिए। बहुत सारे अनार देवरानी को दे दिए।

कमला ने भूमि दान करने हेतु लोगों की सारी बात देवर को बात दी, फिर कहा सुरेन्द्र तेरी

क्या राय है? सुरेन्द्र बोला-भाभी भैया ने यह ज़मीन खरीदी है। इस पर आपका ही हक है। फिर कहाँ भूमि दान का निर्णय भी आप ही करेगी। इसके बाद थोड़ा रुकते हुए कहा मेरी सम्मति क्या कहूँ भाभी? इतने में कमला बोली-सुरेन्द्र तू जो कहेगा वही करूँगी।

इस पर सुरेन्द्र ने मन ही मन सोचा नेकी कर दरिया में डाल, उसने साफ शब्दों में कहा बात बच्चों की भलाई की है। फिर बोला इतनी लम्बी चौड़ी ज़मीन का हम उपयोग भी तो नहीं कर रहे न कर सकेंगे। बोला- मेरे पास अपना मकान है, खेती है, नौकरी सभी कुछ तो हैं।

इतने में कमला भाभी बोली सुरेन्द्र मेरा मकान दुकान खेती भी तो तेरी ही है। सुन सुरेन्द्र कहने लगा वो ठीक है भाभी माँ-पर भूमि दान का निर्णय तो आप ही करो। फिर कहा काम वैसे भलाई का है स्कूल में कमरों की कमी दूर हो जाएगी आपका भैया का नाम रहेगा।

अपने देवर की बात सुन ज़मीन का पट्टा रजिस्ट्री सब कागजात कमला ने देवर सुरेन्द्र को दे दिए।

इस पर सुरेन्द्र बोला कल मैं समिति के लोगों से मिलूँगा, प्रधानाचार्य जी से भी मिल लूँगा। बोला उन्हें यह सब कागजात हाथों से दिलाऊँगा।

सारी बातें कर बच्चों को दुलार कर कमला भाभी चलने लगी देखा सामने देवरानी थाली में खाना लिए खड़ी है। बोली भाभी जी खाना खाकर जाओ। कमला बच्चों के साथ खाना खाकर बड़ी आनन्दित और खुश हुई।

तीन दिन बाद विद्यालय में बाल दिवस 14 नवंबर का उत्सव था। उसमें कमला भाभी को बुलाया।

कमला भाभी ने भूमि दान किया, पट्टा रजिस्ट्री के कागजात सब प्रधानाचार्य जी को दे दिए।

इस अवसर पर अभिभावक समिति के लोगों ने तथा विद्यालय की आरे से कमला भाभी का सम्मान किया गया, इस पर तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण गूँज उठा।

कमला द्वारा किए भूमि दान की चर्चा सारे नगर में घर घर में हो गई।

सेवानिवृत्त व्याख्याता
लाखैरी-323615, जिला बूंदी (राज.)
मो. 8949682800

व्यथा सांडों की

❐ **महेन्द्र कुमार शर्मा**

एक बार सांडों की बैठक हो रही थी बैठक में उनकी शोचनीय स्थिति पर चर्चा हो रही थी। सर्व सम्मत्ति से यह निर्णय लिया गया कि महादेव के पास जाकर अपनी स्थिति से उन्हें अवगत कराया जाए, अवसर पाकर वे महादेव के पास पहुँचे, सांडों ने भोलेनाथ से प्रार्थना की हे कृपा निधान! हम आपकी सवारी हैं, आज हमारी दशा बहुत खराब है यही स्थिति रही तो गौवंश का अस्तित्व खतरे में हो जाएगा।

विज्ञान द्वारा उपलब्ध संसाधनों के कारण आज हम अनुपयोगी हो गए है, हमारी दुर्दशा का यही कारण है, पहले हम खेती और उससे संबंधित मुख्य आधार थे, आज नहीं। पहले खेतों में हल चलाना, बुवाई करना, कुएं से (चड़स द्वारा) पानी निकालना, तैयार फसल को खेतों से घर या बाजार तक ले जाना और यातायात के साधन (बैलगाड़ी) आदि सभी कार्य हम करते थे, अब हमारी जगह बिजली और ट्रैक्टर आदि ने ले लिया है, गोबर की खाद का स्थान रासायनिक खादों ने ले लिया है। ये सभी साधन कम समय में अधिक काम करने वाले हैं। इस तरह आज हम इस स्वार्थी इंसान के लिए किसी काम के नहीं रहे।

पहले हमें आदर की दृष्टि से देखा जाता था। गोवर्धन के दिन हमारी पूजा होती थी। हमें सम्पत्ति का एक अंग माना जाता था। अब ऐसा कुछ नहीं है। हाँ, गाय इसके लिए आज भी उपयोगी है। वह आजीविका का साधन बनी हुई दूध और उसके उत्पाद मनुष्य के प्रमुख आहार बने हुए हैं। वह आज भी पूजनीय है। जगह-जगह गऊ शालाएँ बनी हुई हैं। उनके संरक्षण हेतु सरकार धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे है। हे प्रभु! यह कैसा न्याय है कि किसी स्त्री के लड़का होता है तो परिवारजन खुशियाँ मनाते हैं और किसी गाय के बछड़ा हो जाता है तो दुःख जताया जाता है।

अब तो यह स्थिति हो गई है कि हम किसी के घर के दरवाजे पर कुछ मिलने की आशा से जाते हैं खाने की जगह पिटाई मिलती है और यदि किसी के खेत में घुस जाते हैं तो डंडो की मार झेलनी पड़ती है। पहले हमें पेट भरने के लिए दर-दर भटकना नहीं पड़ता था। हे दयालु! अब दया कीजिए ऐसा कोई उपाय करें जिससे हमारा कल्याण हो सके।

भगवान शिव तो त्रिकाल दृष्टि है। उनके यह सब छुपा हुआ नहीं था फिर भी उन्होंने साडों की व्यथा सुनी और ढाँढ़स बंधाते हुए कहा- धैर्य रखे समय परिवर्तनशील होता है। विज्ञान जहाँ मनुष्य के लिए वरदान सिद्ध हुआ है वहीं अभिशाप भी है। जहाँ सुविधाएँ बढ़ी है वहीं दुविधाएँ भी बढ़ी हैं। वह समय दूर नहीं है जब वह पुनः अपने अतीत की ओर लौटेगा तब तुम्हें तुम्हारा खोया हुआ सम्मान पुनः मिल जाएगा। ये शब्द सांडों के लिए आशीर्वचन थे। सांड मन में एक विश्वास लेकर लौट आए और अब उस समय की प्रतीक्षा में हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त)
4167-68, खाटा ओली, नसीराबाद,
अजमेर (राज.)

**हौसलों के तरकश में कोशिशों का वो तीर जिंदा रखो,
हार जाओ चाहे सब कुछ मगर फिर से जितने की वो उम्मीद ज़िंदा रखो।**
-स्वामी विवेकानन्द

आदेश-परिपत्र : सितम्बर, 2022

1. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत पुरानी पॉलिसियों के नवीनीकरण एवं नई पॉलिसी जारी नहीं किये जाने के संबंध में।
2. इंस्पायर अवार्ड-मानक योजना के अन्तर्गत E-MIAS Portal पर सत्र 2022-23 के लिए विद्यार्थियों हेतु ऑनलाइन नॉमिनेशन प्रारंभ करवाने हेतु दिशा-निर्देश।
3. अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र/छात्राओं के लिए पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति-नूतन एवं नवीनीकरण (Fresh & Renewal) हेतु सत्र 2022-23 के लिए आवेदन करने हेतु दिशा-निर्देश।
4. नव क्रमोन्नत 3812 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों द्वारा अग्रिम आदेशों तक वेतन आहरण करते रहने के संबंध में।
5. विद्यालयों में जातिगत आधार भेदभावपूर्ण घटनाओं पर अंकुश लगाने बाबत।
6. ग्राम सुराणा जिला जालोर में दलित छात्र की हत्या की घटना के संबंध में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग नई दिल्ली में दिनांक 17.08.2022 को आयोजित बैठक के संबंध में।
7. 435 राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सीधे ही राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किए जाने के संबंध में।
8. जातिगत भेदभाव नहीं करने का शपथ पत्र प्रस्तुत के संबंध में।
9. राज्य के समस्त विद्यालयों में विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) एवं विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के गठन एवं नियमित बैठकों के आयोजन के संबंध में।
10. राज्य के समस्त विद्यालयों में विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) एवं विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के गठन एवं नियमित बैठकों के आयोजन के संबंध में।
11. विभाग के सभी श्रेणियों के कार्मिकों को दी जाने वाली सहायता राशि के सबंध में।

1. विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत पुरानी पॉलिसियों के नवीनीकरण एवं नई पॉलिसी जारी नहीं किए जाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा/माध्य/छा.प्रो.प्र./सेल-D/विद्यार्थी दुर्घटना बीमा/2020-23 दिनांक : 05-08-2022 ●समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-मुख्यालय ● विषय : विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत पुरानी पॉलिसियों के नवीनीकरण एवं नई पॉलिसी जारी नहीं किए जाने के संबंध में। ● प्रसंग : अतिरिक्त निदेशक (जीआईएस.) साधारण बीमा निधि राजस्थान जयपुर के पत्रांक के F.234 (Part V-SSI Govt. Class 1-12) Under /16-17/1589-1590 Date 01-08-2022 क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना, मुख्यमत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना एवं राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना में बीमित सभी परिवारों पर लागू होने के फलस्वरूप उक्त परिवारों के सभी विद्यार्थियों को भी दुर्घटना बीमा योजना का कवर उपलब्ध हो चुका है और इसमें विद्यार्थी स्वतः ही शामिल हो गए हैं, अतः राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु जारी दोनों पॉलिसियों (कक्षा 01 से 08 तक एवं कक्षा 09 से 12 तक) का दिनांक 15.08.2022 से नवीनीकरण नहीं किया जाएगा।

राजकीय विद्यालयों से भिन्न अन्य शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों के भी मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत बीमित हो सकने के कारण राजकीय विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु संचालित विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के तहत इन विद्यार्थियों का भी दुर्घटना बीमा के अन्तर्गत नवीन जोखिम वहन करने के लिए तत्काल प्रभाव से कोई नई पॉलिसी जारी नहीं की जाएगी एवं न ही पुरानी पॉलिसी का नवीनीकरण किया जाएगा।

अतः नवीन निर्देशों की पालना में राजकीय विद्यालयों में नवीन प्रवेश के समय एवं अध्ययनरत कक्षा 09 से 12 तक के विद्यार्थियों से ली जाने वाली दुर्घटना बीमा प्रीमियम राशि (रुपये 10/- प्रति छात्र एवं 05/- प्रति छात्रा) नहीं ली जानी है। आप अपने अधीनस्थ समस्त कार्यालयों/राजकीय एवं निजी विद्यालय के संस्थाप्रधानों को इस बाबत सूचित करते हुए प्रदत्त निर्देशों की पालना तत्काल प्रभाव से करवाया जाना सुनिश्चित करावें। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

●संलग्न-उपर्युक्तानुसार

● **(गौरव अग्रवाल)** आई.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

● राजस्थान सरकार ● कार्यालय अतिरिक्त निदेशक, राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग (साधारण बीमा निधि) ● द्वितीय तल, डी-ब्लॉक, वित्त भवन, जनपथ, ज्योति नगर, जयपुर-302005 ● क्रमांक : F. 234 (Part v-SSI Govt. Class 1-12) under/16-17/1589-1590 दिनांक 01-08-2022 ● आयुक्त निदेशक, प्रारम्भिक/माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर। ● विषय : विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत पुरानी पॉलिसियों के नवीनीकरण एवं नई पॉलिसी जारी नहीं किये जाने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना, मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना एवं राजस्थान सरकार स्वास्थ्य योजना में बीमित सभी परिवारों पर लागू होने के फलस्वरूप उक्त परिवारों के सभी विद्यार्थियों को भी दुर्घटना बीमा योजना

का बीमा कवर उपलब्ध हो चुका है और इसमें विद्यार्थी स्वतः ही शामिल हो गए हैं। अतः राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु जारी दोनों पॉलिसियों (कक्षा 1 से 8 तक एवं कक्षा 9 से 12 तक) का दिनांक 15-08-2022 से नवीनीकरण नहीं किया जाएगा।

राजकीय विद्यालयों से भिन्न अन्य शैक्षणिक संस्थानों पर विद्यार्थी दुर्घटना बीमा योजना, शिक्षण संस्थान की स्वेच्छा पर आधारित होती है तथा प्रीमियम प्राप्ति दिनांक से 1 वर्ष हेतु जारी की जाती है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा प्रीमियम नहीं दिया जाता है। शिक्षण संस्थान द्वारा विद्यार्थियों से प्रीमियम एकत्रित कर बीमा विभाग को उपलब्ध करया जाता है। उक्त विद्यार्थियों के भी मुख्यमंत्री चिरंजीवी दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत बीमित हो सकने के कारण राजकीय विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु संचालित विद्यार्थी सुरक्षा दुर्घटना बीमा योजना के तहत इन विद्यार्थियों का भी दुर्घटना बीमा के अन्तर्गत नवीन जोखिम वहन करने के लिए तत्काल प्रभाव से कोई नई पॉलिसी जारी नहीं की जाएगी एवं न ही पुरानी पॉलिसी का नवीनीकरण किया जाएगा।

निदेशक महोदय का अनुमोदन प्राप्त है।

● **(सुनील बंसल)** अतिरिक्त निदेशक (जीआईएस.) साधारण बीमा निधि राजस्थान, जयपुर ● क्रमांक : F.234 (Part v-SSI Govt. Class 1-12) under/16-17

2. इंस्पायर अवार्ड-मानक योजना के अन्तर्गत E-MIAS Portal पर सत्र 2022-23 के लिए विद्यार्थियों हेतु ऑनलाइन नॉमिनेशन प्रारंभ करवाने हेतु दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा/माध्य/छा.प्रो.प्र./सी/60115/इंस्पायर अवार्ड/2020-21 दिनांक : 18.08.2022 ● 1.समस्त संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, 2. समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान, 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक/प्रारंभिक, 4. समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान ● विषय : इंस्पायर अवार्ड-मानक योजना के अन्तर्गत E-MIAS Portal पर सत्र 2022-23 के लिए विद्यार्थियों हेतु ऑनलाइन नॉमिनेशन प्रारंभ करवाने हेतु दिशा-निर्देश। ● प्रसंग : राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान भारत (NIF), Gandhinagar (Gujrat) का पत्र क्रमांक 1378074 दिनांक 05.08.2022 एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली के पत्र क्रमांक 01.01.2019-IAM दिनांक 21.06.2022 एवं संयुक्त शासन सचिव शिक्षा (ग्रुप-2) विभाग के पत्रांक- प.18(01)शिक्षा-2/2022 जयपुर, दिनांक 19.07.2022 एवं इस कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 05.07.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी विभाग नई दिल्ली एवं National Innovation Foundation (NIF), Gandhinagar (Gujrat) द्वारा कक्षा 6 से 10 तक के स्कूली विद्यार्थियों (आयुवर्ग 10-15 वर्ष) में सृजनात्मक/नवाचारी सोच विकसित करने के उद्देश्य से इंस्पायर अवार्ड-मानक योजना (Million Minds Augmenting National Aspiration and Knowledge) का संचालन किया जा रहा है। यह योजना देश भर से स्कूली विद्यार्थियों के ऐसे श्रेष्ठ मौलिक/ सृजनात्मक विचारों को सम्बल प्रदान करती है जो कि सामाजिक आवश्यकताओं एवं उपयोगिता की कसौटी पर खरे उतरते हैं। प्रासंगिक पत्रों द्वारा सूचित किया गया है कि E-MIAS (https://www. inpireawards-dst.gov.in/Default.aspx) पोर्टल पर वर्ष 2022-23 हेतु विद्यार्थियों के ऑनलाइन नॉमिनेशन प्रारंभ करने की दिनांक 01 जुलाई, 2022 से 30 सितम्बर 2022 तक निर्धारित की गई है।

वर्ष 2022-23 में राज्य को सम्पूर्ण देश में इंस्पायर अवार्ड ऑनलाइन नॉमिनेशन में प्रथम स्थान पर ही रखने के लिए इस वर्ष के निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जाना है। परन्तु आज दिनांक तक ऑनलाइन नॉमिनेशन अधिकांश जिलों की प्रगति न्यून है। अतः इस निर्धारित लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कार्य किया जाना अपेक्षित है।

आप अपने जिले/ब्लॉक के (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अधीन संचालित विद्यालयों) के संस्थाप्रधानों को निर्देशित करते हुए प्रत्येक विद्यालय से 05 श्रेष्ठ नवाचारी विचार प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों को नॉमिनेशन अनिवार्यतः करवाना सुनिश्चित करें। इस हेतु निम्नांकित बिन्दुओं का विशेष ध्यान रखें:-

1. सत्र 2022-23 के Online Nomination 01 July, 2022 से आरंभ किए जा चुके हैं अतः समस्त संस्थाप्रधानों को निर्देशित करे कि विद्यालय स्तर पर विद्यार्थी ऑनलाइन नॉमिनेशन (www.inpireawards-dst.gov.in) उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए श्रेष्ठ मौलिक/सृजनात्मक नवाचारी विचार की गुणवत्ता/श्रेष्ठता के आधार पर किया जावे न कि उसके द्वारा परीक्षाओं में अर्जित प्राप्तांकों के आधार पर तथा प्रत्येक विद्यालय से 05 श्रेष्ठ मौलिक/ सृजनात्मक विचारों को E-MIAS web portal (https://www. Inspireawards-dst.gov.in Default.aspx) पर अपलोड करके अनिवार्य Final Submit/Forward करना सुनिश्चित करें एवं साथ ही सामाजिक आवश्यकताओं एवं उपयोगिता की कसौटी पर खरे उतरते हो।
2. जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय अपने अधीनस्थ संस्थाप्रधानों को निर्देशित करे और स्वयं भी ध्यान रखें कि E-MIAS पोर्टल पर विद्यार्थियों के ऑनलाइन आइडिया को भलीभांति जाँच करने के उपरांत ही आइडिया को Approve करें, जो आइडिया मौलिक/सृजनात्मक हो, साथ ही आइडिया इंटरनेट या यू-ट्यूब या किसी आउटसोर्स करने वाली संस्था अथवा व्यक्ति द्वारा उपलब्ध करवाए हुए नहीं होने चाहिए।
3. विद्यार्थियों को ऑनलाइन नॉमिनेट करते समय उसके द्वारा प्रस्तुत सृजनात्मक/नवाचारी विचार का सारांश (Synopsis) अपलोड करना आवश्यक है। यह सारांश word या PDF में हो सकता है। इसको अपलोड न करने की स्थिति में विद्यार्थी के नवाचारी विचार का चयन योजना में नहीं किया जा सकेगा।
4. संस्थाप्रधानों को निर्देशित करे कि विद्यालय स्तर पर इस योजना के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु अपने विद्यालय में एक शिक्षक को इंस्पायर प्रभारी नियुक्त किया जा जाए जो कि इंस्पायर अवार्ड-मानक योजना से सम्बन्धित सम्पूर्ण गतिविधियों के संचालन हेतु उत्तरदायी होगा।

आप अपने अधीनस्थ समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अधीन संचालित विद्यालयों) के संस्थाप्रधानों को निर्देशित करें कि अंतिम दिनांक से पहले प्रत्येक विद्यालय से 05 श्रेष्ठ नवाचारी विचार प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों का नोमिनेशन अनिवार्यतः करवाना सुनिश्चित करें।

● **(प्रभारी अधिकारी)** छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन प्रकोष्ठ, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र/छात्राओं के लिए पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति–नूतन एवं नवीनीकरण (Fresh & Renewal) हेतु सत्र 2022–23 के लिए आवेदन करने हेतु दिशा–निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक–शिविरा/माध्य/छा.प्रो.प्र./बी–1/असंपूमैछा/2022–23/8 दिनांक : 26.07.2022 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक–मुख्यालय ● विषय : अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र/छात्राओं के लिए पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति–नूतन एवं नवीनीकरण (Fresh & Renewal) हेतु सत्र 2022–23 के लिए आवेदन करने हेतु दिशा–निर्देश।

भारत सरकार द्वारा अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों (Muslim, Christian, Sikh, Bhdhist, Jain, Parsi (Zoroastrian)) से संबंद्ध राजस्थान प्रदेश में स्थित समस्त केन्द्र सरकार अथवा राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त राजकीय एवं गैर राजकीय (निजी) विद्यालयों, पंजीकृत मदरसों एवं संस्कृत शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित विद्यालयों, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्, जयपुर द्वारा संचालित मॉडल स्कूल आदि में सत्र 2022–23 हेतु कक्षा 1 से 10 तक में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवत्ति प्रदान किए जाने हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। छात्रवृत्ति हेतु पात्र छात्र/छात्रा द्वारा अपने अध्ययनरत विद्यालय के संस्थाप्रधान की सहायता से सम्पूर्ण औपचारिकताएँ पूर्ण करते हुए निर्धारित आवेदन–पत्र नेशनल स्कॉलरशिप वेब पोर्टल (National Scholarship Portal of Government of India) के URL www.scholarships.gov.in पर दिनांक 20.07.2022 से आवेदन प्रारंभ किए जा चुके है। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय भारत सरकार की वेबसाइट www.minorityaffairs.gov.in पर भी इस हेतु Link उपलब्ध है।

कक्षा 1 से 10 तक के अल्पसंख्यक समुदायों के समस्त पात्र विद्यार्थियों को ऑनलाइन आवेदन करना है। संस्थाप्रधान इसमें विद्यार्थियों को आवश्यक मार्गदर्शन व सहायता प्रदान करें। अन्य किसी भी माध्यम से Offline आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति हेतु ऑनलाइन किए जाने की प्रारंभ एवं अंतिम तिथि

क्र.सं.	कार्य	तिथि
1.	Opening of Portal	20th July, 2022
2.	Last date for Application Submission	30th September, 2022
3.	Last date for INO Level Verification (Level-1)	16th October, 2022
4.	Last date for DNO Level verification (Level-2)	31st October, 2022

अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के कार्यान्वयन से संबंधित राज्य के समस्त संस्थाओं एवं जिला नोडल अधिकारी के निम्न दिशा–निर्देशों की पालना की जानी सुनिश्चित करें–

1. समस्त ऐसे संस्थान जिनके Valid U-DISE कोड उपलब्ध है वे अपना अनिवार्य पंजीकरण (Registered) कराएँ और अपना केवाईसी और आधार–डेमो–प्रमाणीकरण (Aadhar-Demo-Authentication) जल्द से जल्द करवाएँ। साथ ही वे अपने पाठ्यक्रम का विवरण एनएसपी पोर्टल पर जल्द से जल्द अपडेट करवाएँ ताकि आपके विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी आवेदन कर सकें और आपके द्वारा समय सीमा के भीतर पोर्टल पर ऐसे आवेदनों को सत्यापित किया जा सकें।
2. अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित समय सीमा की सख्ती से पालना करना सुनिश्चित करें ताकि ऑनलाइन आवेदन सबमिशन, सत्यापन, मेरिट लिस्ट और भुगतान की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होने वाली तकनीकी समस्या का समाधान एनआईसी मुख्यालय या राज्य एनआईसी के परामर्श से जल्द से जल्द हल की जा सके।
3. प्रायः देखा गया है कि सत्यापन की अंतिम तिथि के बाद, बड़ी संख्या में नए (Fresh) और साथ ही नवीकरण (Renewal) आवेदन संस्थान के नोडल अधिकारियों (INO) द्वारा प्रथम स्तर (L-1) पर और जिला नोडल अधिकारियों (DNO) द्वारा द्वितीय स्तर (L-2) पर सत्यापन के लिए लंबित छोड़ दिए जाते है। सभी संस्थान नोडल अधिकारी/जिला नोडल अधिकारी (INO/DNO) को निर्देशित किया जाता है कि सत्र 2022–23 के दौरान प्रथम व द्वितीय लेवल पर सत्यापन की निर्धारित अंतिम तिथि से पूर्व शत–प्रतिशत आवेदन सत्यापित करना सुनिश्चित करें।
4. सभी सत्यापन प्राधिकारियों (INO/DNO) को निर्देशित किया जाता है कि वे किसी आवेदन को नकली (Fake) तभी चिह्नित (Mark) करें जब वह संतुष्ट हो कि आवेदक एक वास्तविक विद्यार्थी नहीं (Not a bonafide student) है। अन्य परिस्थितियों में, पात्रता मानदंड को पूरा न करने या अभिलेखों की असंगति के मामले में, सत्यापन प्राधिकारी या तो आवेदन को अस्वीकार (Reject) कर सकता है या इसे दोषपूर्ण (Defective) चिह्नित कर सकता है और आवेदक को अपने रिकॉर्ड को सही करने का एक और अवसर दे सकता है।
5. सभी जिला नोडल अधिकारी (DNO) को निर्देशित किया जाता है कि यदि डीएनओ द्वारा किसी भी आवेदन को द्वितीय स्तर (L-2) पर नकली चिह्नित (Fake Mark) किया जाता है, तो उस स्कूल/संस्थापन से आवेदनों का पूरा समूह (All verified allpications) संबंधित आईएनओ लॉगिन (INO Login) पर वापस चली

जाएगी। उस विद्यालय/संस्थान के द्वारा पुनः सत्यापन (re-verification) करना होगा। इसलिए डीएनओएस (DNO) को निर्देशित किया जाता है कि वे किसी आवेदन का नकली चिह्नित (Fake Mark) करने के विकल्प का उपयोग करते समय सावधानी बरतें।

6. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना का अल्पसंख्यक छात्रों को अधिकाधिक लाभ मिले, इसके लिए अपने जिले में निःशुल्क समाचार के रूप में समाचार पत्रों में प्रचार-प्रसार करवाना सुनिश्चित करें।
7. आवेदक को परामर्श दिया जाता है कि केवल वही बैंक खाता विवरण दे जो सक्रिय मोड में है या बैंक निर्देशों के अनुसार हो ताकि छात्रवृत्ति का भुगतान विफल न हो।
8. सभी विद्यालय/संस्थान जहाँ कोई भी अल्पसंख्यक विद्यार्थी पढ़ रहे हो वे 31.08.2022 तक राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल पर स्वयं को पंजीकृत कर अपने इंस्टीट्यूट नॉडल का केवाईसी (KYC) एवं आधार डेमो ऑथेंटिकेशन सुनिश्चित करें।

पात्रता:-

- **अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति नूतन (Fresh) हेतु पात्रता (जो विद्यार्थी प्रथम बार आवेदन कर रहे है)**

1. आवेदक अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों (Muslim, Christian, Sikh, Budhist, Jain, Parsi (Zoroastrian)) का विद्यार्थी हो।
2. वे विद्यार्थी जिनके माता-पिता/अभिभावकों की सभी स्रोतों से वार्षिक आय रुपये एक लाख रुपये से अधिक न हो। (आय प्रमाण पत्र संलग्न करे)
3. वे विद्यार्थी जिन्होंने गत वर्ष की अर्हककारी परीक्षा न्यूनतम 50 प्रतिशत प्राप्तांक/समकक्ष ग्रेड या उससे अधिक अंकों से उत्तीर्ण की हैं। (अंक तालिका की प्रति संलग्न करे)
4. एक परिवार के अधिकतम दो विद्यार्थियों को ही यह छात्रवृत्ति देय है। तद्नुसार ही आवेदन करे।
5. विद्यार्थी द्वारा समान कक्षा और सत्र में अन्य किसी प्रकार की छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं की जा रही हो।

- **अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति नवीनीकरण (Renewal) हेतु पात्रता (जो विद्यार्थी गत वर्ष छात्रवृत्ति का भुगतान प्राप्त कर चुका हो)**

1. वे विद्यार्थी जिन्हें गत वर्ष में अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति उनके बैंक खाते के माध्यम से (DBT) भुगतान किया गया है व अपनी मौजूदा एप्लीकेशन आईडी से आवेदन कर सकते है।
2. अन्य समस्त पात्रता शर्ते बिन्दु संख्या 1 से 5 के अनुसार यथावत रहेगी।

विद्यार्थी आवेदन पत्र पोर्टल पर सबमिट करने के उपरांत उसका प्रिंट लेकर निम्नांकित दस्तावेज संलग्न कर स्वयं के विद्यालय में जमा करवाएंगे-

- विद्यार्थी का फोटोग्राफ
- विद्यार्थी के आधार कार्ड/आधार नामांकन रसीद की फोटोप्रति।
- विद्यार्थी के बैंक खाते की पासबुक के प्रथम पृष्ठ की फोटोप्रति।
- विद्यार्थी की गत वर्ष उत्तीर्ण की गई अर्हककारी परीक्षा की अंकतालिका की फोटोप्रति।
- विद्यार्थी के मूल निवास प्रमाण पत्र की प्रति।
- विद्यार्थी के अभिभावक/संरक्षक की वार्षिक आय का प्रमाण पत्र।
- विद्यार्थी का अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित होने का प्रमाण-पत्र।
- विद्यार्थी द्वारा कोई अन्य छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं करने संबंधी स्वघोषणा पत्र।

परिवार में अधिकतम दो विद्यार्थियों के ही अल्पसंख्यक पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति में लाभार्थी होने की स्वघोषणा

छात्रवृत्ति की दरें

क्र. सं.	मद	छात्रावासी विद्यार्थी (HOSTLER)	गैर छात्रावासी विद्यार्थी (DAY SCHOLAR)
1.	कक्षा 6 से 10 तक प्रवेश शुल्क	500 रुपये वार्षिक या वास्तविक (जो भी कम हो)	500 रुपये वार्षिक या वास्तविक (जो भी कम हो)
2.	कक्षा 6 से 10 तक शिक्षण शुल्क	350 रुपये प्रतिमाह या वास्तविक (जो भी कम हो)	350 रुपये प्रतिमाह या वास्तविक (जो भी कम हो)
3.	रखरखाव भत्ता (अधिकतम 10 माह)		
	(i) कक्षा 1 से 5 तक	शून्य	100 रुपये प्रतिमाह या वास्तविक व्यय (जो भी कम हो) 10 माह के लिए
	(ii) कक्षा 6 से 10 तक	600 रुपये प्रतिमाह या वास्तविक व्यय (जो भी कम हो) 10 माह के लिए	100 रुपये प्रतिमाह या वास्तविक व्यय (जो भी कम हो) 10 माह के लिए

समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक-मुख्यालय शिक्षा विभाग को पाबंद किया जाता है कि वे अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पात्र विद्यार्थियों द्वारा आवेदन किया जाना सुनिश्चित करें।

विस्तृत जानकारी के लिए अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय की वेबसाइट www.minorityaffairs.gov.in पर जाए एवं समस्या समाधान हेतु टोल फ्री नंबर 1800-11-2001 (प्रातः 9 बजे से सायं 5.30 बजे तक, सोमवार से शुक्रवार, राजकीय अवकाश को छोड़कर) सम्पर्क करें।

- **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. नव क्रमोन्नत 3812 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों द्वारा अग्रिम आदेशों तक वेतन आहरण करते रहने के संबंध में।

- कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
- क्रमांक-शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/वो.-1/2022-23/289

दिनांक : 18.08.2022 ● समस्त प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक, रा.उ.मा.वि./रा.बा.उ.मा.वि., ● विषय : नव क्रमोन्नत 3812 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों द्वारा अग्रिम आदेशों तक वेतन आहरण करते रहने के संबंध में। ● प्रसंगः राज्य सरकार की स्वीकृति क्रमांक प.4(6)शिक्षा-1/2020 जयपुर दिनांक 22.03.2022, 13.04.2022, 28.07.2022 एवं इस कार्यालय का समसंख्यक पत्रांक शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25605/वो.-1/2022-23/164 दिनांक 05.08.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत बजट घोषणा वर्ष 2022-23 के बिन्दु संख्या 25 एवं 28 (iv) की क्रियान्विति एवं पालना में राज्य सरकार के प्रासंगिक आदेशों द्वारा 3832 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों को उच्च माध्यमिक स्तर पर क्रमोन्नत किया जाकर पदों का सृजन किया गया हैं एवं कार्यालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 05.08.2022 द्वारा क्रमोन्नत 3812 विद्यालयों से प्रधानाध्यापक का पद प्रत्याहरित करते हुए प्रधानाचार्य (L-16) के पदों का आवंटन जारी किया गया था। अतः इन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जब तक प्रधानाचार्य का पदस्थापन नहीं हो जाता हैं, तब तक नव क्रमोन्नत उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापक को पूर्व की भाँति ही अग्रिम आदेशों तक सामान्य वित्तीय लेखा नियम 03 के तहत आहरण वितरण अधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए अधिकृत किया जाता है। वे अपना वेतन भी प्रधानाचार्य के रिक्त पद के विरुद्ध तथा समस्त कार्मिकों का वेतन आहरित करते रहेंगे तथा इनको विद्यालय के अन्य प्रशासनिक कार्य यथावत करते रहने के लिए भी अधिकृत किया जाता है।

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. विद्यालयों में जातिगत आधार भेदभावपूर्ण घटनाओं पर अंकुश लगाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा-माध्य/मा-स/22435/2017-22/564 दिनांक : 22.08.2022 ● समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा ● विद्यालयों में जातिगत आधार भेदभावपूर्ण घटनाओं पर अंकुश लगाने बाबत। ● प्रसंगः शासन सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, जयपुर का पत्रांकः प.3() सामा. न्या. एवं अधि. 2022/702 दिनांक : 18.08.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि दिनांक 17.08.2022 को राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की बैठक में विद्यालयों में जातिगत आधार पर भेदभाव पूर्ण घटनाओं पर अंकुश लगाने बाबत माननीय अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग द्वारा चर्चा कर सुझाव/निर्देश दिए गए हैं जिसकी प्रति संलग्न है।

अतः उल्लिखित बैठक में प्रदत्त निर्देशों के क्रम में निम्नानुसार निर्देश तत्काल प्रभाव से जारी किए जाते है।

1. आप अपने क्षेत्राधिकार में समस्त सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए शिक्षकों/कार्मिकों को एट्रोसिटी एक्ट की जानकारी देना सुनिश्चित करे। इस हेतु संस्थाप्रधानों को स्टॉफ बैठक, वाक्पीठों, विभिन्न बैठकों आदि के माध्यम से जानकारी प्रदान की जाए।
2. विशेषतः जिन जिलों में ऐसी घटनाएँ हो रही है वहाँ मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी विशेष अभियान चलाया जाकर ऐसी घटनाओं पर अंकुश लगाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें तथा जातिगत भेदभाव सम्बन्धी शिकायत प्राप्त होते ही भेदभाव की घटना पाए जाने पर दोषी के विरुद्ध तत्काल नियमानुसार कार्यवाही अमल में लाई जाए।

● **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. ग्राम सुराणा जिला जालोर में दलित छात्र की हत्या की घटना के संबंध में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग नई दिल्ली में दिनांक 17.08.2022 को आयोजित बैठक के संबंध में।

● सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, राजस्थान सरकार ● क्रमांक-प.3 () सामा.न्या एवं अधि. 2022/702 दिनांक 18.08.2022 ● विषयः ग्राम सुराणा जिला जालोर में दलित छात्र की हत्या की घटना के संबंध में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग नई दिल्ली में दिनांक 17.08.2022 को आयोजित बैठक के संबंध में। ● प्रसंगः कार्यालय आवासीय आयुक्त बीकानेर हाउस के पत्र क्रमांक 3238 दिनांक 17.08.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि प्रासंगिक पत्र के क्रम में दिनांक 17.08.2022 को राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की बैठक में जालोर जिले के ग्राम सुराणा में दलित छात्र इन्द्र कुमार की हत्या के प्रकरण से संबंधित घटनाक्रम पर माननीय अध्यक्ष महोदय राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग द्वारा चर्चा कर सुझाव/निर्देश दिए गए हैं। (प्रति संलग्न) कृपया आपके विभाग से संबंधित बिन्दुओं की पालना हेतु संबंधित को निर्देशित करवाए जाने का श्रम कराए।

यह भी उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग नई दिल्ली द्वारा दिनांक 24 एवं 25 अगस्त 2022 को राज्य स्तरीय समीक्षा बैठक जयपुर में आयोजित की जाएगी। उक्त बैठक में दिए गए निर्देशों की समीक्षा माननीय आयोग द्वारा की जाएगी।

● संलग्न : बैठक कार्यवृत्त।

● **(डॉ. समित शर्मा)** शासन सचिव

● कार्यालय आवासीय आयुक्त क्रमांकः आर.सी./बी.हा./2022/3238 दिनांकः 17.08.2022 ● मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार सचिवालय, जयपुर। ● विषयः ग्राम सुराणा, जिला जालोर में दलित छात्र की हत्या की घटना के संबंध में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग में दिनांक 17.08.2022 की बैठक के संबंध में। ● प्रसंगः राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के पत्रांक दिनांक 15.08.2022 के क्रम में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि प्रासंगिक पत्र के क्रम में दिनांक 17.08.2022 को राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की बैठक में अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा भाग लिया गया। बैठक में जालोर जिले के ग्राम सुराणा में दलित छात्र इन्द्र कुमार की हत्या के प्रकरण से संबंधित घटनाक्रम पर माननीय अध्यक्ष महोदय राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग द्वारा चर्चा

कर सुझाव/निर्देश दिए गए। कार्यवृत अवलोकनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु संलग्न कर प्रेषित किया जा रहा है।

• **(शुभ्रा सिंह)** अतिरिक्त मुख्य सचिव (समन्वय) एवं मुख्य आवासीय आयुक्त।

• **बैठक कार्यवृत्त**

दिनांक 17.08.2022 को प्रातः 10.30 बजे माननीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के कक्ष में गाँव सुराणा, तहसील सुराणा, जिला जालोर, राजस्थान में नौ वर्ष के बालक इन्द्र कुमार की हत्या की घटना के संबंध में सुनवाई/बैठक आयोजित की गई। बैठक में निम्न सदस्य उपस्थित रहे-

1. माननीय विजय सांपला, अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग नई दिल्ली।
2. श्रीमती शुभ्रा सिंह, प्रमुख आवासीय आयुक्त नई दिल्ली।
3. श्री ज्ञानेश्वर कुमार सिंह, संयुक्त सचिव, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग नई दिल्ली।
4. श्री कौशल कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग नई दिल्ली।
5. श्रीमती सविता कृष्णिया, उप निदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग जयपुर।
6. श्री शंकरलाल, उप अधीक्षक, पुलिस, जालोर

1. सर्वप्रथम श्रीमती शुभ्रा सिंह, मुख्य आवासीय आयुक्त, नई दिल्ली द्वारा जालोर में बालक इन्द्र कुमार की हत्या की घटना को दुःखद एवं दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए संवेदना प्रकट की गई। माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा राजस्थान में पाली, बाड़मेर, जोधपुर इत्यादि स्थानों पर अनुसूचित जाति के सदस्यों के साथ भेदभावपूर्ण घटनाएँ होने एवं राज्य सरकार से उनका सन्तोषजनक जवाब नहीं प्राप्त नहीं होने/सम्पूर्ण कार्यवाही नहीं होना बताया गया। साथ ही मिड-डे-मील के समय कुछ विद्यालयों में छात्रों को जातिगत आधार पर अलग-अलग स्थान पर बैठाए जाने जैसी घटना होने पर आक्रोश व्यक्त किया गया।
2. जालोर में हुई घटना के संबंध में श्री शंकरलाल, उपअधीक्षक, जालोर द्वारा तथ्यों की जानकारी दी गई। बालक इन्द्र कुमार पुत्र श्री देवाराम के साथ हुई घटना, विभिन्न स्थानों पर इलाज का विवरण देते हुए 13.08.2022 को मृत्यु अहमदाबाद में होने की जानकारी देते हुए, पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रकरण में पुलिस को जल्द चालान प्रस्तुत करने हेतु निर्देश दिए गए।
3. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, राजस्थान, जयपुर से उपस्थित श्रीमती सविता कृष्णिया, उप निदेशक द्वारा माननीय आयोग को पीड़ित परिवार को मुख्यमंत्री सहायता कोष से रुपये 5.00 लाख एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति निवारण अधिनियम के नियमों के तहत रुपये 4,12,500/- की सहायता दिए जाने एवं परिवार के सदस्यों के साथ काउंसलिंग हेतु काउंसलर की नियुक्ति जिला कलक्टर, जालोर द्वारा किए जाने की जानकारी दी गई।
4. माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा उक्त पीड़ित परिवार के पुनर्वास में राज्य सरकार द्वारा यथा संभव सहायता करने एवं मृतक छात्र के दो भाइयों की निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था में सहायता करवाने हेतु सुझाव दिया गया। बैठक में उपस्थित आयोग के अधिकारियों द्वारा ऐसे प्रकरणों में संवेदनशील होकर कार्यवाही करने हेतु निम्न चर्चा की गई।

i. विशेष अभियान चलाकर विद्यालयों में अध्यापकों को एट्रोसिटी एक्ट की जानकारी देते हुए संवेदनशील बनाया जाए।
ii. शिक्षा विभाग नए विद्यालयों को मान्यता देते समय जातिगत भेदभाव नहीं करने संबंधी शपथ पत्र लेवे।
iii. मिड-डे-मील का निरीक्षण समय-समय पर करवाते समय जातिगत भेदभाव नहीं होने सम्बन्धी बिन्दु रिपोर्ट में रखे जावे। भेदभाव की घटना पाए जाने पर दोषी के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाए।
iv. विशेषतः जिन जिलों में ऐसी घटनाएँ हो रही है वहाँ राज्य सरकार विशेष अभियान चलावें।
v. प्रायः देखा गया है कि राजस्थान में अनुसूचित जाति के विरुद्ध एट्रोसिटी के प्रकरणों में Final Report की कार्यवाही अधिक की जा रही है। संवेदनशीलता से कार्यवाही के पश्चात् चालान प्रस्तुत कर पीड़ितों को न्याय दिलवाया जाए।

श्री कौशल कुमार, निदेशक राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग द्वारा राजस्थान में अन्य राज्यों के अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के साथ एट्रोसिटी की घटना होने पर सहायता नहीं दिए जाने का विषय उठाया गया। माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा केन्द्रीय एक्ट व नियमों के तहत अनुसूचित जाति के पीड़ितों को सहायता दिया जाना सुनिश्चित किए जाने की अक्षरतः पालना हेतु कहा गया। साथ ही आगे इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं हो, इस हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्यवाही की आवश्यकता बताई गई।

दिनांक 24.08.2022 एवं 25.08.2022 को जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की बैठक में अनुसूचित जाति के विरुद्ध लंबित प्रकरणों एवं विभिन्न स्थानों से प्राप्त प्रकरणों की विस्तृत सुनवाई/समीक्षा की जाएगी।

तत्पश्चात बैठक सधन्यवाद समाप्त हुई।

7. 435 राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सीधे ही राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किए जाने के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक-शिविरा-मा/माध्य/अ-4/क्रमोन्नति/राउमावि/21307/2022-23/253-271 दिनांकः 23.08.2022 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक ● विषयः 435 राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सीधे ही राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किए जाने के संबंध में। ● प्रसंगः शासन का पत्रांक : प.11(1)शिक्षा-1/ब.घो.सं. 28(4)/2022 जयपुर दिनांकः 18.08.2022

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक पत्र के क्रम में माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा बजट घोषणा वर्ष 2022-23 की घोषणा संख्या 28(4) की अनुपालना में संलग्न सूची अनुसार 435 राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सीधे ही राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किए जाने की स्वीकृति एतद् द्वारा प्रदान की जाती है।

यह स्वीकृति वित्त (व्यय-1) विभाग की आईडी संख्या 102204210 दिनांक 16.08.2022 के द्वारा प्राप्त सहमति के अनुसरण में जारी की जाती है।

शर्तें :-

1. विद्यालय क्रमोन्नयन सत्र 2022-23 से प्रारंभ होंगे।
2. स्वीकृति के वर्ष सुविधानुसार कक्षा 09 व 10 एक साथ एवं आगामी सत्रों में क्रमशः कक्षा-11वीं एवं 12वीं प्रारंभ की जा सकेगी।
3. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से मान्यता हेतु निर्धारित 04 प्रपत्रों में सूचना की पूर्ति करवाकर मान्यता प्राप्त करने की कार्यवाही करें।
4. राउप्रावि. से राउमावि. में क्रमोन्नत होने पर विद्यालय में वर्तमान कार्यरत प्रधानाध्यापक, राउप्रावि. के पद पर कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक को उसके विषय के वरिष्ठ अध्यापक के पद पर समायोजित किया जाएगा। इसी प्रकार से राउप्रावि. में वर्तमान में कार्यरत शारीरिक शिक्षक ग्रेड-।।। को क्रमोन्नत राउमावि. के शारीरिक शिक्षक के पद पर समायोजित किया जाएगा।
5. क्रमोन्नत होने वाले राउप्रावि. में कार्यरत शिक्षक ग्रेड-।।। लेवल-। व लेवल-2 के ऐसे अध्यापक जिनका 6डी में सैटअप परिवर्तन हो चुका है, उनका समायोजन क्रमोन्नत राउमावि में उनके विषय के स्वीकृत पद पर किया जाएगा।
6. शेष शिक्षक ग्रेड-।।। लेवल-1 व लेवल-2 के अध्यापकों की प्रविष्ठि शाला दर्पण में 3 बी में की जावेगी एवं ये अध्यापक 6 डी की कार्यवाही होने तक एवं अन्य शिक्षकों के पदस्थापन होने तक क्रमोन्नत विद्यालय में ही कार्य करते रहेंगे तथा इनका वेतन आहरण पूर्व की भाँति प्रारंभिक शिक्षा विभाग से किया जाएगा।
7. पदों को आदेश जारी होने की तिथि से प्रभावी माना जावेगा। इन पदों पर नियमानुसार सीधी भर्ती/पदोन्नति की रिक्तियों के लिए गणना हेतु गणना की जा सकेगी।
8. उक्त विद्यालयों में किसी भी संकाय के अन्तर्गत ऐच्छिक विषयों का निर्धारण विद्यार्थियों की आवश्कयता एवं रुचि के आधार पर विद्यालय से प्रस्ताव प्राप्त कर आरंभ किया जाए तथा उक्त प्रस्ताव विषय आवंटन हेतु इस कार्यालय को यथासमय आवश्यक रूप से प्रेषित करें।
9. स्टाफिंग पैटर्न के बिन्दु संख्या 6.1 के अनुसार नवक्रमोन्नत उच्च माध्यमिक विद्यालयों में, प्रथम वर्ष में केवल ऐच्छिक विषय के व्याख्याता ही देय होंगे। अनिवार्य विषयों (हिन्दी, अंग्रेजी) के शिक्षण हेतु व्याख्याता के स्थान पर वरिष्ठ अध्यापक दिए जाए।
10. स्टाफिंग पैटर्न के बिन्दु संख्या 6.3 के अनुसार नवक्रमोन्नत विद्यालय में नवसृजित व्याख्याताओं के पदों को भरे जाने तक वरिष्ठ अध्यापक संवर्ग में ऑपरेट किया जाएगा परन्तु इन पदों की गणना सीधी भर्ती/पदोन्नति हेतु व्याख्याता संवर्ग में ही की जाए।
11. विद्यालय के क्रमोन्नति आदेश जारी करने से पूर्व विद्यालय का नाम, ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, जिला व यू-डाईस कोड आदि की जाँच कर ही आदेश जारी करें।
12. उक्त क्रमोन्नत विद्यालयों में भवन की व्यवस्था समग्र शिक्षा अभियान, नाबार्ड, एम.पी. एल.ए.डी., एम.एल.ए. एल.ए.डी., और जनसहयोग आदि से की जाएगी।

• **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

8. जातिगत भेदभाव नहीं करने का शपथ पत्र प्रस्तुत के संबंध में।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक-शिविरा-मा/पीएसपी/60572/8/राअनुजाआ/सामाजिक समानता/2022 दिनांकः 22.08.2022 • विषयः जातिगत भेदभाव नहीं करने का शपथ पत्र प्रस्तुत के संबंध में। • परिपत्र।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ई पत्रांक-प.3() सामा. न्या. एवं अधि. 2022/702 दिनांक 18.08.2022 के अनुसार माननीय अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की अध्यक्षता में दिनांक 17.08.2022 को हुई बैठक के सुझाव/निर्देशों के क्रम में राज्य के समस्त गैर-सरकारी विद्यालयों को विभाग से नवीन मान्यता/क्रमोन्नति प्राप्त करने हेतु आवेदन करते समय आवश्यक वांछित दस्तावेजों के साथ किसी भी व्यक्ति से जातिगत भेदभाव नहीं करने का शपथ पत्र भी प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।

• **गौरव अग्रवाल (आइ.ए.एस.),** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

9. राज्य के समस्त विद्यालयों में विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) एवं विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के गठन एवं नियमित बैठकों के आयोजन के संबंध में।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक-शिविरा-माध्य/मा-स/SDMC/22423/2015-22/392-393 दिनांकः 25.08.2022 • समस्त सभागीय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा • विषयः राज्य के समस्त विद्यालयों में विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) एवं विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के गठन एवं नियमित बैठकों के आयोजन के संबंध में। प्रसंग : आदेश क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22423/2001-02 दिनांक : 28.08.2012, दिनांक : 06.07.2016 एवं 13.07.2016 • संदर्भ : क्रमांक : शिविरा-माध्य/मॉनिट/विविध/49107/2022 दिनांक : 08.082022।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक आदेश के क्रम में लेख है कि राज्य के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'राजस्थान राज्य

सहकारी संस्था पंजीकरण अधिनियम-1958' के प्रावधानान्तर्गत पंजीकृत संस्था के रूप में गठित 'विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC)' एवं 'विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC)' की संरचना एवं दायित्व निर्धारण संबंधी स्थाई निर्देश जारी किए गए हैं जिसके अन्तर्गत SMC/SDMC की कार्यकारिणी समिति की नियमित बैठक प्रत्येक माह अमावस्या को निर्धारित है।

उक्त के क्रम में आपको संदर्भित पत्र के माध्यम से समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारंभिक से इस बाबत शपथ पत्र, जिसमें यह स्पष्ट किया गया है हो कि उनके क्षेत्राधिकार में संचालित सभी विद्यालयों में SMC/SDMC का गठन हो गया है तथा वर्तमान सत्र में उनकी नियमानुसार नियमित बैठक का आयोजन किया जा रहा है, प्राप्त कर इस कार्यालय को प्रेषित करावें।

गौरतलब है कि न्यायालय प्रकरण के मद्देनजर उक्त कार्य को व्यक्तिशः रुचि लेकर प्राथमिकता के साथ आपके क्षेत्राधिकार के समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक/प्रारंभिक से शपथ पत्रों को प्राप्त करते हुए क्षेत्राधिकार के प्रत्येक जिले के किसी तीन विद्यालयों की माह अगस्त/सितम्बर में आयोजित किसी एक SDMC/SMC बैठक की कार्यवाही विवरण की प्रति भी सत्यापित कर उपलब्ध करावे ताकि माननीय न्यायालय में उसे प्रस्तुत किया जा सके।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना क्षेत्राधिकार में सर्वोच्च प्राथमिकता से संपादित करवाई जानी सुनिश्चित करें।

• **(रमेश कुमार हर्ष)** उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

10. राज्य के समस्त विद्यालयों में विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) एवं विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के गठन एवं नियमित बैठकों के आयोजन के संबंध में।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक-शिविरा-माध्य/मॉनिट/विविध/49107/2022 दिनांकः 08.08.2022 • समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक/प्रारंभिक • विषयः राज्य के समस्त विद्यालयों में विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) एवं विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC) के गठन एवं नियमित बैठकों के आयोजन के संबंध में। प्रसंग : आदेश क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22423/2001-02 दिनांक : 28.08.2012, दिनांक : 06.07.2016 एवं 13.07.2016

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक आदेश के क्रम में लेख है कि राज्य के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'राजस्थान राज्य सहकारी संस्था पंजीकरण अधिनियम-1958' के प्रावधानान्तर्गत पंजीकृत संस्था के रूप में गठित 'विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC)' एवं 'विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति (SDMC)' की संरचना एवं दायित्व निर्धारण संबंधी स्थाई निर्देश जारी किए गए हैं जिसके अन्तर्गत SMC/SDMC की कार्यकारिणी समिति की नियमित बैठक प्रत्येक माह अमावस्या को निर्धारित है।

उक्त के क्रम में आपको निर्देशित किया जाता है कि आप 15 दिवस की अवधि में एक शपथ पत्र प्रस्तुत करें कि आपके क्षेत्राधिकार में संचालित सभी विद्यालयों में SMC/SDMC का गठन हो गया है तथा वर्तमान सत्र में उनकी नियमानुसार नियमित बैठक का आयोजन किया जा रहा है। इस हेतु अपने जिले के किसी तीन विद्यालयों की माह अगस्त/सितम्बर में आयोजित किसी एक SDMC/SMC बैठक की कार्यवाही विवरण की प्रति सत्यापित कर उपलब्ध करावे ताकि माननीय न्यायालय में उसे प्रस्तुत किया जा सके।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना क्षेत्राधिकार में सर्वोच्च प्राथमिकता से संपादित करवाई जानी सुनिश्चित करें।

• **(गौरव कुमार अग्रवाल)** आइ.ए.एस., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

11. विभाग के सभी श्रेणियों के कार्मिकों को दी जाने वाली सहायता राशि के सबंध में।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक-शिविरा/माध्य/हि.नि./2021-22 दिनांकः 18.08.2022 • विषयः विभाग के सभी श्रेणियों के कार्मिकों को दी जाने वाली सहायता राशि के सबंध में। • अनौपचारिक टिप्पणी।

हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा विभाग के सभी श्रेणी के कार्मिकों को हितकारी निधि की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2021-22 व दिनांक 01.04.2022 से 31.07.2022 तक नियमानुसार सहायता राशि का वितरण किया गया हैः-

(अप्रेल 2021 से मार्च 2022)

क्र. सं.	योजना का नाम	प्रकरणों की संख्या	राशि
1.	मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को दी गई सहायता	987 Cases	₹15.23 Crore
2.	बालिका विवाह उपहार योजना	401 Cases	₹44.11 Lacs
3.	गंभीर बीमारी होने पर शिक्षा विभाग के कार्मिकों की दी गई सहायता राशि	07 Cases	₹1.19 Lacs
4.	कार्मिकों के पुत्र/पुत्री के व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययन के क्रम में सहायता	500 Cases	₹49.90 Lacs
5.	शिक्षा विभाग के कार्मिकों की बालिकाओं के उच्च शिक्षा में अध्ययनरत होने पर ऋण	4 Cases	₹2 Lacs

(दिनांक 01.04.2022 से 31.07.2022 तक)

क्र. सं.	योजना का नाम	प्रकरणों की संख्या	राशि
1.	मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को दी गई सहायता	251 Cases	₹3.79 Crore
2.	बालिका विवाह उपहार योजना	114 Cases	₹12.54 Lacs
3.	शिक्षा विभाग के कार्मिकों की बालिकाओं के उच्च शिक्षा में अध्ययनरत होने पर ऋण	02 Cases	₹1 Lacs

• **(दयाशंकर अरड़ावतिया),** उप निदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : सितम्बर, 2022	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 12.35 से 12.55 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	आलेखनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
01.09.22	गुरुवार	उदयपुर	12	भूगोल	4	मानव बस्तियां	यशवन्त सिंह राव
02.09.22	शुक्रवार	बीकानेर	11	हिन्दी अनिवार्य	7	मनु भंडारी:रजनी	रेनु बाला चौहान
03.09.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम (शिक्षक दिवस आधारित)				
06.09.22	मंगलवार	जोधपुर	11	भौतिक विज्ञान	5	गति के नियम	डॉ. महेश चन्द्र शर्मा
07.09.22	बुधवार	कोटा(जयपुर)	9	हिन्दी	4	माटी वाली	तेजकरण यादव
08.09.22	गुरूवार	उदयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	1	यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय	ललिता चौधरी
09.09.22	शुक्रवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	1	रिश्तों की समझ	भरत कुमार व्यास
10.09.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
12.09.22	सोमवार	जयपुर	11	राजनीति विज्ञान	4	सामाजिक न्याय	संतोष मीणा
13.09.22	मंगलवार	जोधपुर	12	अर्थशास्त्र	2	उपभोक्ता के व्यवहार के सिद्धान्त	राजेन्द्र सिंह कुंपावत
14.09.22	बुधवार	जयपुर	गैर पाठ्यक्रम (हिन्दी दिवस उत्सव)				
15.09.22	गुरुवार	उदयपुर	10	विज्ञान	2	अम्ल,क्षारक एवं लवण	डॉ. वैकटेश्वरी पानेरी
16.09.22	शुक्रवार	बीकानेर	6	हिन्दी	3	नादान दोस्त	मनोरमा मीणा
17.09.22	शनिवार	जयपुर	NO BAG DAY गैरपाठ्यक्रम				
19.09.22	सोमवार	जयपुर	11	हिन्दी साहित्य	गद्य	ज्योतिबा फुले	मुकेश कुमार बबेरवाल
20.09.22	मंगलवार	जोधपुर	12	भौतिक विज्ञान	3	विद्युत धारा	प्रिन्स व्यास
21.09.22	बुधवार	कोटा(जयपुर)	9	अंग्रेजी	2	The Adentures of Toto	लक्ष्मी देवी
22.09.22	गुरुवार	उदयपुर	6	विज्ञान	5	पदार्थो का पृथक्करण	आशा मीणा
23.09.22	शुक्रवार		जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन				
24.09.22	शनिवार		जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन				
27.09.22	मंगलवार	जोधपुर	11	अर्थशास्त्र	2	भारतीय अर्थव्यवस्था (1950-1990)	मंजू माकड़
28.09.22	बुधवार	कोटा(जयपुर)	12	अंग्रेजी	2	The Tiger King	दिप्ती भार्गव
29.09.22	गुरुवार	उदयपुर	10	विज्ञान	4	कार्बन एवं उसके यौगिक	सुरेश पंचाल
30.09.22	शुक्रवार	बीकानेर	9	संस्कृत	2	स्वर्ण काक:	परवीन अख्तर

● कार्य दिवस-22 ● कुल प्रसारण दिवस-22 ● पाठ्यक्रम आधारित-18 ● गैरपाठ्यक्रम-4 ● अवकाश-08

सूचना

- **प्रत्येक आगामी अंक हेतु रचनाएँ प्रतिमाह की दिनांक 10 तक भेंजे।**
- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**

-वरिष्ठ संपादक

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

प्रभाग, शैक्षिक प्रौद्योगिक प्रभाग राजस्थान, अजमेर

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

September 2022

S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code	S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/3R5Sulh		7	Class VII	https://bit.ly/3AF2Vqo	
2	Class II	https://bit.ly/3KlnEmw		8	Class VIII	https://bit.ly/3PNgxEm	
3	Class III	https://bit.ly/3QLryHx		9	Class IX	https://bit.ly/3T2ukd0	
4	Class IV	https://bit.ly/3QPZ8wk		10	Class X	https://bit.ly/3QKXvJ8	
5	Class V	https://bit.ly/3AllaeN		11	Class XI	https://bit.ly/3Ckc88W	
6	Class VI	https://bit.ly/3R3gaXn		12	Class XII	https://bit.ly/3KtemFb	

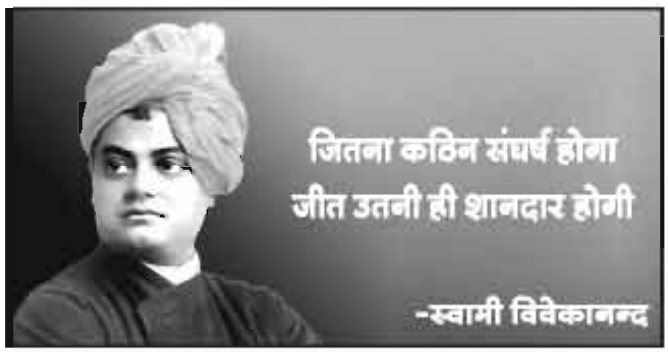

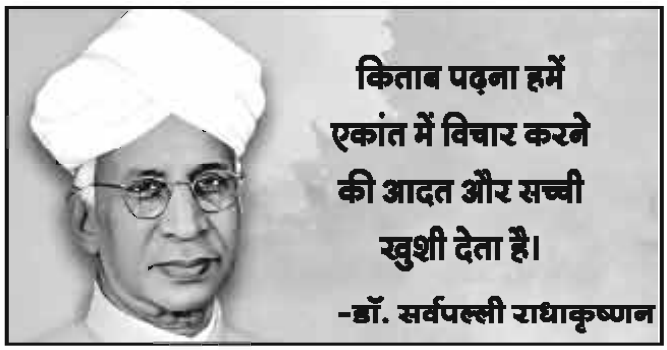

प्रतिभाएँ जिनकी उपलब्धि पर हमें गर्व है...

मेधावी विद्यार्थियों से हुई बातचीत के कुछ अंश-भाग 2

विद्यार्थी का नाम : करण लीलावत
प्राप्तांक एवं प्रतिशत : 488, 97.60%
कक्षा, संकाय एवं रोल नं : बारहवीं, वाणिज्य वर्ग
विद्यालय का नाम : राउमावि. चेराई, तिंवरी, जोधपुर
पिता का नाम : अचलाराम जी
माता का नाम : गीता देवी

शिविरा : आपने किन वैकल्पिक विषयों का चयन किया?
उत्तर : अर्थशास्त्र, लेखाशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन
शिविरा : वैकल्पिक विषय का चयन आपने अपनी इच्छा से किया या माता-पिता/गुरुजन ने सुझाव दिया?
उत्तर : स्वयं की इच्छा से।
शिविरा : अपना परिणाम जानने से पहले आप टॉपर्स के बारे में क्या सोचती थी?
उत्तर : दुनिया में कोई भी कार्य असंभव नहीं है, इसी सोच के साथ मैंने अपनी पढ़ाई की और पूर्व में बोर्ड परीक्षा में टॉप आ चुके विद्यार्थियों की भाँति एक ख्वाब संजोया जो पूर्ण हुआ।
शिविरा : परीक्षा के दौरान आपको किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
उत्तर : कहते हैं कि धैर्य एवं आत्मविश्वास सफलता की ऐसी कुंजी है जिसके बल पर किसी भी सपने को साकार किया जा सकता है। मुझे अपने आप पर पूर्ण विश्वास था। अतः परीक्षा के दौरान किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं हुई।
शिविरा : वर्ष भर आपने समय प्रबंधन किस प्रकार किया?
उत्तर : मैं समयबद्ध तरीके से गुरुजनों के निर्देशन में नियमित अध्ययन करता था।
शिविरा : भविष्य में आप क्या बनना चाहते हैं?
उत्तर : एक प्रशासनिक अधिकारी
शिविरा : आपका सबल पक्ष क्या है?
उत्तर : एकाग्रता एवं धैर्य
शिविरा : आप आने वाले साथियों को क्या संदेश देना चाहते है?
उत्तर : मैं कहना चाहता हूँ कि आप सभी साथी भी अपने बोर्ड परीक्षा की तैयारी अच्छे ढंग से समय प्रबंधन के साथ करें। अंक के पीछे इतना नहीं भागे बल्कि सीखने पर ज्यादा ध्यान दें और कभी हताश नहीं होवें और हमेशा आत्मविश्वास रखे और स्व अभिप्रेरित बनें।

विद्यार्थी का नाम : संगीता मील
प्राप्तांक एवं प्रतिशत : 487, 97.40%
कक्षा, संकाय एवं रोल नं : बारहवीं, कृषि विज्ञान वर्ग, 2623950
विद्यालय का नाम : जी.जी.एस.एस. चारणवास जिलिया, नागौर
पिता का नाम : भुवाना राम
माता का नाम : पुष्पा देवी

शिविरा : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर द्वारा आयोजित परीक्षा 2022, कक्षा 12वीं कला संकाय में गौरवपूर्ण उपलब्धि के लिए शिक्षा विभाग की ओर से बहुत-बहुत बधाई।
उत्तर : जी शुक्रिया
शिविरा : क्या आपके प्राप्तांक आपकी आशा के अनुरूप है?
उत्तर : हाँ, मेरी आशा के अनुरूप है।
शिविरा : आपने कृषि विज्ञान को वैकल्पिक विषय समूह के रूप में क्यों चुना?
उत्तर : हमारे गाँव में पानी की कमी हैं अतः कम पानी से होने वाली फसलों की किस्मों अनुसंधान के लिए कृषि विज्ञान वैकल्पिक विषय के रूप में चुना।
शिविरा : क्या आपके विद्यालय में कृषि विज्ञान विषय संबंधी प्रयोगों की समुचित सुविधा मिली?
उत्तर : हाँ, विद्यालय में कृषि विज्ञान की उपलब्ध संसाधनों की समुचित व्यवस्था मिली।
शिविरा : राजस्थान राज्य की भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार कृषि विज्ञान विषयों का अध्ययन कितना सार्थक है? जबकि राजस्थान में पानी की प्रचुर मात्रा उपलब्ध नहीं है।
उत्तर : कृषि विज्ञान विषय का अध्ययन बहुत सार्थक हैं। राजस्थान में पानी की कमी होने के कारण कम पानी में कृषि योग्य किस्मों के विकास के लिए सरकारी योजनाओं का क्रियान्वित करते हुए कृषि विज्ञान अध्ययन अत्यंत सार्थक है।
शिविरा : भविष्य में आप क्या बनना चाहते हैं?
उत्तर : मैं कृषि वैज्ञानिक बनना चाहती हूँ।
शिविरा : इस उत्कृष्ट परीक्षा फल का श्रेय आप किसे देना चाहेंगे?
उत्तर : मेरी परीक्षा फल का श्रेय मेरे समस्त विद्यालय स्टाफ एवं मेरे माता-पिता, बड़ी बहन तथा नाना-नानी को देना चाहती हूँ।
शिविरा : इस विषय को पढ़ने-समझने हेतु आपके जूनियर विद्यार्थियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?
उत्तर : मै मेरे जूनियर्स को सत्र प्रारंभ से ही कड़ी मेहनत तथा विषय का गहन अध्ययन कर एवं अनुशासन के साथ अध्ययन करें।

सोने का लूँग

❐ अनुजा गुप्ता

करीबन 15 वर्ष पूर्व की बात है। बीकानेर जिले का चुरू व नागौर के समीपवर्ती नाथ व सिद्ध संप्रदाय को मानने वालों का छोटा सा गाँव था वह।

गाँव में बिजली सुविधा होने के बावजूद अधिकांश घरों में आर्थिक कारण व आदतन अभ्यस्त होने के कारण विद्युत कनेक्शन या तो था ही नहीं, जिन घरों में था वे लाईट बंद कर चाँद व चिमनियों की रोशनी में रहने के आदी थे। मेरे जैसे ग्रामीण संस्कृति से दूर शहरी जीव के लिए यह कौतुक भरी बात थी। मैं वहाँ के एकमात्र सरकारी विद्यालय की अध्यापिका थी। गाँव में ही निवास था। सूरज छिपने पर चानण (शुक्ल) पक्ष में जहाँ चाँद की चाँदनी व भोर वेला में पेड़ों पर, छत पर, स्कूल व ग्रामीणों के आँगन में बोलते पपीहे, कूकती कोयल और बहुलता से मौजूद राष्ट्रीय पक्षी मोर का फुदकना स्वर्गिक सुख की अनुभूति करवाता वहीं अंधेर पक्ष की रात्रियों में पूरा गाँव अंधकूप सा नजर आता।

मेरा घर स्कूल से लगता हुआ ही था। पीछे की खिड़की की तरफ गोबर-मिट्टी की दीवार से सीमांकित बड़े से भू-भाग के एक तरफ छोटे से झोपड़ेनुमा मकान में एक मजदूर परिवार स्कूल के बिल्कुल पीछे की तरफ रहा करता था।

आर्थिक रूप से बेहद विपन्न उस परिवार में कुल 9 प्राणी थे। प्रौढ़ माता-पिता के अलावा 7 बच्चे जिनमें 4 बड़ी लड़कियाँ व 3 छोटे लड़के थे। सबसे बड़ी लड़की की उम्र 15 वर्ष जो तीसरी तक पढ़ाई कर स्कूल छोड़ चुकी थी। तीसरे नंबर की आंशिक रूप से मानसिक मंद होने के कारण कभी स्कूल भेजी नहीं गई थी। चौथे नंबर की लड़की सबसे चुस्त व घर के कार्य में दक्ष थी। पानी भरकर लाने से लेकर बकरी चराने तक के बाहरी कार्य सर्वाधिक वही करती और इस कार्य कौशल के आधार पर उम्र महज 8 वर्ष होने के बावजूद उसका रौब घर में सबसे ज्यादा था। अब रही दूसरे नंबर की लड़की जो बड़ी से 2 वर्ष छोटी थी। लगातार पहली कक्षा से स्कूल आ रही थी। कक्षा 7 की विद्यार्थी थी और घर की सबसे शिक्षित प्राणी थी। जिसका कारण

उसका घर के कार्यों से जी चुराने की आदत रही। घर-बाहर के काम में सहयोग नहीं करने पर घर के सदस्यों ने उसे नकारा समझकर स्कूल भेजना ही उचित समझा और वह अपने सबसे छोटे भाई उम्र 1.5 वर्ष को लेकर नियमित रूप से स्कूल आया करती अकारण छुट्टी लिए। प्रतिदिन नहाकर, साफ वस्त्र पहने घर में छोटे भाई की एकमात्र जिम्मेवारी वहन करने वाली वह कामचोर कहलाने वाली लड़की मुझे सबसे प्रिय थी। बाकी दो छोटे भाई उम्र 3 वर्ष और 5 वर्ष तकरीबन अपनी उम्र से हीं बुजुर्ग दिखते अस्थमा के मरीज पिता व घाघरा-चुनरी ओढ़े, घूंघट ओढ़े प्रौढ़ माँ के साथ वे दोनों लड़के रोज खेत पर व मंडी जाया करते थे।

रोज शाम को गधा गाड़ी हांकते हुए खाँसते पिता के संग वापसी में लौटते बच्चों के साथ अक्सर गाड़े पर मतीरे, ककड़ी, टिंडे, सांगरी आदि होते। साथ ही सुबह बकरी चराने के लिए अकेले निकली सबसे छोटी लड़की भी वापसी से गाड़े पर होती और बकरियों का झुंड गाड़े के साथ-साथ चलता हुआ खुशी से चिल्लाते, शोरगुल करते घर के आगे से उस लौटते परिवार का दृश्य बहुत मोहक प्रतीत होता। लगता खेत की वह मौसमी उपज उनकी दिनभर की मेहनत का प्रतिफल हैं। जिसे पूरा परिवार अब एक साथ बैठकर जीमने वाला है।

छोटे दोनों लड़के अभी स्कूल जाने की उम्र के नहीं हुए थे लेकिन सबसे बड़ा लड़का जो लड़का लगभग छह वर्ष का था वह स्कूल जाने योग्य था लेकिन वह दिनभर व्यर्थ घूमने में बिता रहा था।

उस घर के 5 स्कूल जाने योग्य बच्चों में से केवल 1 लड़की ही स्कूल आ रही थी। मैंने तय किया कि इन चारों को किसी प्रकार जतन कर स्कूल लाया जाए। शुरुआत बड़े लड़के से की।

लड़का होने के कारण उसके माता-पिता थोड़ी सी समझाइश पर ही उसे स्कूल भेजने के लिए मान गए। बच्चे का दाखिला हो गया और वह खेत के बजाय बैग उठाकर स्कूल आने लगा।

सरलता से हासिल अपनी पहली सफलता पर मैं उत्साहित थी लेकिन आगे की डगर इतनी सहज नहीं थी असल परीक्षा तो आगे थी, यह मैं भली-भाँति जानती थी। क्योंकि बाकी 3 लड़कियाँ थी जिनका पढ़ना उनके माता-पिता के नजरिए से कोई जरूरी नहीं था। ऊपर से वे अपनी प्राथमिक शिक्षा हासिल करने की उम्र से कुछ आगे भी निकल चुकी थी। उस वक्त तक शिक्षा का अधिकार कानून लागू नहीं हुआ था।

सबसे बड़ी लड़की जो महज 15 वर्ष की ही थी। वह माता पिता के नजर में विवाह योग्य उम्र में पहुँच चुकी थी और उसके स्कूल जाने की उम्र, स्वयं लड़की व उसके माता-पिता के अनुसार बहुत पहले ही निकल चुकी है। हालांकि वह कक्षा तीन में मध्य सत्र तक ही स्कूल पढ़ी थी। फिर घर की बड़ी बेटी का फर्ज निभाने के नाते घर के काम और छोटे बहन-भाइयों के जन्म पर उनकी व माँ की देखभाल के महत्वपूर्ण कार्य के कारण परिवार के नजरिए से उसका कम महत्व का विद्यालय बहुत पहले छूट चुका था।

वह उम्र में मुझसे 11 वर्ष ही छोटी थी और घर में सबसे बड़ी भी। इसलिए स्वयं को मेरी हम उम्र समझकर वैसे ही व्यवहार की अपेक्षा रखती थी। उसके प्रति मित्रवत व्यवहार का लाभ उठाते अन्य शिक्षकों से जानकारी हासिल कर मैंने उसके समक्ष प्रस्ताव रखा कि

वह आठवीं का प्राईवेट फार्म भर दें। परीक्षा की तैयारी मैं निःशुल्क करवा दूँगी। माँ बोली ''क्या फायदा होगा इससे? हमें नौकरी तो मिलने से रही। आपकी तरह नौकरी मिले तो ही पढ़ाऊँ।'' मुझे अचरज हुआ बिना पूरा पढ़े ऐसी अभिलाषा भला कैसे पूर्ण हो। मैंने बताया 8वीं कर आँगनबाड़ी में लग सकती है। उसकी माँ बोली पहले 'लोक जुम्बिश' कैम्प में भेजा था इसे वहाँ से भाग आई थी घर। मैंने बताया अब घर रहकर ही पढ़ लेगी। उस वक्त आँगनबाड़ी में नौकरी के आकर्षण में माँ बेटी पढ़ाई को बिल्कुल सरल सा बिना मेहनत का कार्य समझते हुए फौरन राजी हो गई।

उसके शैक्षिक व बौद्धिक स्तर को देखते हुए मैंने सबसे पहले सरलतम विषय हिंदी व तृतीय भाषा संस्कृत चुना। उसकी केवल अति महत्त्वपूर्ण प्रश्नों में तैयारी की शुरुआत की। प्रश्नों के उत्तर छोटे व सरल भाषा में लिख कर दिए। मैं काफी उत्साहित थी किंतु मेरी उम्मीद के विपरीत प्रथम दो दिवस तक उत्साह दिखाने वाली लड़की को पाँचवा दिन आते आते पढ़ना बेहद कठिन व बोझिल लगने लगा।

जिसकी वजह कक्षा-3 से सीधे ही 8वीं करवाने का मेरा अनुभवहीन, अमनोवैज्ञानिक व अव्यावहारिक प्रयास था जो विफल रहा। जो अभी कक्षा 3 तक का भी पूर्ण ज्ञान नहीं रखती, सीधी रेखा में खुद का नाम लिखना और चार हिंदी की पंक्तियाँ तक सही पढ़ना नहीं जानती वह 8वीं की पढ़ाई भला कैसे कर लेगी। पहले उसकी प्राथमिक शिक्षा जरूरी थी। खैर! मेरा यह दूसरा प्रयास विफल रहा। मैं हताश थी।

कुछ दिनों बाद पंचायत घर जो स्कूल से लगते भवन में ही था वहाँ निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगा। काफी भीड़ उमड़ी जिनमें अपनी सहेलियों, चाची-ताई और के साथ डॉक्टर को दिखाने वह लड़की भी आई थी। कैंप से लौटकर वह मेरे घर आई तो उसके पास मुट्ठी भर दवाएँ थी जो डॉक्टर ने दी थी। शायद वे आयरन की गोलियाँ थी। कैंप का जिक्र करते हुए एकाएक उसने दवा खिड़की से बाहर फैंक दी। मैंने हैरान होकर वजह पूछी तो किसी प्रबुद्ध के समान वह बोली-''मैं तो बिल्कुल स्वस्थ हूँ। पेट दर्द का बहाना बनाकर डॉक्टर को दिखाने इसलिए गई थी ताकि यह जान सकूँ कि इस डॉक्टर को कुछ मालूम भी है या नहीं।'' मुझे सुनकर हंसी आई जो स्वयं अपना नाम तक भली-भाँति सीधी रेखा में लिखना नहीं जानती वह सरकारी चिकित्सक की परख करने की बेवकूफी भरी बात कर रही थी। अशिक्षित समाज की मखौल उड़ाती प्रथम झाँकी सी प्रतीत हुई उस वक्त।

तीसरे नंबर की लड़की जो मानसिक रूप से आंशिक अल्प विकसित थी उसे स्कूल से जोड़ने के लिए उसकी माँ को यह कहकर समझाया कि स्कूल आने से यह कुछ सभ्य व समझदार हो जाएगी। पढ़ लिख गई तो इसे कहीं कोई काम भी सरलता से मिल जाएगा। इसका ब्याह करने में भी समस्या नहीं आएगी। अंतिम अस्त्र के रूप में यह भी कि वैसे भी खेत या घर का काम भी कोई खास नहीं करती इससे अच्छा क्यों न इसे स्कूल ही भेज दिया जाए। वहाँ दोपहर का भोजन भी मिलेगा, छात्रवृत्ति आदि कई अन्य लाभ भी।

उसकी माँ आसानी से मान गई। बच्ची आनाकानी नहीं करे इसके लिए उसे टॉफी और बिस्किट दिलाने का प्रलोभन दिया तो वह भी स्कूल आने लग गई।

यह मेरी दूसरी सफलता थी। जहाँ घर पर वह बिना नहाए, रूखे बालों व मैले कपड़ों में ही घूमा करती थी वहीं स्कूल में समझाइश पर नहाकर, साफ सुथरे कपड़े पहनकर व बालों में कंघी कर कपड़े का थैला उठाए आने लगी थी। वह मानसिक रूप से आंशिक विमन्द ही थी जिसमें नियमित शिक्षा व अच्छा वातावरण मिलने से काफी सुधार संभव था। स्कूल आना उसे भी भाने लगा था। वह रोज आने लगी थी। उसकी माँ ने प्रार्थना सभा प्रभारी होने के नाते मुझसे कहा कि मैं उस पर स्कूल ड्रेस का दबाव नहीं डालूँगी तभी वह रोज स्कूल भेजेगी। मैंने सहर्ष बात स्वीकार की क्योंकि यूनिफॉर्म में आने से कहीं ज्यादा जरूरी उसका स्कूल आना था।

बच्ची के लिखित कार्य या मौखिक उत्तर देने पर प्रोत्साहन के लिए पूरी कक्षा से तालियाँ लगवाती तो वह बच्ची खुशी से भरकर खुद भी तालियाँ लगाती। हिंदी, अंग्रेजी वर्णमाला अक्षर आडे-तिरछे बनाने पर भी उसे बड़ा स्टार और गुड देकर अगली बार और अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करती तो वह अधिक उत्साह से जितना कहा उससे अधिक बार अक्षर लिखकर लाती। अकारण छुट्टी भी नहीं लेती। छुट्टी लेने पर घर लौटकर पिछली खिड़की से आवाज देकर जब स्कूल नहीं आने की वजह पूछती तो पूरा परिवार इस छोटी सी परवाह से खुद को अति अवश्य स्कूल आने की बात दोहराते। उसे नियमित रखना जरूरी था। अपनी दूसरी सफलता से मैं काफी उत्साहित भी थी।

अब मेरा अगला व अंतिम प्रयास सबसे छोटी व चुस्त तथा बुद्धिमान बच्ची को स्कूल से जोड़ना था। उसकी उम्र अभी काफी कम थी इसलिए कि उसका स्कूल से जुड़ना मेरे नजरिए से सर्वाधिक जरूरी था। पारिवारिक अशिक्षा के कारण वह केवल दिशाभ्रमित है। शाम के वक्त वो पड़ोसी बच्चे मुझसे कहानी सुनने आया करते थे। उसी दौरान बड़ी दो बहनों व भाई का उदाहरण देकर उसे स्कूल आने के लिए प्रेरित करना शुरू किया। साथ ही उसे सबसे होशियार बताकर क्लास में फर्स्ट आने का स्वप्न भी दिखाया।

अंतिम अस्त्र के रूप में सबसे बड़ा प्रलोभन देकर कहा कि यदि वह पढ़ेगी तो एक दिन मेरी तरह स्कूल की मैडम भी बन सकती है। यह सुनकर उसकी आँखों में चमक आई लेकिन अगले ही पल मायूस हो बोली कि घर के काम से अधिक जरूरी काम उसका बकरी चराना है। वो चाय के लिए दूध देती है। उसके सिवा कोई और ये काम नहीं करता। पहले बाबा (पिता) करते थे अब बीमार है। इसलिए वह स्कूल नहीं आ सकती। उसकी माँ ने भी उसे स्कूल भेजने से साफ मना कर दिया।

वह खेत के काम में भी मदद किया करती थी। उस बच्ची के काम की उपयोगिता देखकर उसकी माँ मुझसे कुछ रूष्ट भी हुई कि मैं एक कामगार लड़की को स्कूल जाने जैसे अनावश्यक कार्य का सुझाव देकर खराब कर रही हूँ। मैंने भी हार नहीं मानी। उसकी दूसरे नम्बर की बहन जो मेरी प्रिय छात्रा भी थी उसे इस कार्य के लिए माँ को मनाने का जिम्मा सौंपा। डर के कारण माँ को तो नहीं लेकिन वह पिता को इसके लिए राजी करने लगी। साथ ही शाम को जब वह बच्चे मुझसे कहानियाँ सुनने आते थे तो कहानी के जरिए भी मैं लगातार उस छोटी बच्ची को स्कूल के लिए प्रेरित करती रहती।

आखिरकार सफलता मिल ही गई और

पढ़ लिखकर मैडम बनने का ख्वाब सँजोए वह बच्ची एक दिन अचानक से प्लास्टिक का थैला उठाए स्कूल आ पहुँची। उसकी माँ साथ नहीं आई थी एडमिशन के लिए। वह नाराज थी शायद। पर घर की कामू लड़की जिसकी जिद्द के आगे किसी की नहीं चलती थी वह प्रेरित होकर हठपूर्वक स्कूल चली आई थी बिना दाखिले ही वह आने लगी थी।

मैंने सोचा कोई बात नहीं कुछ दिन अस्थायी प्रविष्ट के रूप में ही आती रहेगी। तब तक शायद माँ भी पढ़ाई का महत्त्व समझने लगे। आशाएँ बलवती होनी चाहिए। लेकिन कदाचित भाग्य ही अनुकूल नहीं था। कुछ ही दिन बाद उसके मामा के घर बच्चे ने जन्म लिया। नानी के वृद्ध होने के कारण देखभाल के लिए माँ का जाना जरूरी था। इसलिए घर के कार्य और मुख्य रूप से बकरियाँ चराने की विकट समस्या के हल के लिए उस कामू लड़की का स्कूल नहीं जाना अत्यावश्यक हो चुका था।

लेकिन वह मनमौजी स्वभाव की जिद्दी लड़की स्कूल छोड़ने को राजी नहीं थी। ऐसे व्यक्तित्व को केवल प्यार से ही मनाया जा सकता है जबरन नहीं।

तो उसकी माँ ने वही तरीका अपनाते हुए उसे लालच दिया कि उसके नानी के घर डेढ़ माह तक रहने के दौरान यदि वह पीछे से बकरियाँ चराने जाएगी तो वह उसे दिवाली पर कोरी नई फ्रॉक दिलवा देगी। नए कपड़े एक बड़ी चीज थी क्योंकि उस घर के सदस्यों के हिस्से नए कपड़े नहीं आते थे। शहरों में जो पुराने कपड़े बर्तन वालों को दिए जाते थे वही गाँव की हाट से वे नए कपड़ों के रूप में चाव से दीपावली पर खरीद कर पहना करते थे। दीपावली पर सभी को नए कपड़े जरूर मिला करते थे। पर बच्ची नई फ्रॉक के लालच से राजी नहीं हुई। पढ़कर मैडम बनना फ्रॉक से बड़ी बात है उसने यह माना।

ननिहाल जाने में देरी होते देख उसकी माँ हर संभव जतन उस गुस्सैल व जिद्दी कामू लड़की को मनाने के लिए कर रही थी। गुरु से कहीं ज्यादा माँ बच्चे के करीब होती है। अंतिम असंभव सा प्रतीत होता प्रलोभन जो शायद झूठा था देते हुए उसकी माँ बोली कि अगर वह बकरियाँ चराएगी तो वह ननिहाल से लौटकर उसे 'सोने का लूँग' (नाक का गहना) गढ़वा कर देगी।

जो सोने का आभूषण शायद उसकी माँ के खुद के पास भी पहनने को नहीं थे वह उसे मिल सकता है। इसके आगे बच्ची तुरंत झुक गई। वह भूल गई कि पढ़कर मैडम बनने से ऐसे कई 'सोने के लूँग' खरीदने के काबिल वह बन सकती है। अब उसकी माँ डेढ़ माह के लिए निश्चित होकर ननिहाल चली गई। बच्ची ने स्कूल आना छोड़कर बड़ी बहन को घर के काम में मदद करना और बकरियाँ नियमित रूप से चराने जाना फिर से शुरू कर दिया था। 'सोने के लूँग' के मोह में कार्य के प्रति निष्ठा व उत्साह भी पहले से बढ़ गया था। मैं काफी हताश थी। खैर माँ के लौटने पर ही सही वह फिर से स्कूल लौट आए किंतु ''सोने की दीवार को अब मेरी शिक्षा की प्रेरणा भेद नहीं पा रही थी।'' अबोध बच्ची को अब स्कूल व शिक्षा की बातें व्यर्थ लगने लगी थी।

मुझे लगा शायद माँ झूठ नहीं बोल रही हो और वह सचमुच लौटकर उसे तिल्ली भर (नाममात्र) का सोने का लूँग बनवा देगी। शायद उसके लौटने के बाद भी वह बच्ची बकरियाँ ही चराती रहेगी और वे कभी स्कूल लौटकर नहीं आएगी। शिक्षा की प्रेरणा को मैंने उस वक्त 'सोने के लूँग' से हारते हुए देखा और यह अनुभव भी मिला कि शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा यदि कोई है तो वह 'अर्थ' है। जब तक समाज में परिवार की आर्थिक स्थिति उन्नत नहीं हो जाती तब तक यह अर्थ (धन) शिक्षा के रास्ते में विभिन्न रूपों में अलग-अलग पड़ावों पर बाधा बनता ही रहेगा। बहुत से प्रतिभा सम्पन्न बच्चे माता-पिता के जागरूक होने के बावजूद आर्थिक समस्या के कारण अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते। उसकी माँ के लौटने से पहले ही मेरा स्थानांतरण अन्यत्र हो गया। नहीं जानती उसके बाद वह बच्ची स्कूल आई या 'सोने का लूँग' पहनकर बकरियाँ चराती रही। मैं नहीं जानती। पर उस असफलता की पीड़ा आज भी है।

प्रधानाचार्य,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
भागसर (सादुलशहर) श्रीगंगानगर
मो. 9460733665

कठिन साधना

❐ पुष्पेश कुमार पुष्प

यवक्रीत एक तपस्वी ब्राह्मण का पुत्र था। उसके पिता से कई छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते थे। वह अपने पिता के पास शिक्षा ग्रहण करने आये छात्रों की कठिन साधना को देख कांप जाता। विद्या प्राप्त करने की कठिन साधना को देख उसका मन विचलित हो जाता। वह विद्या बिना कठिन साधना के ही प्राप्त करना चाहता था। यही सोचकर एक दिन चुपचाप घर से भाग गया और नदी किनारे कठिन तप करने लगा। उसकी घोर तपस्या से स्वर्ग का इन्द्रासन हिल गया। भयभीत इन्द्र तपस्या का उद्देश्य जानने के लिए ब्राह्मण के वेश में यवक्रीत के पास आये और तपस्या का कारण पूछा।

यवक्रीत ने स्पष्ट शब्दों में कहा-'मुझे विद्या चाहिए।'

यह सुनकर इन्द्र बोले-'वत्स! विद्या का जो प्रकार है उसी से विद्या प्राप्त होगी, तपस्या से नहीं।' फिर भी यवक्रीत अपनी जिद पर अडिग रहा।

कुछ समय बाद यवक्रीत ने देखा कि एक वृद्ध ब्राह्मण नदी के तट पर मुट्ठियां भर-भरकर रेत नदी के प्रवाह में डाल रहा है। उसने वृद्ध ब्राह्मण के निकट जाकर पूछा-'तुम क्या कर रहे हो?'

ब्राह्मण ने कहा-'नदी पार करनी है इसलिए सेतु बना रहा हूँ।'

यह सुनकर यवक्रीत हंस पड़ा और बोला-'क्या नदी के प्रवाह में रेत डालने से सेतु बन जायेगा? यह रेत तो पानी के तेज प्रवाह में बह जायेगी। इस प्रकार सेतु का निर्माण नहीं हो सकता।'

यह सुनकर ब्राह्मण अपने वास्तविक रूप में आ गये और बोले-'वत्स! मैं देवराज इन्द्र हूँ। जिस प्रकार नदी के प्रवाह में रेत डालने से सेतु नहीं बन सकता, ठीक उसी प्रकार बिना कठिन साधना के विद्या कैसे प्राप्त हो सकती है। केवल तपस्या करने से विद्या प्राप्त नहीं हो सकती। अतः अपने घर लौट जाओ और अपने पिता से विद्या ग्रहण करो। तुम्हे शीघ्र विद्या प्राप्त होगी।' यवक्रीत तपस्या छोड़कर विद्या प्राप्त करने के लिए अपने घर लौट आया।

विनीता भवन, निकट बैंक ऑफ इंडिया,
काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक,
बाढ़-803213 (बिहार) **मो. 9135014901**

जवान है तू... दुनिया मेरे आगे

❒ हरीशचंद्र पाण्डे

आज का युवा अपनी ऊर्जा के 'स्थायी भाव को लेकर कभी भी' पूर्ण रूप से आत्मविश्वासी नहीं दिख रहा। उसका उत्साह ही उसकी हर समस्या का समाधान है इस परिभाषा को आज का युवा कपोल कल्पना मान बैठा है।

युवा माने तर्कशील मन, युवा माने सोच में खुलापन, युवा माने उदारता, युवा माने वैचारिक सम्पन्नता। पर आज हमारे देश का कैनवास युवाओं का यह रंग रूप नहीं पेश कर रहा। आज तो ऐसा लगने लगा है कि युवाओं की यह सारी कहावतें हवा हो गई है। कहीं तो कुछ गड़बड़ी है हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था, हमारी राजनीतिक सोच या सामाजिक चलन कहीं कुछ असंतुलन या अशुद्धता है जिससे हमारे युवा खोखले विचारों से भटके हुए और दुविधा में फंसे अटके से नज़र आते हैं।

दरअसल, एक अजीब सी घटना हुई और अपने सामने युवकों के पूरे दल को लापरवाही से वो माहौल नजर अंदाज करते देखना बहुत ही दर्दनाक दृश्य था। हुआ यों कि एक आदमी को स्कूटर से गिराकर दो लुटेरे उसका बैग और मोबाइल छीन कर भागने लगे। वो आदमी उसी समय घबराकर सड़क पर नीचे गिर पड़ा और दूसरे ही पल एकदम उठा और पहली प्रतिक्रिया में बस चीखने-चिल्लाने लगा। वहाँ नौजवान उपस्थित थे, लेकिन एकदम ऐसे गुजर गए जैसे उनको कुछ लेना ही न हो। खैर! कुछ ही दिनों में वो लुटेरे पकड़ लिए गए। रकम बरामद हो गई। पर उस समय वो दृश्य देखने के बाद एक नब्बे वर्षीय बुजुर्ग अपनी बात साझा कर रहे थे कि हमारे समय में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे युवाओं की ताजा मिसाल ऐसी हुआ करती थी कि हम किसी भी तरह समाज के काम आने का मौका खोजते थे। कोशिश करते थे कि किस तरह अपना तन, मन और धन देश समाज, मानवता के लिए अर्पित कर सकें। पर आज तो युवाओं को इस बात से कोई मतलब ही नहीं रह गया है कि हमारे देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक हालत कैसी है। आम भारतीय, आज किन-किन समस्याओं से दो चार हो रहे हैं, उन पर काम कैसे करना है, वो अपने दायित्व को खुद ही समझना नहीं चाहते, युवा पीढ़ी का यह रूप बहुत निराश करने वाला है।

एक और खबर अखबार में ही पढ़ी थी कि चार युवकों ने अपने मित्र से मिलकर उसकी सहमति से उसका अपहरण किया और उसके करोड़पति कारोबारी पिता से दस लाख वसूल कर बैंकाक घूमने गए उसी दोस्त को साथ लेकर जिसका अपहरण किया था। बाद में किसी मन मुटाव से राज खुला और अखबार में खबर आई। केवल ऐश और विलासिता के लिए युवा ऐसा करने लगे हैं। उन युवकों ने गिरफ्तार होने के बाद बिलकुल भी खेद प्रकट नहीं किया और उल्टा यह कहा कि जब तक जियो सुख से जियो कर्जा लेकर घी पियो। यह भी पता लगा कि उस शहर के चालीस प्रतिशत युवाओं की तरह वो सब नशे के चंगुल में फंसे हुए थे। फिल्मी हीरो, अपराधी माफिया, ठग, फर्जी लोग, अमीर लोग ही उनके आदर्श थे।

मौजूदा दौर में कुटुंब की परिभाषा भी बदली है। घरों की संरचना ऐसी हुई है कि परिवार नामक पाठशाला से युवा कुछ भी संस्कार नहीं सीख पा रहे हैं। आज युवा के पास समय है ही नहीं, वो अजीब ढंग से आत्मकेन्द्रित हो गया है वो गहराई से सोचना नहीं चाहता। कुछ करना नहीं चाहता। उसका अक्सर ऐसा जवाब आने लगा है कि मेरी बला से।

बदलाव के वाहक युवा ही रहे हैं हमेशा। उनकी गरिमामय तस्वीर धुंधली होती देखकर मन कसैला तो होता ही है। पर, आज दो प्रतिशत युवा भी इस बात से बेखबर नहीं है।

हालांकि यह सुनकर कुछ लोग एक नया तर्क देते है कि क्यो भावुक बातें करके युवाओं को लड़खड़ाने पर मजबूर कर रहे हो। अरे, अब जरा सुलझ जाओ देखो, तकनीक का विस्तार हो रहा है समाज और संसार का चलन बदल रहा है। युग अर्थ प्रधान हो रहा है तो युवा भला अपने बारे में क्यों न सोचें?

लेकिन वहाँ पर क्या करें जहाँ हम सब गवाह हैं कि युवा पीढ़ी पढ़ने-लिखने से दूर होती जा रही है और भिगोया धोया पर किसी विषय का तत्व उनको नहीं पता। कितने हजार गाँव और कस्बे ऐसे हैं जहाँ की युवा जाति, वर्ग, धर्म, भाषा की जंजीरों में जकड़ी हुई है। कहने को पूरे देश में हजारों युवा संगठन है। लाखों ऐसे सामाजिक समूह है जो युवा संवाद करते है पर भीतर की सच्चाई यह है कि वो सब किसी पॉलिटिकल पार्टी की आर्थिक मदद से काम कर पा रहे हैं।

कुछ राजनीतिक दलों का पल्लू पकड़कर युवा उनकी राजनीतिक सोच के सहारे चल रहे हैं और उस दल की जो वैचारिक तवज्जो होती है उसी लकीर के पीछे बलकर कहीं किसी धरने आदि में चीखने शोर मचाने के काम आ रहे हैं। मगर इससे वो और ज्यादा प्रचलित तथा दिग्भ्रमित हो रहे हैं। एक वाकया अस्पताल के ठीक सामने घट गया। अस्पताल के पास ही एक रोगी अपनी बारी की प्रतीक्षा करता अचानक बेहोश हो गया। कारण यह था कि चिकित्सक महोदय किसी वी.आई.पी. को सेहत की सलाह दे रहे थे और मीडिया में कवरेज हो रही थी। पर उस बेहोश मरीज को देखकर वहाँ खड़े युवा बेबस देखते जा रहे थे। तभी एक बूढ़ी सी महिला आई और उस मरीज की जेब से आधार कार्ड निकालकर सीधा डॉक्टर के चैंबर में जाकर बोली कि यह बेहोश मरीज भी उतना ही भारतीय नागरिक है जितना यह महाशय जिनके कारण बाकी गरीब मरीज इंतजार में बाहर झूलस रहे है। यह बात भी वहाँ सक्रिय मीडिया ने रिकार्ड कर ली और यह बात डिजिटल मंच पर काफी वायरल होती रही। पर सोचने वाली बात यह है कि वहाँ उपस्थित वह नौजवान जड़ क्यों थे? युवाओं की सोच उस समय कहाँ गई। वो कुंद होकर अपनी धार क्यो खो गई है?

युवाओं के साथ देश और समाज की भावनाएँ जुड़ी हुई होती है। पुरानी पीढ़ियाँ उनके भरोसे अपनी विरासत छोड़ जाना चाहती है। वो इस कोमल संवेदनाओं को समझते क्यों नहीं। युवाओं की संपूर्ण दिनचर्या से समाज के रंग ही गायब हो गए हैं। एक दिन एक सज्जन बता रहे थे कि अब भारतीय समाज के युवा दिशाहीन हो रहे हैं। शायद अब यहाँ भी लोग रोबोट की बैसाखियों से दुरुस्त विचार और चुस्त जीवन का रास्ता पाना चाहेंगे और इस तरह सतर्क सजग युवाओं के अभाव में एक खालीपन भरी सुरक्षा का विकल्प खोजने लगेगें।

आर.के. टेंट रोड, कुसुमखेड़ा,
हल्दानी, उत्तराखंड-263139
मो: 8302327123

सिमरन के भगवान

❐ महेश कुमार चतुर्वेदी

दीनबंधु सर ने कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति ली। एकाएक उनकी निगाह सिमरन के नाम पर गई। वह पिछले एक महीने से स्कूल नहीं आ रही थी। सर के दिमाग में कई अनसुलझे सवाल आने लगे। सिमरन कहीं बीमार तो नहीं हो गई। उसके साथ कोई अनहोनी घटना तो न घट गई। कहीं गरीबी उसकी पढ़ाई में रोड़ा तो न बन गई। कई सवालों से उनके चेहरे पर चिंता की लकीर उभर आयी। वे विचलित हो उठे। आखिर प्रश्नों का समाधान मिले तो कैसे?

समाधान के लिए उन्होंने कक्षा के छात्रों का सहारा लिया पूछा- 'किसे पता है, सिमरन स्कूल क्यों नहीं आ रही?' सबका एक ही उत्तर था। 'नो सर।'

'अच्छा बताओ वह कहाँ रहती है?'

एक दो छात्राओं ने हाथ खड़ा किया और बताया। सर! वह स्कूल से डेढ़ कि.मी. दूर नई आबादी में रहती है। 'उसे कहना सर ने उसे याद किया है और स्कूल पढ़ने के लिए बुलाया है।' स्कूल से छुट्टी होते ही उसकी सहेलियाँ उसके घर जा पहुँची। उन्हें देख सिमरन चहक उठी। सहेलियों ने उनके आने का मकसद बताया और कहा-'सर ने तुम्हें पढ़ने के लिए स्कूल बुलाया है।'

सिमरन रोने लगी। सिसकने लगी। रोते-रोते ही उसने कहा-'सर से कहना। अब सिमरन कभी भी स्कूल का मुँह नहीं देखेगी। उनसे कहना उसके सारे सपने टूट चुके है। अब वह कभी स्कूल नहीं आएगी। कुछ शांत होने के बाद उसने हिम्मत करके बताया-'मेरे मम्मी पापा एक सड़क हादसे में चल बसे। अब मैं अनाथ हो गई। अब तुम्हीं बताओ मैं स्कूल कैसे आ सकती हूँ?' यह कहते-कहते सिमरन की रूलाई फिर फूट पड़ी। वह फफक-फफक कर रोने लगी। सिसकते-सिसकते ही उसने कहा-'सर को मेरा नमस्ते कहना और मेरे स्कूल न आने की मजबूरी उन्हें बताना। अब मैं अकेली हूँ। मेरे बूढ़े दादा-दादी, यही मेरे जीने का सहारा है।' सहेलियाँ सिमरन के दुःख से द्रवीभूत हो उठी। उनकी आँखों से भी आँसू टप-टप बहने लगे। उन्होंने सिमरन को सांत्वना दी, ढ़ाँढ़स बंधाया और दुःख प्रकट कर उससे विदा ली।

दूसरे दिन छात्राओं ने सिमरन के दुख की दास्तां दीनबंधु सर को सुनाई। सुनते ही वे स्तब्ध हो उठे। थोड़ा रूक कर अपने आपको संभालते हुए वे बोले-'छुट्टी के बाद कक्षा नौ के सभी विद्यार्थी सिमरन के घर चलेंगे और उसे स्कूल आने के लिए प्रेरित करेंगे।'

छुट्टी हुई। सभी सिमरन के घर पहुँचे। वह गुमसुम सी एक कोने में बैठी थी। अपने सर और सहपाठियों को देख वह उठ खड़ी हुई और सर से लिपट बेतहाशा रोने लगी। सर भी अपने आप को रोक न सकें। उनकी आँखें भी तर हो उठी। सहपाठियों की आँखें भी दुख से सराबोर थी। ऐसा लगता था मानो दुख का मंजर चारों ओर पसरा हुआ है। यह दुख सिमरन के अकेले का नहीं बल्कि उन सबका अपना दुख था।

दीनबंधु सर ने सिमरन के आँसू पोंछते हुए दृढ़ता से कहा-'सिमरन तू पढ़ेगी। तुझे पढ़ना है और पढ़ कर तुझे अपने पैरों पर खड़ा होना है।'

'सिमरन कैसे पढ़ेगी, सर? जिसके खाने का ठिकाना, न जीने का सहारा। बेसहारा का न अता न पता। कैसे पढ़ेगी सिमरन? कैसे अपने पैरों पर खड़ा होगी? सर कैसे? 'ईश्वर पर भरोसा रख सिमरन। ईश्वर पर भरोसा रख यदि किसी का सहारा टूट जाता है तो ईश्वर उसके लिए दूसरा सहारा भेज देता है। निराश मत हो। कोई न कोई तेरी मदद जरूर करेगा।'

'कैसा सहारा? कौन सहारा? एक सहारा था माता-पिता का। वह भी भगवान ने छीन लिया। मुझे तो अब कोई सहारे का टिमटिमाता दिया भी दिखाई नहीं देता।'

'सहारा है, सिमरन। सहारा है और वह सहारा तेरे सामने खड़ा है, तेरा अपना सर, दीनबंधु सर। मैं तुझे पालूँगा-पोषूंगा। पढ़ाऊँगा और इतना पढ़ाऊँगा कि दुनिया देखती रह जाएगी कि मेरी सिमरन कहाँ से कहाँ तक पहुँच गई।

'मेरे सर का साया मेरे सिर पर हो इससे बड़ी क्या बात हो सकती है?' यह कहकर सिमरन सर के चरणों में गिर गई और सर ने उसे आशीर्वाद दिया। सिमरन और दीनबंधु के साथ हुई वार्ता उसके दादा-दादी भी सुन रहे थे। वे कुछ समझ पाते उससे पहले ही दीनबंधु सर उनकी ओर मुखातिब होकर बोले- 'दद्दू! आपसे एक विनती है। सिमरन को मुझे दे दो। मैं इसे गोद लूँगा और इसे पढ़ा-लिखाकर नेक इंसान बनाऊँगा। दद्दू, मना मत करना और हाँ जब आपका और सिमरन का मन चाहेगा। मैं सिमरन को आपसे मिलाने जरूर लाऊँगा। वह रहेगी मेरे पास लेकिन दिल से रहेगी आपके पास। बोलो दद्दू बोलो सिमरन को मुझे दोगे। उसे कल से स्कूल भेजोगे।'

लरजती आवाज में दद्दू बोले-'बेटा! इस बूढ़ापे में तूने सिमरन का हाथ थाम जो सहारा दिया। उस पर बड़ा उपकार किया। सच में तुम्हारे जैसा इंसान शायद ही देखने को मिले। जिसने एक अनाथ को सहारा देने का निर्णय किया। धन्य हो बेटा! धन्य हो। आज से सिमरन तुम्हारी हुई। तुम इसे जब चाहो, तब ले जाओ।'

अगले दिन दीनबंधु सर ने सारी कानूनी प्रक्रिया पूरी कर सिमरन को गोद ले लिया। अब सिमरन दीनबंधु अवस्थी बन गई थी। अब दीनबंधु उसके सर ही नहीं उसके पापा भी बन चुके थे।

वैसे तो सिमरन पढ़ने-लिखने में होशियार तो थी ही। ऊपर से अपने सर और पापा-मम्मी की शिक्षा दीक्षा में वह पढ़ाई में बाजी मारती गई। देखते ही देखते कुछ वर्षों में सिमरन ने पोस्ट ग्रेजुएट कर ली। अब वह आर.ए.एस. की तैयारी करने लगी। अपने पिता दीनबंधु के निर्देशन में और अपनी पढ़ाई, लगन और कड़ी मेहनत से उसने आर.ए.एस. की परीक्षा भी पास कर ली। अब वह जिला कलेक्टर बन गई थी।

जिला कलेक्टर के पद ग्रहण करने से पूर्व सिमरन ने अपने दादा-दादी को याद किया तथा एक सादे समारोह में उसने अपने मम्मी-पापा को उसकी इस कामयाबी का श्रेय देते हुए उनका अभिनंदन किया। उन्हें माला पहनायी। उनका और अपने दादा-दादी के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात् उसने जिला कलेक्टर का पदभार ग्रहण किया। जिला कलेक्टर की टेबल पर नेम प्लेट लगी थी। 'सिमरन अवस्थी दीनबंधु जिला कलेक्टर।'

सिमरन ने अपनी कुर्सी के पीछे दीवार पर लिखवाया-'सच में गुरु भगवान होते हैं।' मैंने आज जाना, समझा और जीवन में अनुमान किया। और भी बड़े अक्षरों में लिखा था- सिमरन के भगवान-दीनबंधु सर।

प्रधानाध्यापक (सेवानिवृत्त)
राष्ट्रीय स्तर से पुरस्कृत शिक्षक
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे, दूसरी गली, छोटी सादड़ी,
प्रतापगढ़ (राज.)-312604 मो: 9460607990

महिलाओं से संबंधित विशेषाधिकार

❒ रश्मि नामदेव

जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो महिलाओं को उनको प्राप्त विशेषाधिकारों की जानकारी होना भी आवश्यक है संविधान ने महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को रोकने तथा महिलाओं की सुरक्षा हेतु समय-समय पर विभिन्न बदलाव कर महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने हेतु तथा समाज में महिलाओं को पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सके इस हेतु महिलाओं को कुछ विशेष अधिकार प्रदान किए गए हैं। इससे यह फायदा हुआ है कि महिलाएँ आज प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है। आज भारतीय सेना में भी महिलाओं को प्रवेश इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। तो आइए जानते हैं महिलाओं से संबंधित अधिकारों के बारे में

1. P.C.P.N.D.T कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार– यह कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ सबसे बड़ा कानूनी अधिकार है इस अधिनियम के अनुसार कोई भी चिकित्सा अधिकारी या चिकित्सा व्यवसाय द्वारा किसी भी प्रकार के साधन द्वारा गर्भ में पल रहे शिशु का लिंग निर्धारण नहीं करेगा। यदि कोई इस अधिनियम में बनाए नियमों का उल्लंघन करता है तो उसे 3 वर्ष का कारावास तथा <10000 तक का जुर्माने का प्रावधान है। बेटे की चाह को देखते हुए कन्याओं की भ्रूण हत्या रोकने के उद्देश्य से इस अधिनियम को बनाया गया है।

2. घरेलू हिंसा डॉमेस्टिक वायलेंस एक्ट 2005– डोमेस्टिक वायलेंस 2005 के अनुसार महिलाओं को घरेलू हिंसा से बचाने के लिए कईं नियम है। यदि महिलाओं को उसके पति और परिवार के किसी अन्य सदस्यों द्वारा शारीरिक तथा मानसिक रूप से परेशान किया जाता है तो वह इस अधिकार के तहत् उनके खिलाफ कार्यवाही कर सकती है।

3. यौन उत्पीड़न के खिलाफ अधिकार– कार्यस्थल पर महिलाओं का शोषण तथा उत्पीड़न को रोकने के लिए कामकाजी महिलाओं को संविधान द्वारा यह विशेष अधिकार दिया गया है। यदि किसी पुरुष

द्वारा महिला से अभद्र भाषा का प्रयोग किया जाता है या अश्लील वीडियो दिखाना, उसकी अनुमति के बिना उसका फोटो खींचना, जबरदस्ती दोस्ती करने को मजबूर करना या चरित्र के विषय में गलत शब्दों का प्रयोग करना, गंदे इशारे करना, गलत तरीके से देखना या टच करना इत्यादि आते हैं तो महिलाएँ इस अधिकार का उपयोग कर उस व्यक्ति के खिलाफ शिकायत दर्ज करवा सकती है।

4. संविधान द्वारा महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन का अधिकार है।

5. मातृत्व संबंधी अधिकार– कामकाजी महिलाओं को संविधान द्वारा यह विशेषाधिकार दिया गया है। इस नियम के अनुसार महिलाओं को इस अवकाश का पूर्ण वेतन दिया जाएगा।

6. पुलिस से संबंधित अधिकार– इस नियम के अनुसार महिला को गिरफ्तार करने से पहले गिरफ्तारी का कारण बताना होगा तथा सूर्य उदय से पहले तथा सूर्यास्त के पश्चात् महिला को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता है तथा गिरफ्तारी के समय महिला पुलिस का होना आवश्यक है। उसकी तलाशी भी केवल महिला पुलिस ही ले सकती है तथा गिरफ्तारी के बाद उसके नजदीकी व्यक्तियों को इसकी सूचना देना जरूरी होगा।

7. पिता की संपत्ति में अधिकार– इस अधिकार के तहत् यदि पिता की बिना वसीयत बनाए ही मृत्यु हो जाती है तो बेटी का अपने पिता की संपत्ति में उतना ही अधिकार होगा जितना उसके भाई तथा माता का अधिकार है, यदि बेटी की शादी हो गई हो तब भी उसका यह अधिकार होगा।

8. पति की संपत्ति पर अधिकार या गुजारे भत्ते का अधिकार– यदि किसी कारणवश पति पत्नी अलग हो गए हैं तो वह अपने तथा अपने बच्चे के जीवन यापन के लिए गुजारे भत्ते की मांग कर सकती है। पत्नी को पति की संपत्ति में अधिकार होगा यह पति की आर्थिक स्थिति के आधार पर तय किया जाएगा।

9. मुफ्त कानूनी मदद का अधिकार– इस नियम के अनुसार महिलाओं को मुफ्त कानूनी मदद का अधिकार है यदि किसी मामले में महिला आरोपी है तो वह सरकारी खर्चे पर सरकारी वकील की सहायता प्राप्त कर सकती है।

10. दहेज निवारण अधिनियम– इस नियम के अनुसार दहेज लेना और देना दोनों कानूनी अपराध है यदि किसी महिला को दहेज के लिए ससुराल में प्रताड़ित किया जाता है तो वह इस नियम के अनुसार उनके खिलाफ कार्यवाही कर सकती है।

11. महिलाओं से संबंधित अन्य अधिकार– यदि महिला किसी सरकारी कार्यालय या अन्य प्राइवेट संस्था में कार्य कर रही है तो उनके लिए अलग शौचालय की व्यवस्था होनी चाहिए तथा किसी भी महिला से लगातार 5 घंटे से ज्यादा काम नहीं करवाया जा सकता है। 1 सप्ताह में 48 घंटे से ज्यादा एक महिला कर्मी से काम नहीं करवाया जा सकता है।

महिलाओं को संविधान की तरफ से प्राप्त विशेष अधिकारों की जानकारी के अभाव में महिलाएँ शोषण का शिकार हो जाती है, साथ में महिलाओं को यह कहना चाहूँगी कि महिलाओं को यह अधिकार उनकी परेशानियों से मुक्त करवाने के लिए बनाए गए हैं। इनका दुरुपयोग ना करें समाज में स्त्री और पुरुष दोनों का समान रूप से अपना-अपना महत्त्व है।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय खेड़ली
बोरदा, इटावा, कोटा (राज.)

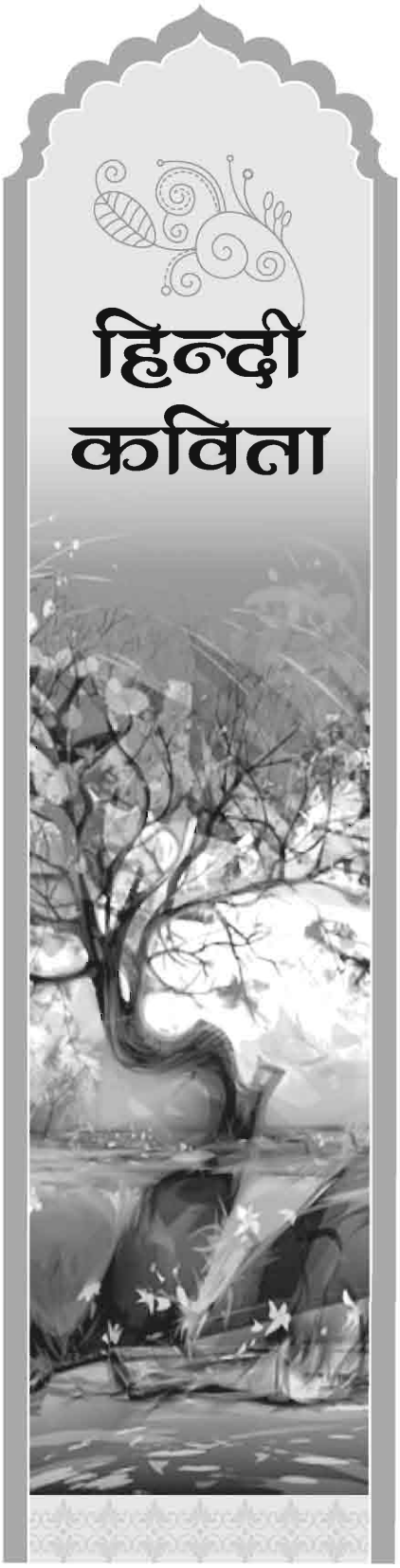

हे सरस्वती हम सब गुण हीना

❐ अशोक कुमार पारीक

हे सरस्वती हम सब गुण हीना, त्यज माया, अभिमान जगे।
ऐसा हमें वरदान दीजिए, बुद्धि के सब कष्ट कटे।

हम सब बालक ज्ञान हीन है, अन्धकार छाया मन में
भटक रहे अज्ञान भंवर में, जीवन हो गया कष्टमय
ज्ञान का दीपक मन में जगाकर, करदे जीवन प्राणमय।
हे सरस्वती हम सब गुण हीना....

हाथ में वीणा कमल का आसन, श्वेताम्बर तूं धारी है
ब्रह्मा विष्णु हर तुझे भजता, हाथ में पुस्तक धारी है
रत्नाकर भी गुरु बन जाए, ऐसी कृपा तुम्हारी है।
हे सरस्वती हम सब गुण हीना.....

जब से आए तेरे दर पर, विजय विश्व उत्साह जगा
जन-जन बुद्धिमान बना और भारत विश्व गुरु बना
मैं भी ''आशु'' कवि बन जाता, तेज बुद्धि प्रकाश जना।
हे सरस्वती हम सब गुण हीना.....

अध्यापक
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालय
पचपदरा, ब्लॉक-बालोतरा, जिला बाड़मेर-344032
मो. 9785393320

सच्चा गुरु

❐ राजेश कुमार शर्मा

भटके हुए को राह दिखाए डांट पिलाए प्यार जताए
जीवन में उजियारा लाए उंगली पकड़ के चलना सिखाए
सच्चा समझो वही गुरु है। उसको समझो सही गुरु है।

शिष्य के सब दोष निकाले करे भला जो हरे बला जो
घिस-घिस हीरा उसे बनाए हर अनिष्ट से तुम्हें बचाए
वाकई में तो वही गुरु है। समझो अपना वही गुरु है।

पीकर घूंट गरल का देखो राज करो तुम राज बताए नित संगत तुम करो गुरु की
अमृत का जो पान कराए मंजिल तक तुमको पहुँचाए भव से तुमको पार लगाए
सच्चा समझो वही गुरु है। ऐसा करतब करे गुरु है। ऐसा केवल केवल गुरु है।

घिस-घिस चंदन वन महकाए बड़ा बनाकर स्वयं लघु बन जाए
ताप हरे व ठंडक बरसाए बुलंदियों पर तुम्हें पहुँचाए
यही काम जो, करे गुरु है। ऐसा करता सिर्फ गुरु ही।

वरिष्ठ अध्यापक,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
कुहावनी बाड़ी, धौलपुर-328021
मो. 9414709638

मेरा पेशा

❐ श्रवण कुमार 'पयोल'

सौंप कर मुझको एक,
निराकार बालक तो देख।
अगर न बना दूँ एक,
इंसान उसे तो कहना।
न अटकेगा न भटकेगा,
दुनियादारी के झमेले में।
सभ्य-संस्कारित पाओगे,
उसे जिन्दगी के मेले में।
लगा वो नेकी, दया, धर्म,
का एक बेजोड़ पुतला।
करेगा वो अनवरत कर्म,
संगी भले का अकेला।
होगी संवेदनाएं कुछ खास,
मेरी उस रेखाकृति का।
सौंप कर एक कोरा कैनवास,
देख इस शिक्षक व्यक्ति को।
सौंप कर एक नौसीखिया,
नाविक मुझे तो देख।
जीवन सागर की नैया,
पार न लगा दूं तो कहना।
बनाएगा सफल सुबोध भाई,
हर तुच्छ व अनमोल को।
सौंपे अगर अबोध कोई,
इस प्रबुद्ध 'पयोल' को।।

प्रधानाचार्य
राज.उ.मा. विद्यालय, मनाई, जोधपुर
मो. 8104268771

दत्तात्रेय के चौबीस शिक्षक

❐ मुकेश जैन

जो सीखता व सिखाता है,
शिक्षक वही कहलाता है।
शिक्षक है ज्ञानप्रकाशक,
अज्ञानतिमिर का नाशक।।
प्रकृति के सभी उपादानों से,
करें उपयोगी ज्ञान ग्रहण।
दत्तात्रेय ने सीखने हेतु ली,
चौबीस गुरुओं की शरण।।
पंचमहाभूत है हमारे रक्षक,
सहिष्णुता शुद्धता, शीतलता।
निरंतरता और व्यापकता का
संदेश देकर बनते हैं शिक्षक।।
भंवरा-कुरर-हाथी-पतंगा,
मधुहा-मीन-मृग-कपोत।
सब कहते करो लोभ का त्याग,
जला देती है विषयों की आग।।
अथक पथिक है सूर्य व चंद्र,
सागर है मर्यादा का केन्द्र।
अबोध बाल निश्छलता बताता,
पिंगला सिखाती इन्द्रियों की क्षीणता।।
भयंकर सरीसृप भी है बोधक,
दूर करें जीवन के अवरोधक।
धैर्य से दुर्दिन सहता अजगर,
सर्प भी एक स्थान पर न रुकता निरंतर।।
विलक्षण है भृंग की एकाग्रता,
शरकृत् की अनुपम तन्मयता।
कुमारी की लक्ष्य नियतता,
ऊर्णनाभि की नवसृजनता।।
'अच्छे' से सीखे करणीय,
'बुरा' बताये क्या है त्याज्य।
पदार्थ हो चेतन या अचेतन,
ग्रहण करें सबसे ज्ञान गहन।।

सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर
मो. 8003959741

गौरवशाली शिक्षक : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

❐ जगदीश चन्द्र शर्मा

शिक्षक पद का गौरव बढ़ाया आपने,
भारत माँ का मान बढ़ाया आपने।
मिलजुल कर रहना सिखाया आपने,
सदा आगे बढ़ना सिखाया आपने।।
राष्ट्रपति के सर्वोच्य पद को सुशोभित किया,
पर आजीवन साधारण शिक्षक बनकर जिया।
5 सितम्बर तारीख को कुछ खास बना दिया,
साधारण से शिक्षक पद को विशेष बना दिया।।
सादा जीवन उच्च विचार को जीवन मंत्र बना लिया,
भारत माँ के सपूत तुमने माँ का ऋण चुका दिया।
तिरूमनी की पावन भू को दिव्य बना दिया,
भारत रत्न से भूषित होकर, भारत को भव्य बना दिया।।
आजीवन शिक्षक की राह, एक मात्र तमन्ना थी,
भारत माँ की सेवा करूँ, बस यही भावना थी।
पढ़ना और पढ़ाना जिनकी, एक मात्र कामना थी,
शिक्षक को सम्मान मिले, बस यही धारणा थी।।

व्याख्याता हिन्दी
रा.उ.मा.वि., महुआ
ब्लॉक मांडलगढ़, जिला भीलवाड़ा (राज.)
मो. 9413863435

मैं शिक्षक हूँ

❐ विजय भारती

मैं बुद्धि ज्ञान का संपोषक, विद्या की जोत जलाता हूँ।
नादानों में शंखनाद कर, मैं सुप्त विवेक जगाता हूँ।।

मैं वशिष्ठ हूँ, राघव को मर्यादा का मार्ग दिखाने वाला।
मैं सांदीपनि हूँ, नटखट कान्हा को योग सिखाने वाला।।

भारत के गौरव का प्रहरी, संस्कारों का प्रतिपोषक हूँ।
मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ, मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ।।

गुरुभक्ति का पाठ पढ़ाने वाला, मैं ही हूँ वो गुरु धौम्य।
जिसने आज्ञाकारी शिष्य दिया, जग को उपमन्यु सा सौम्य।।

ब्रह्म ज्ञान प्रदाता भाष्य रचेता, आदि गुरु शंकराचार्य।
अस्त्र-शस्त्रादिक विद्या का दाता, मैं ही गुरु द्रोणाचार्य।।

धनुर्धारी अर्जुन का सर्जक, एकलव्य का संश्लेषक हूँ।
मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ, मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ।।

मैं कौटिल्य जिसकी कुटिलता, से हार गया था घनानन्द।
तुलसी और कलीरा जिसके, शिष्य थे मैं वो रामानन्द।।

समर्थ गुरु ने शिवा को भक्ति-मुक्ति का सबक सिखाया।
वो रामदास रहे जिसने शिवाजी को छत्रपति बनाया।।

आशीष और नेह से सीचूं, मेरे शिष्यों का रक्षक हूँ।
मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ, मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ।।

गुरु-शिष्य रीत का प्रतिपादक, जिसने बड़ा गुरुकुल बनाया।
दस हजार शिष्यों को जिसमें, शौनक ने सस्नेह पढ़ाया।।

कैसे भूलोगे रामकृष्ण परमहंस के योगदान को।
जिसके एक शिष्य ने पुनः विश्व-गुरु बनाया हिन्दुस्तान को।।

हस्तकला का सूक्ष्म वीक्षक हूँ, सकल संसार का मोक्षक हूँ।
मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ, मैं शिक्षक हूँ... मैं शिक्षक हूँ।।

वरिष्ठ अध्यापक, महात्मा गाँधी रा. विद्यालय, बीबासर, झुन्झुनूं

पोषाहार की योजना

❐ सुनील कुमार राठौर

शिक्षा विभाग में चलती है, जो पोषाहार की योजना।
है ये योजना बड़ी निराली, इसकी कोई होड़ ना।।

जो ना समझे इसका धरातल, करते हैं भ्रामक प्रचार।
दूर आज भी बस्ती-ढाणी में, है बचपन कुपोषित लाचार।।

सब्जी, रोटी, चावल, दाल, खिचड़ी फल है बच्चे खाते।
संतुलित भोजन पाकर के वो, कुपोषण को है दूर भगातें।।

एक साथ में बैठकर, बालक जब है खाना खाते।
सामाजिक समरसता की, बड़ी अनूठी शिक्षा पाते।।

भोजन के ही लिए टाबरे, आ तो जाते विद्यालय।
शिक्षा की धारा से जुड़कर, हो जाते है शिक्षामय।।

अध्यापक, एल-1
रा.उ.मा.वि. माण्डवी, जिला-झालावाड़ (राज.)
मो. 9413241486

❐ पारस चन्द जैन

सुबह पाँच बजने के साथ ही शुरु हो जाता है इन्तजार
कब आएगा अखबार लेकर नाना तरह के समाचार,
दरवाजे पर आहट सुन सोचता हूँ आ गया अब अखबार
पता नहीं क्यों इस उम्र में समाचार पढ़ने का ऐसा इन्तजार
मिलते ही अखबार, देखता हूँ मोटे अक्षरों में शीर्षक समाचार
फिर पढ़ता हूँ ध्यान लगाकर, सभी मुख्य मुख्य समाचार
जो मन को भाते हैं समाचार, उन्हें पढ़ता हूँ बार-बार
राजनीति, लूट, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, दुर्घटना और बलात्कार
आतंकवाद और दुखदायी समाचारों की होती है भरमार
पर मेरा नहीं होता ऐसे समाचारों से कोई ज्यादा सरोकार
मेरी तो रहती है नजर, शिक्षा, साहित्य, खेल और मनोरंजन पर
देखता हूँ इन क्षैत्रों में कर, चमत्कार कौन बना है सिरमौर
किसने छुआ शिखर और किसकी प्रतिभा गयी है निखर
क्या करें खबरनवीस, जो देखते हैं उन्हीं का बनाते समाचार
पर रहता है इन्तज़ार, कभी तो गम से ज्यादा खुशी के आएगे समाचार
सुबह पाँच बजने के साथ ही शुरू हो जाता है इन्तजार
कब आएगा अखबार, लेकर नाना तरह के समाचार।

सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक शिक्षा, देवली
जिला-टोंक (राज.)-304804
मो. 9413603345

माँ

❐ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

माँ की मधुर वाणी कल्याणी
दिल से नहीं रखती दूरी
जीवन सुख निर्झर होता
माँ की यह कैसी मजबूरी।
अक्षत, नीर, पुष्प तन चढ़ते,
सौरभ सांसों में मुखरित होती है
भय से पांव पीछे नहीं हटते,
माँ तो केवल माँ होती है।
माँ की करुणा के संग-संग
सागर का गाम्भीर्य उमड़ता
श्वास तरुण ज्योतिर्मय होती,
साधक पाते सदा अमरता।
माँ की याद में बन जाते,
आंसू मोती मणियों की माला
माँ मैं नहीं जानता प्रभु को
जो हम सबका है रखवाला।
माँ की शाश्वत परछाई में,
स्नेह का उल्लास छिपा है
माँ होती स्वर्ग से महान्
युग-युग का इतिहास छिपा है।

पोस्ट-गिलूण्ड, तहसील-रेलमगरा,
जिला-राजसमंद (राज.)-313207
मो. 8003264828

हे बालाओं! जोश दिखाओ

❐ सुमन लता

हे बालाओं! जोश दिखाओ,
अपने अन्तरतल में ज्वाला भड़काओ।
समय करे अब यही पुकार,
शर्म हया को छोड़छाड़ के,
हे बालाओं! जोश दिखाओ,
झांसी की रानी बन जाओ।
कलम की ताकत है हथियार,
उससे पाकर अपने अधिकार।
पढ़ लिख अंधविश्वास की,
सब जंजीरे तोड़ती जाओ।
हार शृंगार को छोड़छाड़ के
हे बालाओं! जोश दिखाओ,
झांसी की रानी बन जाओ।
अब सीता के राम नहीं है,
द्रोपदी रक्षक श्याम नहीं है।
दुःशासन व रावण के अंश बचे है,
उनसे भी अब मत घबराओ।
भय-झिझक को छोड़छाड़ के,
हे बालाओं! जोश दिखाओ,
झांसी की रानी बन जाओ।
आँसू को मत व्यर्थ बहाओ,
जो जैसा है, उससे वैसी रीत निभाओ।
आँसू को अंगार बना लो,
जंग के डर से मत घबराओ।
रोना-धोना छोड़छाड़ के,
हे बालाओं! जोश दिखाओ,
झांसी की रानी बन जाओ।
आत्मरक्षा को सीख भी जाओ,
हाथों को तलवार बना लो।
तेजवार की धार को करलो,
अपने मन में शक्ति भर लो।
नाच-गान को छोड़छाड़ के,
हे बालाओं! जोश दिखाओ,
झांसी की रानी बन जाओ।
आँख उठाकर जो भी देखे,
राह में अपनी तुमको रोके,
गलत भाव से छूकर जाए,
उसको देखके मत घबराओ।
उसको तुम भी धूल चटाओ
चीख पुकार को छोड़छाड़ के,
हे बालाओं! जोश दिखाओ,
झांसी की रानी बन जाओ।

अध्यापिका लेवल-2
रा.उ.मा.वि. जरगा,
ब्लाक-खारपुरा, झालावाड़
मो. 9983012902

❐ सुनील तिवारी

अमृत उत्सव आजादी का,
मना रहा हर घर परिवार।
घर-घर फहरे शान तिरंगा,
गांव गली हर घर का द्वार।
अमृत उत्सव....
हंसते-हंसते चढ़ गए फांसी,
छोड़ बिलखते घर परिवार।
मंगल पाण्डें, भगत, राजगुरु
और बहुत से थे सरदार।
अमृत उत्सव....
कहीं पे भारत मां की जय जय,
कहीं शहीदों की जयकार।
पावन पुण्य मां वीर प्रसूता,
वन्दे मातरम् मंगलाचार।
अमृत उत्सव....
जब-जब परदेसी ने हम पर,
किए अनगिनत अत्याचार।
जागा इक इक सैनिक जागा,
जागा सफलों का हकदार।
अमृत उत्सव आजादी का...

अध्यापक, शहीद सांवला रा.उ.मा.वि., कानाखेड़ा (मसूदा), अजमेर

गुरु अमृत आगार

❐ केदार शर्मा 'निरीह'

गुरु पूनम के पूर्ण चन्द्रमा, पूरणता साकार,
पूजा पूर्णता पीड़ादायक, जीवन है निस्सार।
तपी धरा जब ज्येष्ठ माह में, तप्त हुआ हर पोर।
नभ का नभ में हिरदय पिघला छलकी अमृत कोर।
गुरु बरसे तब बदली बनकर, बरसे मूसलधार।
रीते कलश हुए सब पूरित, गुरु अमृत आगार।
सरसी सृष्टि हुई हरियाली, यह तप का परिणाम।
अरे मनुज ओ सुविधाभोगी, बनता दुख का धाम।
गुरु तरु का ले अवलम्बन, लिपटें लता समान।
हम निरीह गुरु मिले ही आसरा, राह कठिन अनजान।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. खरेडा, टोडारायसिंह, टौक (राज.)
मो. 9587615121

कुछ सौगात लिखूं

❐ पुष्पा शर्मा

बैठे-बैठे सोच रही हूँ, क्यों न दोस्तों की बात लिखूं
मुझे सहज भाव से दोस्त मिलें, आज वही सौगात लिखूं।

कठिन समय हो राह पथरीली मन व्याकुल कर जाती है
सुदूर बैठे मित्रों से चर्चा मन तृष्णा भी मिटाती है
मन करता है मित्रों से मैं उनकी एक मुलाकात लिखूं।

दोस्त जीवन में है सुखदायी देख मन खिल उठता है
मेरा मन खिल उठता है मन करता है लिख ही जाऊं
स्कूल दिनों की बात लिखूं मित्रों मेरे तुम्हारे जज़्बात लिखूं।

स्नेह सुगन्धित मित्र शृंखला, देख मन गदगद होता है
देख मन प्रमुदित होता है, मित्रों से मिल मन कहता है
बचपन वाले दिन-रात लिखूं, कोई मीठी सी तकरार लिखूं।

बैठे-बैठे सोच रही, क्यों न दोस्ती की बात लिखूं
मुझे सहज भाव से दोस्त मिले, आज वही सौगात लिखूं।

सापुन्दा रोड़, ज्योति कॉलोनी,
केकड़ी-305404 (अजमेर)

हारना नहीं, रुकना नहीं, रोना नहीं

❐ अदिति पुरोहित

हारना नहीं, रुकना नहीं, रोना नहीं
जल चलता है दरिया का, तो ही सानी है,
मुश्किल ना हो ऐसा जीवन मात्र नाकामी है,
पथ पर हों फूल तो मुरझाए भी।
कांटो का तो रकीब है साथ निभाना बरबस आएंगे ही,
आंसुओं से कभी अमृत पान नहीं होता,
रुख हवाओं का न हो संग,
तो पतवार और डट कर धर लो तुम,
क्योंकि प्रवास करने में कोई हानि नहीं,
संघर्ष पथ पर पग पग बढ़ा,
यूंही नहीं सूर्य भी शीर्ष पर चढ़ा,
पग पग बढ़ ही संसार को उजला किया उसने।
दिया, जुगनू, रात, हवा
बोलो किसने ना किया साहस
कौन रुका रहा?
यूं गर अर्जुन का तरकश करता,
गीता गीत कहो क्या सुनता?
हुकर भी हों खामोशी की
बस यूं ही बढ़ता चला कारवाँ,
हारता नहीं रुकना नहीं, रोना नहीं।

रा.उ.मा.वि. हवा मगरी सुखेर के पीछे,
उदयपुर (राज.)-313001 **मो. 9928388482**

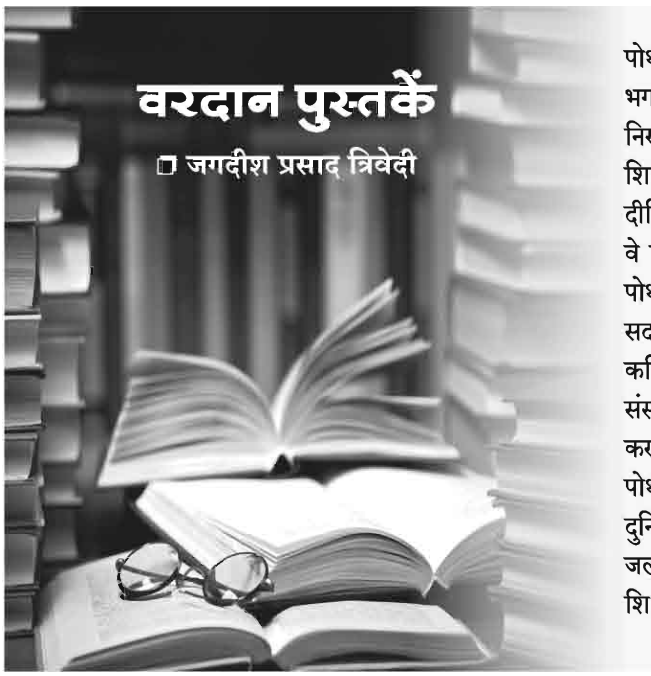

वरदान पुस्तकें

❐ जगदीश प्रसाद त्रिवेदी

पोथी, ग्रंथ, किताब, पुस्तकें।
भगवन् का गुणगान पुस्तकें।।
निरक्षर को बनाती शिक्षित।
शिक्षित को कर देती दीक्षित।।
दीक्षित को पारंगत करती,
वे विदुषी/विद्वान पुस्तकें।
पोथी, ग्रंथ, किताब पुस्तकें।।
सदा सुनाएँ कथा-कहानी।
कवियों की शैलीमय वाणी।।
संस्कृति के इतिहास विषय को,
करती ज्ञान प्रदान पुस्तकें।
पोथी, ग्रंथ, किताब पुस्तकें।।
दुनिया का भूगोल बताएँ।
जल, थल, नभ का भ्रमण कराएँ।।
शिक्षा दर्शन से बालक का,
करती हैं कल्याण, पुस्तकें।
पोथी, ग्रंथ, किताब पुस्तकें।।
भटके को सन्मार्ग दिखातीं।
उलझे तन-मन को सुलझाती।।
एकाकीपन दूर करें ये,
दुख में मित्र महान पुस्तकें।
पोथी, ग्रंथ, किताब पुस्तकें।।
हृदय में भरती नव उल्लास।
जगाती आशा और विश्वास।।
सुख-समृद्धि के द्वार खोलती,
जीवन में वरदान पुस्तकें।
पोथी, ग्रंथ, किताब पुस्तकें।।
भगवन् का गुणगान पुस्तकें।

पूर्व प्राध्यापक (हिन्दी)
2 ख-17, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
मो. 9928137069

पेड़ पर कुछ दोहे

❐ प्रज्ञा श्रीवास्तव प्रज्ञांजली

हरे पेड़ को काटकर, खुश होता इंसान
भूल गया है स्वार्थी, वृक्ष बचाते जान।
हरियाली कहाँ खो गई, कौन बताए राज
पूछ रही है बूंद भी, सिसक-सिसक कर आज।
रोग हजारों फैलते, समाधान तरु मान
औषधियाँ देकर हमें, तरु बचाते जान।
पनघट प्यासे हैं पेड़, सूख रहे हैं खेत
बच जाए पर्यावरण, रखो वृक्ष से हेत।
बावड़ियाँ, पोखर, कुएँ, हवा, जीव, इंसान
मिट जाएंगे ये सभी, रखा नहीं जो ध्यान।
डाल डाल पर फूल हो, शीतल मंद बयार
प्रकृति सुरक्षित हो तभी, करें पेड़ से प्यार।

बी-19 अक्षत कानोता स्टेट,
कानोता, जयपुर
मो. 7742926900

नव उमंग

❐ दिनेश कुमार

नूतन नव उमंग भरें,
आशाओं के दीप जले।
यह जीवन समर-भूमि सम,
हम नव रण में हुंकार भरें।
भला-बुरा वह बीत गया।
अब नई चेतना संचार करें।
श्रम साध्य है, कर्म आराध्य है,
हम पुरुष है तो, पुरुषार्थ करें।
निज स्वार्थ का भाग त्याग कर,
दीन-दुखी हित परमार्थ करें।
उज्ज्वल भविष्य की नई तस्वीरें,
विकसित हो राष्ट्र हर काज सरे।
मिलजुल कर हम रहे सभी,
एक दूजे में विश्वास भरें।

गाँव बासनी कवियान
तह.-रायपुर, जि. पाली
मो. 8209506201

रंगबिरंगी पतंगे

❐ रेणुका गाँधी

क्षितिज के आंचल पर मचलती
रंगबिरंगी पतंगे,
उड़ती हुई पेंच में उलझती
काट देती एक दूजे के धागे,
पवन के साथ गोते लगाती
एक दूजे से ऊँचा उड़ जाती,
भोर की किरण उगते।
जो चल उठता आसमां का सफर
सांझ ढ़लते-ढ़लते
फिर पतंगों को मिल जाता विराम
जीवन भी तो ऐसा ही है।
बचपन से जवान होता जीवन
जगत् के जंजालों से
उड़ता खेलता, अठखेलियाँ करता,
कब अस्तस्थल तक पहुँच जाता है
और सांझ की लालिमा में गुम हो जाता है।
ये पतंगे यही सिखलाती है,
जीवन की डोर कसके थामे रहो
और इच्छाओं को उड़ने दो,
कोई ख्वाहिश होगी पूरी तो
कोई रह जाएगी अधूरी,
बस चलने दो जिंदगी
और बटोर लो खुशियाँ
क्योंकि सांस तो जीवन में आनी ही है।

प्राध्यापक राजनीति विज्ञान
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय,
धरियावद, जिला प्रतापगढ़-313605

मेरे देश का भविष्य ये बच्चे

❐ वीणा वैष्णव रागिनी

अपने बच्चों से भी ज्यादा, प्यार में इनसे करती हूँ।
कल कमा कर देंगे वो, आज झोली इनसे भरती हूँ।
ज्ञान वो सारा इनको दो, जिससे भविष्य संवर जाए,
जब भी देखूं गलत कहीं, सच कहने से ना डरती हूँ।
मेरे देश का भविष्य ये बच्चे, जोश इनमें भरती हूँ।
आने वाले कल के लिए, मैं तैयार इनको करती हूँ।
नव सृजन करना सीखा, पथ आगे का प्रशस्त कर,
मात-पिता दोनों बनकर, मैं हर बाधा को हरती हूँ।
सुना लगता इन बिन विद्यालय, मैं इंतजार करती हूँ।
आसपास जब मेरे रहते, खुशियों से झोली भरती हूँ।
ज्वलंत विषय पर चिंतन कर, खेल-खेल में समझाती,
देश समाज हित खड़े रहो, यही भाव इनमें भरती हूँ।
शानो शौकत सब इनसे, यही बात हर मन भरती हूँ।
अपना फर्ज निभा लो तुम, यह कहने से ना डरती हूँ।
नींव को मजबूत बना के, भविष्य निर्माण करना तुम,
भारत देश महान बने, बस उन्ही गुणों को भरती हूँ।
शक्तिशाली यह हथियार, धारण सब करो कहती हूँ।
शिक्षा जीवन का आधार, नींव गहरी मैं भरती हूँ।
बुद्धि धैर्य विश्वास जगा, शिक्षक फर्ज निभाती वीणा,
सफलता का रहस्य बता, आज मैं आगाज़ करती हूँ।

अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
फरारा, जिला-राजसमंद (राज.)
मो. 9928640870

हिन्दी

❐ गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

(तांटक, ककुभ और लावणी छन्दों में)

मीठी मीठी भाषाओं से शोभित है, परिवेश सखे।
फिर भी बिना राष्ट्र भाषा के, लगता गूँगा देश सखे।।
बैठी हुई देववाणी की, ये सन्तानें सहोदरी।
भारतमाता के सुकण्ठ अलंकार, रस छन्द भरी।।
कन्नड़ कोंकणी कश्मीरी, उर्दू उडिया नेपाली।
मलयालम, मैथिली मणिपुरी, मधुर मराठी बंगाली।।
तमिल तेलुगू सिंधी हिन्दी, बोड़ो असमी गुजराती।
पंजाबी संथली डोगरी, अँगरेजी संस्कृत गाती।।
सदा दूसरी भाषा ने, हर भाषा का सम्मान रखा।
स्वतन्त्रता की समर भूमि में, स्वाभिमान का भान रखा।
कितना सुन्दर मेलजोल है, अनबल भरा स्वभाव नहीं।
संस्कृति की वाहिनी सरीखी, आपस में टकराव नहीं।
भाषाओं के मध्य सेतु सी, हिन्दी कनक कुमारी है।
इसीलिए सारी भाषाओं को, यह भाषा प्यारी।।
कारण दोषरहित उच्चारण, सनातनी सरला सरिता।
तकनीकी लिपि की अधुनातन, सर्वमान्य सरिता भरिता।।
सरल व्याकरण तरल आचरण, नित्य नवीन पुरानी है।
आज राजभाषाओं में अब, हिन्दी ही पटरानी है।।
पके दशहरी आम सरीखी, मीठी भाषा हिन्दी है।
शब्द शब्द में घुली माधुरी, जन अभिलाषा हिन्दी है।।
तुलसी सूर कबीर वृन्द भूषण, मीरा रसखानों की।
केशव पन्त निराला दिनकर, हरिश्चन्द दीवानों की।।
बच्चन सुमन महादेवी शिशु, अटल सुभद्र माखन की।
नीरज सरल विराट बालकवि गुप्त, प्राण आराधन की।।
भदावरी मैथिली बघेली, बुन्देली कुरमाली की।
भोजपुरी अवधी पैशाची, कन्नौजी बिलवाली की।।
खड़ी राँगड़ी पड़ी बाँगड़ी, मधुर मालवी निम्माड़ी।
गढ़वाली छत्तीसगढ़ी भीली, हाड़ौती मेवाड़ी।।
हरियाणवी कुमायूँनी ब्रज, मारवाड़ ढूँढ़ाड़ी की।
मेवाती खोरठा माल्टो, हिन्दी शान पहाड़ी की।।
यह सन्तान संस्कृत की है, यह पहचान हमारी है।
यही आत्म गौरव की आभा, युग की बान दुलारी है।।
गान हमारी शान हमारी, हिन्दी मान हमारी है।
रस की खान ठान जीवन की, मधु मुस्कान हमारी है।।
अब हिन्दी माता के माथे पर, चमकीली बिन्दी हो।
मिल कर करें राष्ट्र भाषा के, पद पर अपनी हिन्दी हो।।

'वृत्तायन'
957, स्कीम नं. 51, इन्दौर, पिन-452006 (म.प्र.)
मो. 9424044284

विदाई गीत

❐ ब्रजपाल सिंह

गुरु जी के समक्ष बच्चों की विनम्र प्रार्थना
हाथ जोड़कर विनती करते, सुन लो हमारे मन की बात।
भूल न जाना हमें गुरु जी, रखना दिल में हमारी याद।।
स्कूल में जब हम आए, लगता सब कुछ हमें वीरान
इतना प्यार दिया गुरुवर ने, नहीं रहा माँ-बाप का ध्यान
संगी साथी मिल गए, मिला गुरुजनों का साथ
भूल न जाना हमें गुरुजी, रखना दिल में हमारी याद
तूफानों सी मुश्किल आई, बन के हमारे जीवन में
माली बनकर बचा लिया, अपने पुष्प को उपवन में
जीवन पुष्प मुरझा जाता, नहीं मिलता जो ज्ञान का खाद
भूल न जाना हमें गुरुजी, रखना दिल में हमारी याद
मिली शिकायत जब हमारी, ना डांटा ना धमकाया
भविष्य की बातें कहकर के, प्यार से हमको समझाया
सृजन किया है कुंदन सा, नहीं मिले जीवन में मात
भूल न जाना हमें गुरुजी, रखना दिल में हमारी याद
हमसे कोई भूल हुई हो, क्षमा मांगते हम दिल से
भूलना गुरुवर भूल को, भुलाना दिल की महफिल से
श्री चरणों में देना शरण, करते आपसे हम फरियाद
भूल न जाना हमें गुरुजी, रखना दिल में हमारी याद
हाथ जोड़कर विनती करते, सुन लो हमारे मन की बात
भूल न जाना हमें गुरुजी, रखना दिल में हमारी याद।

व्याख्याता (हिन्दी सा.)
रा.उ.मा.वि. माल की टूस, ब्लॉक भीण्डर
तह. वल्लभनगर, जिला-उदयपुर (राज.) **मो. 9649702506**

मैं और मेरे ये मासूम विद्यार्थी

❐ संजय शर्मा 'तरूण'

लफ्ज़-लफ्ज़ कलम से संवारते हैं ये...
भीड़ में भी गुरुजी के नाम से ही पुकारते हैं ये...
इनको देखूं तो बचपन याद आ जाता है
बोर्ड पर फोटो मेरी उतारते हैं ये...
गुजरता हूँ जब भी इनके घर के करीब से,
दरवाजे की आड़ से निहारते हैं ये...
स्माईल से शुरू होकर कार्य पुस्तिका संभाल ली
कोरोना को अब क्विज से पछाड़ते है ये...
लफ्ज़-लफ्ज़ कलम से संवारते हैं ये...
भीड़ में भी गुरुजी के नाम से ही पुकारते हैं ये...

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. बराल (पिपराली) सीकर
मो. 9887275231

सच्चा साथी : पेड़

❐ महीपाल सिंह 'खरडिया'

काटो पेड़, बनाओ महल!
काटो पेड़, बसाओ शहर!
हे मनुज! अब कदम रोक,
क्यों मरने की तैयारी है,
जल-जंगल का विनाश तो
प्राणी-जीवन पर भारी है।
चाँद पर जाने को लालायित,
'मही' हरियाली को तरस रही,
प्राणवायु 'धरा' से है मिलनी,
न कहीं चाँद से बरस रही।
वायरस ने औकात बता दी,
कितना दम है मानव में!
श्वास तक सिलेन्डर से लेते,
क्यों? उफ़न रहे हो मन में।
बचना है तो पेड़ लगाओ,
संकेत दिया है प्रकृति ने,
वरना तैयारी महाप्रलय की
मानव तेरी प्रवृत्ति में।
'मही' को प्रदूषित करके,
कहाँ बचेगा प्राणी-जीवन।
प्लास्टिक पर जीवन न्यौछावर,
पागल हो गया मनुज-मन।
अभी समय है खुद को बचा लें
मधुर जीवन फिर से अपना लें।

व्याख्याता हिन्दी
रा.उ.मा.वि., जाखोद, झुंझुनूं
मो. 8875424450

सदा सुरक्षित रहे तुम्हारा जीवन

❐ सोहन लाल कुमावत

तुम्हारा जीवन है, राष्ट्र को अर्पण,
शौर्य-वीरता हैं, तुम्हारी पहचान
तुम्हारा साहस हैं, गगन से ऊँचा
लहराई है विजय पताका, तुमने पर्वत शिखरों पर
नापे है तुमने अंतिम छोर, सरहदों के कदमों से
छुई हैं गहराई तुमने, अथाह सागर की
लहरें भी नतमस्तक, तेरे होसलों के आगे
तुम्हारा जीवन हैं, राष्ट्र को अर्पण
शौर्य वीरता हैं, तुम्हारी पहचान
आँख मिचौली खेले तुम, मौत से हरदम-हरक्षण
हम सो सके नींद चैन की, तुम्हारी बदौलत
बाज सी नज़र तुम्हारी, दुश्मन पर हरदम-हरक्षण
मातृभूमि सुरक्षित रहे, सदा तुम्हारी बदौलत
तुम्हारा जीवन हैं, राष्ट्र को अर्पण
शौर्य वीरता हैं, तुम्हारी पहचान
तुम्हारा जीवन-पथ लगे, हमें कांटों जैसा
क्या शीत लहर हो, क्या हो तपती लू
क्या पतझड़ हो, क्या हो घनघौर वर्षा
क्या सूर्य से रोशन दिन हो,
क्या हो तारों भरी अंधियारी रातें
सदा अड़िग रह चट्टान से तुम,
हरदम-हरक्षण सरहदों पर
चलो हँसी-खुशी तुम, फूल समझ इस पथ पर
तुम्हारा जीवन हैं, राष्ट्र को अर्पण
शौर्य वीरता हैं, तुम्हारी पहचान
है आरजू हमारी
रहे सुरक्षित हर माँ का आंचल
रहे सदा सुरक्षित पिता का हम साया
ना रहे रक्षाबंधन अधूरा, किसी बहना का
है आरजू हमारी
रहे सुरक्षित हरदर्द-हमदोस्त, भाई का सहारा
रहे सदा सुरक्षित सिंदूर, तुम्हारे जीवन-साथी का
रहे सुरक्षित सदा बचपन सुनहरा, तेरे अंशों का
तुम्हारा जीवन हैं, राष्ट्र को अर्पण
शौर्य वीरता हैं, तुम्हारी पहचान
है पहचान सुरक्षित मातृभूमि की तुम्हारी बदौलत
है सुरक्षित पहचान हमारी तुम्हारी बदौलत
है आरजू हमारी
सदा सुरक्षित रहे, तुम्हारा जीवन।

व्याख्याता, राजनीति विज्ञान
रा.उ.मा.वि. देवली कलां नवां (नागौर) 341509
मो. 8058330187

बचपन

❐ प्रतिभा पारीक

बचपन के दिन भी क्या दिन थे,
नीदों में जगते थे, जगते में सो जाते थे,
पकड़े-पकड़े माँ का आँचल,
सपनों में परियों के खो जाते थे।।
जब बाँध, पाँव में मेरे डोरी,
माँ करती काम और गाती लोरी,
सप्तक तरंगित होता था,
नन्हा लड्डू (लड्डू गोपाल, श्रीकृष्ण) भी
मेरे संग आनन्दित होता था।।
नयनों की आतुरता से, माँ का आँचल
सरसा जाता,
तृप्ति मेरा हृदय, उसके आँचल में ही पाता था,
वात्सल्य के परम् मिलन से आह्लादित मैं हो
जाती थी,
क्या जानूँ माँ मेरी, या मैं माँ की बाहों में
होती थी।।

व्याख्याता-हिन्दी
श्री जसोदा देवी रेवा गुरनानी सिंधी उ.मा.विद्यालय,
फतेहटीबा, जयपुर
मो. 9588297870

मैं कला शिक्षिका हूँ

❐ हिमानी शर्मा

गम्भीरता से भरी, आत्मा विश्वास से भरी
मैं शाला की इक सुदृढ़ दीवार हूँ
कुछ सिखाने कुछ सीखने को तैयार हूँ
हर बच्चे की आँखो का मैं अक्स हूँ
कुछ सीखने की इच्छा भर दे मन में
वो शक्स हूँ
खड़ी हूँ रंग-ब्रश लिए शाला प्रांगण में
और घूम रहे मेरे सात रंगों के सतरंग से
दुनिया को सजाने में
मैं धुरी हूँ केन्द्र की और परिधी हूँ
ज्ञान के अधिकेन्द्र की
मैं नतमस्तक हूँ सरस्वती को
और सर्मपित हूँ भोले बचपन को
मैं विराट की सूक्ष्म में कल्पना करती हूँ
मैं साधारण सी इक कला शिक्षिका हूँ।

व्याख्याता
राजकीय शार्दुल उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटगेट
बीकानेर (राज.) **मो. 8949437080**

सरस्वती वंदना : विनती

❐ परम जीत कौर 'रीत'

ओ! माँ! वाणी विनती सुन लो,
द्वार तुम्हारे आए हैं
बुद्धि विवेक की याचना करने हाथ पसारे आए हैं
हे! करुणा की सागर मैया,
दया दृष्टि हम पर डालो,
ज्ञान भरी लहरों को पाने मूढ़ किनारे आए हैं
हर दुर्गुण से दूर रहें और सद्गुण हर इक अपनायें,
बस इतनी सी कामना लेकर लाल तुम्हारे आए है
सन्मार्ग पे चलते जाएँ डगमग न हों पाँव कभी,
ऊबड़-खाबड़ राहों पर बस तेरे सहारे आए हैं
दोष पराये ढूँढ़ के हँसना जंगली की है जीत ये माँ
तब चरणों की गंगा में तन-मन को पखारें आए हैं

रा.मा.वि. 44, सादुलशहर,
श्री गंगानगर (राज.)
मो. 9460395688

आओ नवनिर्माण करें...

❐ प्रेम प्रकाश शर्मा

शिक्षक भाई मिलकर सारे,
आओ नवनिर्माण करें।
राष्ट्रवाद के भाव से भरकर,
पीढ़ी एक तैयार करें।
मिट्टी से मूरत बने,
सेवाभाव के प्राण हो।
राष्ट्रपुरुष की रक्षा हेतु,
कर में एक कृपाण हो।
समर्पित भाव के गढ़ चढ़ने को,
सीढ़ी एक तैयार करें..
राष्ट्रवाद के....
सच्चे शिक्षक बनाने हेतु,
कर्तव्य मार्ग को नहीं भूलें।
अहर्निश कर्मशील बन,
लक्ष्य को निश्चित ही छू लें।
"शिक्षक" शब्द का भाव बता कर,
अपने धर्म को साकार करें....
राष्ट्रवाद के....

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रजवास,
जिला टोंक मो. 9828246920

जीवन एक पल है

❐ डॉ. लक्ष्मण सैनी 'सरल'

जीवन एक पल है।
सोच है, साथ है, आज है, कल है।
प्यार, मोहब्बत और दीवानगी बनी रहे,
यह ना हो तो जीवन, जीवन नहीं, दल-दल है।
जीवन एक नाव है।
उतार है, चढ़ाव है, शांत है, बहाव है।
मन मिले, दिल खिले, दो यह पतवार है,
यह ना हो तो जीवन, जीवन नहीं तनाव है।
जीवन एक घर है।
प्रेम है, लगाव है, डर है।
साथ बैठे साथ खाए, मन से पकाएं
यह ना हो तो, जीवन जीवन नहीं बे घर है।
जीवन एक पेड़ है।
डाली है, फल है, फूल है, नीड़ है।
तना आदर्श है आधार है, जीवन का तार है
यह ना हो तो जीवन, जीवन नहीं,
दो खेतों के बीच की एक मेंड़ है।
जीवन एक संगीत है।
राग है, धुन है, मन है, प्रीत है।
रिश्ता धुन है, बातें राग है, वाद्य मन है,
वह ना हो तो, जीवन, जीवन नहीं, एक रीत है।
जीवन एक संघर्ष है।
आशा है, अभिलाषा है, हर्ष है।
अविरल चलना, खोना पाना और चलना
यह ना हो तो जीवन, जीवन नहीं,
क्षण भर भी लगे वर्ष है।

वरिष्ठ अध्यापक अंग्रेजी
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
गुर्जरों की ढाणी, भोपालगढ़, जोधपुर
मो. 7597800929

मैं शिक्षक राष्ट्र निर्माता हूँ

❐ दीपसिंह भाटी 'दीप'

संस्कृति का मैं संवाहक, गुरु गौरव से गुंजित हूँ।
सदकर्मों से मैं सुशोभित, पुण्य पद से पूजित हूँ।
कर्मयोगी कुंभकार मैं, पचकर कुंभ पकाता हूँ।
मैं शिक्षक, राष्ट्र निर्माता हूँ....

मैं अथाह उदधि का मांझी, जल गहरे तक जाता हूँ।
सप्त तलों से खोज सीपी, लाखों मोती लाता हूँ।
माँ भारती के मुकुट में, जननायक रत्न जड़ाता हूँ।
मैं शिक्षक, राष्ट्र निर्माता हूँ....

तराशकर मैं अनघढ़ पत्थर, सुन्दर शिल्प सजाता हूँ।
प्रेम ज्ञान तप का प्रहार कर, देव स्थान दिलाता हूँ।
करती जिसकी दुनिया पूजा, ईश ओज उपजाता हूँ।
मैं शिक्षक, राष्ट्र निर्माता हूँ....

मन मानस का राजहंस मैं, नीर क्षीर का ज्ञाता हूँ।
बुरे भले का भेद बताकर, सम्यक ज्ञान सिखाता हूँ।
चाणक्य हूँ चन्द्रगुप्त सम, सक्षम शिष्य बनाता हूँ।
मैं शिक्षक, राष्ट्र निर्माता हूँ....

मांजकर मन की मलीनता, सौम्य भाव सिखलाता हूँ।
खोलकर अंदर के चक्षु, दिव्य रूप दिखलाता हूँ।
जीवन कुरुक्षेत्र के जंग में, गीता सार सुनाता हूँ।
मैं शिक्षक, राष्ट्र निर्माता हूँ....

पीयूष स्रोत से कर प्रक्षालित, जीवन सरस बनाता हूँ।
मानवता की मंदाकिनी से, मन का मैल धुलाता हूँ।
निश्छल आनंद का मैं निर्झर, स्नेह सुधा छलकाता हूँ।
मैं शिक्षक, राष्ट्र निर्माता हूँ....

शारदे माँ का मैं उपासक, वीणा की झंनकार हूँ।
त्रिदेव की मुझमें ताकत, गांडीव की टंकार हूँ।
'दीप' समर्पित हिन्द देश पर, तन मन जान लुटाता हूँ।
मैं शिक्षक, राष्ट्र निर्माता हूँ....

व्याख्याता
सणाऊ (चोहटन) बाड़मेर
मो. 9413307889

शिक्षक

❐ सपना खत्री

जीवन का पथप्रदर्शक बनता
कभी डांट से, कभी प्यार से
मां की जगह घर में,
स्कूल में शिक्षक वही प्रेरक बनता
कभी कहानी किस्से सुनाकर,
कभी ज्ञान रूपी सागर में डुबाकर,
जीवन का सही मार्गदर्शन करता।
कभी शांत चित्त मन,
कभी अधीर स्वभाव से,
सही राह दिखाता,
सुख की अनुभूति हर पल कराता।
जब बच्चा शिक्षक से भयमुक्त होकर,
अपनत्व सा व्यवहार करता,
वही बीज आगे चलकर,
बड़ा वृक्ष फलदार बनता।
बच्चों के संग बच्चा बनके देखो,
पढ़नी किताब जरूर है,
बस कभी,
बच्चों के मन को पढ़कर देखो,
वही शिक्षक सार्थक पद पाता है।
जो एक सरल प्रतिभा बन,
विद्यालय में आता है।
बिखरे से पड़े साज को
वो सही ताल में पिरोता है।
दृढ संकल्प होकर,
ज्ञान को हवाओं में,
एक आशा से बिखेरता है।
देश की दिशा बदलने को,
हर राह पे अग्रसर रहता है।
शिकायतों का पिटारा,
बच्चों की नादानियों का नजारा,
एक सरल प्रतिमा बन वह,
सब चुपचाप सहता है।
शिक्षक ही वो पगडण्डी है,
जिसपर चढ़कर,
बालक आगे बढ़ता है।

व्याख्याता (अर्थशास्त्र)
रा.उ.मा.वि., जनापुर, पिण्डवाडा, सिरोही
मो. 7568053543

प्लास्टिक पर रोक

❐ विजय कुमार

आजकल पॉलीथिन पर लगी हुई है, रोक कुरकुरे की पॉलीथिन चल रही, बेरोकटोक क्या अजीब लगा हुआ है सरकार को शौक आम आदमी के लिये पॉलीथिन पर है, रोक बाकी अन्य के लिये जारी है, पॉलीथिन थोक न बंद हुई, घी थैली, न बंद हुई नमकीन थैली न बंद हुई छाछ थैली, न बंद हुई नमक थैली हर पैकिंग की चीज चल रही हैं, बेरोकटोक सब्जी मंडी, छोटी दुकानों पर लगी है, रोक वाह रे, सरकार तुझे लगा दोगली नीति रोग जाने कब खत्म होगी, पक्षपात की सोच आजकल पॉलीथिन पर लगी हुई है, रोक अंधेरे से जला रहे, अमीर रोशनी के स्रोत जानते है, पॉलीथिन की खत्म न होती गोत्र सरकार से साखी करता है, निवेदन बहोत सबके लिये बनाये, एक जैसा नियम जोंक कंपनी, आम के लिये एक जैसा हो ढोल बल्कि में तो कहता हूं, पूरी तरह लगे रोक पॉलीथिन का विकल्प ले, सरकार खोज पराली, गन्ने भूसी से बनाये, थैलियां बहोत जो प्रकृति हितैषी, जल्दी नष्ट होती बहोत आओ खोजे, प्रकृति अनुकूल बनाये दोस्त पॉलीथिन पर लगा दे, पूर्णतः मन से रोक मोबाइल का गर उठा सकते 200 ग्राम बोझ तो कपड़े थैली में कौनसा है 1 किलो बोझ? गर आदते सुधार ले, हम लोग अपनी रोज कैसे न होगी, पॉलीथिन समस्या जमींदोज?

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बोरड़ा, कोटड़ी, भीलवाड़ा (राज.)
मो. 8387070462

शिक्षा की महिमा

❐ इंद्रा

विद्या धन उत्तम जगत में
जीवन सफल कर देती है,
सही गलत में भेद बताकर
चिंता को हर लेती है।
रंक से वो राजा बनाए
सुप्त को जाग्रत कर देती है,
अज्ञानी को ज्ञानी बनाकर
पल में हैरत कर देती है।
अंतरिक्ष की सैर कराकर
मन में अचरज भर देती है
छूना बहुत कठिन है जिनको
मुट्ठी में वो कैद सितारें कर देती है।
आठों प्रहर वो प्रकाश फैलाए
तम हृदय को हर लेती है,
दुःख की काली रात हो जब
सुख की सहर कर देती है।
थोथे को वो यूं उड़ाकर
सार इकट्ठा कर लेती है,
विद्या गुण उत्तम जगत में
जीवन सरल कर देती है।
सागर में जो इसके उतरे
आंचल मोती से भर देती है,
सहज रत्न वो सारे देकर
बेशकीमती कर देती है।
विद्या धार कटार सी
भय मुक्त मनुज को कर देती है
तर्क वितर्क कर भीतर उसके
साहस को भर देती है।
साथ व्यर्थ ना तुम गंवाना
पाहन को वो पारस कर देती है,
कडवा रस अनुभव का देकर
जीवन सरस कर देती है।
विद्या दीप सूर्य सा
शक्ति अनन्त भर देती है,
विद्या धन उत्तम जगत् में
जीवन सफल कर देती है।

अध्यापिका
श्रीमती राधा रा.उ.प्रा.वि.,
बीजवाड़िया तिवरी, जोधपुर
मो. 9680693930

मेरे भाग्य विधाता

❐ प्रेम लता सोलंकी

धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता,
इस माटी पर मुझे जन्म दिया,
राम-कृष्ण जैसे सपूत उपजे,
गंगा-यमुना तेरे चरण पखारे,
सरिताओं में तेरा प्रणय बहता,
धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता....
लक्ष्मी, गाँधी, तिलक, पटेल
तेरी गोदी में खेले खेल,
तेरा कण-कण गायें वीरों की गाथा,
धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता...
केला, तुलसी, पीपल पूजे जाते,
मीरा तुलसी, कबीर, भक्तिगान गाते,
कवियों का काव्य अमृत बरसता,
धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता...
देव देवी सब पूजे जाते,
ध्रुव, प्रहलाद, अघोरी, साधु, सन्तों से,
पग-पग पर तेरी तीर्थभूमि,
हे मातृभूमि! तू तपोमयी, तू सिद्धमयी,
भक्ति, शक्ति, प्रचंड ज्ञान बरसता,
धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता...
चंद्रमा की चंचल चाँदनी तुमको चमकाए,
शीतल मद समीर हरियाला आँचल लहराए,
नीलाम्बर तेरा परिधान, तारों का शृंगार कहलाए,
प्रभाकर नित उठ, तेरा अभिनन्दन करता,
धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता...
कृष्ण सुदामा सरीखे मित्र की परिभाषा यहाँ,
राम-लक्ष्मण सा सौहार्द की अभिलाषा यहाँ,
ध्रुव प्रहलाद भक्त सी भक्ति की भाषा यहाँ,
लक्ष्मी, राणा, भगत सी वीरों की गाथा,
धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता...
तू ही देती अन्न धन प्यार,
तू ही हमारी जीवनाधार,
नीला परिधान तारों का शृंगार तेरा,
हिमगिरि विराट हृदय तेरा,
विविधता में एकता तेरी शान बढ़ाता,
धन्य-धन्य मेरे भाग्य विधाता...

सेक्टर 501, 11 हिरन मगरी,
उदयपुर-313001

गुरु

❐ अनिता चौधरी

चाँद-सा व्यक्तित्व उज्ज्वल
ज्यूँ चाँदनी-सा नीर है।
समेटे हैं जैसे स्वयं में, धीर, गहन-गंभीर हैं।
असीम गुणों से युक्त है, सदा अहं-दर्प से दूर हैं।
बाधा समक्ष अटल, अडिग, पर्वत-सा दृढ़ स्वरूप है।
तमस-ताप जीवन का हरते हैं, अनुपम उर्मि-सी उर्ध्वगति है।
सत्कर्म, साधनारत रहते हैं, तप-त्याग की मूरत है।
अमि-संस्कारों का ज्ञान देते हैं, ज्ञानकोश अति विस्तृत है।
अविरल-गंगा शुचि-धार बहे, करते सृजन नित-नूतन हैं।
सही-गलत का भेद बताते, राह दिखाते भटकन में हैं।
गुरु का कोई नहीं विकल्प है, गुरु से सुखद सृष्टि सकल है।
रोम-रोम गुरु-वंदन है।
पल-प्रतिपल गुरु-वंदन है।

प्राध्यापक
राजकीय मोहता बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,
राजगढ़ (चूरू)-331023
मो. 7073047980

चाहती हूँ मैं

❐ जयश्री तिवारी

चाहती हूँ मैं
थक गई हूँ सुनते सुनते,
हो जाएगा सब-कुछ ठीक,
अब सब-कुछ ठीक-ठाक,
बदले से हालात चाहती हूँ मैं।
जीवन की तपती दुपहरी में,
सुकून की मीठी छांव तले,
अहसासों से भीगी-भीगी,
झीनी सुरमयी शाम चाहती हूँ मैं।
रिश्तों की इस भीड़-भाड़ में,
झूठ कपट के मैल को छोड़,
प्यार और विश्वास से गुम्फित,
इक रिश्ता खास चाहती हूँ मैं।
वक्त रूपी रेल से दौड़ते,
पीछे छूटते लम्हों में से,
अपने लिए भी कुछ लम्हें,
बेपरवाह से चाहती हूँ मैं।

रोज गार्डन, कानपुर
मो. 9838504232

बचपन की कलम

❐ पूरण मल तेली

कलम ने नाचकर इठलाते हुए
आनन्द के पल लिखने को कहा।
मैंने पूछा तू क्यों है इतनी इतराती
बचपन की बातें छापने को कहा।
बरामदे की ठण्डी हवा
थी अपनी खुशहाली में।
कौनसी शक्ति है तेरी
नीली, पीली स्याही काली में।
वास्ता स्याही का मिला
जब इठलाती कलम से।
उठ अब क्या इस उम्र में रखा
लिख दे बचपन का मुझे कलम से।
बैठ चुका जब बरामदे में
बचपन के दिन आए याद
वो बेर का खट्टापन और
तत् सम इमली का स्वाद
सोच गया पेड़ पर चढ़
उतरना हो गया मुश्किल।
दादा ने बताई अटकल जब
सब कुछ हो गया सरल।
मिला पचपन से बचपन जब
संयोग अजब अनोखा हुआ।
वातावरण में आनन्द के पल
परमानन्द बड़ा चोखा हुआ
यारो के संग बीता बचपन
तीखी-मीठी तकरारों में।
अब सब छोड़ गए हम
हो गई बाते इशारों में।
खाद के कट्टे से बनता बस्ता
भर जाती किताबें, पैदल जाते थे।
होती थी खूब गुरुजनों से कुटाई
जो हम याद नहीं कर पाते थे।
फिर भी सम्मान गुरु का इतना
कभी भी कम तिनका न होता था।
घर पर भी बड़ों की फटकार
दिल अन्दर ही अन्दर रोता था।
सतोलिया, मारदड़ी की सारी थकावट
माता का आंचल करता था दूर।
कलम ने मुझे बचपन को याद करा
किया मुझे रोने का मजबूर।

वरिष्ठ अध्यापक
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल,
भूपालसागर, **मो. 9460910799**

नो बैग डे

❐ ओम प्रकाश खटीक

चाहत है मेरी कि कविता लिखकर,
महादेवी वर्मा बन जाऊँ,
मगर कविता लिखने का
वह हुनर कहाँ से लाऊँ?
चाहत है मेरी कि स्वर कोकिला,
बन अपना संगीत सुनाऊँ
मगर संगीत के लिए वो,
सुर-ताल कहाँ से लाऊँ?
चाहत है मेरी कि क्रिकेट खेल
विराट कोहली बन जाऊँ
मगर क्रिकेट खेलने के लिए
वह टीम कहाँ से लाऊँ?
चाहत है मेरी कि एवरेस्ट पर
चढ़, बछेन्द्री पाल बन जाऊँ
मगर एवरेस्ट पर चढ़ने का
वह हौंसला कहाँ से लाऊँ?
चाहत है मेरी कि नृत्य की,
मनमोहक प्रस्तुति मैं दिखलाऊँ
मगर नृत्य के लिए वो,
मंच कहाँ से लाऊँ?
चाहत है मेरी कि मिसाइल मैन बन,
एक नई मिसाइल बनाऊँ
मगर मिसाइल के लिए वो,
तकनीक कहाँ से लाऊँ?
अवसर मिला है हम सब को आज
''नो बैग डे'' का हुआ आगाज़
विद्यालय में अब नए अवसर आएँगे
हम भी लता, बछेन्द्री, कलाम बन जाएँगे,
निखर कर आएगी प्रतिभा हमारी,
कुछ ऐसा इतिहास हम रचाएँगे।
सर्वांगीण विकास होगा हमारा,
तनावमुक्त वो शनिवार मिलेगा
खिल-खिलायेंगे, अब चेहरे हमारे
मन की बात को वो खुला मंच मिलेगा
दबी प्रतिभा को हम निखारेंगे
खेल-खेल में भी सीख जाएँगे
जो मुहिम चली है, शिक्षा विभाग की
'नो बैग डे' के आगाज़ की।
भरने दो हौसलों की उड़ान हमको
अब हमको उन्मुक्त गगन मिला है।
आज हर्षित हो गया हमारा मन
'नौ बैग डे' का सुअवसर मिला है।

वरिष्ठ-अध्यापक
रा.उ.मा.वि. चीरवा, उदयपुर
मो. 9413315096

बच्चों तुमको पढ़ना होगा

❐ प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी

जो तुम चाहो, मृदु फल देना,
उष्ण पवन को शीतल करना,
तो बनकर बीज बिखरना होगा।
धरती फोड़ निकलना होगा।।
चाहो अगर उजाला बनना,
तब जग को जीवनमय करना,
तो फिर सूरज बनना होगा।
नभ को चीर निकलना होगा।।
चाहो धरती हरित बनाना,
तृषित जनों की प्यास मिटाना,
तो फिर झरना बनना होगा।
पर्वत तोड़ निकलना होगा।।
कष्ट सभी के हरना चाहो,
जग को सुखमय करना चाहो,
तब सद् राहों पर बढ़ना होगा।
बच्चों तुमको पढ़ना होगा।।

नैमिषारण्य हुरडा रोड
गुलाब पुरा, भीलवाड़ा-311021
मो. 9950794643

उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों के नाम एक संदेश (मार्गदर्शन)

❐ अंशुल शर्मा

कहाँ है तुमको जाना, तुमको खुद को चुनना होगा....
एक राह कांटों भरी है, एक में आनंद अपार,
एक में सुख कुछ पलों का एक में सफल संसार।
एक है पथ मुश्किलों का एक विनाशकारी है,
तुम्हारे को भटकाने की राहें बहुत सारी है
एक पथ में कुछ पाने को जीवन का उत्कर्ष है,
एक पथ में क्षणिक आनंद, एक में संघर्ष है
दृढ़ प्रतिज्ञ हो तुम्हें स्वप्न कोई बुनना होगा।
कहाँ है, तुमको जाना, तुमको खुद को चुनना होगा...
लुभावनी राहों का अंत बड़ा ही घातक है
और आज के संघर्षों का भविष्य सुखदायक है।
आज जो जूझ गए तो कुछ हासिल कर जाओगे,
आज की ही मेहनत से कल खुद को काबिल पाओगे,
हो तमन्ना कुछ पाने की संघर्षों को चुनना होगा,
कहाँ है तुमको जाना तुमको खुद को चुनना होगा....
आज के लिए नहीं तुम कल के लिए पढ़ो,
भविष्य के खुशनुमा पल के लिए पढ़ो,
तुम यूं पढ़ो की कल की भोर बड़ी उजियारी हो,
तुम यूं पढ़ो की जिंदगी में जीत की तैयारी हो,
दृढ़ निश्चय और मेहनत से आगे तुम्हें बढ़ना होगा
कहाँ है तुमको जाना तुमको खुद को चुनना होगा...
अंतिम चार पंक्तियों में संदेश है तुम मानो तो
सार है, सफलता को जीवन में तुम जानो तो
हौसलों के पंखों को खोलो और उड़ान भरो
माँ बाप की उम्मीदों-अरमानों को पूरा करो
उत्साह करो, हृदय में जोश से बढ़ते रहो,
उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक लड़ते रहो।
उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक लड़ते रहो....

व्याख्याता संस्कृत
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
महुआ, जिला-भीलवाड़ा
मो. 9680007586

यह बच्चें है अभी...

❐ अजय कृष्ण कुलश्रेष्ठ

ये बच्चे हैं, अभी कहाँ रस्मों रिवाज़ जानते हैं।
पंछी उन्मुक्त गगन के, कहाँ परवाज़ जानते हैं
इनकी अठखेलियाँ, हिरणों सी कुलांचें,
मन चंचल है,
दिखते ये भोले, लगते शैतान,
किंतु मन निश्छल है।।
फैलाते हैं जब भी ये 'पर'
अपने तो गगन नापते हैं।।
ये बच्चे है अभी .....
होकर परेशां जब भी मैं इन्हें रुला देता हूँ,
देख मासूम सी सूरत अपने गम भुला देता हूँ,
ज्यादा बंदिशें नहीं मंजूर,
अपनी ही धुन में मगरुर
घुटन भरे अहसासों में, ये अनचाहे करते कुसूर
आ जाएं अपनी सी पर,
फिर कहाँ किसी की मानते हैं।
ये बच्चे हैं अभी....
शिक्षक हो तुम अगर इन्हें सही राह दिखाओं
माँ-बाप बन सीख जीने की, कला सिखाओ
फिर देखना एक दिन ये ढेरों मेडल ले आएंगे
दुनियां की प्रतिस्पर्धा में फिर परचम लहराएंगे,
दिखते है भोले-भाले पर सब कुछ ये जानते हैं
ये बच्चे हैं अभी....
मासूम से ये बच्चे हैं, अक़्ल के थोड़े कच्चे हैं
छल-कपट से दूर सदा, किंतु मन के सच्चे हैं,
मन के हैं ये अल्हड़ घोड़े,
जितना चाहो उतना दौड़ें
ये पथिक अनजान डगर के
ज़रूरी इन्हें संयम के कोड़े
जामवंती दृष्टि से सागर बाधाओं के लांघते हैं।
ये बच्चे हैं अभी....
बजरंगी शक्ति से ये घोलागिरी भी तानते हैं,
ले आते संजीवन बूटी जब भी,
मन में ठानते हैं,
ये बच्चे हैं अभी कहाँ रस्मों रिवाज़ जानते हैं।
पंछी हैं उन्मुक्त गगन के, कहाँ
परवाज़ जानते हैं।।

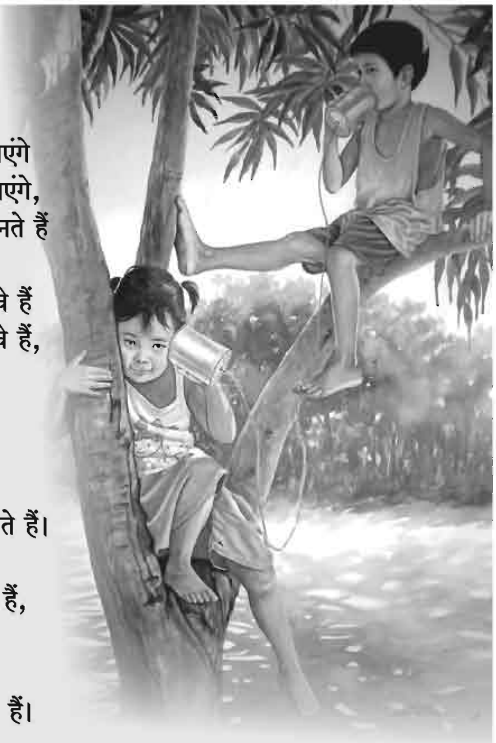

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. सूरजपुरा (जवाजा)
अजमेर, (राज.)

सात लघु कविताएँ

❐ सीताराम व्यास 'राहगीर'

(1)
बाहर से
मत झांको
भीतर झांक
के देखो
कितना सुन्दर
तन तुम्हारा

(2)
खुल कर
हँसो फूलों
की तरह
ताकि नफरतें
हँसी में
धुल जाए

(3)
तुम
कहीं भी
छुप जाओ
वो ढूँढ़ लेंगी
तुम्हें
उसके पास
तुम्हारी पहचान
जो है

(4)
मिल गया होगा
सवालों का जवाब
जुबां से पहले
वो कौन
जो सब कुछ
बता गया तुम्हे

(5)
एकलव्य बन
निशाना साधो तुम
देर ना करो
परीक्षा सामने
खड़ी है
निराश मत
होना

(6)
सूख गई
ऊपरी सतह उसकी
मगर
जिंदा है भीतरी मन
गीलापन
दलदल युक्त
कच्छरन की तरह
फैला हुआ
अब तलक

(7)
एक ना सुनी
अपने में रह गई
छुपी जो सीखा
स्कूलों में
पढ़ते हुए हमने
यही जीवन का
अनुशासन है

संतोष कुंज', 71, हरिओम नगर, जोधपुर (राज.) 342008
मो. 9413621407

❐ सन्जू शृंगी

अवगुणों का कर विनाश
ज्ञान का प्रकाश दिया
सपनों की इस जमीन को
एक नाम आकाश दिया
सफलता का मार्ग बताया
कदमों का विश्वास दिया
कच्ची मिट्टी से कोमल थे
मजबूती का आभास दिया
तुम्ही हो मूर्तिकार शिक्षक
जिसने हमें तराश दिया।

अध्यापिका
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
रोझाना, झालावाड़, राजस्थान
मो. 9509821427

मेरे शिक्षक

❐ हर्षित पारीक

दुनियां को भाग्य विधाता,
म्हारा जीवन को रक्षक
खुद न जल्लार, प्रकाश फैलाता,
भगवान समान म्हारो शिक्षक।
ABCD,1 2 3, क ख ग म्हानें पढ़ायो,
ज्ञान दे दे कर म्हाने आगे बढ़ायों,
म्हारा जीवन की राह सरल बणावै,
गुरु ज्ञान को प्रकाश फैलावै,
मनै जग में सम्मान दिलावै
माँ बणकर म्हानें पाल्लयो,
पिता बणकर म्हाने डाँट्यो,
खुद रा जीवण को अनुभव सुणायो,
लालच कोन्या बीकै मन मं,
कर्त्तव्य खुद को निभायो,
आप रह्यो झोंपड़ी मं,
म्हाने महलां मं पहुँचायो
म्हारा गुरु को मान रहवै
जग मं बीको नाम रहवै।

म्हात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
ग्राम बैनाड, जयपुर-302012
मो. 9887750420

मायड़ भाषा है बहुमूल्य

❐ शालू मिश्रा

हाव-भाव संवाद की रचना
जन-जन की अपनी है भाषा
सतरंगी परिधान का सपना
आपसी समन्वय की परिभाषा।
मायड़ भाषा कभी न भूलो।
इस के अनुभव से तुम अंतर्मन को छू लो।
शब्दों का पाठ पढ़ा कर के समझ को
विकसित करती है बोली
भाषा के ही मूल संस्कार बसे है
अर्थ गुण से भर देती खुशियों की झोली।
मायड़.....
इसके.....
दादी की कहानी व मां की लोरी में
शब्द अर्थ की साम्यता ये बैठाती है,
चले बालपन से जीवन के हर मुकाम तक
गंभीर रहस्य का मर्म भी ये समझाती है।
मायड़.....
इसके....
प्रथम भाषा की कलरव से झलके
श्रेष्ठ संप्रेषण सुधा-सी धारा,
कहने सुनने में गुणकारी ये तो
सत्य साधक सी यूँ करे गुजारा।
मायड़.....
इसके.....
सलीके से सृष्टि से मिलवा कर
मासूम लबों की मुस्कान बन जाती है,
लयबद्ध रसपूर्ण वेग ले करके
परिवेश की अमिट पहचान करा जाती है।
मायड़....
इसके....
बेशक बहुभाषी बन जाओ तुम
चीजें कपड़े आदि बदलना बन गया
जीवन का किस्सा,
कैसा संकोच हमारी उत्थान वाक् शैली में
क्योंकि पुरातन नींव में आज भी है
हमारा हिस्सा।
मायड़....
इसके.....
परिभाषा को तुम अपना करके
जेंटलमैन बन मूक अभिनय कर जाते हो,
ग्रहणशील निज भाषा स्वपरिवार को भूल
हेलो हाय शब्दों के गीत गुनगुनाते हो।
मायड़....
इसके.....
वतन की सौंधी मिट्टी की खुशबू
सकल विरासत में भी समभाव दर्शाती है,
फिर भी आधुनिकता की होड़ में
बहुमूल्य भाषा लुप्त होती जाती है।
मायड़....
इसके....

वार्ड नं. 12, रेलवे स्टेशन रोड,
नोहर, हनुमानगढ़-335523
मो. 9024370954

मेरे बच्चे

❐ मकसूदन बानो

ये बच्चे बच्चे नहीं, मेरे विद्यालय के फूल है।
मासूम से फ़रिश्ते मुझे इनकी शैतानियाँ कबूल है।
ये बच्चे बच्चे नहीं, मेरे विद्यालय के फूल है।
मन साफ इनके पाक बस इतना ही इनका उसूल है।
ये बच्चे बच्चे नहीं, मेरे विद्यालय के फूल है।
बैठे-बैठे पहुँच जायेंगे चाँद पर और कहेंगे वहाँ बहुत धूल है।
ये बच्चे बच्चे नहीं, मेरे विद्यालय के फूल है।
आई हुई परेशानियों को मिला देते है।
कुछ बात में सहमते, तो कुछ में मुस्करा देते है।
सारी मोहब्बत की दास्तायें इनकी मुस्कुराहट के आगे फिज़ूल है।
ये बच्चे बच्चे नहीं, मेरे विद्यालय के फूल है।
रंगीन तितलियां पानी के बुलबुलें छोटे चुटकुले
ये इनकी खुशियों के टूल है।
ये बच्चे बच्चे नहीं, मेरे विद्यालय के फूल है।

व्याख्याता (इतिहास)
रा.उ.मा. विद्यालय आकरो की ढाणी,
(ओसियां) जोधपुर **मो. 8107078600**

भाषा हिन्दी

❐ संजय कुमार

यों भारत के भाल पर, तिलक हैं भाषा हिन्दी।
माथे ऊपर लगती प्यारी, ज्यों नारी के बिन्दी।।
यों भारत के भाल पर है तिलक हैं भाषा हिन्दी।
हरिगीतिका, छन्द, सौरठा, चौपाई, कुंडलियां।
कवित्त, सवैया, दोहा, रोला, छप्पय और मुकरियां।।
संत, सुजानों, कवियों के, नवरस की गागर हिन्दी।
यों भारत के भाल पर, तिलक हैं भाषा हिन्दी।।
देवनागरी लिपि, संस्कृत-जन्मदात्री भाषा।
ब्रज, अवधी, मगधी, मैथिली ये हमजोली भाषा।।
देशी, विदेशी शब्दों को भी है, अपनाती हिन्दी।
यों भारत के भाल पर, तिलक है भाषा हिन्दी।।
गंग, चंद, नरसी, खुसरो, रसखान व मीराबाई।
तुलसी, सूर, कबीर, संत, रैदास ने अलख जगाई।।
भारतेन्दु और पंत, निराला, प्रेमचन्द ने लिख दी।
यों भारत के भाल पर, तिलक हैं भाषा हिन्दी।।
वर्ण, शब्द अरु अर्थ, वाक्य, उपसर्ग, समास व सन्धि।
काव्य दोष-गुण, कारक, प्रत्यय, शब्दशक्ति, तुकबंदी।।
व्यावहारिक व्याकरण की सारी, खूबियां इसमें भर दी।
यों भारत के भाल पर, तिलक है भाषा हिन्दी।।
गीत, ग़ज़ल, नाटक, एकांकी और निबंध, कथाएं।
आलेख, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण, आत्मकथाएं।
''संजय'' तेरा ऋणी रहेगा, मातृभाषा, है! हिन्दी।
यों भारत के भाल पर, तिलक है भाषा हिन्दी।।

वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देवलीकलां
खैराबाद, कोटा-326518 **मो. 9929326101**

प्रेरणा गीत

❐ प्रतिज्ञा भट्ट

विश्वासों के दम पर जिसने पहला कदम बढ़ाया है,
उसने तम-नैराश्य लाँघ, वांछित मंज़िल को पाया है।
संकल्पों की धार लिए तूफ़ां से जो टकराया है,
वो अतीत के पन्नों की स्वर्णिम शोभा बन पाया है।।

हों कितने, भीषण विपदाएँ, प्रलय, प्रभंजन-अभिमानी,
लक्ष्य धरा-सा अविचल हो, गैर अम्बर पाने की ठानी।
कश्ती जब मझधार फंसी हो लहरों से डरना कैसा?
हिम्मत के आगे चल पाई कब सागर की मनमानी।।
मारुतिनंदन के आगे विस्तृत अर्णव घबराया है,
सुरसा के मुख जैसी बाधाओं ने पार न पाया है।।1।।

चट्टानों से लड़ने को, फौलाद हृदय करना होगा।
दिवास्वप्न पूरा करने मन राग अभय करना होगा।
हों मंशा कि नभ प्रांगण में, तारक या दिनमान रहें,
कर्मों की लेकर मशाल अँधियार-विजय करना होगा।।
संघर्षों की गाथाओं को जिसने अविरल गाया है,
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर, उसने परचम फहराया है।।1।।

साक्षी है इतिहास कि जब-जब भी मानव ने ठान लिया,
चाँद-धरा को चूम लिया, अम्बर को सानी मान लिया।
नदियों के मुख को भी मोड़ा पवनों का रुख बदला है,
साध लिए सारे असाध्य, निज क्षमता को पहचान लिया।।
विज्ञानी ताकत ने जब कदमों में शीश झुकाया है,
तब मानव हो, कर्मनियन्ता, विश्वजीत कहलाया है।।3।।

रा.उ.प्रा.वि. डूंगरफला, जिला-डूंगपुर
मो. 9680546089

जिसने हार नहीं मानी..

❐ डॉ. रन्जु कंवर

छोटी चींटी दाने-दाने से,
ऊँचा ढेर बनाती है
खुद से ज्यादा बोझ उठाकर,
सरपट दौड़ लगाती है
किंचित भयभीत नहीं राहों से,
उसकी धन्य जवानी
जिसने हार नहीं मानी.....
किसका जीवन बहुत सरल है,
किसको नहीं मुश्किल आयी
जिसने भी आगे बढ़कर के
नई राहें अपनाई
पर जिसका प्रयास रुका ना
उसकी दुनियां दिवानी
जिसने हार नहीं मानी....
एक अकेले बढ़कर जिसने,
पर्वत को भी तोड़ दिया
अपनी छाती की मेड़ों से
जिसने सागर मोड़ दिया
कालचक्र के ललित पटल पर,
लिख दी अमर कहानी.....
जिसने हार नहीं मानी.....
जिसने रातों के अंधकार में
मेहनत का दीप जलाया है,
हाथ कटे होने पर भी,
हिम्मत का हाथ बढ़ाया है
उनके आगे शीष झुकाती
हर भांत की परेशानी।।

गाँव खटुन्दरा, तहसील-खण्डेला,
जिला-सीकर राज.
मो. 8949369906

सृष्टि नव निर्माण

❐ विनीता स्वामी

माली बनकर अपनी 'प्रज्ञा' से
नव रसों से
नन्हें पौधों को सिंचित करे
कभी लाड़ से कभी प्यार से
नित शृंगार नूतन करें
पल्लवित होता देख इन्हें
मन्द-मन्द मुस्कान भरे
चन्द्र गगन को छूकर
जग में अपना नाम करे
नव रसों से
श्रेय नहीं मेरा कुछ इसमें
मेरे कर्मों का कुछ प्रेय बने
इस धरा के पावन आँगन में
सुन्दरता बनकर सृष्टि नव निर्माण करें।
माली बनकर अपनी 'प्रज्ञा' से
नव रगों से...

अध्यापक
रा.उ.मा.वि. साँवरार, लाडनू, नगौर (राज.)
मो. 9785774739

गुरु महिमा

❐ सुनील कुमार वर्मा

धन्य-धन्य उस सतगुरु को,
जिसने जीवन राह दिखाई।
पारस गुरु मिला जिस शिष्य को,
उसने ही स्वर्ण-सी कीमत पाई।
कठिन हुआ है जीना जिसको,
अगर गुरु दीक्षा नहीं पाई।
श्रद्धा भाव से देख गुरु को,
प्राप्त करेगा पूर्ण सिद्धियों को।
श्रद्धा से ही अर्जुन बनेगा,
धूल चटाएगा दुर्योधन को।
धारण कर ले गुर्वादेश को,
फहराएगा विजय पताका को।
विश्व झुकेगा चरणों में तेरे,
पूजेगा गुरु चरणों को रोज सवेरे।
फिर साकार कर दे गुरुभक्त आरुणी को,
मिटा कर इस अज्ञान की बाढ़ को।
मिट ना पाए नाम एकलव्य का,
बढ़ा दे सम्मान अपने गुरु का।
दुविधा में होगा अर्जुन-सा तेरा मन,
कृष्ण बनकर गुरु ही लेगा तेरा संग।
जीवन के कुरुक्षेत्र में धैर्य होगा नौ-दो ग्यारा,
तब गुरु बनेगा तेरे जीवन-रथ का सहारा।।

जेनपुरवास, तह. बहरोड़, अलवर
मो. 9413241486

अहसास बेटियों का

❐ जगदीश कल्ला

अहसास बेटियों का गंगा की धार है।
समझदार हैं, जो करते इनसे प्यार है।
होगी जो घर में बेटी तो संस्कार आएंगे,
लक्ष्मी के साथ स्वयं संस्कार पाएंगे,
ये मुस्कुराएंगी तो सपने साकार हैं।
बेटी-बहन भी है, पत्नी और माँ भी है।
नौ देवियों-सा पूजता सारा जहाँ भी है।
इन बेटियों का स्नेह तो मुक्ति का द्वार है।
गर होती न ये बेटी, तो तुम भी न होते
इसके बिना तो तुम पिता कैसे बनते
तुम हो मकान तो ये उसका आधार है।
तेरी खुशी में खुश है तेरे दुख में दुखी
तुझको खिलाएं पेटभर चाहे रहे भूखी
जो-जो सम्मान दे वही समझदार है।
मत मारिए, ना कोसिए इन्हें प्यार दीजिए
'जगदीश' कहे मन की बदलाव कीजिए
बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ,
का यही सार है।

वरिष्ठ सहायक
ऑडिट आई.सी.पी. अनुभाग, निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

अलार्म घड़ी

❐ दिनेश विजयवर्गीय

स्टडी रुम में
लंबे समय से बंद पड़ी है
अलार्म घड़ी
कई घड़ी साज को दिखलाया
ठीक नहीं कर पाए वे इसे
मिलते नहीं पार्ट्स
मेड इन जर्मनी की घड़ी के
पर मैंने अब भी रख रखा है
सहेज कर इसे
वर्षों से जुड़ाव बना हुआ है
मेरा इस
आकर्षक रंग-डायल वाली घंड़ी से
इसी की चलती सूइयों के सही समय ने
पल-पल बांधकर
मुझे दिशा दी है
किस विषय को कितना समय पढ़ना है
यह घड़ी ही देती थी जानकारी
सर्दी में भी हर दिन सुबह पाँच बजे
उठा देती थी अपने अलार्म से
साठ वर्ष पहले मैट्रिक की पढ़ाई में
खरीदा था इसे तीस रुपये में
मैट्रिक से एम.ए. तक की पढ़ाई भी
इसी घड़ी के विश्वास पर
समय विभाजन अनुसार करता रहा
आज इसके बंद हुए लंबे समय बाद भी
मैंने इसे स्टडी रूम में
सहेज कर रखा हुआ है
अपनी साहित्य की किताबों के बीच
मेरी सफलता में
बहुत बड़ा योगदान रहा है इस अलार्म घड़ी का
अपने बंद स्वरूप से यह आज भी
चुप-चुप बहुत कुछ
समय अनुसार कार्य करने की
देती रहती है प्रेरणा
मैं शुक्र गुजार हूँ इस घड़ी का
जिसने मेरे जीवन को
अनुशासित कर
सफलता की राह पर
आगे बढ़ा दिया।

215, मार्ग-4, रजत कॉलोनी, बून्दी-323001
मो. 9413128514

सबके दिल में शिक्षक

❐ बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'

ज्ञान की ज्योति जलाते हैं
सबके मन में शिक्षक
ज्ञान की अलख जगाते हैं
सबके दिल में शिक्षक।
रोज हमें पढ़ाते हैं
स्कूल में आ कर शिक्षक
मेरा ज्ञान बढ़ाते हैं
मेरे प्यारे शिक्षक।
हर स्कूल की शोभा
रोज बढ़ाते मेरे शिक्षक
बच्चों को रोज पढ़ाते है
मेरे प्यारे शिक्षक।
अनपढ़ता दूर भगाते हैं
देखो सारे शिक्षक
टीचर डी एम डाक्टर वैज्ञानिक
बनाते हमें है शिक्षक।
हर साल हम मनाते हैं
स्कूल में शिक्षक दिवस
शिक्षकों का सम्मान बढ़ाने
आता है शिक्षक दिवस।
आज हम अपने गुरु का
वंदन अभिनंदन करें
आज है शिक्षक दिवस
शिक्षकों की इज्जत करें।

अध्यक्ष स्वर्गीय मीनु रेडियो श्रोता क्लब
गल्ला मंडी गोल बाजार, गोरखपुर-373408
मो. 9838911836

मैं तो हूँ भारत की बेटी

❐ राजेश कुमार जीनगर

मैं तो हूँ भारत की बेटी,
भारत मेरी शान है,
इस माटी का हर एक-एक कण
मेरे लिए भगवान है,
इसकी सेवा के लिए मैं
पन्ना का व्रत मान बनी,,,
इसकी पूजा के लिए में
जौहर का शृंगार बनी,,,
इस पावन माटी पर अर्पित
मेरा तन, मन, प्राण है,,,,,
इस माटी का हर एक एक कण
मेरे लिए भगवान है,,,,,
वीर शिवा की जननी में हूँ,
हूँ जननी प्रताप की,,,
राम पले गोदी में मेरी,
कृष्ण से अवतार भी,,,
इस पावन थाती के कारण
मेरा हुआ सम्मान है,,,,
इस माटी का हर एक एक कण
मेरे लिए भगवान है,,,
मैं ही वागीश, मैं ही कमला,
में ही मात भवानी हूँ,,,
मैं तो हूँ भारत की बेटी,
इसकी एक कहानी हूँ,,,
बने राष्ट्र यह शिक्षित विकसित,
यह मेरा अरमान है,,,
इस माटी का हर एक एक कण
मेरे लिए भगवान है,,,
मैं तो हूँ भारत की बेटी,
भारत मेरी शान है,,,
इस माटी का हर एक एक कण
मेरे लिए भगवान है,,,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भादू,
माण्डल, भीलवाड़ा (राज.)
मो. 9929352444

आती रहना बिटिया

❐ कविता मुकेश 'स्वरांगन'

अजनबी मुल्क से
अनजान देश में
बहुत दूर से आई थी वह
पर बोलती थी खुलकर बेखटक बिंदास
आवाज निकलती थी सीधे गले से
और उतरती थी सीधे कानों में
साफ-सुथरी बहती नदी की तरह
नहीं रुकती थी अटकती थी कहीं भी
जैसा सोचती थी बोलती थी लगातार
जानती थी समय कम है
कहनी ही है बात अपनी
उसके बाद हंसती भी थी
दिल खोलकर
मेरे देश की लड़कियां
अपने ही देश शहर मोहल्ले
यहाँ। तक कि अपने घर में भी
नहीं बोल पाती है
हंस पाती है उस तरह
कई पड़ाव करने होते हैं पार
उसकी आवाज को
पहले गले से मुँह तक आती है
फिर कुछ सोचकर
शब्द गटक जाती है वापस
फिर अटक-अटक कर
टूट-टूट कर बिखर-बिखर कर
निकलता है धीमे-धीमे कोई स्वर
जो किसी को समझ नहीं आता
सुनती आई है वह बचपन से ही
नहीं बोलना ओर हंसना है ज्यादा
बिटिया तुम तो आती ही रहना
बार-बार हमारे देश
इन्हें भी सिखाओ
कुछ बोलना चहकना
इन्हें भी बताओ
बोल कर हंस कर ही
जी सकती हो तुम खुलकर।

ए ब्लॉक 38 डी, करणी नगर, पवनपुरी,
बीकानेर नर्सिंग होम के पास, बीकानेर-334003
मो. 8851222242

हम बालक नादान

❐ बुद्धि प्रकाश महावर 'मन'

हम बालक नादान मैया, तेरी शरण में आए हैं।
दे दो हमको ज्ञान जरा सा, तुझे रिझाने आए हैं।
तू करुणा स्वरूपिनी माँ, तू ही ज्ञान की दाता है।
छोड़ कहाँ हम जाएं तुझको, तू ही हमारी माता है।
रिश्ता है, ये पावन अपना, तुझे बताने आए हैं।
ना कोई मंजिल हमारी, ना राहों का है पता।
तेरे चरणों में हम आए, तू ही हमको राह बता।
भूले भटके ना कभी हम, तुझे मनाने आए हैं।
हम अज्ञानी बालक तेरे, ज्ञान हमें कुछ ना रहा।
स्वर शब्दों को कैसे सीखे, अँधियारा भी छा रहा।
मन मंदिर में ज्योति जलाने, तेरे द्वारे आए हैं।
मात-पिता गुरुदेव का हम, जीवन भर सम्मान करें।
देश की रक्षा करे सदा हम, मन में नव उत्थान भरें।
ऐसा दो वरदान 'मन' को, हाथ पसारे आए हैं।
हम बालक नादान मैया, तेरी शरण में आए हैं।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय खोहरा कलां,
ब्लॉक जिला दौसा
मो. 9929675140

सरस्वती वंदना

❐ डॉ. अंजलि राकेश पंड्या

विश्व मोहिनी तेरी आराधना करती हूँ मैं,
ज्ञान रस बरसा दे तेरी अर्चना करती हूँ मैं।
भावना भर शुद्ध मुझमें दिव्य वचन और कर्म दे,
मंत्र-मुग्ध होकर जियूँ मैं ऐसा ही तू धर्म दे,
हंस वाहिनी तेरी ही कल्पना ही करती हूँ मैं,
ज्ञान रस बरसा दे तेरी अर्चना करती हूं मैं।
शब्द-शब्द में छंद-रस से जिव्हा का शृंगार हो,
अज्ञानी की ज्ञान सेतु कलम में नवधार हो,
कलास्वामिनी तेरी ही सर्जना करती हूँ मैं,
ज्ञान रस बरसा दे तेरी अर्चना करती हूँ मैं।
जग में फिर देखूं कभी न मैं किसी को हीन जान,
पीर समझूँ अब पराई मैं स्वयं को दीन मान,
ब्रह्मभामिनी तेरी ही साधना करती हूँ मैं,
ज्ञान रस बरसा दे तेरी अर्चना करती हूँ मैं।
विश्व मोहिनी तेरी आराधना करती हूँ मैं,
ज्ञान रस बरसा दे तेरी अर्चना करती हूँ मैं।

अध्यापिका
रा.उ.मा.वि. कनबा, ब्लॉक-बिछीवाड़ा
जिला-डूंगरपुर (राज.)
मो. 9799200505

गीत

❐ डॉ. शिवराज भारतीय

हर घर तिरंगा
घर-घर तिरंगा
देश भक्ति की
अविरल गंगा
खुशहाली की बंटे बधाई
मिलके रहें हम भाई-भाई
जात-धर्म की ढहें दीवारें
पाटें मानवता की खाई
प्रेम बसा हो सबके मन में, सबका मन हो चंगा
देश भक्ति की अविरल गंगा
लोकतन्त्र की नई कहानी
नहीं चले कोई मनमानी
काहे की हो खींचातानी
नाहक नहीं क्यों करें नादानी
अपनापन बिसराएं सारे, छोड़के सारा पंगा
देश भक्ति की अविरल गंगा
बदल जाएगा सारा मंजर
फेंक दो अपने खूनी खंजर
खुशबू गमकेगी धरती पर
हरियाली उगलेगी बंजर
अमन बसेगा कण-कण में, छोड़ेंगे जब हम दंगा
देशभक्ति की अविरल गंगा
हर घर तिरंगा
घर-घर तिरंगा
देश भक्ति की अविरल गंगा

प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. नोहर
मो. 9414875281

जीवन पथ

❐ रामेश्वर लाल

तुम सदैव दिवाकर की तरह वसुधा पर चमकते रहना,
चंद्रमा की रोशनी की तरह तुम शीतलता लिए रहना।
हिमगिरी की तरह तुम सदैव अडिग खड़े रहना,
प्रवाहिनी की तरह तुम हमेशा अनवरत बहते रहना।
अंधियारों में भी तुम जुगनू की तरह चमकते रहना,
घने बादलों में भी तुम बिजली की तरह दमकते रहना।
तूफानों और झंझावतों में भी सदैव अडिग खड़े रहना,
मानवता और इंसानियत के तुम सजग प्रहरी बने रहना।
जिंदगी के महासागर में भी पतवार को चलाते रहना,
आयेंगे तूफान बहुत संभल के नाविक बढ़ते रहना।

बाधाओं को दूर कर कदम से कदम मिलाकर चलना,
जीवन पथ पर पथिक, न डरो, न रूको, कदम बढ़ाते रहना।
राष्ट्र-प्रेम की सुगंध फैलाती रहे प्रगति पथ पर चलते रहना,
देश प्रेम सद्विश्वास व भाईचारे के तराने गाते रहना।
न थको, न रूको अपनी मंजिल की ओर बढ़ते रहना,
अरमानों के दीप जलेंगे जिंदगी का सफर होगा सुहाना।

से.नि. प्रधानाचार्य,
महरड़ा भवन, पुराना किला, साँभर लेक,
जयपुर (राजस्थान) 303604
मो. 9929187985

शिक्षा बना देती है, मानव जीवन महान।
शिक्षक होता सबसे महान्, जो देता शिष्टाचार
और संस्कारों का ज्ञान।।
मानव होना मेरा भाग्य है।
अच्छी सोच, संस्कार युक्त शिक्षक होना
मेरा परम सौभाग्य है।
शिक्षक शब्द तीन शब्दों से बनता है,
जो बच्चों को शिष्टाचार, क्षमाशील
और कर्मठता का पाठ-पाठशाला
में पढ़ाता है।
मानव होना मेरा भाग्य है।
लेकिन शिक्षक होना मेरा परम् सौभाग्य है।
शिक्षक एक ऊर्जावान, ज्ञानवान संबल शक्ति है।
शिक्षक एक शिष्टाचार नई दुनिया
के निर्माण की अभिव्यक्ति है।
शिक्षक बच्चों का सारथी है।
शिक्षक मरुथल में गंगा और झरना है।
शिक्षक बच्चों के लिए फूलों में खुशबु का वास है
शिक्षक सुखी जीवन के लिए
कलमरूपी स्याही की दवात है।
मानव होना मेरा भाग्य है
लेकिन शिक्षक होना मेरा परम् सौभाग्य है।
शिक्षक माँ सरस्वती का भक्त है।
शिक्षक होना एक संवेदना और अहसास है।
शिक्षक प्रेरणा और श्रद्धा का केन्द्र है।
शिक्षक बच्चों का बड़ा आसमां है।
मानव होना मेरा भाग्य है
लेकिन शिक्षक होना मेरा परम सौभाग्य है।
शिक्षक अच्छे कर्मों, संस्कारों युक्त
पूजा का थाल और जेष्ठ मंत्रों का जाप है।
शिक्षक सर्वजनो के अन्तःमन में
सम्मान की चाबी है।
शिक्षक सचमुच आदर्श रूपी
भगवान का छोटा प्रतिरूप है।
शिक्षक काशी-मथुरा और चारों धाम है।
शिक्षक जीवन में कड़वाहट का
अमृत रूपी प्याला हैं।
शिक्षक बिना सुखी मानव जीवन की
कल्पना अधूरी है।
मानव होना मेरा भाग्य है, लेकिन
शिक्षक होना मेरा परम् सौभाग्य है।
शिक्षक के शब्द वाणी औषधी है।
जो गहरे हरे घाव को भर देती है।
शिक्षक की संगति बच्चों के
जीवन को अद्भुत बना देती है।
शिक्षक का जीवन में कोई
दूसरा पर्याय हो नहीं सकता
शिक्षक का महत्त्व संसार में कभी
कम हो नहीं सकता।
शिक्षक जैसा इस विचित्र दुनिया में
कुछ हो नहीं सकता।
मानव होना मेरा भाग्य है लेकिन
शिक्षक होना मेरा परम सौभाग्य है।

शिक्षा विभाग सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय, महल रोड, जगतपुरा, जयपुर (राज.)-302017

मेरी भाषा मेरा गौरव

❑ गोविन्द भारद्वाज

मेरी भाषा मेरा गौरव
इसका सब सम्मान करो।
हिंदी सरीखी कोई नहीं,
इस पर सब अभिमान करो।
स्वर-व्यंजन है इसके न्यारे,
व्याकरण है इसका आधार।
हिंदी वर्णमाला में भरा,
सकल जग का अनुपम प्यार।
देवनागरी देवों की लिपि,
मन से आदर मान करो।
हिंदी सरीखी कोई नहीं,
इस पर सब अभिमान करो।
'अ' अनपढ़ से शुरू होकर यह,
ज्ञान के 'ज्ञ' तक ले जाती।
संस्कृत की बेटी बनकर,
हम सब को एक बनाती।
अन्य बोलियों की माता का,
सुबह-शाम गुणगान करो।
हिंदी सरीखी कोई नहीं,
इस पर सब अभिमान करो।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण,
सब दिशा में मिठास भरे।
हिमालय से ले हिंद तट तक,
प्रेम का आभास भरे।
विश्व शांति की ओर ले चले,
उसका तो यशगान करो।
हिंदी सरीखी कोई नहीं,
इस पर सब अभिमान करो।
हर पल हर दिन बोलें हिंदी में,
न कोई एक दिवस मानें।
प्यारी-प्यारी अपनी हिंदी,
भाषा सबकी एक बनें।
लाखों और हजारों में भी,
बोली की पहचान करो।
हिंदी सरीखी कोई नहीं,
इस पर सब अभिमान करो।

प्रधानाचार्य
पितृकृपा 4/254, बी-ब्लॉक, हाउसिंग बोर्ड,
पंचशील नगर, अजमेर-305004
मो. 9461020491

राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम

❐ कैलाश चन्द गुप्ता

इस नवाचार में
बच्चों के लर्निंग गैप को किया जाएगा खतम,
और शिक्षकों का भार भी किया जाएगा कम,
रखा है इसमें छोटी छोटी बातों पर ध्यान,
रेमेडिएशन पर केंद्रित रहेगा ये अभियान,
कक्षा 1 से 8 के विद्यार्थियों के लिए है
ये ब्रिज कार्यक्रम, नाम है जिसका
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
बच्चों के लिए दक्षता आधारित
वर्कबुक की गई है तैयार,
जिससे दूर हो सके लर्निंग गैप
और मजबूत हो सके आधार,
लर्निंग गैप को दूर करने के लिए
है ये रेमेडिएशन कार्यक्रम,
नाम है जिसका
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
रेमेडिएशन कार्यक्रम को
वर्कबुक्स के तहत 6भागों में विभक्त किया है,
कक्षावार विभाजन के साथ
हिन्दी, गणित, अंग्रेजी विषय की
दक्षता अध्ययन को महत्त्व दिया है,
कक्षा 1 की वर्क बुक को नाम दिया है प्रथम,
है ये बच्चों की बुनियादी मजबूती का पाठ्यक्रम,
नाम है जिसका
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
बच्चों की नींव को मजबूत बनाया जाएगा,
बच्चों को रुचिकर तरीके से पढ़ाया जाएगा,
कक्षा 1 के बच्चों को ग्रेड लेवल वन
व कक्षा 2 के बच्चों को लेवल टू के
तहत कार्य करवाया जाएगा,
देगा बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान,
साथ लर्निंग गैप दूर करेगा यह कार्यक्रम,
नाम है जिसका,
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
कक्षा दो की वर्क बुक का नाम पल्लव है,
कक्षा तीन की वर्क बुक का नाम है पहल,
कोशिश है मजबूत नींव पर बने,
बच्चों का शिक्षा रूपी भव्य महल,
शैक्षिक स्तर में सुधार और नवाचार
का है ये कार्यक्रम,
नाम है जिसका,
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
कक्षा तीन को बिहाइंड ग्रेड लेवल
वन और टू के तहत कार्य करवाया जाएगा,
कोरोना काल में बच्चों के रहे
लर्निंग गैप को भरवाया जाएगा,
शिक्षा में गुणवत्ता और नवाचार
का है ये कार्यक्रम,
नाम है जिसका,
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
कक्षा 4,5 की वर्कबुक है प्रयास
जिसमें बिहाइंड ग्रेड लेवल 2,3,4 तय किया है,
कक्षा 6,7 की वर्कबुक है प्रवाह
कक्षा 8 की वर्कबुक को प्रखर नाम दिया है,
वर्कबुक माध्यम से लर्निंग गैप को
भरने का है यह सशक्त कार्यक्रम,
नाम है जिसका,
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
कक्षा 6,7 का बिहाइंड ग्रेड लेवल 3,4,5
और कक्षा 8 का बिहाइंड ग्रेड लेवल 5,6,7,
विभाग ने लर्निंग गैप दूर करने का लक्ष्य रख
शैक्षिक नींव मजबूती की की है ठोस शुरुआत,
शिक्षक संख्या आधारित समूह के वर्गीकरण
पर भी आधारित है यह कार्यक्रम,
नाम है जिसका,
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
कोरोना काल में प्रभावित हुई
शिक्षण व्यवस्था और पढ़ाई,
उसी के नुकसान की
इस कार्यक्रम के माध्यम से होगी भरपाई,
सत्र पर्यन्त चलेगा यह ब्रिज कार्यक्रम,
नाम है जिसका,
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।
इस ब्रिज कोर्स में
प्रथम तीन माह में चार कालांश,
शेष सम्पूर्ण सत्र में दो कालांश चलेंगे,
इसमें रटने के बजाय सीखने पर देंगे बल,
जिससे बच्चे रुचिकर तरीके से पढ़ेंगे,
इसमें वर्ष में तीन बार होगा आकलन,
है ये कोरोना के तम को मिटाने का कार्यक्रम,
नाम है जिसका,
राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम।।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
परशुराम द्वारा, ब्लॉक-जयपुर ईस्ट, जिला-जयपुर
मो. 9351805759

मुफलिसी ईमान

❐ लाड़ शर्मा

मुफलिसी में ईमान खोने की नीयत नहीं की,
अपनी शर्तों पर जिन्दगी जी हुजूरी नहीं की।
आसान था ईमान को कोढियों में डगमगाना,
कभी किसी बेईमान से यारी दोस्ती नही की।
तरक्की सहज थी सच के खरीददान न मिले,
बेईमान ने ईमान खरीदने की साजिश नहीं की।
जिना आसां हैं, जिंदगी में मरकर जिये कोई,
जी उठता हूँ रोज, सांसों ने बगावत नहीं की।
मुसीबतों में कांटों की चुभन ने होंसला दिया,
जो थे करीबी उन्हें खुशियाँ गवारा नहीं की।

सिंघोलिया माताजी,
मह. मालपुरा, जिला-टोंक
मो. 8949555312

हिन्दी दिवस

❐ रमा माथुर

हिन्दी भाषा, हमारी मातृभाषा
शब्दों में इसके, बड़ी मिठास।
पाठ हो, चाहे हो कविता
होता हमको, जल्दी याद।
कबीर दास, सूरदास जी के दोहे
है, अद्भुत ज्ञान का भण्डार।
रहीम दास के इस दोहे ने
बढ़ाया सबके मन में प्यार।
बन गया यह जीवन का आधार
इस दोहे को जो जीवन में अपनाये
उसका जीवन ही सफल हो जाये।
रहीमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाये
टूटे ये फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाये।
हिन्दी भाषा बड़ी सरल भाषा
जो सुनता, भाव विभोर हो जाता।
हिन्दी भाषा है भारत की शान
हिन्दी भाषा, हर हिन्दुस्तानी का है अभिमान।
हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ..

सेवानिवृत्त व्याख्याता इतिहास
रा.चौ.सी.सै. स्कूल, बीकानेर
मो. 9460000351

राजस्थानी विविधा

लोकदेवतावां री छावळियां

❒ कृष्णा आचार्य

राजस्थान भारत रो सांस्कृतिक दृस्टि सूं महतपूर्ण प्रदेष है। आन-मान अर मरजादा रो धणी ओ प्रदेस आपरी गरबीली परंपराओं रे कारणै विश्व-विखात है। अठै री बीर मातायों पालणिये मांय आपरे पुतर ने तियाग-बलिदान, इज्जत-आबरू अर कुल री मरजादा रे संरखण रे भांव सूं भरियोड़ा गीत अर लोरियां गा'र सुणावे है। आखरी बगत तांई आपरी धरती ने नीं परततर होवण देवणो अर धरम सारूं आपरा पिराण दे देवणा अठै रे सूरमा री गोरबपूर्ण परंपरायो रैयी है।

राजस्थान री गरबीली धरती मांय जगा-जगां माथे ऊभौड़ी देवलियो अठै री सांस्कृतिक परम्परावां रो परिचै देवण वाळी अणमोल कड़ियां है। अै देवलियो सतियों अर झुझारों री देवलियो है, जिंका आपरी आन-बान अर मरजादा सारू पग-पग माथे सिर समरपित कर दिनों या जौहर री आगी सूं गळबालियां कर'र आपरी धौळी किरती ने कलंक नीं लागण दिनो। ओई'ज कारण है कै ओ प्रदेष पुराणै जमारै सूं ई धरम री भावना सूं भरियोड़ो खेतर रैयो है। 'शास्तरों अर धरम ग्रंथां मांय प्रतिपादित धरम रे अलावा भी लोक मांय हमेष अेक अलायदे धरम रो वजूद चालतो आयो है, जिके ने लोक-धरम री संज्ञा सूं जाण्यो जावे है। अै पुराण सम्मत देवी-देवतावां अठै ई जलम्या हा अर आपरे चमत्कारों अर आपरे खास-खास सामाजिक कामां रे चालते लोक रे बिचाळै पूजा रा पातर बणग्या अर लौकिक देवी-देवता भजण लाग्या। अै परमुख देवी-देवता है-भैरोजी, रामदेवजी, गोगाजी, हडबू जी, पाबू जी, तेजाजी, माहलिया जी, कल्ला जी, करणी माता, भभूतासिध जी, भोमियाजी, जीणमाता, सकराय माता आद।

लोक देवतावां संबंधित लोकगीत राजस्थान मायं जगां-जगां गाया जावे है। इण लोकगीतां ने दो भागां मांय बांट्यो जा सके हैं- अेक तो बे गीत जिका लुगाइयों आपरे घरों या आसेपासे रे मिंदिरां मांय गाया करे हैं अर दूजा बे जिका ने जात लगावते बगत अर जातरा रे बगत गायो जावे है। जातरा रे बगत तरै-तरै री कठिनायों अर देवी-देवतावां रो अैसवर्य ई इण गीतां रो विसै हुया करे है। अठै आपां रो मुख विसै देवी-देवतावां री छावळिया है।

सैंग सूं पैली छावली सबद माथे बिचार करणो जरूरी है कै लोकगायक इण सबद ने आपरे लोकगीता सारूं क्यूं प्रयोग किनो है। सगळा जाणे कै छाव रो मतलब हुवे छियां। लोकगायक आपरे माथे आपरे इस्ट देवी-देवतावां री छाया सदा बणी रैवे, इण बात री कामना करे हैं। सायत इण कामना रे कारणै ई इण लोकगीतां ने छावली केयो गयो हैं। दूजी बात कै इण गीतां रे अध्ययन सूं साम्हे आवे बा है कै छवि या छब सबद सू छावली सबद बणियो हुवेला। इण रे अलावा जिकी बात महतपूर्ण लागे बा आ है कै इण गीतां ने जद भगत लय सूं गावे तद बिये माथे उण देवता री छिया चढ़ जावे। बो भाव मांय बैव'र नाचण कूदण लागै, तो इण बात सूं भी आपा छावली सबद री उत्पत्ति ने समझ सकां हा।

केई विद्वान छावली सबद ने लोकगीता री विधा रे रूप मांय स्वीकारे हैं, पण जै आपां इण ने लोकगीतां री अेक विधा माना तद आपा रां सैंग बरणण करण बाळा गीत छावली ई कैलासी। पण इण मांय शिल्प री द्रस्टि सूं कोई अेकरूपता नीं है अर नीं ई उण रो कोई छंद विधान है। सौभाग्य सिंघ 'शेखावत रे अनुसार छावली खंजरी सूं मिलतो-जुलतो अेक वाद्यप्रधान या उण माथे गायो जावण वाळो लोकगीत है। पण जिण लोकगीतां सूं या छावलियों सूं आपां रो संबंध है, बे अमूमन लुगाईयां द्वारा गाया जावण वाळा गीत ही है। जिकां ने बे मौके माथे गावती रैवे। श्री नरोत्तमदास स्वामी अर स्व. सूर्यकरण पारीक रे अनुसार छावली सबद रो अर्थ छापो है। जियां कै बियां रे द्वारा संपादित गीत री पंक्तियां सूं साफ हो जावे-'बांवळिया कतरा बीघा में थारी छावळी...सौळे बीघा में म्हारी छावळी।' इण तरै छावळी सबद छियां सबद सूं युक्तिसंगत लागे है। चावे इण मांय गीतकार री कोई भी भावना रैयी होवेला। चावे छियां चढ़ण री बात हो या छतरछियां सदा बणी रैवण री बात हो। बोलचाल री भासा मांय इण तरै रो प्रत्यय जुड़णो

साधारण बात है। जियां रिपिये रो चौथाई भाग पाव हुवै अर फेरू लोक री भासां मांय ली प्रत्यय लगा'र पावली हु जावे। उणी भांत छियां मांय या छांव मांय ली प्रत्यय लगा'र छावली होयग्यो। नीचे की छावळिया दी जा रैयी है। सैग छावलियों रो वर्णविसय अेक ई है। अै सैंग अर्चना पूजा रो ई रूप हैं। इण सगळा मांय थान, देवरा-देवळी ध्वजा अर बेषभूसा रो ई वर्णन है।

गोगाजी जी छावली- गोगाजी चौहान री गणना राजस्थान रे पांव पीरा मांय की जावे है। अर लोकदेवता रे रूप मांय सदा सूं जणता रे बीचं पूज्य है। अैतिहासिक रूप सूं गोगाजी चावे जिका भी रैया हो, लोक मांय बे सर्पा रे देतवा रे रूप मांय पूजिजै। गोगाजी रे थान माथे तरे-तरै री मूर्तियां मिले है। कठै पाथर माथे सर्प बणा'र बियां री पूजा की जावे तो कठै बियां री घोड़े पर सवार मूर्ति भी मिले है। राजस्थान मांय ई नीं, बल्कै गुजरात, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा अर हिमाचल प्रदेश मांय भी बियां ने सम्मान री द्रस्टि सूं देख्यो जावे है। बिया तो हरेक गांव मांय खेजड़ी रे रूंख हेटे बियां रो थान हुया करे है, पण बियां री धुड़मेड़ी हनुमानगढ़ रे नोहर मांय है, जठै साल मांय अेकर घणो ई मोटो मेळो भरिया करे है।

गोगाजी री छावळी मांय गोगाजी अेक वीर पुरस रे रूप मांय चित्रित किया गया है। जियां कै बियां री जोड़ायत आपरी सासू सूं पूछण माथे के बियां रो धणी कठै है? सासू पड़ूतर देवे है-

'म्हारो तो जायो राणी सरमा सिधायो अे
गोगो राणो सेघोड़े गड़ जाय अै हा।

लोक मांय आ मानता है कै गोगाजी घोड़े सैत भूमि मांय समाग्या। पेड़-पौधा चिरकाल सूं ई मिनख रा साथीड़ा रैया है। मिनख भी तो प्रकृति रो ई अंग है। इणसारूं प्रकृति रे प्रति बिये रो अनुराग सै'ज है। अठै रो जनमानस रोइ मांय उगोड़े पेड़-पौधा ने बाड़णो नीं चावे। हरेभर रूखं ने बाडणो तो भारी अपसकुन मानीजे। जै गलती सूं भी कोई इण तरै रो काम कर डाले, तद बिये ने भारी मुसीबतों रो सामनो करणो पड़े, आ दृढ़ मानता है। आई'ज भावना गोगा जी रे गीता मांय मौजूद है। खाती रो बेटो हरिये रूख ने बाडे तद बिये री गाड़ी रा पईया टूट जावे, जिक माथे बो रूख ने राख'र ले जावणां चावतो हो-

'गाडी रा टूट्या खाती पइया जी पाचरा जी
राजा री हिंडै रे खाती पिरजा भी हिंडै।'

केसरिये कंवर री छावळी- केसरिये कंवर री गिणती अठै रे लोकदेवतावां मायं होती रैयी है। इयां री छावळी मांय जै'र उतारण री बात कैयी गयी है। इण रो संबंध भी सांप सूं जोड़्यो गयो है। रोई मांय कैर करेला चुगती छोरी ने सांप डस लेवे तद केसरिये जी रा काका गारडू यानि के गरुड़ जाणणिय मिनख न जोवे, जिको काळे सांप रो जै'र उतार सके।

ओडयाणो में तो केसरी कंवर अै बाळकडी
जाते अे चेलकड़ी लै'र उतारै काळे नाग री।

केसरिया कंवर कुण है आ हाल तांई सई तरै सूं केइ ने भी ठा कोनी। डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल रे अनुसार बे गोगा जी रा बेटा हा। पण गोगाजी री बंसावळी रे अनुसार इण नांव रे मिनख री कठे ही कोई चर्चा कोनी। केइ लोग इयां ने इन्दो जी रो बेटा माने, पण ओ भी अेक तरै रो अनुमान ही है। वैसे इयां रो थान भी गोगा जी रे तरै खेजड़ो रे हेटे बणायो जावे है। इयां री मूरति पाथर री हुदै जिके माथे सांप कुंडली मारोड़ो बैठ्यो दिखायो जावे है। गोगा नवमी सूं अेक दिन पैला इयां री पूजा सर्प रे भेस मांय हुवे है।

मूलजी जुझार री छावळी- धड़ सूं गरदन अलग हो जावण पछै भी जिको जोद्धो जुद्धभूमि मांय दुसमियो सूं भिड़तो रैवे, बो जुझार कैलावे। राजस्थान मांय अैड़ा केई वीर पैदा हुया है, जिया कै उदल जी, तेजो जी आद। पस्तुत छावळी मांय अेक अैड़े ई जुझार रो बर्णन है। ओ जुझार तलवार री नोंक माथे ब्याव रो नूंतो स्वीकार कीनो है। गीत सूं ठा लागे कै मूल जी झझूं गांव रा रैवणिया हा। खेतोळाई मांय इया'रे नाव रो डको बाजतो हो। केसरिया रंग रो साफो काना मांय सोने री मुरकियां, कमर मांय बांकी कटार अर चन्द्रहास तलवार से सजिया-धजिया। नवलखे घोड़े माथे सवार जुद्धभूमि मांय विचरता।

सूरज सामो ओ भाटी पे राणे रो देवरो
ध्वजा रे फरूके आसमान.....
चढ़ै ने चढ़ावो भाटी पे राणे रो चूरमो
अर उजळा बावळिया री खीर.....
'जातीड़ा तो आवे भाटी पे राणे रे दूर-दूर स्यूं
आ जातीड़ा री आषा मनस्या पूर।'

हनुमान जी री छावळी- रामायण अर महाभारत री कथावां रो पातरो माथे आधारित लोकगीत भी जनपद मांय गूंजता रैवे। इयां मांय सूं हनुमान जी भी अेक अैडा ई पातर है, जिया री मानता बालाजी रे नांव सूं राजस्थान मांय वेषी है। सुजानगढ़ मांय सालासर रा हनुमान जी रो मिंदिर, बीकानेर रो पूनरासर धाम, मेहंदीपुर बालाजी आद हनुमान जी रा लोकप्रिय मिंदिर है। अठै हनुमान जयन्ति माथे हर साल मेळा लागे है। इण मेळो री खासियत है कै अठै आवण वाळा दरसणार्थियों रे खावण पीवण री बैवस्था मिंदिरों री कानी सूं ई की जावे है। हनुमान जी री छावळी मांय अन्न-धनन अर बेटे रे होवण री कामना की जावे है। छावळी गावते बगत हनुमान जी ने चूरमा रो भोग लगाया जावे हैं।

भोमिया जी री छावळी- जणमाणस मांय ओ बिसवास है के मिनख मर'र पितर या देवता बण जावे है। सगळा मिनखां ने आप-आप रे करमां रे हिसाब सूं पिरेत जूण या देवता जूण मिले है। जिको वीर आपरी मायड़ भौम री सुतंतरता खातर जुद्धखेतर मांय मरमिटे, बिये ने भौमियाजी कैया करे है।

अठै परसतुत छावळी मोहिल वंस रे वीर जोद्धा री है, जिके री देवळी मकराना मांय है। इण ने बीजासिंघ रो थान कैवे। लोककथा रे अनुसार अेक राजा रे कने दस लाख घोड़ा अर नौ लाख सांडियां हा। घोड़ा सोने रे पागड़े अर मोतियों री लगाम सूं सजियोड़ा रैवता हा, पछै ओई'ज राजा जुद्ध भूमि मांय खेत होयग्यो अर लोकदेवता रे रूप मांय पूजण लाग्यो। ओ देवता भगता ने धन-धान अर पुतर री मनोकामना ने पूरी करे है। इण ने चूरमे रो भोग लगायो जावे अर सोने-चांदी रो छतर चढ़ायो जावे है।

'छत्तर चढ़ावे ओ मोहिल राणा बांझणी
चूरमियो चढ़ावे बाळूड़े री मा।'

कृस्ण छठ, चौदास इण री पूजा री नियत तिथ है। जलम अर ब्याव माथे भौमियो जी री जात लगा'र परसादी चढ़ाई जावे।

भभूता सिंघ जी री छावळी- इण रो थान गांव रे बारै खेजड़ली रे हेटे हुया करे है। भभूतासिंघ जी री अठै जिकी छावळी पसतुत करीजी है। बिये रे अनुसार अेक भेड रो रेवड चराविणो हो। रोइ मांय रेवड़ चरावण सारू गयो हो। बठै बिये ने सांप डस लिनो अर बिये री मौत होयगी। सैज बिसबासो जनता बिये ने पूजण लागी। मरण सूं पैला बिये रा बोल इतरे दुख सूं भरियोड़ा है कै बो नीं चावे कै बिये रे मरण री खबर बिये री मां तांई पूगे।

माता जी सूं मती कैया माता जी झुरैली
सारूडी रात
माता जी म्हारी भोळी जीव री।

अेक कानी तो बिये ने आपरी मा रो काफी धियान है तद दूजी कानी बिये ने मौत रो कीं भै कोनी। बिये रो कैणो है के बो अैड़ा सापों ने पकड़'र आपरे पगां तळे कुचळ देवेला।
'इणा हो बिणासु सूं नहीं डरू ओ बाबा जी।
नाग परड पैणा पगला रे हेठे।

अठै इण री दो तरै री छावळियां मिले। अेक मांय बिया ने सोमद रो बेटो बतायो गयो है तद दूजी मांय पिता रो कठै भी परिचै कोनी। बो खाली अेक ओवाड़ियो है जिको भेड़-धौन चरावे है। इण लोकदेवता ने परसादी मांय बतासा, दूध अर मिसरी चढ़ाई जावे है।

चरचित सैंग छावळियों री भासा सरल अर सैज है। लोकभासा रा सबद भी फुटरा है। लोक-साहित री सैंग विधाओं री भांति लोकरूढ़ियों रो निरवाह करण मांय भी लोकगीतकारों ने घणी सुफलता हाथे लागी है। लोक साहित मांय दो तरै री रूढ़ियों रो प्रयोग हुवे है। पैली कथात्मक रूढ़ि या अभिप्राय अर दूजी बखान रे रूप मांय। अठै दोनूं रुढ़ियों मांय फरक है। पैले रो संबंध कथानक ने कोई नूंवो मोड़ देवण सारू है तद दूजै रो सबध वस्तु या भाव वर्णन री रूढ़ शैलियो सूं है। आलोच्य गीत परबध गीत कोनी, इणसारू इण मांय दूजै प्रकार री रुढ़ियों री प्रधानता हुवै। लोकगीता मांय अेक ई तरै री वर्णनगत रूढ़ियां मिलिया करे है। राजस्थान भेद रे कारणक इण मांय वर्णन री रूढ़ शैलिशें सूं है। आलोच्य गीत परबंध गीत कोनी, इणसारूं इण मांय दूजै प्रकार री रढ़ियों री प्रधानता हुवे। लोकगीता मांय अेक ई तरै री वर्णनगत रुढ़ियां मिलिया करे है। स्थान भेद रे कारणै इण मांय कोई बदलाव नी दिखे है। इण रुढ़ियों ने निम्नलिखित भागों मांय बांट्यो जा सके है। संख्या परक, अतिश्योक्तिपरक, शिल्पगत, स्थान विशेष आद।

संख्यापरक– लोकगीतां मांय संख्याओं से कुछ रूढ़ प्रयोग मिले है। संख्या रे प्रयोग सूं अको री अरथ सत्ता रो की महत्त नीं रैवे। जियां कै-समूह रो भाव परगट करण खातर नव लाख, सवा आख आद।

अतिश्योक्तिपरक– प्रभुत्ता, संपन्नता अर विपुलता आद भावां रे परगटं करण खातर अतिश्योक्ति परक रो प्रयोग भी मिले। जियां कै सोने री कटारी, सरब सोने रा पागड़ा, बाजा, सोवन था आद।

स्थान बिसेस– स्थान बिसेस री रुढ़िया भी इण गीतां मांय मिले हैं। जियां कै-ध्वजा रे फरूकै आसमान, सूरज सामै देवरो आद।

अन्य– वार-सुवार, गंगाजळ नीर, चांदणी चौदस आद।

तुक अर लय– तुक रे प्रयोग सूं छावळी ने सिमरण राखण सारूं सुभितो मिले। इण रे अलावा सुणणियों ने आनंद भी आवे। राजस्थानी गीतां मांय हरेक पंक्ति रे आखर मांय हाँ, हे, रे जी हो, अे आद आवे है। इण रो गीतों रे अरथ सूं की लेणो-देणां नी हुवे अर नीं इयां ने गावण सारू खास प्रयास करणो पड़े। वासतव मांय लै इण गीतां रो आकरसण हुयो करे, जिको हरेक सुणणिये रो मन मो लेवे है। जद गीतकार केइ गीत ने लै सूं गावे तद बो सुणणिये री जुबान माथे सौरो-सोरो चढ़ जावे है। गीतां री इण खासियत रे कारणै इ 'पं. रामनरेश त्रिपाठी कैयो है-'इण मांय छंद नीं खाली लै है।'

गोगाजी जी छावळी
'हाथ करोती रे खाती खाधे जी धोती रे
खाती रो बेटो बन खड़ आयो अे हा।
अेक बन फिरियो रे खाती दूजै बन फिरियो रे
कठे न लाघ्यो हरियो रूंख अै हा।'

इण तरै आपां देखा कै राजस्थान लोकमानस मांय तरै-तरै रा देवी-देवतावां, लोकदेवता, लोकनायक रचै-बसे है। लोक इण सैग ने धियावे अर पूजा करे। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इयां रे आगे माथो झुकावे। परसादी चढ़ावे अर गावे छावळियां। अर गरब री बात कै छावळियां लोकमानस मांय आज भी रचियोड़ी-बसियोड़ी है अर सायत ई कदै अै परम्परावां गायब हो पासी।

संदर्भः

1. गोगाजी चौहान री राजस्थानी गाथा-चंद्रदानर चारण।
2. स्वतंत्रता सेनानी-डूँगरजी, जवाहरजी।
3. राजस्थान के लोकगीत/पृष्ठ संख्या-182
4. राजस्थानी लोकगीत/पेज संख्या-103
5. गोगा जी चौहान री राजस्थानी गाथा/पेज 11-12
6. मूलजी जुझार जी छावळी
7. भभूतासिंघ जी री छावळी
8. भौमिया री छावळी

साहित्यकार, कवयित्री
उस्तों की बारी के अन्दर, जुझार जी की चौकी
वाली गली, बीकानेर (राज.)-334005
मो: 8619402147

राजस्थानी कहानी

❐ कमल कुमार जाँगिड़

एक आदमी नदी किनारे रोजीना कपड़ा धोबा जातो। कपड़ा सूखता जतै उड़ीकतो। एक चिड़कली र चिड़कलो सूखेड़ा कपड़ां माथै बींठ कर देता। एक दिन बीने रीस आई। रोजीना की परेशानी हुं धापेड़ो बो कपड़ा धोबाळी लोदी हूँ चिड़कला न मार दियो। चिड़कली घणी रोई, पछताई। पण बीरो कीं कर नहीं सकी। नदी हुं थोड़ी दूर चिड़कली न दो ऊन्दरा मिल्या। ऊंदरा पूछ्यो, चिड़ी बाई चिड़ी बाई कुमनी कियाँ?

चिड़कली बोली काईं बताऊँ! भाईड़ां आज वो आदमी म्हारा चिड़कला न मार दियो। ऊंदरा बोल्या, म्हे थारी काईं मदद करां? चिड़कली बोली, भाईड़ाँ म्हनैं बैर काढणु है। ऊंदरा तियार हुगा। दोयूँ तकतुल्यां की गाड़ी बणाई। चिड़कली न गाड़ी जणा बैल्या बणया। एक बैठार बहीर हुया। गैले म कादो मिल्यो। कादो पूछ्यो चिड़ी-चिड़ी बाई सिध चाली? चिड़ी बाई बोली, 'ऊंदर सुंदर बौल्या जोया, तकतुल्यां की गाड़ी। आदमी चिड़कलो मार दियो बैर काढ़बा चाली। कादो बोल्यो म्हन भी ले चाल। चिड़ी बोली, तूं भी चाली। थोड़ी दूर पर मूसळ मिल्यो बो भी पूछ्यो, चिड़ी बाई चिड़ी बाई सिध चाली। चिड़ी बाई बोली, ऊंदर सुंदर बैल्या जोया तकतुल्यां की गाड़ी, आदमी चिड़कलो मार दियो बैर काढ़बा चाली। मूसळ बोल्यो मन्ह भी ले चाल। तूं भी बैठ ज्या भाई।

इयाँ ही चिड़कली न आगे बिच्छु र स्यांप मिल्या। बे भी चिड़कली की गाड़ी म बैठा लिया। सिंज्या टेम सगळा जणा, धोबी क घरां कन पूगग्या। कादो घर का दरवाजा पर, मूसळ दरवाजा के ऊपर, बिच्छु ऊखळ म, स्यांप चूल्हा कन बळीता म जार बैठगा। दिन उग्यो र धोबी उठ्यो दरवाजा कन बिखरेड़ा कादा म फिसल र पड्यो ऊपर हूँ पड्यो मूसळ। आदमी को माथो फूटगो।

माथो पकड्याँ बो भाग'र ऊखळ कन गयो कोई चोट पर लगाबा की दवाई कूटबा न। ज्यूँ ही ऊखळ म हाथ घाल्यो, बिच्छू खायगो। आदमी भाग्यो चूल्हा कन पाणी निवायो करबा न। बठै बैठ्यो स्यांप। बिने स्यांप खायगो र बो बठै ही मरगो। चिड़ी बाई का सब साथी मिल'र बी स्यूं बैर काढ़ लियो।

जवाहर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)-341508
मो: 9928278014

महात्मा गाँधी अर मायड़ भासा

❒ डॉ. मदन गोपाल लढ़ा

''म्हारी मातभासा में कित्ती ई कमी क्यूं नीं हुवै, म्हैं उणसूं उणींज भांत चिप्योड़ो रैयसूं, जिण भांत आपरी मा री छाती सूं। बा ई म्हनैं जीवणदायी दूध देय सकै।'' अै ओळयां है महात्मा गाँधीजी री। 'हरिजन सेवक' छापै में 25 अगस्त 1946 नैं छपी इण टीप में गाँधीजी रै मायड़ भासा बाबत विचारां नैं ओळखीज सकै।

साबरमती रै संत महात्मा गाँधी रो व्यक्तित्व इत्तो लूंठो है कै आज चौहत्तर बरसां पछै ई पूरी दुनिया बां री जरूरत मैसूस करै। देस री आजादी रो आंदोलण बां रै कृतित्व री साख भरै पण सत्य अर अहिंसा रै रूप में गाँधीजी जीयाजूण नैं जकी सीख दीवी, बा आज आखी, दुनिया नैं नवो मारग दिखावै। बारूद री ढिगळी माथै बैठ्यै संसार नैं सायंति अर भाईचारै री दिस आगै बधावण सारू गाँधीजी रा विचार घणा कीमिया हुय सकै। गाँधीजी रो व्यक्तित्व फगत राजनीतिक कोनी, बै आपरी ऊंडी विचारणा, दूरगामी दीठ, मिनखपणै री हिमायत करण वाळी करम-सगति सूं फगत राजनीति ई नीं, जूण रा सगळा चकारियां नैं डाक'र अैड़ी भाव-भौम माथै जा पूगै, जठै मनसा, वाचा अर करमणा मानखै रै कल्याण रो भाव जूण रो संकळप बण जावै। आजादी रै महताऊ लक्ष्य रै सागै दुनिया री घणी लूंठी अर तागत वाळी सत्ता साम्हीं पैणो मांडतां थकां ई साबरमती रो बो संत अछूतोद्धार, बुनियादी तालीम, खादी, महिला उत्थान, नशा-विरोध जैड़ै कित्ता मोरचां माथै ऊभो दीसै।

जूण-जूझ सागै बापू देस-दुनिया री केई भासावां रै महताऊ सिरजण नैं बांचतां-समझतां थकां जको चूंटियो सोध्यो, बो गाँधी-साहित्य रै रूप में आपां नैं जीवण री कला सिखावै। गाँधीजी जाणता कै फगत राज बदळयां मोटो फरक नीं पड़ै। राज रै सागै मनगत बदळणी जरूरी है। जद तांई आपणी सोच में देस अर मिनखपणै सारू हेत-अपणायत नीं बापरै, तद तांई बीजा बदळाव बिरथा ई रैवैला। बियां महात्मा गाँधीजी जीवण रै घणखरा पखां माथै आपरी चींत नैं न्यारी-न्यारी ठौड़ साम्हीं राखी है, पण भणाई अर मातभासा पेटै बां रा विचार घणा महताऊ है। चावा कहाणीकार रामस्वरूप किसान री आ टीप साव साँची है कै भणाई ''मिनख सारू पवन, पिरथी, अगन अर जळ, आं पाँच तत्वां जित्ती ईज जरूरी है। इण लेखै भणाई नैं छठो तत्व ई कैयो जा सकै।'' उल्लेखजोग बात आ है कै गाँधीजी भणाई रै मारग सारू मातभासा नै जरूरी मानता। बां री सरुआती भणाई गुजराती भासां में हुई। छेकड़ली सांस तांई बां रो आपरी मातभासा सागै हेत-अपणेस बण्यो रैयो। 'विद गाँधीजी इन सीलोन' में गाँधीजी री अेक टीप छपी है जकी घणी महताऊ है, ''म्हारो ओ भरोसो है कै देस रा जका टाबर आपरी मातभासा री ठौड़ किणी बीजी भासा में भणाई करै, बै आपघात ई करै। आ बां नैं बां रै जलमसिद्ध अधिकार सूं टाळै। विदेसी माध्यम सूं टाबरां माथै बिरथा जोर पड़ै। ओ बां री सगळी मौलिकता खतम कर देवै। विदेशी माध्यम सूं बां रो विकास रुक जावै अर बै आपरै घर-परिवार सूं अळघा पड़ जावै।''

भासा फगत विचार परकट करण रो माध्यम कोनी। हरेक भासा री आपरी न्यारी-निरवाळी तासीर हुवै। भासा अर संस्कृति अेक-दूजै में दूध-खांड तांई रळयोड़ी हुवै। किणी अंचल रै इतियास, परंपरावां अर सरोकारां रो सांगोपांग जायजो लेवणो हुवौ तो भासा सूं भरोसेमंद बीजो कोई साधन नीं हुय सकै। आ बात गाँधीजी रै हियै बैठ्योड़ी ही कै देसी भासावां री मारफत ई भारत री सिमरध संस्कृति री अंवेर हुय सकै। चावा-ठावा दार्शनिक यशदेव शल्य रै हरफां में ''महात्मा गाँधी फगत अेक व्यक्ति कोनी हा, बै उण तत्व रा द्रष्टा ई हा जको सनातन भारत रो तत्व है अर जिण में दयानंद, रामकृष्ण परमहंस अर अरविंद आद में देख्यो जा सकै। गाँधीजी उणींज तत्व री सघन अभिव्यक्ति हा। गाँधीजी उण तत्व नैं राजनीतिक संदर्भ में बौवार रो रूप दियो, उणींज में उणरो नवोपण अर सृजनात्मकता ही, नींतर तो बो सनातन भारत रो तत्व ई हो।'' गाँधीजी इण संस्कृति रै संरक्षण अर बधापै सारू देसी भासावां रो विकास जरूरी मानता। अेस.अेन. अग्रवाल री पोथी मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन' री प्रस्तावना में गाँधीजी जकी टीप माडी है बी बाचणजोग है, ''इणमें म्हनैं जाबक ई सक-सुबो कोनी कै जिण लोगां रै हाथां में टाबरां नैं सिखावण रो काम है, बै फगत ओ तै कर लेवै तो बां नैं ठाह लाग जावैला कै मातभासा मिनख रै विकास सारू बित्ती ई जरूरी है जित्तो टाबर रै डील सारू मा रो दूध। बीजों कीं हुय ई कियां सकै? टाबर आपेरो पैलो पाठ मा सूं ई सीखै। इण वास्तै म्हैं टाबरां रै मानसिक विकास सारू बां माथै मा री भासा टाळ'र कोई बीजी भासा थोपणी पाप समझूं।''

राजस्थानी साहित्य में महात्मा गाँधीजी रै जीवण अर बां रै विचारां रो सांगोपांग अंकन हुयो है। अेकै कांनी महात्मा गाँधी री लिख्योड़ी पोथ्यां छापां में छप्योड़ा बां रा संपादकीय लेख अर बां रा दियोड़ा भासण अनुवाद री मारफत मायड़ भासा में आया है, दूजी कांनी न्यारी-न्यारी विधावां में संदर्भ मुजब महात्मा गाँधीजी रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रै सागै बां रा विचार ई माडीज्या है। गाँधीजी री जगचाणी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' रो डॉ. आईदानसिंह भाटी अर दुलाराम सहारण न्यारो-न्यारो अनुवाद कर्‌यो है। आत्मकथा रै सागै दुलाराम सहारण लारलै बरसां में गाँधीजी री बीजी केई पोथ्यां ई अनुवाद री मारफत राजस्थानी में लाया है जिण में 'हिंद स्वराज', 'सर्वोदय' आद प्रमुख है। आं पोथियां सूं न्यारै-न्यारै प्रसंग अर संदर्भ रै मिस मायड़ भासा पेटै गाँधीजी रा विचारा उजास में आवै। 'भणाई रो मारग' सिरैनांव सूं महात्मा गाँधीजी री महताऊ पोथी 'शिक्षा का माध्यम' नै मायड़ भासा में लावण रो जस डॉ. जीतेन्द्र कुमार सोनी रो है। मायड़ भासा सारू ओ घणो महताऊ काम कथीज सकै। इण पोथी री मारफत गाँधीजी मायड़ भासा रा सखरा हिमायती रै रूप में साम्हीं आवै। अनुवाद रै सागै राजस्थानी लिखारां न्यारी-न्यारी विधावां मं जद गाँधी बापू रै लूंठै व्यक्तित्व अर महताऊ कृतित्व नैं अंवेरै तद ई किणी प्रसंग-संदर्भ में गाँधीजी रै भासा पेटै

विचारणा माथै चिलको अवस पड़ै। अैड़ै रचाव सारू नाथूसिंह महरिया, मनोहर शर्मा, श्रीलाल नथमल जोशी सूं लेय'र ओम नागर तांई केई-केई लिखारां खरी खप्पत करी है। संपादित पोथ्यां री विगत में 'म्हैं गाँधी बोलूं' में भरत ओळा गाँधीजी सूं सम्बंधित लेख सामला कर्‌या है तो वेदव्यास अर श्याम महर्षि रै संपादन में 'आजादी रो भागीरथः गाँधी' सिरैनांव सूं गाँधीजी री ओळूं नैं अंवेरती कवितावां नैं विचारां नैं ओळख-परख सकां। गाँधीजी रै अेकठ भेळी करी है। आं लेखां अर कवितावां मं ई आपां जठै-कठै गाँधीजी रा भासा पेटै विचारां सूं दीपती बीजी रचनावां री फिरोळ करां तो सैकड़ूँ लिखांरा री गिणती करीज सकै जका गाँधी-दीठ नैं आपरी रचनात्मकता रै केन्द्र में राखतां थकां कलम चलावै। आं रचनावां में आपां साँच अर अहिंसा रै सागै छुआछूत रो विरोध, दारु अर बीजै नशा सूं छेती, गाँवा रै उत्थान, लुगाईजात रो मान, खादी नैं बधावो देवण ण री बात पड़तख दीसै। इण बात में कठैई दो राय कोनी कै राजस्थानी साहित्य में गाँधी रै विचारां री घणी सुथराई सूं अंवेर करीजी है।

ओ खरो सांच है कै आज देस-दुनिया रा जका हालात है उणमें गाँधीजी रै विचारां री घणी दरकार है। साँच अर अहिंसा जैड़ा मिनखा-मोल ई दुनिया रो भलो कर सकै। भूमंडलीकरण अर बाजारवाद रै इण दौर में भासाई अर सांस्कृति विविधता नैं बचावण सारू आपां नैं पाछा गाँधीजी रै मारग ई चालणो पड़ैला। आँख मींच'र अेक विदेसी भासा रै लारै चाल्यां संस्कृति रो घेरघुमेर दरखत सूक जावैला। साहित्य री मारफत गाँधीजी रै विचारों री फिरोळ अेकै कांनी राज नैं चेतावण सारू जरूरी है बठैई जन-जागरण रो ई कारज सारै। राज री मानता सारू जूझती मायड़ भासा सारू बापू रा विचार संजीवणी दांई कीमिया है। उम्मीद करीज सकै कै बापू रै घणमूंघा विचार ई जद-कद राजनीतिक इच्छा-सगति जगावैला अर मायड़ भासा री मानता रो सुपनो सांचो हुवैला।

144, लढ़ा निवास,
महाजन बस्ती,
बीकानेर (राज.)- 334604
मो: 9982502969

किराये रै दांता स्यु गौठ

❐ डॉ. हरिराम बिश्नोई

मौ हल्ले रां कुचमादी टाबरां नुवै जमाने रै देखादेखी एक डोरे में माळा रां मिणीया पौवे जिंया री जिंया मिनखा रो वाटसफ ग्रुप बणाय रैड़यो।

अब इण ग्रुप में भांत भांत रा एक स्यु बढ़कर एक अलग अलग खोपड़ी अर अलग अलग मते(विच्यार)रा मिनख रळयोड़ा।

अब जद नुवो ग्रुप बणे जणा एक जणे टेक दी के भाई ग्रुप री गौठ तो हुवणी चाइजै, अब आ बात तो सगळा रै ही सुहावती क्युके दो महीना स्यु ब्याव,जागण, होटल सगळा बंद तो सगळा रा मुंडा जीमण सारू लपलपाइजे पण सरकार रो सखत आदेश तो कोई पोल पड़ी है के जीमण हाथ आय ज्यावै।

अबे ग्रुप में चर्चा छिड़ी तो कोई केवे केसर बर्फी बणावो कोई केवे लच्छा रोटी बणावो अर कोई केवे पंधारी बणावो, इण भांत जिता मुंडा बीती ही मिठाइयां रा नाम साम्है आय गिया। अब इण भेळप रा मौजिज मिनख *ओमजी जोशी* कैयो के छोरो लपलपियो बणावो अब आजकल रा नुवा टाबर सोच्यो के आ किसी मिठाई आयगी, जद ग्रुप रा की स्याणा मिनखा कैयो के हलवै(सिरे)ने ही लपलपियो कैवे जणा सगळा रै समझ आई ।अब सगळा रै ओ चकर के ओमजी सिरे रो ही क्यूँ कैयो कणेई धीरे सी'क पूछ्यो के भाईजी ओ ही क्यू तो ओमजी केयो के भाईड़ा दांत बत्तीस हुया करें है पण अबार तो कोई दो च्यार ही रैया है दूजी मिठाई तो उगळें कोनी। अब भाई सगळा रळ'र टेम,जिग्या अर मिठाई तय कर'र गौठ राख दी।अब ओमजी रै समस्या आ हुई के गौठ में जीमण ने जावणो पण दांत कोनी तो जिमा किंया। अब भाई ओमजी जोशी ग्रुप में ही कैयो के छोरो थे म्हारे कैयोड़ी मिठाई तो केठा बणावो कोनी पण गौठ सारू दांत तो उधार देय दयो जिको हु गौठ जीम'र सरफ़ स्यु धोय'र थारा दांत पाछा दे देस्यूँ। अब इति बात सुणता ही छोरा तो ओमजी स्यु रीगल करण लाग गिया अर कैवे के ओमजी थे तो जरदो खावो म्हारा दांत खराब कोनी हुवे के तो एक भळें केयो के एक दिन रो दांता रो किरायों 5400 सो रिपिया है। जीते ही कोई दुजुडो बोल्यो के म्हारे पड़ोस में लारलै दिना कोई रामशरण हुय गियो हो बे दांत पड़या है तो बे लेय लेवो थारे किरायों कोनी लागे जीते ही एक कैयो के ओमजी रोही में बकरी री जबाड़ी पड़ी ही आपरे काम आय सके है के तो जीते नी एक केयो के ओमजी थे टेंसन ना लेवो म्हे म्हालडी जबाड़ी स्यु उगाळ'र थाने जीमा देस्या, इण भांत री बाता सुण'र ओमजी सगळा ने गण्डकारता थका कैयो के थे सगळा थारा जबाड़ा काठा राखो हुसी जिंया देखी जासी इण बिचाळें आप सगळा ने बताय दु के ओमजी री बाता स्यु कोई रीस कोनी करें अर ओमजी भी कोई री बाता स्यु रीस कोनी करें क्युके ओमजी अर गुवाड़ री ए रोज री हथाया हूंवती ही रैवे।

अब गौठ री तैयारी हुवण लागी सगळा ही खुमारी खावण लाग्या कोई तो पटा में तेल घाले अर कोई पजामे में नाळो घाले कोई आपरी सैंडल झडकावे तो कोई नुवो बॉडी स्प्रे लगावे। कोई पेंट में कुड़तीयो घाले इण भांत सगळा ही आप आपरा फेसन कर'र जीभ ने लपलपांवता गौठ आळी जिग्या सारू व्हीर हुया अब बठे पुग'र देख्यो तो सगळा ने ठा पड़ी के आज जीमण में तो दाळ बाटी चूरमो अर चावळ दाळ अर डिस्को रे सागे रायतो ओर है। अब सगळा रे मन मे एक ही चाव के ओमजी किंया उगाळसी ? अबे भाई सगळा रा ही मुंडा ओमजी जोशी ने देखे ओमजी दबादब चूरमे रा पिंडिया बणाय बणाय'र मुंडे में जावण दे हा जिंया तोप रो गोळो जाया करे,इण भांत ओमजी ने जीमते देख'र एक पूछ्यो के ओमजी किंया लागे है। जणा ओमजी केयो के ए च्यार दांत है इंया लागे जाणे तोइ काढयोड़े खेत मे पग जावे है इण भांत ओमजी बिना किराये रे दांता रै ही बारह तेरह डिकार लेय'र केयो के छोरो! म्हे हो फोड़ो थारी बात राखण सारू ही देख्यो है अब भळें गौठ कद है टेमसर ही बताय दिया।

पुस्तकालयाध्यक्ष
रा.उ.मा.वि., नत्थूसर गेट, बीकानेर (राज.)

फैसलो

❐ छगन लाल व्यास

आज उणां रै फैसले रो दिन!

वौ जल्द उठ'र सिनान-ध्यान करतो दीवो -धूप करतां मन ई मन सोचे -फैसलो म्हारे पक्ष में आवै अर उठी ने उण रे घरवाला, उठतां ई मंदिर जाय'र टँकोरो बजावतां शीश झुकायो अर मनचीती कही-फैसलो म्हारे सामी हुवैला तो पांच सौ री परसाद।

वै दोन्यूं। दसेक बरसां पैली परीणीज्या। इण सूं पैली बीसूं बार एक-दूजै रै घरां, आया-गया घर वाळा साथ खुद ई एक दुजै ने देख्या! परख्या! दोन्यूं रा कोळ-ऊंदरा राजी हुया जद ब्याव हुयौ। ब्याव पछै छोरो हुयौ तो राजी-खुशी ढूंढ कीनी। फेरुं दोयेक बरसां सूं लगतौ दूजौ-छोरो। दोन्यूं छोरा बाप रै उणियारे। हंसै तो हीरा खिरै। धणी-लुगाई राजी। इणी बीचे नी जाणे किण री निजर लागी अर घर-धणी रौ नैनो सो एक्सीडेंट! एक्सीडेंट पछै याददाश्त कमजोर! वौ पैली जिकण स्कूल में जावतो उठा रा बैवस्थापक जी 'मना' कर दियो तो घरां बैठणो पड्यो। रात-दिन घरां बैठ्या देख लुगाई रौ माथो ठणके। आजकाले माया पईसै री। घर री लुगाई ई कदर नी करै। ओ माइतां सूं देख्यो नी जावै।

वै केवे-थूं खुद भणी-गुणी है। किणी स्कूल-अस्पताल में रैय जा। कोचिंग क्लास शुरू कर ले। सिलाई आद सैकडूं धंधा। घणखरां घरां में लुगाई कमावै। कठै-कठै ई तो श्रीमती जी ऊंची पोस्ट माथै अर श्रीमान जी साड़ियां रै उस्तरी करता निजर चढ़े।

नित री आ ई बातावा कैवे -म्हें इणा लारां आयी। जद कमावण री हिम्मत नी तो मूंडो धोय क्यूं आया। प्राइवेट नौकरी करता तो विश्वाास कु पेट भरैला पण लारलै छह महीनां सूं हाथ माथै हाथ धर बैठ्या देखूं तो काळजो कांपै। दोय -दोय छोरा। काले मोटा हुवैला...। पढ़ाई सारु, खावण-पीवण सारु पइसो चाहीजैला। कठै सूं आवेला! इण ऊपरां इणा री दवाई सारु ई महीने-महीने दस हजार। म्हने इतरी तिनखा कुण देवै?

तिनखा नी देवै तो भगवान कोई रास्तो दिखावेला केवे ई भूखा जगावै, सुलावे कोनी। म्हारे पेंशन आवे जिकौ खवो। यूं दोन्यूं भाइयां रै दोय मकान हैं, दाल-रोटी री कमी कोनी आवै। ओ तो भलो जाण क् खुद बचग्यो। नींतर थूं कांई करती। याददाश्ती लावण सारु इलाज चाले ई। थोड़ो फरक ई लागै।

म्हने तो रती भर फरक नी लागै। किणी भोपे आद ने दिखावो। यूं बैठ्या किता दिन निकले। वह बोली।

बगत माथै दवाई तो म्हें देवू। थोड़ो ध्यान राख। पति परमेश्वर केवीजे। साझ-मांद तो हुवती रेवै। ओ तो ईश्वर ठीक कीनो क् थोड़ी याददाश्त ई गयी। किणी रे कन्त जावै तो ई वा बैठी रैवे। मजूरी कर ई पेट भरे। लुगाई सारु केवीजे क् वा अभी आबै अर आड़ी जावै। सासू समझावती।

पण वा ज्यूं ज्यूं आदमी ने देखै अर सोचे-घर उजड़ गयो। ओ कांई ठीक हुवै! इण ऊपरां नित री सेवा। सास-ससुर री सेवा ए चावै -म्हे इणारे परिवार ने पाळूं। हुयसकै बाळपणे सूं ई तकलीफ हुवैला, अबै 'ऊथळो' खायो। जब ई जल्द ब्याव कर 'दगौ' दियो। कोरे रंग-रूप सूं कांई हुवै म्हने साब भोळा लागै। अलेखूं बार कह्यो पण कोई बात माने कोनी। म्हने ई नी ओळखे! जद दिन किण कर् निकालणा? बा इणी भांत सोच्या मां ने बात कीनी।

दवाई सूं पइसै भर ई फरक नी लागे, थन? मां उतावळी में पूछ्यो।

ना! फरक कांई म्हने तो मामलो पुराणो लागै। पैली साच बतायो कोनी। नींतर दवाई सूं याददाश्ती आय जावणी चाहीजै। डॉक्टर खुद कह्यो।

थारी सासू कांई केवे?

वा तो जाणे रोटी सूं मजूर मूंघो कोनी। सेवा कर। नौकरी कर। धंधो कर।

क्यूं रोटी देवतां ई जोर पड़ै! माँ तपती बोली।

लागै ओ ई। खुद दिन भर 'बेटा-बेटा' कर् पुचकारे जाणे राज नी खुल जावै। म्हारा सूं कोसां आघा राखै। नूवो टक्को देवै नी, टाबर गुल्फी सारु ई मूंडो उतारे। कैवे-थारो पगफेरो खराब।

कांई बात करै!

उणा ने केय क् म्हारे पगफेरे सूं बच्चो है नींतर जावतो तीजी लेण में, जिकौ रोवती। पैली सूं डाफ़ाचूक् हुयोड़ा ने परणायो ई क्यूं! मन सूं तो चाने चोरी कोनी। झूठ बोल'र दूजां ने दैण दीनी। नौकरी करै, उण परीक्षा में पास हुयोडो, उण रो इंटरव्यू दियोडो! कोरो कूड़!

घणखरी बार तो केवे-थारे घरधणी रो इजाल कराबूं क् थारा नखरा पूरा करूं! धिन्न है उणांनै जिकौ निपूती ई हुयां सासरै बैठी रैवे। दौड़ ने पीहर गया, घोड़े अर असवार दोन्यूं री घटे। सोचू पीहर जाबूं तो दुख-सुख री बात करूं तो जीव हलकों पड़े।

मम्मी! म्हें तो इणा रा डोकुमेंट देख्या। दसवीं में सप्लीमेंटरी। बारवी में थर्ड़ डिवीजन अर बी.ए. पांच बरसां में कीनी! ए भण्या।

तो उणांने साफ कैय दे क् महीने रा दस हजार देवणा पडैला। चावे हंसता देवो, चावै रोवता। सेवा-चाकरी हुवैला तो करुंला, कोई कैय नी सकै। चट मंगनी-पट ब्याव कीनो तो भुगतो। नौकरी नी करुंला। साफ धोबी रै घर रौ ना दे दीजै। माँ कान भर्या।

एकण बार थूं ई कैय ताकि वै जाणे मिली-कोई माथा माथै री। नींतर वै तो आँपा ने डफोल ई जाणे।

हाँ। म्हें कैवूं। म्हने किणी धन्तर जी री डर नी आवै। केबतां फोन कर्यो-हेलो। जंवाई सा रै ठींक नी रेवै तो भोपे आद ने पूछावौ। किणी कांई कर् दियो हुवै। आजकाले मिनख ने भलो नी सुहावै। आदमी रै लारै लुगाई री इज्जत। आप खुद जाणो।

ओ तो म्हें ई जाणू। आप करतां म्हारे पीड़ ज्यादा। म्हें नव महीनां भारां मरी। इणी कारणे रात-दिन पगां ऊभी। पूरौ ध्यान राखूं। रही बात भोपा-भरडां, थांन आद माथै विश्वास नीं करूं। दवाई सूं खूब ठीक लागै।

म्हने तो कांई सुधार नहीं लागै! खुद री मां ने डाकण कुण कैवे। बस आ बात है। म्हें तो कैवूं एकण बार दिखावतां ने कांई लाख-करोड़ तो जावै नी! म्हारै उणां ने ई आखर थान लेयग्या तो उण साफ कह्यो-मामलो बिगड्या कांई हुवै, वगत माथै लावता तो ठीक हुय जावता।

थै! खूब फिरया। भाटे जितरा देव करयां, बच्चा तो नीं। उणा तंज कस्यो।

ओ तो आप ई जाणो क् विधाता जितरी उम्र भरै, उतरो ई जीवै। एक पल ई कमी-बेशी! किणी रै हाथ नीं।

आ ई बात है क् ऊभी रौ इलाज है। इण ऊपरां औलाद किणी ने खारी नीं लागै।

पण वौ कमावै नीं! जद भलां भलां ने नी सुहावै। इण ऊपरां लुगाई रै दिन निकालणा भारी। म्हें बैठी उठै तांई रोटी री कती आवेला नीं। इण ऊपरा म्हें तो अलेखूं बार कैय दियो-कोई नैनी-मोटी नौकरी कर ले। आम्बा रा आम्बा अर गुठलियां रा दामा। हाथ खर्ची निकले अर मन ई लागै। पण माने नीं! त्रिया-हठ।

म्हारी बेटी थारै उठै नौकरी करै जद धूड़ बेटे में। लुगाई री कमाई री आस करै वै कांई मूंछाळा! म्हें तो उणा ने नाजोगा जाणू।

आप जाणता हुवोला। म्हें तो जाणू कोई कमावो। आखर दोनूं हाथ भेळा धूपै। इण ऊपरां वगत, बैरी हुयौ नींतर आ नौबत क्यूं आवती। लार्लै दस बरसा सूं कोई शिकायत नीं।

वा रैवण दो। बेटे माथै इतरौ गुमेज मत करो। कांई कमावतो? चिड़िया सूं चाना खेत कोनी। थाप देय'र मूंडो रातो राखती, म्हारी छोरी। दूजी हुवती तो कदैई जावती, जिकौ बहू रा सुपना ई आवता।

मूंडे सूं संभळ'र बोलो।

साचो केवे जद माँ ई माथे में देवै। कोरो कूड बोल'र परणाय दियो। छोरी कैवे-मास्टर कतई नी। चपड़ासी हुवैला जद ई घण्टे भर पैली जावै अर घंटे भर बाद में आवै। आपां ने मास्टर रो केय'र ठग लिया। दिमाग चिटक्योडो लागै जद ई स्कूलवाला निकाल्यो! ओ जाण क् कठै ई लेणे रा देणा नीं पड़ जावै। खोटो सिक्को कुण संभाले।

म्हारे घर रही पंचायती करण री जरूरत नीं। पगां बळती देखो, डूंगर बळती नीं। थांरी छोरी ई कोई कम कोनी। आधो डीळ दाय नीं आवै। ओ तो म्हारो छोरो हुवै अर पाले। नींतर कदैई माळी पाना उतारतां आयी उण मारगिये रवाना करतो तो मर्तई अकळ ठिकाणे आय जावती। घर धणी री कोई इज्जत नीं। बात-बात माथे फिटकारै! एहडी म्हारै छोरे थने चाने, उठाय'र लायी कोनी। आखर केवे-बेटो बण खाय सकै, बाप बण'र नीं। पण आ तो सगळा री जाणे दादी। नीं बोलतां ध्यान राखै, नीं बेठतां! सासू ई किणी री रीस किणी माथै निकाली।

वा। वा। रेवण दो। म्हारी बेटी तो लाखों में एक है। इण हीरे री तो होड ई नहीं। म्हें ई बातां में आय हीरे ने भाटे सूं भचीडियो। नींतर अलेखूं घर-आंगणा कीना था। करम रख। गेले संग बंधगी!

गैळो अर भाटो केवण री जरुरत नीं। मूंडे सू खावो ज्यूं मत बोलो।

साचो केवे जद माँ ई माथा में देवण री रीत। पण म्हें कांई पूरी दुनिया केवै-सांकळ बांधे जिसो। लारलै दस बरसां सूं म्हारी लाडळी गिण-गिण दिन निकाले।

वौ तो उण ने पूछो-गिण-गिण दिन काले कू केला किचरै?

थारे कह्या कांई हुवै! गुरुजी धूणी तापो क् नेला जीव जाणे। केवतां फोन काट्यो अर लगतौ ई बेटी ने फोन खड़खड़ायो-म्हें आज थारी सासू ने खूब खरी-खरी सुणाय।

कांई कह्यो-डोकरी!

वा कांई बोले। चोर रा पग ई कितरा।

कांई नीं बोली!

केवे थे मिनखा री बाता में मत आवो। छोरे रै रात-दिन रौ फरक है। खुद आय'र देखो।

म्हें तो ज्यूं वा बोले फैरू पाछी कैबूं तो चुप। जाणे मूंडे कवो दियो।

फोन आया, सासू अर बहू एक दूजै ने कातर निजरा सूं देखै।

एक दिन औरुं फोन कर बेटी ने कह्यो-बेटा! दुख मत देखजे। ज्यादा सात-पांच करे तो इशारो कीजै, लेवण ने आय जावुंला। मतैई अकळ ठिकाणे आवैला। म्हें तो उण ने ई साफ कह्यो क् थूं जाणजे मत केय -इण रे बाप कोनी। कठै जावैला? दुख दिया ई पड़ी रेवेला। ना। म्हें तो आ जाणुला क् दोय री ठौड़ तीन छोरा। रोटी मिल ई जावैला। पण ताना सहन करे, जिसी म्हारी छोरी नीं।

हाँ। केवतां फोन काट्यो स्यात सासू सुणती।

भींता रै ई कान हुवै, केवत। सासू सुणयो अर पारो चढ्यो। थारी माँ ने कय दीजै क् घर भंगावण रा कारज छोड देवे। आइंदा सू कदेई म्हारै बेटे री हल्की बात कीनी तो म्हारै जिसो 'भूंडो'नीं हुवैला। थारै सात पीढ़ियों ने जाणू।

छोरी ने पीहर री बात तीर री भांत लागी। उण माँ रा कान भरया-उण दिन सूं तो सासू लारां ई लागी। रात-दिन ताना।

तो म्हें काले-परसूं आवूं। आ सेवा आ, ई हेवा। खुद रोटी सेक खावैला, घर रा सगळा कांम करयां नानी याद आवैला।

माँ। दूजै-तीजै दिन, देवर ने लेय'र गयी अर बिणा किणी तरिया बोल्यां-चुपचाप बेटी ने लेय'र रवाने।

सासू देखती रही। ओ कांई! खिळकौ! पति देखतौ-पत्नी दोन्यूं टाबरां ने लेय'र जावतां पूठ ई नहीं फेरी! वौ लगतौ दवाई री गैळ में कांई बोल नी सक्यो फ़गत टुगर-टुगर देखतौ!

घरां आयां मम्मी कह्यो-घणी तकलीफ हुवै तो अठे रैय जा। ऊपर वाळो चोंच देवै तो चुग्गो देवैला।

मम्मी! वै नीं बोले! हंसणो-मुळकणो तो जाणे भूल ई गया! फ़गत बैठ्या रेवै, सोया रेवै! आ दशा देख जीव कळपै! वै नीं कमावै तो म्हने मौसा मारे क् थारो पगफेरो! इण ऊपरां नौकरी कर। कमा। म्हें कठै जावूं? काले मिनख म्हारे सामी आंगली करे तो कूवो-वाव बूरणो पड़े।

थूक ले। मूंउे सूं। देय दिनां सूं दौडया लेवण ने आवैला। आखर रोटी रै बदले मिनख कठै? हाँ। वै तो म्हने मजूर ई जाणे। दिन भर ऊंची, आंख नीं करण देवै! इण भांत किण कर जीवणो!

माँ-बेटी। दिनभर इण भांत री गुटूर-गूं करती रेबै अर दिन जावै।

दोय-तीन महीनां हुयां नीं वै आवे, नीं ए समाचार करै!

म्हें क्यूं लेवण ने जावूं? म्हें कद भेजी! म्हने तो रवाने हुवती पूछने ई कोनी!

कांई बात करै! आगळी दांतां आंगळी

देवतां कैवती-'एहडी कांई राजा री बेटी है? सास तो सास ई रेवेला, कोई पाणी री धोयी उतरण सूं रही! म्हें तो कैवूं-सोने री कटार, पेट में खावण ने नहीं हुवै।'

नित नूवी बातां काना पडै तो माँ साफ कैवे-म्हें जीवती, उठा तांई तिल-तिल नीं मरण देवूंला। नीं पोंछवण ने जाबूंला। लेवण ने आयग्या तो दोय मिनख भेला कर 'लिखत' करवाय'भेजूंला जद ठा पड़ैला क् मिळी कोई माथा माथैळी।

दोन्यू रै बीचे खेंचळ। वा जाणे म्हं टणकी अर वा जाणे म्हूं।

इणी बीचै 'तलाक'बोळ उपज्यो। झगडे री जड़ खत्म करण सारू। वकील रै मारफत नोटिस जारी करवाय'र अणूती राजी! जाणे गढ़ जीत्यो।

ओ कांई! नीच विचार। ससुर जी सोफे माथै बैठ्या-बैठ्या बोल्या।

यूं म्हें इण ने छट्ठी रो दूध याद नीं दिलाऊं तो म्हारी माँ री सौगंध, केवतां आछै वकील सूं सलाह लेवतां ईंट रो ऊथळो भाटे सूं दियो।

पेशियां माथै पेशिया शुरू। वकीलां रै तो पोटो पड़ै तो धूड लेय उठै, वाळी गत।

दायजौ पाछो पोंछवण री हिदायत।

आखर खुद कमावेला जद धाकौ धिकेला। इण सूं राजी हुवै तो धोला में धूड़ तो नीं पड़ै। पेशियां माथै फिरतां लुगाई ने सरम नीं आवै पण अठे तो मूंडो छिपावणो पड़ै। ससुर जी फैरूं बड़बड़ावै।

तलाक रौ सुपनो आवै तो ई खोटो। मर जावूंला पण तलाक नीं हुवण देवूंला। हाँ! थारै पीहर बैठी रैय पण म्हारै छोरे रै बैठ्यां दूजौ घर मांडै तो म्हने ढाकणी में नाक डुबोवणो पड़ैला! कैवतां वा बूक्या ताणे।

बहू री बात सुण डोकरो ढाढस बधावे-कुण लैय जावै, खोटे सिक्के ने! बाकी आज तांई तलाक हुयौडी ने कोई लेयग्यो? ना। कोई हजारू में एक-आध री हुयी तो वौ ई अधूरियो इ हूवैला। कैवे ई घाणी सूं खळ उतरी हुयी वलीता जोग।

हुं। आ तो यूं ई हाथ हाथ कूदे। बाकी गलो बैठ्योडी अर दोय-दोय टाबरां री माँ। अधबूढ़ ने लेय जाय, लेय जाय, मिनख हंसे। ओ कारज फ़गत कुंवारपणो उतारणो, हुय सकै। सासू साफ केवती।

गिण्या दिनां सूं देखजे-दौड़ी आवेला। च्यार दिनां रा चटका-मटका। छोरी! किणी रे घरां आज तांई खटी है? जद घरां बहू आवेला।

कठै पड़ी बहू? घरे बेटी, बैठी हुवै, जद बटटो लागै। कुण देवे।

म्हने विश्वास है, पाणी। पाणी रे ढाळ उतरै। नणद तो नख जितरी ई खोटी।

वै दोन्यूं इणी भांत रै विचारों में।

सोचतां-सोचतां च्यार बरस हुयग्या। ज्यूं भींजै त्यूं भारी। मिनखां रै तो परायो झगड़ो ब्याव जिसौ। कोई उणांरी गलती निकाले तो कोई इणा री। दुनिया तो ठेठ सूं घोड़े चढ्यां ने केवती आयी अर पाळं चालते ने ई।

आज लगतौ फैसलो हुय जावैला। च्यार साल हुयग्या! सांड बाळो होठ! दोन्यूं पेशियां सूं तंग हुवतां मन ई मन सोचता। हाल कितरो लांबौ अर चौडो हुवैला! निवेडो हुवै तो ठाह पड़ै कुण जीत्यो, कुण हारयो।

वै दोन्यूं आज फैसलो सुणण ने आकता। जज दोन्यूं वकीलां री बात अर बहस सुण केवण लागा-थे दोन्यू भण्या-गुण्या। दोन्यूं चालीस पार। फैरूं सोच लेवो-आ भारतीय संस्कृति...। देव संस्कृति...। पूरे विश्व में इण भांत री संस्कृति कठै ई नीं। अठे माँ रे पेट से हुवतां ई जे सगपण हुय जावै तो टाबर निभावै! चावै कालो, गंगो, हवो चावै लूळो-लंगडो। ओ हुवै-मिनखपणो।

साच मानो म्हारो खुद रो ब्याव बाळपणे हुयोडो। घरवाळी अगुठा छाप अर म्हें? म्हें आपरै सामी। पण, कदेई खट-पट रौ काम नीं। खुद धीरे धीरे पढ़ाय'र बी.ए. करवायी। ओ हुवै घर। ओ हुवै प्रेम।

पूरे भारत देश में कठै ई तलाक बाल नीं। शब्द कोश में ई नीं। ओ शब्द आयो-आथूणी संस्कृति सूं। उठै मिनख, मिनख नीं! सिर्फ जीव जाणीजे। इणी कारणे वै दिन रा ब्याव करे अर सिंझ्या तांई किणी दूजै संग दिखै।

दोन्यूं दाखळा थारे सामी। म्हें कैबूं-फैरुं ठण्डे दिमाग सूं सोचो। हाल काचा मूंगा रो काई नीं बिगड्यो। साज-मांद आवती-जावती रेवै। किणी-किणी रै तो चँवरी में ई हार्ट आवै पण वा बैठी रेवै। नारी रो धर्म-लाज मानीजै। वा एक पुरुष ने अपनाया पछै दूजै सामी आंख नीं करे। वा देवी। थै तो दस बरस साथै रह्या। परणीजण पैली ई बीसं बार एक-दूजै ने देख्या। परख्या। दोय टाबर अर तलाक! म्हारा हाथ, साइन करतां धूजै!

फैसलो सुरक्षित राखूं। फैरु सोचण रो वगत देबूं। नेहचे सूं सोचजो। तलाक वाळी संस्कृति बरबाद कर देवै। पछै हाथ मलां। नीं कोई लेय जावै नीं कोई देवै। ओ पक्को जाणो, म्हें कह्यां वौ लोह री लकीर। साइन पछै?कोई कारी नहीं लागैला।

घरां आय'र वा सोचण लागी। सोचण लागी। जाणे जज सा री बातां कान में टेप हुयी हुवै। भारतीय संस्कृति! देव संस्कृति! पछै पछताबौ! सोचो। ओरु सोचो। हाल काचा मूंगा रो कांई नीं बिगड्यों बोल रैय-रैय कानां पडै।

पूरी रात पसवाडो फेरतां, प्रभातियौ उग्यो। वा टैक्सी लियां सीधी सासरै! माँ। खाळी खाट देखतां जाणगी क् जज रै जादू रो असर।

वा सासू रै पगां लागी तो सासू माँ आसीस देवतां बोली-देर आयद। दुरुस्त आयद घर धणी ने देख'र मुळली तो उण री याददाश्त आयकी, जाणे जज रो चमत्कार!

दूजै दिन दोन्यूं जज खनै पूग्या अर कह्यो आप डूबते ने बचाय लिया जाणे साक्षात देवता ई। आप सद्बुद्धि दीनी अर उजडतौ घर बसग्यो। तलाक।ना।ना। म्हाणो समझौता वाळो कागज वकील सा सूं बणावौ, शुभ वेळा में।

जज सा। देखता रह्या। सही सलाह। सही समझावण वाळा हुवै तो अलेखूं घर टूटता, बच सकै। फ़गत चाहीजै मसाणियौ वैराग। रोकण वाळो।

वकील कागज बणवतां साइन करावतौ तो जज सा एकटकी लगायां दोन्यूं रा चेहरा बांचता-अणुती खुशी साफ झलकती। वै फैरुं सोचतां-पैली री 'केवतां' हजारूं माथै आजमाइश कियोडी- दोय लुगाइयां भेळी हुवै तो किणी रौ घर उजाड़ देवै अर दोय आदमी भेळा हुवै तो घर बसा लेवै। गवाही रै रूप में दोन्यूं माडतां ने साइन करता देख न्यायधीश काठो माथौ झेल्यो! वै ई राजी-राजी दीखतां....।

ग्राम पंचायत-खण्डप, जिला-बाड़मेर (राज.)

शिक्षा रा डग भरतौ राजस्थान

❐ अशोक कुमार व्यास

शिक्षा मानव सभ्यता रौ उजलो.पख। इण रै पाण मानव आपरै जीवन ने घणौ ऊंचो उठायो है अर विकास री पांख्यां सूं सातूं गिगनां री टोखी माथे बैठो दूजा खगोलीय पिंडां माथे बसणे री बिसात मांड रह्यौ है। भूमंडलीकरण अर बाजारवाद री भाजानासी री आज री जांतरिकता चौतरफा विकास री होड़ाहोड़ी लौ एक ही आधार है अर वौ है शिक्षा अर उण रै मांय तकनीकी ग्यान रौ समावेस।

धोरा -धरती रौ ओ क्षेत्र भारत रौ सब सूं बडो राज्य है अर आज शिक्षा के क्षेत्र मांय राजस्थान बाण बगतौ ही जा रियो है। एक बगत अठै भण्या- गुणया डिग्रीधारी आंगळयां माथे गिणीजता अर वै भी दूर दिसावर री नामी पोसाला, विश्वविद्यालयां मांय भणणवाल। अठै मारजावां री पोशाला ही जकां में मालनी, बारखड़ी गिणती, सवाया डोडा रा पाढा बोलीजता सुणीजता । सरकारी स्कूलां गिणती री ही अर वां में घणे दूरदराज सूं पढेसरी फोड़ा देख'र आंवता।

आज म्हारै राजस्थान मांय शिक्षा रो दरसाव घणों मोटो अर भांत भांतिलौ है। फगत सरकारी स्कूली शिक्षा री बात करां तो राजस्थान मांय 69000 सूं बेसी राजकीय विद्यालय है अर आं मांय 94 लाख सूं बेसी विद्यार्थी ऊजलै भविस री भणाई कर रैया है। आं राजकीय विद्यालय में 429000सूं बेसी शिक्षक ज्ञान गंगा रे इमरत सूं बढ़ते राजस्थान रो नवनिर्माण कर रैया है।

आज प्राथमिक शिक्षा सूं लेयर उच्च माध्यमिक शिक्षा तांई नवाचार अर तकनीक रा पगोंथिया सूं राजस्थान रा कूंकूं पगलिया बढ़ रैया है। लारलां दो बरस सगलो विश्व महामारी रे काळे अंधारे मांय हो उण बगत भी राजस्थान रै घर-घर मांय 'स्माइल' 'शिक्षा वाणी' अर 'शिक्षा दर्शन' रै मार्फत ग्यान रो परगास पूगतो हो। अर आज भी टाबरा रै स्तर अर मनगत रै सागै सीखणै रै मनोवैज्ञानिक सिद्धांतां रै मुजब चित्र बणा'र लै'र कक्षावां, गतिविधियां, क्रियावां आद करगै सीखणै री वैग्यानिक विधियां सूं हवामै'ल जैड़ी सनिवारीय मनभावणी कहाण्यां कवितावां सूं लारलै आगलै पाठां अर शिक्षण बिंदुआं नै जोड़ण आळी रचनावां सूं लबरेज विसै वस्तु टाबरां तणी पुग रैयी है।

'स्माइल' अर 'मिशनज्ञान' जैड़ा नवाचारां सूं अर घणकरा गुरुजी आपरा खुदरा नवाचारां तकनीक रौ सायरो लेयर सोशल मीडिया रै धरातळ सूं शिक्षा रै स्तर नै बणाएं राखण अर उण सूं जुड़ाव खातिर कोरोनाकाल अर उण रै बाद भी परयास अजै तांई जारी है। प्राथमिक शिक्षा सूं लेयर 12वीं तांई रै भणणिया खातर भांत भांत रै नवाचारां सूं अधिगम रे नुकसान री भरपाई हुय रैयी है। ओ हीज कारण है कि लगोलग सरकारी विद्यालयां मांय विद्यार्थियां री संख्या नई ऊंचाई माथै है।

जे नींव काठी मजबूत हुवै तौ इमारत घणी सबळाई सूं खड़ी रैवे। वा आकासां चवै। प्राथमिक शिक्षा री अनवरतता अर गुणवत्ता खातर आज मायड़ भासा मांय भणेसरी रै ग्यान रै स्तर अर सबदां सूं उणनै जोड़न री कसरत हुय री है। 'अ' सूं 'अनार' री ठौड़ 'आकड़ौ' घणों बेगो समझ आवै। मायड़ भासा रै सायरै सूं प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता आसी। एफ एल एन री गतिविधियां सूं शिक्षा के मूल ने गैराई मिलेला अर फूल फाल भी उभरते राजस्थान रे रूप माय निगै आवेला।

शिक्षा ने पेट सूं जोड़न खातर आज राजकीय विद्यालयां मांय कक्षा 9वीं सूं ही व्यावसायिक शिक्षा रा पाठ्यक्रम अर शिक्षण पद्धति चालू हुय चुकी है। स्वास्थ्य सुरक्षा, कंप्यूटर, भोजन अर पोषण, चित्रकला, ललित कला आद विसयां रै मारफत नूवै बढ़ते राजस्थान री संकळपना पूरी हुवैला।

शिक्षा रै बदळते परिवेस अर वैग्यानिक, मनोवैग्यानिक तकनीकी प्रयोगां रै बढ़ते परभाव मुजब विद्यार्थियां सारू गुरुजी खातर भांत भांत रा उन्नयन अर नूवी जाणकारी रा कार्यक्रम चाल रैया है। हर एक शिक्षक खुदनै नूई पीढ़ी अर पाठ्यक्रमसारू 'दीक्षा' 'निष्ठा' 'एस आई क्यू ई' एस आई ई आर टी अर डायट रै सैंयोग सूं अद्यतन कर रैया है।

शिक्षा रै आं बढ़ता कदमां री गति अर विद्यालयां मांय टाबरां रै चै'रा माथे खिलखिलावती हंसी सीखण सारू वांरौ उंतावळोपण देख पणां सै'ज विश्वास कर सकां कै म्हारो राजस्थान! पढतौ राजस्थान! डग भरतौ राजस्थान है। बढ़तौ राजस्थान है।

व्याख्याता
सेठ भैरू दान चोपड़ा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगाशहर, बीकानेर
मो: 9079756963

भणाई नो मोतियो

❐ विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'

काले म्हूँ लैम्प्स मांय यूरिया खातर लेवा ग्यो हतो। पइसा जमा करवा पूठे रसीद आलते जाईनै लैम्प्स अधिकारी'अे आवाज लगाड़ी। 'छगन आणं मास्साब ने फक बोरी खातर मैनी आल।'

म्हूँ मोटरसाइकिल लईनै गोदाम आड़े ग्यो। म्हने घणू ताज्जुब थ्यू के छगन बीजो कोय न्हें म्हारे साथै भणेलो म्हारो गोठियो हतो।

''अरे छगन! तू आंय कार नो काम करे?'' म्हे दाँत काड़ते जाई नै क्यु। ''म्हने आंय च्यार बरस थई ग्य!'' अेणे पण दाँत काड़वा नीं कोसिस करी। 'पगार ऊपर काम करे के...?''

कैवो पगार-आमै कैया तमारे परते सरकारी हं के पगार मले! आंय तो जैटली बोरिये तोको अेटला पइसा मले। ''छगन मजाक ना मूड़ मांय आवी ग्यो''।

''दाड़ै बहैक (दो सौ) रुपया तो मली जंय के न्है?''

''भाई अमारे वाघ वारी रूजी है। दाड़ो पादरो व्हे तो तणसौ अे मली जय.. न्हें जो वाकी पड़ी तो ही (सौ) नुअे काठू! हुं करं..भण्या न्है' छगन ना मुड़ा माथै न्हें भणवा नी पीड़ा साबुत दैखाई रई हती।

छगन नीं आणी वात थकी म्हनैं अमारै इस्कूल ना दाड़ा याद आवी ग्या। खाबा नी छुट्टी मांय छगन बे-च्यार गोठिया साथै करी इस्कूल थकी बस्तो लई'नै बूरं खावा नौकरी जाते के पछे गोमणा खावा आम्बं तारै फरतो हैंडतो। भणाई नू ध्यान न्हैं राख्यू...तो फैल थई ग्यो। अेना साथैज अेनी इस्कूल छूटी गई।

''हुं सोचवा लागा भाई'' छगन नी आवाज अे म्हारु ध्यान तोड़यु।

''कांय न्हे...छगन म्हनै आपड़े इस्कूल ना दाड़ा याद आवी ग्या तने कांय याद है के न्है?''

अेणे मुडू पलकावते जाई नै क्यु ''म्हनै सब याद है...पण ई गलती म्हूँ अबै हुदारी रियो हूँ।'' म्हनै ताज्जुब थ्यू नानपण नी गलती अवै हरतै हुदरै।

म्हूँ कोय घुलतो अटला प्हैलज ई कैवा लागो ''म्हूँ न्हैं भण्यो आ गलती म्हूँ म्हारं छोरं भणावी ने हुदारी रियो हूँ।''

अेने मुडा माथै अवै न्हैं भणवा नी पीड़ा ने जगा भणाई नो मोतियो आवी ग्यो हतो।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रैयाना, ब्लॉक अरथूना, बाँसवाड़ा (राज.)-327034
मो: 9928699344

चोर री रूखाळी

❒ रामजीलाल घोड़ेला

बा त जूनी है। उण बगत लोग नरमा-कपास री खेती करया करता। नहर अर कुआं रो पाणी नरमा-कपास री फसल वास्तै चौखो हुवै। इन्द्र भगवान री मेहर सूं छांटो छिड़को भी हुय जावतो। जमीन उपजाउ ही। नोपो, पेमो अर खेतो गांव रा मौजीज आदमी। गांव रा गरीब, मजदूर, कारु लोग इणा रै खेतां मांय दिहाड़ी, मजदूरी कर'र परिवार रो गाडो गुड़कावता। गांव मांय सुख-चैन। उण दिना बाजार मायं जावण रा साधन कमती हा अर बाजार तो पन्द्रह-बीसेक दिनां सूं आवणो जावणो हुंवतो। टी वी, फोन तो दूर री बात हुवंती। बिजळी भी दसेक घरां मांय लाग्योड़ी। बाकी घरां मांय लालटेन या तेल रा दीया चसता।

कार्तिक रै महीनै मायं नरमै-कपास री फसल पूरै जोबन पर। नरमो इतो खिड़यो कै सगळौ खेत धोळो हुयगो। चांदणी रात मायं तो नजारो गजब कै भगवान खेत मायं धोळी चारदर बिछा दी हुवै। च्यारुं कानी स्मृद्धि पसरयोड़ी। उण बगत नरमा-कपास रा भाव भी सावळ हा। खरचो बावड़ जावंतो। आज री तरयां घणी स्प्रै नी करणी पड़ती। रसायनिक खादा रो प्रयोग कमती हुवंतो। फसल चौखी हुवै अर भाव ठीक हुवै तो करसो फायदै मायं रेवै। गांव मायं संगळां रो आछो मेल जोल। दुःख-तकलीफ मायं अेक दूजै रो साथ देंवता। आज री तरयां अेकलखोरिया लोग नी हा। भैळप मांय ई सुख-चैन हुवै।

उण दिनां कदै-कदास नरमो-कपास चोरी री घटना हुय जावंती। बा भी गांव में नी, खेतां मांय। केई चोरड़ा नरमै-कपास नै चुग 'र लै जावंता, अर बाजार मांय बेच देवंता। कोई चेार पकड़ीज जावंतो तो बस फर तो पूछो ही ना। उण साथै इती कुता खाणी हुवंती, बो इतो कुटीजतो कै सात जनमां मांय चोरी नी करतो। आज चांदनी रात ही। चांद आपरै पूरै जोबन पर। नोपो, पेमो अर खेतो उमर मांय 40-45 रै लगैटगै। नोपो, पेमो अर खेती रोजीना री तरयां रात नै दसेक बजै हाथ मांय डांग्यां लेयं 'र नरमै-कपास री रुखाळी वास्तै व्हीर हुया। खेत घर सूं

दो- तीनेक मुरब्बा दूर हो। इण वास्तै पन्द्रह-बीसेक मिन्ट ही लागता। आज उणां नै वहम हुयो कै चांदनी रात नै चोरड़ा फायदो उठा सकै। तीनू जणां पक्का सुगनी लागै। उण तीनां रा खेत अेक दूजै सूं थोड़ा थोड़ा अळगा हा। पैला पेमै रो खेत हो। उणां च्यारुं मेर खेत री सींव सींव अेक गेड़ो मारयो। तीनूं जणा थोड़ी-थोड़ी दूरी पर चुप चाप चालै हा। निजर धोळै हुयड़ै खेत कानी। तीनूं जणा खाळै रै नाकै कनै बैठ गया। दस-पन्द्रह मिन्ट चुप चाप बैठया रैया। नरमो पांच छः फुट तांई बध्यौड़ो। फिरतो मिनख भी नी दीखै। सगळौ खेत धोळो चट। थोड़ी देर पछै उणां नै नरमै मांय खूसर-फूसर सुणीजी। उण तीनां रा कान खड़या हुयग्या उणां भरोसो हुयो के आज चौरड़ा खेत मायं बड़ग्या लागै। दिन छिपतां ही चौरड़ा खेता रै नैड़े पूगग्या हा। अबै तीनूं जणां योजना बणायी कै आनै किया पकड़ा। चौरड़ा किया है ठाह कोनी चालै हो। उणां अेक अेक नै पकड़नै री योजना बणाई। पैलां उणां अेक चौरड़ा ने घेर लियो। चौरड़ा भी थोड़ी-थोड़ी दूरी पर नरमो चुनै हा। उणां री भी गजब री अेकता। नरमे मांरा जढ खड़यो निसा नी दीखै तो बैठयो कठे दी छासी।

उणां अेक चौरड़ा नै घेरयो अण उप रै अंक गिहै पर खेत डांग सरकाईन चौरड़ो पड़ से अर पड़ता ई वोक्या ''औ रे मार दिया रे। बाकी तीनू चौरड़ा भी सावचेत हुयग्या। वै नरमो मांरा गुढ़ालियां हुय रे खेत सूं बारै जा निकळया। बंठै सूं भाग छूटया। जको चौरड़ो पकड़ज्यो हो उण रै सगळा दो-दो, तीन-तीन रैफट जई दीनां। उणनै पकड़ 'र खाळै कनै लै आया। उण बतायो कै बै तीन जगा है। पेमो डांग लेय' र चौरड़े री रुखाळी करै हो। चौरड़ो खाळै मांय भैळो हरा र बैठयो हो। नोपो अर धनो दूजा चौरड़ा कानी दौड़या। पण वै दोनूं चौरड़ा तो पैलां ई 'ज भागग्या हा। वै कठई दूजी जिग्यां लुकग्या हा। बै आपरी झोळयां भी खोल 'र छोड़ग्या हा। उणां पैलां सूं ही 15-20 किलो नरमो चुग राख्यो हो। किकर 'नीचै भैळो कर राखयो हो। जको चौरड़ो पकड़ीज्यो हो उण भी झोळी मांड राखी ही, उण मायं 8-10 किलो नरमो हो। चौरड़ा भी तगड़ा मक्कू होवंता। जकै चौरड़ै री पेमो रुखाळी करै हो, उण झोळी मांय दो-तीन फुट रो अेक इण्डो घाल राख्यो हो। चौरड़ो पांच-सातेक मिन्ट तो छाप्ळयौड़ो बैठयो रैयो। पेमो रुखाळी तो करै हो पण कदैई उण रो ध्यान ईनै बिनै हुय जावंतो। पेमै नै भरोसो हो कै चौरड़ो तो काबू आयड़ो है ही। इणरी गुवाड़ मांय बात करस्यां। सगळा नै मुफत रो धन भावै। चौरड़ै री निजर पेमै कानी ही। उवो सोचै हो कै गांव मांय लैजायां पछै पूरो गांव कुटाई करसी, अधमरयो कर देसी अर पुलिस नै पकड़वा देसी।

उण चोर आपरी झोळी मांय सूं डण्डो काढ़यो अर काठो पकड़' र फुरती सूं पेमै रै पटपड़ै पर मास्यो। अर दड़ाछंट दौड़ गयो। पेमै रै पटपड़ै पर पड़तां ही बो कोझी तरया अरड़ायो- ''अरै मावड़ी रै, मार दीयो रै।'' पेमो नीचै पड़ग्यो। अर पटपड़ै नै पंपोळण लागग्यो। खैते अर नोपै नै पेमे री चिरलाहट सुणीजी। उणां सौच्यो कै चौरड़ो पेमै रै मारग्यो लागै। पैलां तो दोनूं जणा चौरड़ा लारै न्हासा हा, पण अब पेमै कानी न्हास्या। इतै मांय पेमो आपरी पटपड़ी पंपोळतो उठ बैठयो हो। उणां सोच्यो कै चौरड़ा तो गजब निकळया। पकड़ीज्यौड़ो चोर हाथां सूं निकळग्यो।

चन्द्र साहित्य प्रकाशन, लूणकरनसर,
बीकानेर, (राज.)-334603
मो: 9414273575

मांगू बाबो

❑ डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत

मांगू बाबो कहतो आदमी को करम बडौ छै। समाज म जात-बिरादरी म भी आदमी आपका करमा सैं ही चोखा लागै छै। इंसान की पूछ बीकां गुणां सैं ही होवै छै। मांगू बाबो आपका मोट्यार पणां म भौत परेश्यान छो बीनै कोई रुजगार कौनै मिल रह्यो छो फैर बो अपनो कोई रुजगार शुरू कर्‌यो जीसै बीका घर में आनन्द ही आनन्द होगो छो। एक कूँचा का पौधा म रुजगार की तलाश कर ली।

मांगू बाबो नाँगल जैसा बोहरा को रहबाळो छो कच्चा घरां कै छान्यां बाँधबा को काम करै छो। पहली गाँवां में लोग कच्चा घरा म ही रह्वै छा ज्यांकै कूँचा की पानी की छान्यां बाँधता। एक छान कई बरस चालती पण आसाढ़ का महनां म बरसात आबा सैं पहली बानै संभाळणो पड़ै छै। नई तो चौमासा म छान म सैं टपूकड़ा पड़बा लाग जाय छै। कदै-कदै तो सारी छान ही चूबा लाग जाय छी। लापरवाह लोग चौमासा म च्यार महनां तक परेश्यान ही रह्वै छा क्यूँ की छान्या बाँधबा को काम, बानै सुधारबा को काम बरसात बरस्यां सै पहले ही होवै छो। एक बार मेह आयो तो छान भीज जाय छै फैर पानी सूख कौनै पावै छी। एक बर मेह शुरू होबा कै पाछै बरस्यां ही जाय छो। मेह रुक भी जाय छो तो बादलां की छायां रहती छान्यां कौनै सूखती।

मांगू बाबो अर बी'का साथी संगळी दल-बल की साथ गाँव मौहल्ला म फूर्ती सैं साढ़ का महनां सैं पहली ही टूट्योड़ी छान्यां की नई बाँध देता। बरसात सैं पहली आँधी तूफान आता। छान्यां नै रस्सा सैं खूट्याँ के भाटां का खम्भा सैं मजबूती सैं बाँधणो पड़ै छो। कदै कदै तो आँधी तूफान से पूरी-पूरी छान घर माळै सैं उथल अर धरती माळै उँधी मिहल जायछी। सब लोग देख अर अचम्बो करता। सौ दो सौ आदमी एकठा होर बी छान नै सीधी करता अर सीधी की सीधी बी घर माळै उल्टी मेलता बीका बातां नै रस्सा सैं लोया का तारां सैं, मोटा सण का जेवड़ा सैं बाँधता।

कच्चा घरा की छान्या रहती। हर घर का

बारणां कं छपरो रहतो, बी मै चूल्हो बाळता। साग छूंकता। कदै-कदै साग छूंकती टेम बेगची, भगूनी, कड़ाई भभक जाती अर छपरा म लाय लाग जाय छी। कदै-कदै लुगायां चूल्हो सळगाबा ताणी पूसकां म केरोसन को तेल पटक अर सींक लगाती तो बीसैं भी चूल्हो ही भभक जातो। कन्नै पड्‌यो बळितो सळग जाय छो, अर लाय लाग जाय छी। कदै-कदै तो सारा मोहल्ला का घरां की छान्या म लाय लाग जाय छी। आग बुझा बा को कोई उपाय कौने छो, पाणी भी कूँआ म खींच अर पीवै छा। माटी का धूळा सैं आग बूझा बा की कोशिश करता पण। सबका घर, सामान, गूदड़ा बळ जाता फैर आग बूझा बाळी लारी आती। सब कुछ बळ्‌यां पाछै टन-टन, टन-टन आवाज सुण अर सब तसल्ली लेता भी, अब भगवान आगो। अब तक बळगा ज्यो बळगा अब लारी कौनै बळबा देवैली। लारी आग बूझाती अर सब का मटकां हाण्ड्यां म टंक्या म पाणी भर र जाता। ये सारी बातां खैतो पण रह्यो छो। नया छोरां नै बतातो जा रह्यो छो।

मांगू बाबा को सासरो डूँगराळा गाँव म छो। बण्डै कोई भी जीम्बा को काम हो'तो तो परभाती माई अर मांगू बाबो सब बच्चां नै एकठा कर'र जीम्बा ले जातो। म्हारो काको मनै भी जन्दाड़ै साथ भेज दियो छो। म्है मांगू बाबा की साथ पैदल-पैदल जा रह्या छा। अतरी देर म एक नन्दी आगी ढावां माळै बड़ को पेड़ छो, बी'की छायां म म्हानै बिठा लियो अर सब जणो थ्यावस खाबा लागगा छा। मांगू बाबो पूराणी बातां याद कर कर सुणातो जा रह्यो छो। बेटाओ म्हारो ब्याव होगो छो म सासरे थांकी माई नै लेबा आतो। म्हारै सामनै रुजगार की समस्या छी। कोई चीजां कौनै देता। पीसा भी उधारा कौनै देता। उधारा लियोड़ा नै चूका कौनै पातौ। मांगू बाबो कह रह्यो छो- एक दिन अयां ही म परभाती माई नै लेबा जा रह्यो छो- एक बड़ का पेड़ नीचे बैठ्‌यो छो। म बैठ्‌यो बैठ्‌यो मन म सोच रह्यो छो अब आपां कांई करांला। म्हारै सामनै नन्दी म मोटो सारो कूँचो ऊभो छो। म बीनै देख्या ही गयो। देखतां देखतां मन म विच्यार उमड़बा लाग्या। म्हारा मन म उपाय हाथ लाग्यो म उल्टो आ र। घरां जाऊँला। फैर कूँचां म सैं पानी का पूळां काटूलां। दूसरे दिन मांगू बाबो घरां सैं दाँतळो लेर आयो। पानी का पूळा एकठा कर'बा लाग्यो। एक दिन पानी काटतां-काटतां पानी की हाथां म चीरां भागगी। हाथ खून सैं रंग जाता। मांगू बाबो हाथां माळै रूँखड़ी नचौतो। कपड़ा की लीरा बाँधतो। दर्द नै सहन करतो थोड़ा दिनां पाछै हाथ में आंटण पड़गा अब पैनी पानी को भी हाथां पर असर कौनै होतो।

मांगू बाबो दुखी बेरोजागरां नै आपका साथी बणायो अर सब लोग दिन रात कूँचां सैं पानी काटता, पूळा बाँधता पूला म सैं फल्डा छांटता। पानी न्यारी फल्डा न्यारा। फल्डा म सै मूंज छोलता, मूंज की पीण्ड्या न्यारी। बानै कूटता, बाँकी जेवड्‌या बांटता जूण्यां जेवड़ी सैं छान्या बाँधता, दो बळ की जेवड़ी तीन बळ की जेवड़ी। अब तो कई रस्ता खुलगा रुजगार को विस्तार होगो।

छान्यां बाँधतो, छपरा, छपरी, ढहारा, टाटी, झूँपड़ी। मूंज सैं रस्सा, रस्सी, लाव, लेजू। खाट बणाबो। हिन्दा घालबो, झूला बणाबो। एक कूँचा सैं मांगू बाबो रुजगार शुरू कर्‌यो ज्यो सब लोग अचरज कर्‌या।

प्रधानाचार्य
श्री सर्वेश्वर भवन, नाँगल जैसा बोहरा, झोटवाड़ा,
जयपुर (राज.)-302012
मो: 894683883

मिनखां री माया- रूंखां री छाया

❒ नर सिंह सोढ़ा

बार बार न पाविये नर नारायण देह।
दादू बहुरी न आविये जन्म अमोलख येह।।

संत शिरोमणि दादू आपरी बाणी कथ र मानखे नै चेतायो क मिनख जमारो डोरो घणो मिळै, चौरासी लाख जूणी काट्यां पछै इ मिनख रो खोळियो विरलो इ पा सकै। अेड़ी अणमोळ मिनखा जूण होवतां थकां इ मिनखा पणै रा मिनखां मांय सांसा पड़ै समय रे मुजब मिनख लगोलग अलादो ऊभो दीसै जठै मिनखाचारौ अणो नेडो ई नी भळकै इसो भला मिनख कांई काम रौ जद कै बूढ़िया बातां करै क इण धरती नै सुरग सरीखी बणाणीयो मिनख। इज हा जिकी बातां नै आजूं ताई गीतां मांय इण भांत गाइजै ज्या–

आ तो सुरगां नै सरमावै
ई पर देव रमण नै आवै
धरती धोरां री.....

जद माना क मिनख ई ज आपरी कारीगरी रै किरदार ऊं सगळै संसार नै सुहणो बणायौ धरती नै सेरूप सुरगां दाखळं बणाण खातर घणा ओजका देख्या, के के ई कमणण कर्‌या, जाझा जतन करया, अर उण रै आगळ जगत री जाजम माथै चित सूं सतरंगी चितवम उकेर्‌या जिण रा दाखला सूं इतिहास आज पण पळकै जद ई सगळां जाणीकारां फक्त मिनखाजूण नै इ करमजूणी मानी। मिनख ई ज संसार मांय आर चोखा माडा करम कर सकै दूजी कानि सगळी जीव जूणी भोग जूणी मानीजै जिका सिरफ आपरी जिया जूण काट सकै पण नुओ करम कीं नी कर सकै। जद कै मिनख चावै तो ऊजळा करम कर आ जनम तो कांई सात भव सुधार सकै, सद्करम कर तो मिनख नर ऊं नारायण बण सकै, ई ऊं पण आगळ मिनख ढाण लेवे तो चोरासी रै चक्कर ऊं पण मुगती पा सकै। अेडी बातां रा दाखला लोक बाणियां मायं मिनख रा कान फाड़ै पण आज रो मिनख इतरो फीटो क नीची घूण घाल चाल पड़ै रति अमल नी करै यथा–

मिनख जमारो बार बार नी आवणो रे।
धन दोलत जोबन परिवार दो दिन पावणो रे।
मानखो जनम हीरो हाथ न आवे लाख
चौरासी फेरा रे।
सुकरत कारज कर ले बावळे आई करण
रीवेला रे।

मिनख चेते जद चांद तारां कनै जा र पूगै अर ऊंगीजै जद कुंभकरण री ऊंगां घोर खांचे। मिनख नै अर...जगाण री खेंचल...कुण करे, किण री मां सेर सूंठ खाई। मिनख तो आपो आप ई जाग सकै। जद बीं रै काळजै मांय कीं कारणै री बळत उठै। पछै उण नै कोई पण टग नीं दे सकै। पछै तो बो काम कर्‌या ई बेसांई लेवे अेड़ा। सहस दाखला ऊं पोथीयां भरी पड़ी ज्या भगवान खुद नै मानखा जूण मांय अवतार लेवण खातर विवश करणीयौ मिनख, भगवान री परीक्षा में पास होवणीयो मिनख। गऊ खातर सेर आगळ समरपण करणीयो मिनख, कबूतर बचावण खातर निज जंघा काट देवणीयो मिनख, तपते थाम्मै मांय नारायण निरखणियो मिनख हरि हरि करतां विष नै अमरत करणीयौ मिनख, मायड़ भौम खातर हंस हंस सीस देवणीयो मिनख, अगन जळ नै काबू करणीयो मिनख। पवन वेग ऊं गगन मण्डल मांय रमणीयो मिनख, अघ मरयोड़ा नै सरजीत करणीयौ मिनख, कोसा मीलां ऊं आकास वाणी सुणावणीयो मिनख अर सिर साटै रूख राणणीयो मिनख ई ज

सिर साटे रूख रहे, तो पण सस्तो जाण।

आगळ जणावेळ मुजब रूंख पण जिंदगाणी रो मूळ आधार मानीजै रूख धरती रौ सिणगार सराइजै, जद ई तो रूख खातर खप जाणै मिनख आपरौ धरम मान्यौ अर जावतां जावतां सीख दे गया कै सिर देतां थकां ई जै रूंख रहै तो सस्तो जाणजो ई मायं कांई घाटै रो सोदो नी हैला। रूख जोवता नै पाळै मर्‌या नै वाळै कीड़ी ऊं ले अर कुंजर ताई रो उदर पूरण रूंख करै। पिराण वायु रो सरजणहार रूंख ओषधी री खाण रूंख आद आद जद ई तो मिनख आद अनाद काळ ऊं रूंख री पूजा करै उणनै पूनजीक मानै। रूख रै महतब नै हर पंथ रा मनीसीयां आपो आपरै हिसाब ऊं बिरदायो है पीपल नै सगळा ऊं श्रेष्ठ माथो ग्यौ है। विग्यान पण सहमति देवे कै पीपल इज अेक अेड़ो रूख है जिका हर बखत आक्सीजन देवे अर उण रै कदै'ई कीड़ो नी लागै न्यारा–न्यारा रूंख रा न्यारा न्यारा महतब मानीजै सासरतरां मुजब हर मिनख नै घर ऊं घर पाँच रूंख तो लगाणा ई चाइजै ज्या तुलसी, मीठा, नीम, अलोवेरा, सनिक प्लांट, अपराजिता आद। मत्स्य अेक तालाब, दस तालाब बराबर अेक पुतर अर दस पुतर बराबर ओ पुण्य अेक पेड़ लगावण सूं मिलै। जद ई तो भला मिनखा कह गया– मिनखां री माया, रूंखा री छाया।

व्याख्याता
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बज्जू,
बीकानेर (राज.)
मो: 9799634344

हिम्मत वाळी छोरी छूं

❒ शिवचरण सेन 'शिवा'

हिम्मत वाळी छोरी छूं
दीखत मं म्हूं फोरी छूं।
पण हिम्मतवाळी छोरी छूं।।
पूठ बिठावै दादाजी,
रोज घुमावै दादाजी,
सक्कर री म्हू बोरी छूं।
पण हिम्मतवाळी छोरी छूं।।
दीखत मं म्हूं फोरी छूं।
पण हिम्मतवाळी छोरी छूं।।
दोई कुळां री लछमी छूं म्हूं
दुरगा मां री सगती छूं म्हूं
घर की चांद चकोरी छूं
पण हिम्मतवाळी छोरी छूं।
दीखत मं म्हूं फोरी छूं।
पण हिम्मतवाळी छोरी छूं।।
सगळा म्हनै लाड लड़ावै,
नोरता मं जीमण लावै,
सगपण री म्हूं डोरी छूं।
पण हिम्मतवाळी छोरी छूं।
म्हूं लागूं घणी फोरी छूं।
पण हिम्मतवाळी छोरी छूं।।

व्याख्याता (हिन्दी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गिरधरपुरा, ब्लॉक झालरापाटन, झालावाड़ (राज.)–326023
मो: 8003134522

प्रतापसिंह बारहठ

❐ सुरेश कुमार सोनी

जिण घर में मात सुभद्रा ज्यूं, पित, भ्रात भीम सी ले मन्यु।
है अरजुन जे 'ड़ो अधप-बाप, उण घर में जलमै अभिमन्यु।।

वो केहर अरजुन ज्यूं करड़ो, चहूं-कूंटां नांव कमायो हो।
अभिमन्यु उणरो बेटो बण, ऊजळ-नखतां में आयो हो।।

इक सदी गई, पण वो बाळक, प्रताप नांव स्यूं पूजीजै।
कर उणरी कीरत याद आज, हर हे ताळू-हिय हरखीजै।।

काकै रो लाड़ेसर कान्हो, ऊंची-कोठी में छायोड़ो।
पण सुख-सुपनां स्यूं अळघो हो, जागीरदार रो जायोड़ो।।

उण वगत देस री दसा विखम, हर उणियारै ही विखम-रेख।
वो राजघराणै-रो-बाळक, दिन-रात दुखी अघ देख-देख।।

इण धरती ने पीसै अधमी, चिंतातुर हो वो चढ्यां चिता?
अरजुन-सेठी ने सूंप दियो, उण बाळक रा गुण देख पिता।।

संस्कार-सांतरा दे सेठी, मुळक्यां जावै हो मंद-मंद।
उण अभिमन्यु ने अपनायो, आणन्द-भाव स्यूं अमीचंद।।

उण बाळक में अणपार अग्ग, घण-क्रोध पळकतो हो घावां।
जा पूं 'च्यो रासबिहारी-दर, ले अमीचन्द वे असावां।।

अग ही बाळक री आंख्या में!' खुद रामसबिहारी कयो इयां।
शिक्षा सूंपी ही सागीड़ी, लपटां-री-पूंजी लियां-लियां।।

उण द्रौण-रूप रै उजळायां, आयो सांम्ही इक अग्रदूत।
अघ नै तड़छावण हुया त्यार, भारत-माता रो वीर-पूत।।

'अब आय चुक्यो उत्सर्ग-वगत!' ओ भाव विचारां में तौल्यो।
'मां! रिपिया दे धोती सारू!' वो वीर-पुत्र यूं जा बोल्यो।।

पण माता ही मजबूर हुयां, आंख्यां में आंसू ले भाजी।
दोरा लाध्या हा दो रिपिया, वे पुत ने सूंप हुई राजी।।

जागीरां जद स्यूं हुई जब्त, हहकार कर्‌यां तम अड़ग्यो हो।
जिण घर में चलता भंडारा, उण घर में अन्न निवड़ग्यो हो।।

काके रै साथै अैक भतू, उण घर ने तजदयो अधरातै।
मोह फेंक्यो हिय स्यूं काढ़ मुनि, नीं देख्यो मुड़ जातै-जातै।।

इक़ हितू मिल्यो जद यूं बोल्यो, परणी ने जोवूं अेक-सांस।
फेरां-रो-मौ'रत आयोड़ो, अगनी-री-वेदी लियां आस।।

सुणतां-ई चिमक्या हा सगळा, पण कुंवर मुळकतो जावै हो।
उठ टुरग्यो हो वो बिना कयां, पण अरथ समझ नीं आवै हो।।

समचार मिल्यो जद माता ने, बोली- 'बेटा! तैं कर्‌यो घात।
रै! टीको काढ़ भेजती म्हैं! अैकर तो कै तो असल-बात!!

पण बेटो मोह ने पींच चल्यो, अगनी दीसै ही आरत में।
वो क्रांति रो संचार कर्‌यां, भटक्यां जावै हो भारत में।।

काकै-जोरावर साथै रळ करड़ै-भावां स्यूं किचरयो तम।
सुण जिणरो नांव कांपतो जग, उण अफसर माथै फैंक्यो बम।।

गूंजी दोनूं-दिस बन्दूकां, दै'सत अंग्रेजां रै दळ में।
प्राणां री परवा करयां बिना, जा कूद्‌यो जमना-रै-जळ में।।

हाकौ फूट्‌यो हो हर दिस में, तोपां तंणगी ही करयां ताप।
आंधो होयां अंग्रेज-राज, कड़क्यां जावै हो कांप-कांप।।

च्यारूं-दिस भाज्या चापलूस, वारन्ट निकळग्यौ वीरां रो।
वो सिंघ निकळग्यो सिंध दिसा, सह मिलग्यो जुद्ध-अधीरां रो।।

हां फीज्योड़ा हा हरकारा, जोयां नां लाध्या दो जाधा।
ही दिल्ली-री-सरकार दग्ध, गंभीर हुयोड़ा हा गोधा।।

पंजाब-प्रान्त में फिरयां पछै, प्रताप जोधपुर जा पूं च्यो।
छांनै-छांनै-ई रळया मिंत, हे ताळू सांम्ही आ ऊंच्यो।।

जोधां में फिर-फिर भरयो जोस, हर अंतस जागी ऊजळ-अग।
उण सिंहथळ सारू टुरयो सिंघ, जिणरो जस गातो आयो जग।।

उतरयो हो आसानाडै जद, हिरदै में भाव हथाई रो।
अफसर सैंधो हो इण कारण, नीं जांण्यो भाव कसाई रो?

जिण माथै घणो भरोसो हो, चक्कू घोंप्यो वो चापलूस।
उण वगत देस रै घर-घर में, पनप्यों हो अे ड़ो घास-फूस।।

इण-तरै उजाळो हुयो कैद, तम ओसरग्यो हो तूट-तूट।
उण तेजाळै ने उणी वगत, कारा में भेज्यो कूट-कूट।।

सै' दियां प्रलोभन समझावै, 'किंचित-कोझो नीं लागैला।
जागीर करांला पाछी जद, सुख-सुपना पाछा जागैला।।'

काळी पड़गी है कूक-कूक, माता रो दुखड़ो समझ मूढ़!
मुगती आ ऊभी मुळक-मुळक, अेकर तो आंख्यां खोल ऊढ़!!

पण जिद झाल्यां वो जोरावर, तम ने मन साथै नीं तोल्यो।
उण क्लीवलैंड सांम्ही कड़क्यां, बळतै-आखर में यूं बोल्यो।।

ओ साच रवैलो अंतस में, मत पाळो ऊंधी-आसावां।
जे म्हांरी माता मुळकै तो, हा! रुळै हजारूं मातावां।।

है अेक दिवस रो वगत तनै, उण पछै ओसरैली अगनी।
रोसांला अे'ड़ो दिवस-रात, बिलखैली काया बण बगनी।।

वो नीं मांन्यो तो नीं मांन्यो, गज री हूंकळ सुण नीं गळियो।
जद मन-री-बात कढ़ावण ने, छेकड़ली-चाल चली छळियो।।

कैदी ने ठरड़यां चढ्यां रेल, कुण जांण्यो जावां आज कठै?
दळ गयो हजारीबाग-जेल, हो कैद केसरीसिंघ जठै।।

अफसर मुळक्या हा आंख्यां में, दोनां ने आम्हीं-सांम्ही कर।
आंख्यां में आंख्यां कर ऊभा, विस्वास लियां दो नांमी-वर।।

जिण माथै किरपा गौरां री, उणरै माथै कद आंच रवै?
जे जीणो है, थां दोनां ने, थे कैवो इणनै 'साच कवै!!'

अंग्रेज अवस ऊंचा-जोधा, मांनै है सगळा मिणी-जगत।
नीकी-बातां सुण दोनां ने, आजाद करैला इणी वगत।।

सुणतां-ई कड़क उठ्यो सिमरथ, अगनी ने धार्यां खुली आँख।
वो काळरूप यूं कड़क उठ्यो, बेटै पर खारी निजर न्हांख।।

म्हारै हिरदै नीं दयाभाव, आ अड़ग्यो उण ने जांणो है।
नां चूक्यो हूँ! नां चूकूंला! अरजुन ज्यूं अटळ-निसांणो है।।

जिण दिन कारा स्यूं छूटूंला, म्हैं दयापणो नीं देखूंला।
जे आज पिघळग्यो तो सुण ले, थारी छाती ने छेकूंला।।

पित री बातां सुण मुळक्यो पुत, आखर-आखर ने हिय तोल्यो।
ऊंचै-सुर मांय उठायां मुख, बेड्या ने खणकायां बोल्यो।।

म्हांरोड़ी जिद है पार पखै, सागर रा संज समाया है।
म्हैं अजै अटळ हूं वचनां पर, अे अधमी घींस्यां लाया है।।

जद मुळक्यो बाप करयां किरपा, नैणां स्यूं नीर बह्यो झर-झर।
ट्रग्यो हा सगळा टणकैला, नाहर ने ठरड़, हुयां जर जर।।

इक नाहर दूजै नाहर स्यूं, ट्रग्यो छेकड़ली-निजर मिला।
पाछो पूं 'च्यो हो उणी जेल, छाती रै माथै लियां सिला।।

कोड़ां स्यूं कूटीज्यो कंचण, सत माथै थिर तिस-भूख सह्यां।
चक्की पीसीज्यो! चींथीज्यो! पण सत रै माथै अटळ रयां।।

आंख्यां में मिच्यां घाल-घाल रातां कर दिन में रोवाण्यो।
झटक्या टेक्या हा बिजळी रा, हिम-री-सिल्यां पर सोवांण्यो।।

जिद देख मिनख री वा ऊंची, कांप्यां जावै हो काळ-भाल।
मारयां-कूटयां स्यूं नीं मांन्यो, जद खार भरयो हो बाळ खाल।।

दुख देखणिया-ई हुवै देव, सुख देखै जद संताप हुवै।
जूझ्या तो जग में घणा जणा, जिद झालै वो प्रताप हुवै।।

कारा में अरजुन जिस्यो बाप, मोहन बिन कींकर ही राहत?
जयद्रत्थ हजारूं जुळै जठै, अभिमन्यु अेक हुयो आहत।।

छेकड़ मिरतूड़ी छळगी ही, प्रताप ट्रग्यो हो तज्या प्रांण।
प्रतिशोध लेवतो कुण दूजो? हा! इण धरती री हुई हांण।।

रै! ठाकर-सुत! तैं ठीक कयो! वीरां री मुगती समर-भोम।
थारा अे आखर रटां आज, जयकारां साथै घणै जोम।।

वरिष्ठ अध्यापक (गणित),
रा.उ.मा.वि. कल्याणसर-बड़ा, बीकानेर
मो. 941409266

हळदीघाटी

❑ **प्रहलाद सिंह झारेड़ा**

हळदीघाटी में रण मंडियो भालां पर भाला बाजे हा,
चौफेर भाभरा भूत हुया सूरा समहर में गाजे हा,
नैणा में लोही उफणे हो मरणे मारण री सूझे ही,
माथा कटग्या तो कटग्या पण धड़ साम्ही ऊभी जूझे ही।।

रणचंडी पण विकराळ हुई लोही गट गट गटकावे ही,
चुग चुग नै बा नरमुंडां री खुद रे गळमाळ सजावे ही,
गूंजे ही कविता चारण री वीरां में जोश जगावण नै,
माता रो माण बचावण नै, बैरयां रो खून बहावण नै।।

हिंदवाणी सूरज राणा रे करड़ौ कड़पाणा पगां में हो,
माटी रो मोल चुकावणियो रजपूती रगत रगां में हो,
उण अपरबळी री दाकल सूं मुगलां री सांस अमूझे ही,
कैयां री छाती फाट गई, कैयां री पिंड्या धूजे ही।।

बैरी कुरळाया मानसिंह सेना नै पाछी बैवण दे,
दस बीसां नै पळ में मसळे राणौ जीता नी रैवण दे,
आपां श्याळ्यां सूं भिड़ता हा अबकाळै सिंह सवाया है,
मारग दीखै नी बचणै रौ साच्याणी काळ बुलाया है।।

इतरे में राणौ अंगद पग मानै री छाती धर दीनो,
पण बगत बण्यो बैरी अबके चेतक नै घायल कर दीनो,
मौको पा भाग्यो मानसिंह डरतोड़ौ प्राण बचावण नै,
कमती कद रेवै ही सेना अकबर रो माण मिटावण नै।।

निरकारो कर बोल्यो राणौ रुक ज्यारे माना भाग मती,
ढूँढ़ाड़ लाज सूं झुक ज्यासी थूं जाण लगा ओ दाग मती,
फैरूं भी भागै भाग भलां म्हैं पूठै वार करूं कोनी,
जीतो मुगलां रे चरणां में मेवाड़ी पाग धरूं कोनी।।

साखी है हळदीघाटी आ थारै ज्यूं सीस लुकाऊं नी,
कह दीजै अकबर नै भिड़ लै म्हैं रण में पीठ दिखाऊं नी,
घाटी गूंजी बोलो राणा प्रताप सिंह री जै! जै! जै!
राणौ बोल्यो जै एकलिंग मेवाड़ धणी री जै! जै! जै!!

वरिष्ठ अध्यापक
माध्यमिक शिक्षा विभाग
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मकोड़ी, नागौर (राज.)
मोः 9413242122

'शिक्षक रक्षक'

❐ नगेन्द्र नारायण किराडू

अेक शिक्षक
आपा सगळां रो है रक्षक
पैला खुद भणैं फेरूँ दूजा नै
भणावै, मारग दिखावै
आप भलै उभाणौ रैवै।
पण टाबरां ने
उभाणा नीं राखै
सूरज दांई उजास फैलावै
आखै जग नै आप बचावै
सगळां नै सीधो गैलो बतावै
जिका बीं गैले नीं जावै
बै आपरी मंजिल कद है पावै।
सबरै हिवड़ै री कळमस मिटावै
की नैई भूंडी बात नीं बतावै
सांचोड़ी बात सूं डग ना हटावै
झूठ अर छळ-छंद सूं दूर भगावै,
शिक्षक भणावै ई नीं
मारग भी बतावै।
लिखणै पढ़णै री हूँस बढ़ावै।
बूढ़ै बडेरां री आसीस पावै
ओ जग कांचोकांच सौ
है माटी रो ढेलौ,
सगळी चीज्यां रो भाण करावै।
शिक्षक रो काम है पैलो
शिक्षा री बौ करै बात
नीं कीनै धोखो नीं करै घात
जाणै टाबरां री हर अेक बात।
टाबर चालै डाळ-डाळ
तौ शिक्षक चालै पात-पात।
शिक्षक करै ना की मैई भेद
बीं खातर सब टाबर अेक
राम रहीम नै मानै अेक
काम करै बो सगळा नेक।
भेद रै मांय खेद बड़ौ है
जिकौ आखड़ै बोई पड्यो है
शिक्षक भणावै ई नीं
मारग भी दिखावै,
बरसावै इमरत आपरी वाणी सूं
हेत बढ़ावे प्रेम बढ़ावै अर
बयावै हाणी सूं।
गाँव-गाँव अर ढाणी-ढाणी
हरदम डग भरतौ जावै
मां सुरसती रौ भाण करावै
शिक्षक सागै टाबर टोळी
जिंया पूजा री थाळी में कूं कूं रोळी
सत्य अहिंसा अर धरम
शिक्षक बतावै पैंलो करम।
खेल-खेल में सौ कुछ सीखावै
भूख प्यास ना बीनै सतावै
वसुधैव कुटुम्ब री बात बतावै
शिक्षक भणावै ई नीं
मारग भी बतावै।

कवि आलोचक
चम्पाबाई की बगेची के सामने नया शहर, बीकानेर
मो: 9460890205

नही पढ़ेलो जो जीवन भर पछतावलो

❐ रामस्वरूप रैगर

नहीं पढ़ेलो जो कोई टाबर, जीवण भर पछतावैलो।
निकल गयो जो चोखो मौको, पाछे कदे न आवैलो।।
शिक्षा छै एक आछो रतन, पढबा को सब करो जतन।
शिक्षा को कोनी, छै कोई मोल, शिक्षा छै अनमोल।।
बुद्धिहीन ने बुद्धि देवै, अज्ञानी ने देवै ज्ञान।
इण जतौ जाणे कोई, उन उतौ मिळै मान।।
नहीं पढलो.....कदे न आवैलो।।
बेजां जरूरी होवै शिक्षा, सारा अवगुण हरे शिक्षा।
कोनी मांगण देवै भिक्षा, इयां कीं होवै आ शिक्षा।।
शिक्षा छै एक अनोखी पूँजी, कोई नी बाँट पावैलो।
ज्ञान और विज्ञान का क्षेत्र में, अपणो भरपूर नाम कमावैलो।।
नहीं पढ़ेलो.....कदे न आवैलो।।
पूरी दुनियाँ घूम सकै छै, ओ ही विश्वास दिलाऊ छूं।
लक्ष्य आज थे एक बणाओ, आ ही बात बताऊं छूं।।
अडिग लक्ष्य पर अचूक निशाणों, थानै छै लगाणो।
माता-पिता का करज न, थानै छै बखूबी चुकाणो।।
नहीं पढ़ेलो.....कदे न आवैलो।।
दुख म सारो जीवन बीतै लो, सुख कनै कोनी आवैलो।
दाणा दाणा न भटक्लो, फेर भी नसीब म कोनी पावैलो।।
भाग को रोणो रोवैलो, किस्मत फूटेड़ी बतावैलो।
करमां का फल बतलार, जीवन भर पछतावैलो।।
कैवै मास्टर रामस्वरूप, जो कोई टाबर बात मानैलो।
विश्वास म दिलाऊ थाने, जीवन भर सुख पावैलो।।
नहीं पढ़ेलो जो कोई टाबर, जीवण भर पछतावैलो।
निकल गयो जो चोखो मौको, पाछे कदे न आवैलो।।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ड्योढ़ी, किशनगढ़
रेनवाल, जयपुर (राज.) **मो: 9928139161**

शहीद सुजस

❐ मदन सिंह राठौड़ (सोलंकिया तला)

धवळ वसन धवळी धजा, धवळै हंस विराज।
धवळै मन धावूं सदा, कर धवळा सिध काज।।
अरपूं सूरां अजळी, अंतस रा अरमान।
प्रात उठन्ता नित करूं, शहीदां रौ सम्मान।।
पग पग पळकै पूतळै, पग पग पळकै पाट।
पग पग सतियां सूरमा, मुरधर री इण माट।।
जस रा दीवा नित जळै, जस री जोत जगाय।
जस अंजस रहसी इळा, सूरां सुजस सदाय।।
वेद ग्रंथ नह वाचिया, पढिया नहीं गुराण।
पण सूरां सिंवरु सदा, गौरव कर गुणगांण।।
जप तीरथ जाणूं नहीं, हेली नहीं हिलोर।
सूरां रौ सुमरण करूं, अंतस सूं अठपौर।।
वंदन अभिनंदन करूं मंडन जस महावीर।
खंडन खळदळ रौ कियौ, गहर वीर गंभीर।।
लड़ियो जद लंकाळ वो, भिड़ियौ कर भाराथ।
अड़ियौ जस अंकास में, पड़ियौ नह वो प्राथ।।
कटियौ कमधां केहरी, डटियौ रण में आय।
हटियौ नी हिम डूगरां मिटियौ माटी मांय।।
दळियौ दळ दोयण तणौ, गळियौ गरब गुमान।
वळियौ नह पाछौ वळै, थळियौ राखण शान।।
रमिया बाळू रेत में, जमिया जीतण जंग।
भमिया हिम रै भाखरां, रणवीरां नै रंग।।
पुहुप इळा पड़ियां पछै, परमळ तो मिट जाय।
सूरां सिर पड़तां समर, जस-सौरभ जग छाय।।
गुड़तां थकां गुडाळियै, सुणिया जांमण बोल।
साळू बाळू खेलतां, अनड़ हुवा अणतोल।।
परणी निरखै पीव नै, चंवरी झींणै चीर।
देसी सिर हित देसड़ै, करसी नांव कंठीर।।
कर कुरबांणी देसहित, पुहुमी ऊपर पोढ़।
सज धज सुरंग सिधावियौ, अंग तिरंगौ ओढ।।
ध्रू पळटै पळटै धरा, पळटै ससिहर भांण।
पण सूरां समहर गयां, पळटै नंह परवांण।।
साहस सूं लड़िया समर, झेलण अरियां झाट।
रसा रुखाळी रावळी, पग पग थपिया पाट।।
क्यूं जावां तीरथ करण, की तीरथ रौ काम।
सूरां तीरथ शेरगढ़, धर रूपाळौ धाम।।
सिर ऊंचौ रखियौ सदा, हितचिंतक हिंदवांण।
कर नह इण ऊंचा किया, सूंप दिया निज प्रांण।।
सखी अमीणौ सायबौ खड़कावै रण खाग।
बटका झटका बाढ़तां, आवै अरियां झाग।।

व्याख्याता (राजस्थानी साहित्य)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुवालिया,
शेरगढ़, जोधपुर (राज.)

बाल साहित्य

हम बच्चे आखिर क्या करें?

❒ सुधा रानी तैलंग

भरतनगर की डी.जी. कॉलोनी में आज खुशी का माहौल है। कॉलोनी के सभी बच्चों के परीक्षा के परिणाम आ चुके हैं। कॉलोनी के सभी लोगों ने एक मीटिंग रखी है, बच्चों के लिए एक पार्टी भी, साथ में बच्चों के लिए कुछ पुरस्कार भी ताकि उनको प्रोत्साहित भी किया जा सके।

छोटू अपने दोस्तों के साथ शाम की पार्टी की तैयारी में जुटा है। लड़कियों का रिजल्ट लड़कों से कहीं बेहतर रहा है। लड़कों में अब्दुल अंकों के मामले में हर बार की तरह आगे है। छोटू, राजू, चुन्नु, स्वामी के मार्क्स कम है पर वो अपने रिजल्ट से बहुत खुश हैं क्योंकि सभी बच्चों का मानना है कि पढ़ाई में अव्वल आने से कुछ नहीं होता। जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी उनका सफल होना जरूरी है।

न जाने क्यों माता-पिता अपने सपने, इच्छाओं को बच्चों पर हावी कर उन्हें हर क्षेत्र में अव्वल बनाने की कोशिश करते हैं, चाहे बच्चों की रुचि उसमें हो या ना हो। इसी को लेकर छोटू के साथ सभी बच्चे एक छोटा सा नाटक तैयार कर रहे हैं ताकि माता-पिता उनके मन की बातों को जान सकें।

छोटू को बच्चों के साथ बाहर घूमते देखकर छोटू की मम्मी ने बालकनी से ही चिल्लाकर कहा- अरे बेटा छोटू अब तो घर आ जाओ। क्यों धूप में बेकार घूम रहे हो?

छोटू- मम्मी आप चिन्ता मत करें। हम सब को एक नाटक तैयार करना है। बस एकाध घन्टे में आता हूँ।

छोटू की मम्मी- अरे बाबा! तुम से तो मैं हार गई। तुम्हारा ना तो पढ़ाई में मन लगता है और ना ही घर के काम-काज में। बस रात दिन इसी तरह चक्कर घिन्नी बन कर घूमते रहते हो।

कॉलोनी की मीटिंग हाल में छोटू व दूसरे बच्चे दोस्त सभी मिलकर नाटक की तैयारी करते हैं। फाइनल रिहर्सल के बाद छोटू कहता है, अच्छा दोस्तों आज शाम को प्रोग्राम में मिलते हैं। देखना हमारे नाटक को ही फर्स्ट प्राइज मिलेगा।

घर पहुँचते ही छोटू की मम्मी उसे डांट लगाते हुए कहती है कि छोटू देख दिन भर मटरगश्ती करते रहते हो। अपने दोस्त अब्दुल से कुछ सीख लो उसके 99 प्रतिशत मार्क्स आए हैं, पूरे स्कूल में टॉप आया है।

छोटू- मम्मी पढ़ने के लिए तो पूरी जिन्दगी पड़ी है। अभी तो मैं बच्चा हूँ। खेलकूद से ही तो हम स्वस्थ रहेंगे।

छोटू की मम्मी- बड़ा आया मौज मस्ती करने वाला। स्कूल खुलने दो फिर बताती हूँ।

छोटू- मम्मी अभी तो मुझे जोरों से भूख लगी है जल्दी से मैगी बना दो।

छोटू की मम्मी- अभी तो स्वस्थ रहने की बात कर रहा था। अब तुझे मैगी नहीं हरी सब्जी, फल-फूल खाने में मिलेंगे। दाल चावल खाओ प्रभु के गुण गाओ।

छोटू- ठीक है बाबा जो कुछ देना है दे दो, पेट में चूहे दौड़ रहे हैं।

शाम को डी.जी. कॉलोनी में रौनक, चहल-पहल दिखाई दे रही है। पंडाल की कुर्सियों में कॉलोनी वासी बैठ चुके हैं। स्टेज पर माईक संभाल रहे हैं छोटू के पापा राजेश। कॉलोनी के बच्चे रंग-बिरंगे कपड़ों में सज धज तैयार है। सभी बेहद खुश है। प्रोग्राम शुरू होने वाला ही है।

राजेश- नमस्कार! स्वागत है आप सभी डी.जी. कॉलोनी के निवासियों का। आज हम अपने बच्चों का स्वागत, उन्हें मोटिवेट करने के लिए इकट्ठे हुए हैं। हमारे बच्चों का रिजल्ट आ चुका है। सभी ने बेहतर परिणाम हासिल किए हैं। तालियों से स्वागत करें। सबसे पहले बच्चों के द्वारा ही सरस्वती वन्दना की जाएगी। गौरी नायर स्टेज पर आए।

गौरी हारमोनियम पर सरस्वती वन्दना गाती है- ''जय जय हे भगवती सुर भारती, नव चरणौ प्रणमाम...'' तालियों से स्वागत होता है।

राजेश- तो अब शुरू होता है आज का कार्यक्रम। सबसे पहले पूरे भरतनगर में मैरिट में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले अब्दुल के लिए तालियां, अब्दुल स्टेज पर आकर शील्ड लेता है

और माईक पर कहता है थैंक्स सबको। मैं अपनी डी.जी. कॉलोनी के बच्चों से यही कहना चाहूँगा कि वो खूब पढ़े-खूब पढ़े। क्योंकि पढ़ाई ही सब कुछ है।

अब्दुल के बाद बच्चों का एक डांस ग्रुप परफॉरमेन्स देता है। बाद में छोटू, गौरी, मारिया, स्वामी, राहुल, प्रिया, नीतू, हरप्रीत और दूसरे बच्चों को शील्ड मिलती है। तालियों की गड़गड़ाहट होती रहती है बीच-बीच में।

कार्यक्रम के अन्त में छोटू ग्रुप के द्वारा एक छोटा सा नाटक प्ले किया जाता है- हम बच्चे आखिर क्या करें?

छोटू- साथियों एक बार फिर रिजल्ट आ गया हमारा। अंकों की दौड़ में परसेन्टेज, रैंक व मैरिट का भूत हम छोटे-छोटे बच्चों को डराने।

राहुल- अरे इस पढ़ाई ने तो हमारा बचपन ही छीन लिया। स्कूल में जाओ तो टीचर की डाँट, घर में मम्मी-पापा की। अरे खेलेंगे-कूदेंगे तभी तो स्वस्थ रहेंगे। मैं तो बड़ा होकर सचिन तेंदुलकर जैसा खिलाड़ी बनूँगा।

छोटू- ट्यूशन, कोचिंग, क्लासेज की भीड़ में हम बच्चें कहीं गुम से हो गए हैं। स्कूल में बस्ते का बोझ, होम वर्क और कोचिंग की दौड में हम बच्चे थक से गए हैं।

प्रिया- हमारे नम्बर कम आते हैं तो इसमें हमारा क्या दोष। घर में मम्मी-पापा दिन भर टी.वी., कम्प्यूटर, मोबाइल में लगे रहते हैं। हमारे लिए उनके पास वक्त ही नहीं है। पड़ोस में कभी किसी के यहाँ पार्टी हो रही है तो कहीं डी.जे. बज रहा है तो आखिर हम पढ़ें तो कैसे पढ़े?

मारिया- हमारे मम्मी-पापा हमें ऑल राउन्डर बनाना चाहते हैं। एक्जाम्स खत्म होते ही हमें कभी जूडो-कराटे तो कभी जिम, गेम्स, डांस, म्यूजिक और पेन्टिंग क्लासेज में भेज दिया जाता है। चाहे हमारी उसमें रुचि हो या ना हो। हमारे भी तो कुछ सपने होते हैं। हम बच्चे एक साथ कैसे करें ये सब? हम गायक बने, डांसर बने, अभिनेता बने, मॉडलिंग करें, बिजनसमैन बने, पेन्टर बने या खिलाड़ी बने। अब आप ही बताएं, हम बच्चे क्या करें?

स्वामी- सही कहा! मैं तो बड़ा होकर एक वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ। पर मेरे पापा तो अपने जैसा बिजनसमैन बनाना चाहते हैं। पापा घर में मुझे कुछ भी एक्सपेरिमेन्ट नहीं करने देते। वरना मैं तो मोबाइल, टी.वी., कम्प्यूटर सब सुधार सकता हूँ। जब भी कुछ सुधारना चाहता हूँ, पिटाई हो जाती है।

नीतू- परीक्षाओं के बाद हम भी अपनी नानी, दादी, मौसी, मामा, बुआ के घर जाना चाहते हैं। ताकि अपने परिवार को, रिश्तों को समझ सकें। सबके साथ मिलजुल कर खेल सकें। मस्ती करें। किताबें पढ़ें, कहानियाँ सुने। हम सभी बच्चे टी.वी., कम्प्यूटर, मोबाइल से दूर रह कर मौज मस्ती करना चाहते हैं। नानी, दादी की गोद में सिर रख कर कहानी, लोरी, गीत सुनना चाहते हैं। मीठे सपनों को देखना चाहते हैं।

छोटू- अरे वाह! नीतू तुमने तो मन की बात कह दी। मेरे मन की बात जरा आप सब भी सुनिए-

एक रात छोटू
अपना होमवर्क पूरा करके
निंदिया में सोया।
मीठे सपनों की
दुनिया में खोया।
तभी पास की खिड़की
से लगा चाँद झांकने,
छोटू निंदिया से जागा
देखने लगा एकटक कि
शायद चाँद में,
बुढ़िया दादी चरखा
कातती दिख जाए।
नानी माँ की सुनाई कहानी
सच हो जाए।
लेकिन तभी बादलों की
ओट में चाँद करने
लगा लुक्का छिपी का खेल।
कुछ ही देर में छोटू
फिर से निंदिया में सो गया
मीठे सपनों में खो गया।

सभी बच्चे तालियों से छोटू की कविता का स्वागत करते हैं।

हरप्रीत- भाईयों-बहिनों इतनी छोटी सी उम्र में प्लीज टेंशन न लें। खूब हँसे व हँसाए। अपनी हेल्थ बनाए। पढ़ाई के साथ-साथ खेलें-कूदे और मस्ती करें।

अब्दुल- अरे सपनों को पूरा करने पूरी जिन्दगी पड़ी है। अभी तो बस हमें पढ़ना है, पढ़ेंगे-लिखेंगे तो बनेंगे नवाब, खेलेंगे-कूदेंगे तो होंगे बन्टाधार।

छोटू- अबे ओ पढ़ाकू ज्यादा सीख न दे। हम अपनी मरजी के मालिक रहेंगे कोई हम पर दबाव नहीं बनाएं मेरी सभी पेरेन्ट्स से रिक्वेस्ट हैं। हम बच्चों को बच्चे ही रहने दें। पढ़ाई के लिए अंकों का दबाव नहीं बनाए। हमें समर क्लासेज में जबरन ना भेजे। हमें खो-खो, कबड्डी, दौड़, सतोलिया, रस्सीकूद, आइस-पाइस, चंगा पौआ, अन्त्याक्षरी जैसे खेल खेलने दें। हमें खुली हवा में सांस लेने दें।

हरप्रीत- भाईयों बहिनों इतनी छोटी सी उम्र में प्लीज टेंशन न लें। खूब हँसे व हँसाए। अपनी हेल्थ बनाए। पढ़ाई के साथ-साथ खेले कूदें और मस्ती करें।

मारिया- हमारे भी कुछ सपने हैं। प्लीज हमारे सपनों को उड़ान भरने का मौका दीजिए। सब को थैंक्स।

एक साथ सभी मित्र-एक्स्ट्रा क्लब जिन्दाबाद। हमारी मांगें पूरी करो।

इस नाटक को देखने के बाद डी.जी. कॉलोनी वाले सोचने को मजबूर हो गए कि बच्चों की बात में जरूर दम है। बच्चों ने आज बड़ों को सीख देकर ये जतला दिया कि वो उम्र में जरूर छोटे हैं पर अक़्ल में बहुत बड़े हैं। सोसायटी के चेयरमैन छोटू के पापा राजेश ने कहा बच्चों तुम्हारे इस नाटक ने हमारी आँखें खोल दी है। सच हम पेरेन्ट्स बच्चों की भावनाओं की कद्र ना करते हुए उन पर अपनी इच्छाएँ, अपने सपनों को थोप देते हैं। आज इस मंच से हम प्रोमिज करते हैं कि आगे से ऐसा नहीं होगा। तुम बच्चों को अपने सपनों की उड़ान भरने की पूरी आजादी है। पूरे बच्चे एक साथ एक्स्ट्रा क्लब जिन्दाबाद छोटू एंड पार्टी जिन्दाबाद। हिप हिप हुर्रे।

छोटू- हम सभी बच्चे आप सब के आभारी हैं। हमारी भावनाओं को समझने के लिए, हमारे सपनों को नई उड़ान देने के लिए आप सभी का थैंक्स।

प्रोग्राम के आखिर में इडली, डोसा, सांभर, बड़ापाव, कोल्डड्रिंक और आइसक्रीम की पार्टी में आज पूरे बच्चों के चेहरों पर खुशी की झलक दिखाई दे रही थी।

टी-2, सिमरन अपार्टमेन्ट-2
प्लॉट नं. 16 व 17, त्रिलंगा, भोपाल
मो. 9407124018

रजत की शर्ट

❒ डॉ. चेतना उपाध्याय

रजत बहुत परेशान हो गया, उसे अभी पार्टी में जाना था और उसका नया वाला शर्ट चूहे ने कुतर दिया। वह बहुत गुस्सा हो रहा था। शिखा, तोशी और मम्मी भी परेशान हो गई। कुछ दिन पहले चूहे ने तोशी का ड्रेस भी कुतर दिया था। पापा भी नाराज़ हो रहे थे। तुम लोग अपने कपड़े संभाल कर क्यों नहीं रखते?

''चूहा अलमारी में पीछे से घुस गया तो मैं क्या कर सकती हूँ''- मम्मी बोली। घर में सभी एक दूसरे पर नाराज़गी दर्शा रहे थे। पार्टी में समय पर पहुँचना था।

मुझे नहीं जाना पार्टी में, आज इस चूहे की खैर नहीं। भगवान ने भी ना जाने क्यों पैदा कर दिया इन्हें।

.....''काम के ना काज के ढाई मन अनाज के'' रजत गुस्से में चीखते हुए बोला।

घर में सब कुछ बिखर गया। मगर चूहा कहीं दिखाई नहीं दिया।

शिखा बोली-''रजत अब बहुत देर हो गई तुम दूसरा शर्ट पहन कर चलो। चूहे जी अब तुम्हारे हाथ में आने वाले नहीं हैं।''

नहीं मेरा प्यारा शर्ट कुतरने वाले चूहे को में मज़ा चखा कर ही रहूँगा। आज तो कहीं नहीं जाना मुझे। वह चारों तरफ ठक-ठक, ठक-ठक करता ही रहा। इतने में चूहा ऊपर वाली रैक से नीचे तेजी से आया और फिर पल भर में छू मंतर हो गया।

उसके पीछे भागते-भागते रजत भी बाहर लॉन में पहुँच गया, चूहा पलक झपकते ही मिट्टी में गायब हो गया।

रजत ने देखा वहाँ एक छोटा सा गड्ढा है। उसे लगा हो सकता है चूहा यहाँ ही छुपा हो। वह पास से ही फावड़ा उठा लाया और मिट्टी खोदने लगा। उसका शक सही निकला, मगर यह क्या, वह गड्ढा पतली सुरंग जैसा था आगे और आगे बढ़ता ही जा रहा था। रजत जोर से चिल्लाए जा रहा था। चूहा इसी सुरंग से आगे भाग गया। बहुत चालाक है यह।

उसकी आवाज़ सुनकर दादी भी वहाँ आ गई और बोली अरे बेटा इसे सुरंग नहीं कहते।

यह चूहे का घर है जिसे हम बिल कहते हैं। चूहा ऐसे ही बिल बना कर रहता है।

तो फिर यहाँ चुपचाप रहे ना, हमारे घर में क्यों आ जाता है? हमारे अच्छे-अच्छे कपड़े कुतर जाता है। आज तो मैं इसे जिंदा नहीं छोड़ूँगा। रजत गुस्से में बोला।

'अरे बेटा सभी को जीने का हक है।' दादी बोली।

नहीं बिलकुल नहीं, ये किसी काम के नहीं हैं, मैं तो आज इनका खात्मा कर के ही रहूँगा। रजत बोला।

दादी ने प्यार से रजत के सर पर हाथ फेरते हुए उसे अपनी गोद में उठा लिया और सहलाते हुए कहा, देखो बेटा इसने तुम्हारी शर्ट कुतर कर बहुत गलत किया। यह सच है। मगर यह भी सच है कि चूहा हमारा मित्र होता है। धरती पर जल संरक्षण में इसकी बहुत बड़ी भूमिका होती है।

वे कैसे- रजत झट से बोल उठा।

बताती हूँ बेटा जरा धैर्य रखो।

चूहे धरती में अपना बिल बना कर रहते हैं। इससे धरती थोड़ी पौरस हो जाती है जिससे बरसाती पानी धरती में समा कर ठहर जाता है। इससे धरती का जलस्तर ठीक-ठीक बना रहता है। इस तरह वे हमारे मददगार साबित होते हैं। धरती पर सभी प्राणियों की अपनी भूमिका होती है। इसे पारिस्थितिकी चक्र कहते हैं। धरती पर पाए जाने वाले सभी प्राणी एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। सभी की अपनी सार्थक भूमिका होती है। छोटे से छोटे कीड़े-मकोड़े, पंछी, छोटे बड़े सभी प्राणियों की अपनी अहमियत होती है। हम सभी प्रकृति के नियमों की पालना करें तो सभी को जीने का सुलभ अवसर मिलता है। सभी की समस्त आवश्यकता पूरी होती है।

अरे, दादी मेरी शर्ट कुतर दी, मैं पार्टी में नहीं जा पाया उसका क्या? रजत जोर से चिढ़ कर बोला।

हाँ बेटा वह तो बुरा हुआ, पर चूहे में यह समझ तो नहीं होती, भूख लगी अनाज धरती पर मिला नहीं बेचारा मूक प्राणी जो मिला वो खा लिया। अच्छे-बुरे की समझ तो इनमें होती नहीं।

हमारे पास दिमाग होता है तो हमें इसे समझना ही चाहिए। इसीलिए तो 22 मई को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया जाता है ताकि हम सभी बच्चों को धरती पर पाए जाने वाले सभी जीवों की उपयोगिता की जानकारी हो। हम सभी विविधता के महत्त्व को समझ सकें।

अरे दादी, आप तो हर बात में अपना ज्ञान परोसना शुरू कर देती हो। बस अब बहुत हो गया, आप तो मेरी नई शर्ट के बारे में बात करो। रजत ने मुँह फुलाकर कहा।

वह तो मैं आपकी पसंद की दूसरी दिला दूंगी, उसकी चिंता मत करो बस एक वादा करो कि धरती पर पाए जाने वाले सभी जीवों को, उनकी जरूरत को समझोगे। सभी का यथा योग्य मान करोगे। धरती पर जैव विविधता संरक्षण में सहयोगी रहोगे।

हाँ-हाँ बस में समझ गया। आप तो मेरी शर्ट दिलवा देना कहकर रजत वहाँ से रफूचक्कर हो गया।

वरिष्ठ व्याख्याता
डाइट मसूदा अजमेर
49, गोपाल पथ, कृष्ण विहार,
कुंदन नगर, अजमेर (राज.)
मो. 9828186706

प्रतिदिन परोपकार

❒ कल्याणमय आनंद

कक्षा आठ वर्ग के शिक्षक भास्कर सर इधर कुछ दिनों से परेशान थे। परेशानी का कारण उनकी कक्षा के कुछ शरारती छात्र थे। ऐसा नहीं था कि उनकी शरारतें बढ़ गई थी बल्कि वे सभी चामत्कारिक रूप से सुधर गए थे। उनमें यह सुधार कैसे हुआ, इसका कोई प्रत्यक्ष कारण उन्हें दिखाई नहीं पड़ता था।

पहले उन्होंने सोचा कि हो सकता है विद्यालय के ही किसी शिक्षक ने कुछ ऐसी बातें कही होगी, जो इन शरारती बच्चों के दिल पर लग गई हो। जिसके परिणामस्वरूप इन सबने शरारत न करने का निश्चय कर लिया। लेकिन उन्होंने जब विद्यालय के अन्य शिक्षकों से इस संबंध में बात की तो उन सबने कहा कि हाल-फिलहाल में ऐसी कोई बात उन लोगों के द्वारा बच्चों को नहीं कही गई है। फिर उन्होंने सोचा कि हो सकता है विद्यालय के बाहर कुछ ऐसा किसी ने कहा अथवा घटित हुआ हो, जिसके कारण विद्यालय के शरारती बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन आ गया।

इस मामले को लेकर भास्कर सर की उलझन बढ़ती जा रही थी। उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा था कि अधिक शरारती हो या कम, सभी बच्चों का व्यवहार शिष्ट और शालीन कैसे हो गया। सभी पढ़ाई में भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे। उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि इतनी बड़ी संख्या में बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन का कारण विद्यालय के बाहर नहीं हो सकता है। हो न हो इसका कारण विद्यालय के अंदर ही है।

एक दिन इसका कारण जानने के उद्देश्य से उन्होंने कक्षा में बच्चों से पूछा ''क्या बात है, आज कल कोई बच्चा शरारत नहीं करता? इन दिनों किसी की शिकायत भी नहीं आती?'' उनकी बात को सुन बच्चे मुस्करा कर रह गए। वे थोड़ी देर प्रतीक्षा करते रहे कि शायद कोई बच्चा कुछ ऐसा कहेगा जिससे इस परिवर्तन का पटाक्षेप हो जाएगा। जब किसी बच्चे ने कुछ नहीं कहा, तो शरारती बच्चों के लीडर विप्लव की ओर मुखातिब होते हुए बोले, ''क्यों विप्लव! अब शरारत करने का मन नहीं करता?'' विप्लव ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके साथियों ने भी कुछ नहीं कहा। भास्कर सर को लगा कि शायद कोई ऐसा राज है, जो बच्चे उनके सामने नहीं खोलना चाहते। उस दिन उन्होंने इस प्रसंग को यहीं छोड़ दिया और बच्चों को पढ़ाकर चले आए।

अब उन्होंने इस रहस्यमयी परिवर्तन के उद्‌भेदन के लिए एक नया तरीका अपनाया। बच्चे अक्सर कार्यालय में उनसे पढ़ाई एवं अन्य कार्यवश मिलने आते थे। जैसे ही कक्षा आठ का कोई छात्र उनसे कार्यालय में मिलने आता, वे उससे कुछ अधिक देर तक बातें करते। बातचीत के क्रम में वे शरारती बच्चों के सुधरने के कारणों को टटोलने का प्रयास करते। लेकिन काफी दिनों तक इस तरह के प्रयास करने के बावजूद वे कुछ भी पता नहीं लगा पाए। थक-हारकर उन्होंने मन ही मन स्वयं को सांत्वना दी, ''कारण चाहे जो भी हो, शरारती बच्चों का सुधरना उनके भविष्य के लिय अच्छा है।'' उन्हें अब लगने लगा था कि वे इसका कारण नहीं जान पाएंगे। इसलिए उन्होंने इस दिशा में प्रयास करना भी छोड़ दिया था। धीरे-धीरे इन सब बातों को भूलकर वे सामान्य दिनों की भाँति विद्यालय के पठन-पाठन कार्य में व्यस्त हो गए।

भास्कर सर रचनात्मक सोच के शिक्षक थे। वे बच्चों की पढ़ाई के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान देते थे। एक दिन उन्होंने सोचा-''बच्चे विद्यालय में तो अनुशासित ढंग से पढ़ाई करते हैं। लेकिन कहीं ऐसा तो नहीं कि घर पर व्यर्थ की चीजों में अपना समय नष्ट करते हैं। घर एवं समाज में उनका व्यवहार शिष्ट और शालीन है या नहीं?'' यह सब जानने के उद्देश्य से उन्होंने सभी बच्चों को अपनी दिनचर्या लिखने को कहा। सभी बच्चों ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी दिनचर्या लिखकर भास्कर सर को दिखाया। भास्कर सर ने सभी बच्चों की कॉपी जाँच कर लौटा दिया।

सहसा उन्हें ध्यान आया कि सभी बच्चों की दिनचर्या में एक समानता थी। सभी बच्चों में कोई न कोई परोपकार का कार्य अवश्य किया था। प्रांजल ने गाय को रोटी और उत्कर्ष ने एक आवारा कुत्ते को बिस्कुट खिलाने की बात लिखी थी। वैभव ने एक बुढ़ी दादी अम्मा को सड़क पार करवाने का जिक्र किया था। जबकि प्रत्यय ने अपनी दिनचर्या में प्लास्टिक चुनने वाले एक बच्चे को टॉफी खिलाने तथा उसे विद्यालय जाने के लिए कहने की चर्चा की थी। क्योंकि पढ़-लिखकर ही वह अपनी तथा अपने परिवार की सहायता कर सकता है।

भास्कर सर सोचने लगे-''बच्चे शरारत छोड़ परोपकार का कार्य करने लगे। आखिर इनमें इतना बड़ा परिवर्तन कैसे आया?'' उन्होंने बच्चों से कहा-''तुम लोगों की दिनचर्या बहुत अच्छी है। लेकिन सभी की दिनचर्या में एक समानता है।'' इतना सुनते ही सभी बच्चे बोलने लगे ''सर! हमने किसी की नकल नहीं की। हमारी जो दिनचर्या है, उसे ही लिखा है।'' भास्कर सर ने बच्चों को शांत कराकर कहा ''मेरे कहने का आशय यह नहीं था कि तुम लोगों ने एक-दूसरे की नकल की है। सभी की दिनचर्या में कोई न कोई अच्छा और परोपकार का कार्य शामिल है। यह बहुत ही अच्छी बात है।'' अपने वर्ग शिक्षक के मुख से प्रशंसा के शब्द सुनकर बच्चे बहुत खुश हुए।

''अब मुझे यह बताओ कि यह परोपकार का काम कब से कर रहे हो?'' भास्कर सर ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा।

''पिछले महीने से।'' सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा।

''सभी बच्चे पिछले महीने से?'' भास्कर सर ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

''हाँ।'' बच्चों का जवाब था।

''पिछले महीने से ही क्यो?'' भास्कर सर ने पुनः पूछा।

''क्योंकि मेरे जन्मदिन के अवसर पर बच्चों ने मेरे पापा के समक्ष प्रण लिया था कि प्रतिदिन कोई न कोई परोपकार का कार्य अवश्य करेंगे।'' अनिमेष ने कहा।

''यह तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन यह स्थिति आई कैसे?'' भास्कर सर ने

उत्सुकतावश पूछा।

''दरअसल उस दिन पार्टी खत्म होने के बाद पापा ने सभी बच्चों को अपने संघर्ष के बारे में बताया। जीवन के आरंभिक संघर्ष के दिनों में किसी ने भी उनकी सहायता नहीं की थी। इसलिए उन्हें जब भी अवसर मिलता है, वे लोगों की सहायता कर उनके जीवन की कठिनाई को कम करने का प्रयास करते हैं। अतएव हम लोगों को भी प्रतिदिन परोपकार का कोई न कोई कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए।'' अनिमेष ने कहा।

इसके बाद प्राची ने उस दिन की घटना को विस्तार से बताना शुरू किया, ''अंकल ने यह भी कहा कि ऐसा कभी मत सोचना कि परोपकार का कार्य करने के लिए रुपये-पैसे का होना आवश्यक है। विद्यालय न जाने वाले पड़ोस के किसी बच्चे को खाली समय में पढ़ाकर या उसे विद्यालय जाने के लिए प्रेरित कर सहायता कर सकते हो। किसी वृद्ध या अपाहिज को सड़क पार करने में मदद कर उसके चेहरे पर खुशी लायी जा सकती है। दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति का प्राथमिक उपचार कर या एम्बुलेंस बुलाकर उसकी जान बचा सकते हैं। किसी आवारा पशु को कुछ खिलाकर भी परोपकार का कार्य किया जा सकता है। जिस तरह प्रतिदिन पढ़ाई के समय में पढ़ाई करते हो, खेल के समय में खेलते हो, उसी तरह खाली समय में परोपकार का कार्य करना चाहिए। इसके बाद हम सभी बच्चों ने प्रतिदिन परोपकार का कार्य करने का संकल्प लिया। हमारे संकल्प सुनकर अंकल बहुत खुश हुए। उन्होंने सभी बच्चों को शाबाशी दी।''

भास्कर सर को बच्चों के शरारत करने के कारण का पता चल गया था। उन्होंने कहा ''मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह तुम लोगों की यादगार पार्टी रही होगी। लेकिन क्या किसी को पता है कि शरारती बच्चों की शरारत कैसे छूट गई?''

''नहीं'' कहकर बच्चों ने अनभिज्ञता व्यक्त की।

''बच्चों! दूसरों की सहायता का प्रतिफल हमें किसी न किसी रूप में अवश्य मिलता है। अच्छे काम करने से हमारे व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन होता है। इससे न केवल हमारी कार्यक्षमता बढ़ जाती है बल्कि हम जीवन के हर क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने लग जाते हैं। कुछ बच्चों के शरारत की शिकायतें पहले आती थी, अब नहीं आती। वे पढ़ाई में भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। यह उनके द्वारा अच्छा या परोपकारी काम करने का संकल्प लेने के कारण संभव हुआ है।'' भास्कर सर ने समझाते हुए कहा। उनकी बातों का बच्चों ने भी समर्थन किया।

कार्यालय आकर उन्होंने जब प्रिंसिपल को सारी बातें बताई, तो वे यह सब जानकर बहुत खुश हुए। इसके बाद भास्कर सर ने उनके समक्ष अनिमेष के पापा को विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आमंत्रित कर सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा। जिस पर प्रिंसिपल ने तुरंत सहमति दे दी।

101, रामचन्द्र लोचन वाटिका,
मोहनपुर, पुनाईचक, पटना-23 (बिहार)
मो. 9113166335

मेरी हरित पाठशाला

❐ निधि शर्मा

आओ बच्चो, आओ आओ,
सब कोई मिलकर हाथ बंटाओ।

विद्यालय को हरित बनाओ,
आओ, आओ पेड़ लगाओ।

कोई आओ, पानी लाओ,
कोई जाकर खुरपी लाओ।

छोटी-छोटी मेड़ बनाओ,
रोको पानी, मत फैलाओ।

नन्हें-नन्हें पौधे लाओ,
गड्ढा खोदो उन्हें लगाओ।

बंजरपन को दूर भगाओ,
हरियाली को दोस्त बनाओ।

बूंद-बूंद से घट भर लाओ,
आओ मिलकर पेड़ लगाओ।

परिजन बच्चे सब कोई आओ,
हरित धरा हो शपथ उठाओ।

अध्यापक
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
बालकिशन का बास, कालाखोह, दौसा
मो. 9460047978

मैं उड़न परी

❐ रामेश्वर लाल

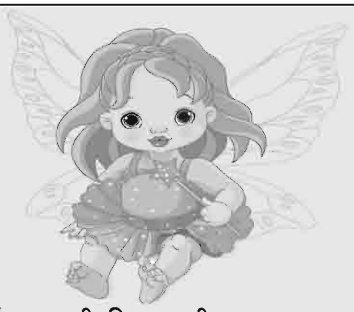

मैं नाना नानी की उड़न परी
नानी के घर जाऊँगी
छोटे-छोटे पंखों को फैला कर
बादलों से रास्ता पूछ लिया है मैंने
मैं तो झिलमिल तारों के संग चलूँगी
नाना जी की गोद में जाकर बैठूँगी
नानी जी से झगला-टोपी पहनूँगी
पहिनकर नाना जी की गोद में बैठूँगी
मैं तो नाना-नानी के घर छम-छम नाचूँगी
तनिक मैं गिर कर आँसू बहाऊँगी
मेरे नाना जी टप टप आँसू बहाएँगे
नाना जी को मुँह पिचका कर बहुत हँसाऊँगी
मैं तो मामी जी की गोद में जा बैठूँगी
मामी जी की गोद से झूँठ-मूँठ गिर जाऊँगी
मामी जी को मामा जी से डाट पिलाऊँगी
मामी-मामाजी को खूब हँसाऊँगी
मैं तो नाना-नानी के घर आँगन छम छम नाचूँगी
मैं तो बुआ के घर जाऊँगी
गोदी में बैठकर जिंदगी की
कठिनाइयों के सरलता से पाठ पढ़ूँगी
मैं तो फूंफा जी की गोद में छम-छम नाचूँगी
मैं हूँ दादा-दादी की नन्ही सी कली
पापा-मम्मी मैं तो नाना नानी के घर जाऊँगी
मटक-मटक छम-छम नाचूँगी।

प्रधानाचार्य (सेवानिवृत्त)
महरड़ा भवन, पुराना किला
सांभरलेक, जयपुर (राज.)
मो. 9929187985

सच्चा मित्र

❐ गोविन्द भारद्वाज

गिल्लू गिलहरी आज सुबह से बड़ी व्यस्त थी। उसे नीम के पेड़ की टहनियों पर दौड़ते भागते सब देख रहे थे। हीरू तोते ने पूछा ''गिल्लू आज तो बहुत भाग दौड़ कर रही हो...।'' ''हाँ...हीरू भैया कल पुस्तक दिवस है इसलिए...।'' गिल्लू ने जवाब दिया। ''पुस्तक दिवस...?'' हीरू ने पूछा। ''अरे भैया, पुस्तक अर्थात किताब पढ़ने वालों में रुचि जाग्रत करने और पुस्तकों के रख रखाव, उनकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुस्तक दिवस मनाया जाता है।'' गिल्लू किताबों को उठाते हुए बोली। हीरू उड़कर उसके पास आया तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। नीम के बड़े से कोटर में गिल्लू ने किताबों का ढेर लगा रखा था। ''अरे इतनी सारी किताबें, कौन पढ़ेगा। इनको?'' हीरू तोते ने पूछा। ''कौन पढ़ेगा... हम सब पढ़ेंगे... मधुवन के सारे पशु और पंछी पढ़ेंगे।'' गिल्लू गिलहरी ने पूँछ को हिलाते हुए कहा।

अगले दिन गिल्लू गिलहरी ने मधुवन में नीम के पेड़ पर एक भव्य पुस्तक प्रदर्शिनी का आयोजन किया। दूर-दूर से पुस्तक प्रेमी अपनी-अपनी पसंद की किताबे खरीद रहे थे। ''गिल्लू यह किताब कितने की है?'' कूकी कोयल ने पूछा। ''कूकी बहन ये मात्र बीस रुपये की है...।'' गिल्लू ने कहा। ''किंतु इस पर तो चालीस रुपये लिखे हैं।'' कूकी बोली। ''अरी बहन जी, पुस्तक दिवस पर पचास प्रतिशत की छूट मिल रही है।'' गिल्लू ने जवाब दिया। देखते ही देखते गिल्लू की प्रदर्शिनी में ग्राहकों की भीड़ लग गयी।

अचानक एक बंदरों की टोली वहाँ आ गयी। उन्होंने किताबों को उलट-पलट कर देखना शुरू किया। कुछ बंदर तो किताबों के पन्ने फाड़ने लगे। ''अरे यह क्या कर रहे हो तुम..?'' गिल्लू ने उन्हें टोकते हुए कहा। ''यह क्या बकवास लगा रखी है... जंगल के निवासी कोई किताब पढ़ते हैं... बड़ी आई... पुस्तक बेचने वाली।'' लालू बंदर ने कहा। ''देखो लालू भैया मुझे कुछ भी कह लो.. लेकिन... लेकिन मेरी

किताबों को फाड़ो मत। ये मेरी पूँजी है... ज्ञान का खजाना हैं।'' गिल्लू गिलहरी ने हाथ जोड़कर कहा। ''अरे हम सब जंगली है... जंगली.. हमें ज्ञान किताबों से नहीं अनुभवों से मिलता है। हम कोई मानव नहीं जो पढ़ने लिखने का नाटक करें।'' ''नाटक मतलब, क्या मनुष्य पढ़ने का सिर्फ नाटक करते है?'' हीरू ने पंख फड़फड़ाते हुए पूछा।

लालू ने आग बबूला होते हुए कहा, ''हाँ...हाँ... मनुष्य ने पढ़ने का ढोंग ही किया है... बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ लेकर भी वे अज्ञानी है।'' ''कैसे लालू भाई?'' कूकी ने बड़ी शांति से पूछा। ''इन किताबों को पढ़कर लोगों ने जात-पांत, धर्म के नाम पर लड़ना और लड़ाना सीखा है। अमीर-गरीब की खाई को गहरा किया है...। भाषा, क्षेत्र और सभ्यता के नाम पर एक दूसरे से लड़ते आए हैं, क्या हम अपनढ़ रहकर भी उनके जैसा व्यवहार करते हैं।'' लालू ने समझाने के अंदाज में कहा।

इस पर गिल्लू गिलहरी बोली, ''लालू भैया... बात तो तुम ठीक कह रहे हो... लेकिन इसमें किताबों का क्या दोष? किताबें तो ज्ञान का भंडार हैं, ये कभी गलत रास्ते पर जाने के लिए नहीं कहती... इसमें लिखी बातों पर अमल किया जाए तो संसार में कभी भी कहीं भी अत्याचार नहीं हो...।'' ''गिल्लू ठीक कह रही है.. लालू देखो इनमें कितनी अच्छी-अच्छी और ज्ञानवर्धक बातें लिखी हुई है।'' हीरू तोते ने कुछ किताबों को दिखाते हुए कहा।

''अरे ज्ञानी हीरू, आजकल तुम टीवी देख रहे हो इन दिनों या अखबार पढ़ रहे हो... पढ़े लिखे विकसित देश आपस में घातक हथियारों से लड़ रहे हैं।'' लालू ने कहा। ''कौन..न..न... कौन लड़ रहें हैं?'' चीनू चिड़िया ने पूछा। जो अभी तक सबकी बातें बड़ी ध्यान से सुन रही थी। लालू बोला ''यूक्रेन और रूस का नाम सुना है तुम सब ने?'' हाँ...मैंने इनके बारे में पढ़ा है किताबों में।''

''हाँ वहीं दोनों पढ़े-लिखे समझदार और विकसित देश आपस में एक दूसरे को नष्ट करने पर तुले हैं। सुना है वे परमाणु हथियारों का इस्तेमाल भी कर सकते हैं, यह पूरी दुनिया के लिए खतरनाक होगा।'' लालू ने एक किताब को फेंकते हुए कहा।

''यह बात तो तुम सच कह रहे हो। लालू.. लेकिन इसमें सभी पढ़े-लिखों या फिर किताबों को दोष देना बिल्कुल गलत है...। किताबें तो हम सब की सच्ची मित्र है... हमारी मार्गदर्शक है...।'' गिल्लू ने बड़े प्यार से समझाया। ''मान जाओ लालू... एक दो किताब पढ़कर देखो... अपने साथियों को समझाओ...किताबें फाड़ना पाप है पाप...।'' कुकी ने गिल्लू का साथ देते हुए कहा।

इतनी देर में एक किताब पर लालू की नज़र गयी। उसे उठाते हुए बोला, ''यह कौन सी किताब है... गिल्लू। इसमें हमारे पूर्वजों की तस्वीर कैसे?'' ''यह रामचरित मानस है भैया...।'' गिल्लू बोली। ''वही रामचरित मानस जिसमें हमारे पूर्वजों ने भगवान का साथ अन्याय के विरुद्ध दिया था।'' लालू ने कुछ याद करते हुए कहा।

''हाँ, भैया...।'' गिल्लू गिलहरी ने जवाब दिया। लालू ने सभी बंदरों को किताबों को न छेड़ने का आदेश दिया।

फिर सभी ने एक-एक किताब खरीदी। लालू ने गिल्लू से माफी माँगी और वहाँ से चला गया। देखते ही देखते गिल्लू की सारे किताबें बिक गई।

पितृ कृपा, 4/254, बी-ब्लॉक,
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, पंचशील,
अजमेर (राज.)-305004
मो. 9461070491

बाल-बाल बचे

❐ रत्नकुमार सांभरिया

दो बहन-भाई थे, संजू और मंजू। मंजू बडी थी, संजू छोटा। मंजू चौथी क्लास में पढ़ती थी और संजू तीसरी में। दोनों ही स्वभाव से तेज-तर्रार और चुलबुले, लेकिन पढ़ने-लिखने में बहुत होशियार थे। माता-पिता को अपने इन नौनिहालों पर बड़ा नाज़ था।

एक दिन मंजू और संजू अपने-अपने कंधे पर थैला लटकाए, उछलते, कूदते, फांदते, बतियाते स्कूल जा रहे थे। वे सामने वाले नुक्कड़ से स्कूल की ओर मुड़ने लगे तो वहाँ एक साधु खड़ा हुआ था। साधु ने हाथ बढ़ा कर दोनों को रोक लिया।

साधु का शरीर गठीला, रंग सांवला था। सिर पर लंबी-लंबी जटाएँ थी। उसका गोल-मटोल चेहरा बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूंछों से ढका हुआ था। उसके गले में मोटे मनकों की दो-तीन मालाएं थी और मस्तक पर चंदन का लंबा सा तिलक लगाए हुए था। कपड़े के नाम पर भगवा रंग का एक बानक पहन रखा था। पाँव में लकड़ी की खड़ाऊ थी। तम्बाकू खाने की वजह से उसके दांत काले पड़ गए थे। उसे देखते ही भय लगता था। उसके दाएँ हाथ में पीतल का एक कमंडल झूल रहा था।

साधु को देख कर मंजू-संजू के हाथ-पाँव फूल गए और डर के मारे एक दूसरे से चिपक गए थे। कलेजा धक-धक करने लगा था। रास्ता रुका देख मंजू ने हिम्मत बाँध ली। उसने सहमते-सहमते साधु के सामने हाथ जोड़ दिए-''साधु बाबा, साधु बाबा, स्कूल में देर हो रही है। जाने दो न हमें।''

साधु ने उनको दुलारते हुए कहा-''मेरे प्यारे बच्चों, तुम डरो मत मुझसे। मैं तो साधु महात्मा हूँ। बच्चों को बहुत लाड़ करता हूँ। मैंने तो तुम्हें प्रसाद देने के लिए रोक लिया है बस।'' उसने कमंडल दिखाते हुए कहा-''यह कमंडल है न, इसमें भगवान का प्रसाद है। यह प्रसाद बहुत गुणकारी होता है। बच्चों! यह प्रसाद खा लोगे तो तुम कभी फेल नहीं होंगे।''

साधु ने अपने कमंडल में हाथ डाल कर एक लड्डू निकाल लिया। वह लड्डू उसने संजू की ओर बढ़ा कर कहने लगा-''ले बच्चे प्रसाद खा ले।''

लड्डू देख कर संजू के मुँह में पानी आ गया था। उसने लड्डू ले लिया। जब वह लड्डू खाने लगा तो एकाएक मंजू को अपने अध्यापक की कही वह बात याद आ गई कि साधु-महात्मा के वेश में धूर्त और पाखंडी लोग भी घूमते हैं। वे बच्चों को मिठाई खिला कर बेहोश कर अपहरण कर लेते हैं। समझदार बच्चों को उनकी दी हुई कोई चीज नहीं खानी चाहिए।

मंजू-संजू को घुड़कते हुए गर्दन हिला कर बोली-''संजू फेंक दे इस लड्डू को। गुरुजी ने मना किया है कि रास्ते में किसी की दी हुई चीज नहीं खानी चाहिए।''

मंजू यह बात कह तो गई, लेकिन उसकी घिग्घी बंध गई थी। संजू ने मंजू की ओर देखा और लड्डू दूर फेंक दिया। मंजू ने संजू का हाथ पकड़ा और तुरंत स्कूल की ओर बढ़ गई। साधु मायूस निगाह से उनकी ओर देखता रहा।

दूसरे दिन सुबह-सुबह मंजू, संजू को जगाने लगी। जब संजू नहीं जागा तो मंजू ने उसका हाथ पकड़ कर उसे बैठा दिया। संजू की नींद तो उड़ गई, लेकिन उसकी आँखों में आलस्य बना हुआ था। वह आँखें मलता हुआ मंजू की ओर देखने लगा-''क्या है, दीदी? बताओ।''

मंजू के हाथ में आज का अखबार था। उसने अखबार संजू के सामने रख दिया था। मंजू ने अखबार में छपी एक फोटो दिखा कर कहा-''संजू भैया देखना, यह फोटो उसी साधु की है न?''

संजू ने गौर से देखा। वह आश्चर्यचकित रह गया। कहने लगा-''हाँ दीदी, है तो उसी की, लेकिन यह अखबार में कैसे छप गई?''

मंजू बोली-''संजू भैया अखबार में लिखा है कि इस भगवाधारी साधु ने कल स्कूल में जाते एक छोटे से लड़के को लड्डू खिला कर बेहोश कर दिया। वह उस बेहोश बालक को अपने कम्बल में लपेट कर उसका अपहरण करके ले जा रहा था कि लोगों ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। उसको खूब मारा-पीटा और फिर पुलिस के हवाले कर दिया।''

संजू की कंपकंपी छूट गई। वह मंजू से चिपट कर कहने लगा-''दीदी बहुत समझदार हो तुम। तुम्हारे कारण ही मैं उसकी बातों में नहीं आया।''

मंजू ने उसे पुचकारा और कहने लगी-''हाँ संजू भैया, समझदारी इसी में है, हमें अपने गुरुजनों और माता-पिता की दी हुई सीख माननी चाहिए।'' मंजू-संजू के चेहरों पर हंसी खेलने लगी थी।

उनके माता-पिता को जब इस घटना का पता लगा तो वे प्रसन्नता से फूले नहीं समाए। उन्होंने मंजू की पीठ थपथपा कर उसे खूब शाबाशी दी।

भाड़ावास हाउस,
सी-137, महेश नगर, जयपुर-302015
मो. 9636053497

बादल राजा

❐ धर्मेन्द्र कुमार सैनी

बादल राजा कहाँ से आए,
बोलो हमको क्या तुम लाए।
बड़ी दूर से आये हो तुम,
कितना पानी लाये हो तुम।
एक कटोरी हमको दे दो,
गुल्लक के पैसे भी ले लो।
अब मत गरजो जोर से,
डरते हैं हम शोर से।
कहाँ जा रहे ठहरो! ठहरो,
आते हैं हम छत पर ठहरो।
बादल राजा रुक जाओ ना,
खीर बनायी लो खाओ ना।
ऊपर थोड़ी छाया कर दो,
जल से एक कटोरी भर दो।
भरी कटोरी बरसे बादल,
आज जाओ! आना फिर कल।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अलीपुर,
बाँदीकुई (दौसा) **मो. 6375508818**

मेरे प्यारे दिनकर

❐ डॉ. कमलेन्द्र कुमार

रोज सवेरे खिड़की से, धूप सुनहरी आती है।
आकर मेरे हर कमरे में, उजियारा कर जाती है।
रवि प्रकाश तुम ऐसे ही, हरदम आते रहना।
मन मंदिर में फैले तम को, हरदम हरते रहना।।
मेरे पथ को दिशा दिखाना, मेरे प्यारे दिनकर।
रात दिन मैं याद करूँगा, तुमको माना गुरुवर।।

रावगंज, कालपी, जिला-जालौन
उत्तर प्रदेश, पिन कोड-285204
मो. 9451318138

एफ.एल.एन. (FLN)

❐ सुनील कुमार राठौर

एफ एल एन ये है एफ एल एन,
बुनियादी साक्षरता-संख्या ज्ञान की ट्रेन
प्राथमिक कक्षाओ में नींव हो पक्की,
तब तक न मिलेगा हमको चैन।
एफ एल एन ये है एफ एल एन....
कला-किट मिलेगा हर बच्चे को,
हर हाथ में हो रंग-पुस्तक-पेन।
एफ एल एन ये है एफ एल एन....
बच्चे सीखेंगे मातृभाषा में,
तो भरेंगे उमंग से उनके नैन।
एफ एल एन ये है एफ एल एन....
गिनती गिनेंगे सब नौनिहाल,
व अक्षरों की पकड़ेंगे चेन
एफ एल एन है ये एफ एल एन....
बुनियादी साक्षरता-संख्या ज्ञान की ट्रेन।

अध्यापक एल-1
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय माण्डवी,
झालावाड़ (राज.)-504640

पंचतत्व

❐ अंकित शर्मा 'इषुप्रिय'

आग

सर्दी दूर भगाती आग।
खाना रोज पकाती आग।
छू लेता हूँ जब इसको।
मेरा हाथ जलाती आग।।

आसमान

आसमान है अपरंपार।
कोई न पहुँचा इसके पार।
ऊँचे-ऊँचे उड़ते पक्षी।
इसमें बादल और बयार।

जल

सबकी प्यास बुझाता जल।
फसलों को लहराता जल।
इसके बिना नहीं जीवन।
काम सभी के आता जल।

धरती

मिट्टी से घरबार बनाते।
अलग-अलग फसलें उपजाते।
खेलकूद करते धरती पर।
जीवन सारा सदा बिताते।

हवा

बादल को बुलवाती है।
बारिश खूब कराती है।
हवा साँस देकर हमको।
जिंदा हमें रखाती है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय पथरोला कलाँ
सिंघावली-बरेह, धोलपुर (राज.)
मो. 8827040078

रंगबिरंगी पतंगे

❐ रेणु गाँधी

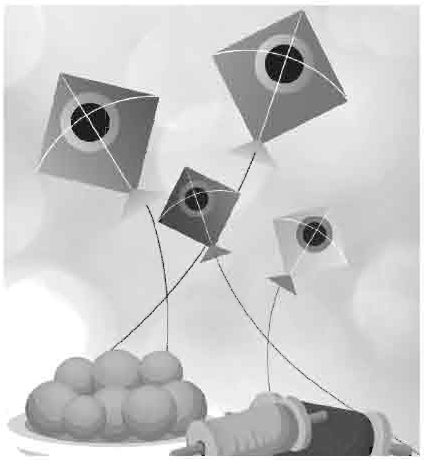

क्षितिज के आँचल पर मचलती
रंग-बिरंगी पतंगे
उड़ती हुई पेंच में उलझती
काट देती एक दूजे के धागे
पवन के साथ गोते लगाती
एक दूजे से ऊँचा उड़ जाती
भोर की किरण उगते
जो चल उठता आसमां का सफर
सांझ ढलते-ढलते
फिर पतंगों को मिल जाता विराम
जीवन भी तो ऐसा ही है
बचपन से जवान होता जीवन
जगत के जंजालो से
उड़ता खेलता, अठखेलियाँ करता
कब अस्ताचल तक पहुँच जाता है
और सांझ की लालिमा में गुम हो जाता
ये पतंगे यही सिखलाती है
जीवन की डोर कसके थामे रहे
और इच्छाओं को उड़ने दो
कोई ख्वाहिश होगी पूरी तो
कोई रह जाएगी अधूरी
बस चलने दो जिंदगी
और बटोर लो खुशियाँ
क्योंकि सांझ तो जीवन में आनी ही है।

सदर बाजार, धरियावाद-313605
जिला-प्रतापगढ़

प्यार के दो बोल

❐ राजेश अरोड़ा

खुशियों के तुम फूल बांटकर,
जग की बगिया को महकाओ।
जिनकी आँखो में आँसू हो,
उनको भइया गले लगाओ।
सुख बांटो, दुःख बांटो सबके,
बांटो प्रेम अर प्रीत को।
सब के मन तुम जीत लो भाई,
गाओ प्यार के गीत को।
सूरज, चाँद, सितारे बनकर,
जग का तम मिटाए रखना।
दीन-दुखियों के आँगन में भी,
खुशियों के दीप जलाए रखना।
पर हित कर के जीता जग में,
वह महान कहलाता है।
बन कर सब की आँख का तारा,
आदर सबसे पाता है।

भारतीय डाक विभाग,
गजसिंहपुर-335024
जिला-श्री गंगानगर (राज.)

पुरुषार्थ

❐ दिनेश कुमार सनाढ्य

मांगू भिखारी दिन भर भीख मांग कर शाम को एक सराय में जाकर सो गया। थोड़ी देर बाद देवा किसान बेल खरीदने के लिए रुपयों की थैली लेकर वहाँ आया। अंधेरा होने पर इसी सराय में रुपयों की थैली को सिरहाने लगाकर सो गया।

भीख की झोली रुपयों की थैली से बोली बहन हम तुम एक ही बिरादरी के हैं फिर इतनी दूरी एवं भेद क्यों है? आओ हम मिलकर एक हो जाएं।

रुपयों की थेली हंस कर बोली क्षमा करो बहन यदि मैं और तुम एक हो गए तो संसार में परिश्रम और पुरुषार्थ का मूल्य ही क्या रह जाएगा।

अध्यापक शारीरिक शिक्षा
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सथाना,
राजसमंद (राज.)

आई दिवानों की टोली

❐ शिवचरण सेन 'शिवा'

झण्डा लेकर शपथ उठाते,
हमने भारत की जय बोली।
रक्षा करने इस धरती की,
आई दीवानों की टोली।
हर चौराहे नारे गूंजे,
बन्दूक में बारूद गोली।
दुश्मन को जब दूर भगाने,
आई दीवानों की टोली।
ना देखे, अरि मुड़कर पीछे,
बन जाए लो सब हमजोली।
हार गले का बनने को यूं,
आई दीवानों की टोली।
सीमा पर हम डटे रहे,
खेलें अरि के खूं की होली।
मृत्यु का लो ताण्डव दिखाने,
आई दीवानो की टोली।

व्याख्याता हिन्दी
राजकीय उच्च माध्यम विद्यालय
गिरधरपुरा, ब्लाक-झालरापाटन,
जिला-झालावाड़ (राज.)-326023
मो. 8003134522

लंबाई को मापी

❐ डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

टेलर चाचा इंच से नापें,
और नापते सेंटीमीटर से।
फुट से नापें राज मिस्त्री,
माँ कपड़ा नापें मीटर से।
लंबी दूरी लोग नापते,
नापें सब किलोमीटर से।
छोटी चीजें हर कोई नापें,
सब नापें मिलीमीटर से।
लम्बाई की है बहुत इकाई,
जिनसे लम्बाई नापी जाए।
इनको जल्दी याद करो तुम,
बुद्धि विवेक सब बढ़ता जाए।
सूक्ष्म चीजें माइक्रोन से नापें,
और नापे आँगस्ट्रोम से।
नैनो मीटर से भी नापो,
याद करो आराम से।
लाइट ईयर (प्रकाश वर्ष) से भी तुम नापों,
चंदा सूरज की दूरी को।
झट पट बच्चों इसको समझो,
चाहे जो मजबूरी हो।

रॉबगंज, कालपी, जालौन-285204 (उत्तर प्रदेश)
मो. 9451318138

परीक्षा परिणाम और बच्चे

❐ व्यग्र पाण्डे

जैसे तैसे परीक्षा बीती,
लगता कोई लड़ाई जीती।

चुन्नू-मुन्नू पपीता-डोली,
खेल रहे सब कंचे-गोली।

अब किताब ना उन्हें सुहाए,
धमा-चौकड़ी सबको भाए।

चंगा पों, छः स्यार निराली,
खुशी मनायें दे देकर ताली।

परिणाम का आया शुभ दिन,
चले सभी कदम गिन-गिन।

कोई मुरझाया कोई खिला,
सदा से ये ही रहा सिलसिला।

किसी के हिस्से झिड़की आई,
किसी ने खूब शाबाशी पाई।

भूल गए पर सब कुछ घंटो में,
बच्चे ना रहते हैं ऐसे टंटो में।

ना गर्मी इन पर रोब जमाती,
असफलता ना कुछ कर पाती।

होते बचपन के ढंग न्यारे,
खेल रहे अब मिलकर सारे।

वरिष्ठ अध्यापक, कर्मचारी कॉलोनी, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राज.) 322201
मो. 9549165579

विचित्र आँखे उल्लू की

❑ शिवनारायण शर्मा

बच्चों, तुमने अपना उल्लू सीधा करना, उल्लू बनाना जैसे मुहावरे तथा उल्लू के पट्ठे जैसे जुमले कई बार सुने होंगे। अर्थात् उल्लू शब्द से आप अच्छी तरह परिचित हो। यहाँ हम आपको यह बता देना चाहते हैं कि उल्लू एक रात्रिचर पक्षी है जो पुराने पेड़ों की खोखल तथा वीरान खण्डहरों में अपना घोंसला बनाकर रहता है। कुछ लोग इसे लक्ष्मी का वाहन होने के कारण शुभ मानते हैं तो कुछ इसे अशुभ भी मानते हैं। छत का उल्लू पर बोलना भी अशुभ समझा जाता है जो निरा अन्धविश्वास है।

चूहे उल्लू का पसंदीदा भोजन है। इसके कान अति संवेदनशील होते हैं। शिकार की तनिक सी आहट पाकर यह उसे अपने पंजों में दबोच लेता है। यहाँ हम आपको रोचक जानकारी देंगे कि आखिर उल्लू की आँखों में ऐसा क्या जादू हैं जिससे वह अंधेरे में भी आसानी से देख सकता है। सबसे पहली बात यह है कि उल्लू की आँख की रेटिना पर किसी भी वस्तु का चित्र बहुत बड़ा बनता है क्योंकि इसके आँख के लेन्स व रेटिना की दूरी हमारी आँख के लेन्स व रेटिना की तुलना में अधिक होती है। इसके साथ इसकी आँख में ''पेक्टन'' नामक विशेष अंग होता है जो अलग-अलग दूरियों के लिए लेन्स को आसानी से फोकस कर देता है।

दूसरा कारण उल्लू की आँख में Rods तथा Cones की संख्या प्रतिवर्ग मिलीमीटर दस हजार होती है जबकि हमारी आँख में मात्र दो हजार। अतः उल्लू हमसे पाँच गुना अधिक देख सकता है।

तीसरा कारण उल्लू की आँख में लाल रंग का विशेष प्रोटीन पाया जाता है जिससे इसकी आँखे रात्रिकालीन प्रकाश हेतु अधिक संवेदनशील होती है।

चौथा कारण इसकी आँखों की पुतलियां अधिक फैल सकती है। जिससे रात्रि के कम प्रकाश में भी यह वस्तुओं को आसानी से देख सकता है। आशा है यह वैज्ञानिक जानकारी आपको ज्ञान-वर्द्धक व रोचक लगी होगी।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी,
मु. पोस्ट-गिलूण्ड, जिला-राजसमन्द
मो. 9610706740

ध्रुवतारा सा जगमगाएं...

❑ सत्य भूषण शर्मा

नील गगन से अनगिन तारे,
तारों में इक तारा न्यारा,
जिसको कहते हैं ध्रुवतारा।
जो सबसे है तेज चमकता,
रोज रात को आ दमकता,
कहते हैं तुम जब बच्चे थे,
दृढ़ निश्चय धुन के सच्चे थे,
हम बच्चों की यही प्रार्थना,
प्रभु सुनलो हमारी आराधना,
हम भी कुछ ऐसा कर जाएं,
ध्रुवतारा सा जगमगाएं,
अन्धकार को दूर भगाएं,
धरती से नभ तक छा जाए,
हो जाएं फिर सब से न्यारे,
बन जाएं आँखों के तारे।
नील गगन में अनगिन तारे,
तारों में इक तारा न्यारा,
जिसको कहते हैं ध्रुवतारा।

प्रवक्ता-भौतिक विज्ञान, संत ग्रेगोरियस सीनियर सेकेंडरी स्कूल, उदयपुर-313001
मो. 9414934304

मन मर्जी

❑ सनय बीकानेरी

सब कहते है
मुझको जिद्दी,
पर मैंने तो कभी जिद्
की नहीं
घर में चलती
पापा की मनमर्जी
पर मेरी मर्जी कभी
किसी ने मानी नहीं,
मम्मी करती
पूरी सबकी मर्जी
पर मेरी मर्जी तो मम्मी
सुनती नहीं
मैं भी हूँ प्यारा
भोला सा बच्चा
चाहता हूँ सब
मेरी बात सुनें
पर मेरी मर्जी तो
कहीं चलती नहीं
सब कहते हैं
मुझको जिद्दी
पर मैंने तो कभी
जिद्द की नहीं

पुगल रोड़, बीकानेर

रिश्ते

❑ सुमन सिंह

मोमबत्ती से नाजुक
दिलों में अगर बसाए
पल में पिघल जाते हैं,
रिश्ते।
रंग बिरंगे गुब्बारों
से हल्के,
क्षण में हवा हो जाते हैं,
रिश्ते।
माचिस की तीली
कब अगन बन जाए?
जान न पाते हैं
रिश्ते।
पंखुड़ियों से नाजुक,
रोज बिखरते,
और फिर बन जाते,
ये रिश्ते।

से.नि. उप. निदेशक
के.के. कॉलोनी, बीकानेर
मो. 94137257

बालशिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

है! बसंत तुम आओ

हैं! बसंत
तेरे आने से तरुण-तरु में
नयी उमंग आती हैं
इस धरा पर सुन्दर सी
हरियाली छा जाती हैं
हैं! बसंत तेरे आने से
अबोहवा महक उठती हैं।
हैं! बसंत...
हैं! बसंत तेरे आने से
खेत-खलिहानों की शोभा बढ़ती हैं
घने जंगलों में
कोयल भी कूक उठती हैं
हैं! बसंत तेरे आने से
हरजन का मन...
उत्साह, उमंग से भर जाता हैं
हैं! बसंत...
हैं! बसंत तेरे आने से
सकल विकल जन का
होता शीतल मन हैं
पत्तों से लदी डाल...
कहीं हरी तो कहीं लाल हैं
मादकता से प्रफुल्लित
ये सारा जहान हैं।
ऐ! बसंत तुम आओं।।

मनोहरलला, कक्षा-10
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आखराड़,
तह.-रानीवाड़ा, जिला-जालोर (राज.) 343039

शिक्षा प्रसार का महत्त्व

शिक्षा मनुष्य का अमूल्य धन है।
शिक्षा के बिना मनुष्य निर्धन है।
शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन अधुरा है।
शिक्षा से ही मनुष्य दौलत से भरा है।
शिक्षा में ही जीवन की गति है।
शिक्षा से ही मनुष्य की मति है।
शिक्षा में ही हर क्षेत्र में सहारा है।
शिक्षा से ही संसार में उजियारा है।
शिक्षा माता-पिता, गुरु का दिया सोना है।
शिक्षा के बिना मनुष्य का रोना ही रोना है।
शिक्षा से मनुष्य की पहचान है।
शिक्षा में ही समाज की शान है।
शिक्षा आधुनिक युग का हथियार है।
शिक्षा से ही ज्ञानशाली नौजवान तैयार है।
शिक्षा से ही मानव जीवन का उदय है।
शिक्षा से ही सम्पूर्ण जगत प्रभु तुल्य है।
शिक्षा से ही अन्धविश्वासों से छुटकारा है।
शिक्षा में ही भावी पीढ़ी का सपना प्यारा है।
शिक्षा आधुनिक समाज की रानी है।
शिक्षा के बिना मनुष्य में नादानी है।
शिक्षा का संकल्प अब हमारा हो।
घर-घर शिक्षा का उजियारा हो।

सुभाष गर्ग, कक्षा-11
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धमाणा का गोलिया (जालोर) मो. 9610714084

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-वरिष्ठ संपादक

पुस्तक समीक्षा

सर्जन के विविध रंग और सहेजने का सुख

लेखक : गोविन्द जोशी; **प्रकाशक** : सुरभि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान, बीकानेर; **प्रथम संस्करण** : 2021; **मूल्य** : ₹200

'सहेजने का सुख' पुस्तक गोविंद जोशी द्वारा लिखित पाँचवी पुस्तक है। यह पुस्तक करीब चार दशक के अंतराल के बाद प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक एक खूबसूरत गुलदस्ते की तरह है जिसमें नाना भांति के फूल हैं। रेखाचित्र, संस्मरण, आलेख, किस्से, कहानी, कविता जैसे कई रूप हैं। हम क्रमश: एक -एक रूप पर बात करेंगे।

लेखक एक लंबे अरसे से शिक्षा की नवाचारी योजना 'लोक जुम्बिश' से जुड़े रहे हैं। इस योजना के लोकपक्षी रूपों का वर्णन इन्होंने इस पुस्तक में किया है। ऐसा ही एक वर्णन आबू पर्वत- 1992 की शैक्षिक विमर्शों से संबंधित उपनिषद को लेकर है जिसकी अगुवाई पूर्व केंद्रीय शिक्षा सचिव अनिल बोर्दिया जी कर रहे थे। इस ज्ञान गोठ में जो विमर्श के मुद्दे निकलकर आए, वे आज भी प्रासंगिक हैं। बानगी के तौर पर, मूल्यांकन व्यवस्था की जड़ता, शिक्षकों का पूरा फोकस तबादलों की तरफ होना, रटने की प्रक्रिया पर जोर, सर्जनात्मक शिक्षा की उपेक्षा, सीखने-सिखाने में जनभागीदारी का अभाव आदि ऐसे ही मुद्दे हैं।

किताब में एक मुद्दा आजाद हिंद फौज से जुड़ा प्रौढ़ शिक्षा आंदोलन का है। इस फौज में बंदूक के साथ-साथ कलम की शिक्षा भी दी जा रही थी, इसी कारण इस फौज का आपसी जुड़ाव और संप्रेषण बहुत अच्छा था। दूसरे विश्व युद्ध की एक भी घटना किताब में वर्णित है-

''आजाद हिंद फौज के सैनिक कलम उठाकर साक्षर हुए। राजनीतिक व सांस्कृतिक व्याख्यान मालाओं को सुनकर उनमें स्वदेश प्रेम की भावना बलवती हुई। विप्लवी साहित्य पढ़कर वे मर मिटने को प्रेरित हुए। मैं सोचता हूँ कि स्वतंत्रता की बलिवेदी पर बलिदान देने से पूर्व इसकी बुनियाद की मजबूती के लिए आजाद हिंद फौज के सैनिकों ने खंदकों में, सैनिक शिविरों में भी प्रौढ़ शिक्षा आंदोलन जारी रखा। वह क्या स्वर्णाक्षरों से नहीं लिखा जाएगा। लेखक ने ऐसे कई तत्कालीन गीतों का संकलन किया है जिसमें बिस्मिल, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि का नाम शामिल है।

पुस्तक में लोक कथाओं से प्रेरित आठ कहानियाँ भी संकलित हैं। इन कहानियों में कथाओं का कुछ हेरफेर है परंतु प्रश्नाकुलता तथा संदेश सम्प्रेषणीयता बेजोड़ है। 'आशा ही जीवन है' नाम की कहानी-'बाबो आसी बाटियो लासी'-भारतीय लोक कथा पर आधारित है परंतु लेखक ने अपनी कल्पना से इसको विस्तार दिया है और प्रश्नाकुलता को बराबर बनाए रखा है।

पुस्तक में लोक संस्कृति के पाँच आलेख और प्रकाशित हुए हैं। जो एक विस्तार की हूक लेकर हाजिर होते हैं।

जोशी जी खुलासा करते हैं कि हमारा राजस्थानी लोक साहित्य बहुत समृद्ध है।इसकी समृद्धि का एक उदाहरण हम फिल्मी गीत 'तेरी दो टके की नौकरी मेरा लाखों का सावन जाए' के प्रभाव में देख सकते हैं। राजस्थानी का यह गीत कई वर्षों से गाया जा रहा है-

पाँच रुपियारी थारी नौकरी, जी म्हारा राज
लाख मोटरां री तीज, तीज सुण्यां घर आय।

लगता है, यह फिल्मी गीत इसी लोकोक्ति से प्रभावित होकर वर्मा मलिक ने उस समय लिखा होगा। जोशी जी ने इस संकलित गीत को प्रस्तुत कर राजस्थानी लोक साहित्य का मान बढ़ाया है। जोशी जी ने यूं तो यह किताब हिंदी में लिखी है परंतु कहीं कहीं राजस्थानी और कहीं-कहीं दोनों के मिश्रित रूप का प्रयोग किया है। इस रूप चयन में भी इनकी लोक दृष्टि रही है। रेखाचित्र 'जीमण जीव जतन' (मोड़जी) जो बीकानेर शहर के अंदरूनी भाग का भोजन प्रेमी पात्र है, के चरित्र को उभारने के लिए स्थानीय राजस्थानी भाषा का प्रयोग करते हैं। इस प्रयोग से पात्र के व्यक्तित्व के साथ-साथ तत्कालीन वातावरण एवं भौगोलिकता भी मुखर हो उठी है। उनकी लोकभाषा की एक बानगी देखिए-

गंवू भरणो रंग। सळ पड़योड़ा गाल। थोड़ी झुक्योड़ी कमर। धोळो कुरतो-जाळी झरोखा बी में जाग्यां निकळयोड़ा। गोड़रतां ईरो पंछियो।

किताब की बहुरंगता में ऐसे कईं रंग रेखा चित्रों के हैं। इसमें भोजन शौकीन मोड़जी, उमर छुपाऊ लक्ष्मी व चाय वाले अर्जुन जी के जीवन से जुड़े चित्र हैं तो प्रखर समाजवादी मुरलीधर जी व्यास के जीवन से जुड़ेचित्र है। बीकानेर ही नहीं राजस्थान में समाजवादी राजनीति को जमीन पर उतारने वाले व्यासजी आज दुनिया में नहीं है परंतु बड़े बुजुर्गों से उनकी सादगी, लोक जुड़ाव व राजनीतिक विरोध के किस्से सुने जा सकते हैं। यह रेखाचित्र ऐसे ही कुछ किस्सों की झलक दिखाता है परंतु यहाँ संक्षेपण है जो अखरता है। कारण, व्यास जी विराट व्यक्तित्व के धनी रहे हैं तथा उनके व्यक्तित्व की कथाएँ बीकानेर की माटी के कण-कण में व्याप्त है। उसे मात्र दो पृष्ठों में समेटना ठीक नहीं लगता। अस्तु वर्ण्य विषय की पठनीयता पुस्तक में बराबर रही है। अत: समीक्ष्य पुस्तक सहेजने का सुख देने के मामले में सफल मानी जा सकती है।

इसी सिलसिले में लेखक आजादी की चेतना को जगाने वाले कई गीतों का उल्लेख करते हैं। ऐसा ही एक गीत है जो 1857 के राष्ट्रपति पत्र 'पयामेआजादी' में प्रकाशित हुआ था। गीत का एक अंश प्रस्तुत है-

हम हैं इसके मालिक हिंदुस्तान हमारा
पाक वतन है कौम का जन्नत से प्यारा
यह है हमारी मिल्कियत हिंदुस्तान हमारा
इसकी रूहानियत से रोशन है जग सारा

यहाँ अशफाक उल्ला खान की देशभक्ति और उनके गीतों का जिक्र भी काबिलेगौर है। वे एक गीत 'खाके वतन' में लिखते हैं -

कुछ आरजू नहीं है , है आरजू तो यह
रख दे कोई जरा सी खाके वतन कफन मे
ऐ पुख्तकार उल्फत होशियार ,डिग न जाना
मराज आशकां है इस दार और रासन में ।

लेखक ने ऐसे कई तत्कालीन गीतों का संकलन किया है जिसमें बिस्मिल, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि का नाम शामिल है ।

समीक्षक-**डॉ. मूलचंद बोहरा**
रामेश्वम्, 2, ए 34, मुरलीधर व्यास नगर विस्तार, बीकानेर (राज.)
मो: 9414031502

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रघुनाथपुरा, ब्लॉक-सूरतगढ़, जिला-श्रीगंगानगर

❒ रामकुमार सहू

मरू के अंचल में बसा गाँव रघुनाथपुरा ब्लॉक सूरतगढ़ जिला श्रीगंगानगर में स्थित है जिसकी अक्षांशीय व देशान्तरीय स्थिति क्रमश: 29 डिग्री 21 मिनट उत्तर व 73 डिग्री 60 मिनट पूर्व है। यह गाँव विजयनगर, बीकानेर लिंक मार्ग पर स्थित है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देखें तो इस गाँव की स्थापना 200 वर्ष पूर्व मानी जाती है। दन्त कथाओं के माध्यम से मिली जानकारी अनुसार कुछ वर्ष पहले यह वन स्थल महाजन जागीर का हिस्सा था। महाजन के राजा ने पश्चिम दिशा से आने वाले आक्रान्ताओं को शान्त करने के लिए इस वन स्थली की जागीरदारी श्री रघुनाथसिंह को सौंपी ताकि इन आक्रान्ताओं को शान्त किया जा सके। यहाँ पानी की उपलब्धता होने के कारण कालान्तर में गाँव की स्थापना हुई और श्री रघुनाथसिंह के नाम पर इस गाँव का नाम रघुनाथपुरा पड़ा।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रघुनाथपुरा का इतिहास

मेरा जन्म 1956 ई. में प्राथमिक शाला के रूप में हुआ था, शैशवावस्था से धीरे-धीरे बाल्यकाल की ओर अग्रसर हुआ और सन् 1984 ई. में कच्चे भवन का निर्माण हुआ। सन् 1984 ई. में ही उच्च प्राथमिक शाला में क्रमोन्नत हुआ मुझे किशोरावस्था 2010 ई. में प्राप्त हुई और माध्यमिक विद्यालय कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। सन् 2013 ई. से मुझे माध्यमिक स्कूल परीक्षा केन्द्र का सुअवसर प्राप्त हुआ। सन् 2015 ई. में मुझे उच्च माध्यमिक कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ। सन् 2017 ई. से मुझे उच्च माध्यमिक परीक्षा केन्द्र का सुअवसर प्राप्त हुआ। सन् 2020 में विज्ञान संकाय व 2021 में कृषि संकाय जुड़ने से मेरी ख्याति में वृद्धि हुई।

यह गाँव कृषि प्रधान है यहाँ पर अन्य प्राथमिक व्यवसाय भी किए जाते है। व्यवसायिक दृष्टि से गाँव पिछड़ा हुआ है। परन्तु हाल के कुछ वर्षों में सरकारी योजनाओं व निजी प्रयासों से व्यवसाय की दृष्टि से सुधार हुआ है एवं विकास की ओर अग्रसर है।

मैं रा.उ.मा.वि. रघुनाथपुरा में प्रधानाचार्य के पद पर 1 अक्टूबर 2019 को पदस्थापित हुआ। प्रधानाचार्य के रूप में मेरे सामने बहुत सारी चुनौतियां थी जैसे विद्यालय में कक्षा-कक्ष की कमी, विद्यालय का खेल मैदान, कम्प्यूटर लैब, विज्ञान विषय की पढ़ाई के लिए शहर के निजी विद्यालयों में बच्चों का पलायन, विद्यालय में भौतिक सुविधा (फर्नीचर, शौचालय, इत्यादि)।

मैने कार्यभार ग्रहण करते ही इन चुनौतियों के समाधान करने का संकल्प लिया। सर्वप्रथम SDMC बैठक व सामुदायिक बाल सभा में ग्राम के गणमान्य व्यक्तियों के सामने इन चुनौतियों को रखा एवं ग्रामों के विकास के लिए ग्राम विकास समिति बनाने का सुझाव दिया। ग्रामवासियों नें इस सुझाव को तत्काल मानते हुए ग्राम विकास समिति का गठन किया तथा इन चुनौतियों का सामना करते हुए कार्यग्रहण पश्चात् निम्न उपलब्धियों को हासिल किया।

कक्षा-कक्ष की समस्या का समाधान कर गाँव के सर्वसमाज को प्रेरित कर हर समाज से एक-एक कर 12 कमरे मय बरामदों का निर्माण करवाया। जिसमें श्री चन्दूराम लेघा, श्री गणेशाराम राव, श्री जगमाल गोदारा, गोदारा समाज, ब्राह्मण समाज, राव समाज, मेघवाल समाज, गोसाई समाज, कुम्हार समाज, नाई समाज, नाथ समाज, जाट समाज आदि का योगदान रहा।

अन्य महत्त्वपूर्ण योगदानों में :-

1. भामाशाहों द्वारा 2.52 लाख रुपये से जलघर का निर्माण व वाटरकूलर भेंट।

2. भामाशाह श्री हरीराम राव द्वारा नवीन विद्यालय भवन के मार्ग के लिए भूमि दान की।
3. विद्यालय में चार-दीवारी के अभाव में भामाशाह द्वारा 2 लाख रुपये की लागत से एक बीघा भूमि की तारबंदी।

4. ग्राम पंचायत द्वारा खेल मैदान के समतलीकरण हेतु 8.25 लाख रुपये की राशि स्वीकृत।
5. विद्यालय में भामाशाहों के सहयोग से पेयजल के लिए सम्बर्सीबल पम्प।
6. विद्यालय भवन को CCTV कैमरे लगवाकर आधुनिकीकरण करना।
7. सी.एस.आर. फंड में एफ.सी.आई. द्वारा 3 कम्प्यूटर सेट भेंट।

8. विद्यालय में अभिभावक भामाशाहों द्वारा वेन (बालवाहिनी) सुविधा।

गाँव के भामाशाहों द्वारा नवनिर्मित विद्यालय भवन : विद्यालय के लिए खेल मैदान स्वीकृत हुआ जिसके पश्चात विद्यालय की बालिका का राष्ट्रीय जूनियर कबड्डी प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर चयन हुआ। विद्यालय के 14 वर्षीय कबड्डी छात्रा में जिले में उपविजेता।

विद्यालय में ICT Computer Lab की स्थापना, विज्ञान विषय की पढ़ाई के लिए विज्ञान संकाय की अनुमति। भौतिक सुविधा के अन्तर्गत 100 फर्नीचर व शौचालय का निर्मण। विद्यालय का परीक्षा परिणाम जिले के टॉप 5 सरकारी विद्यालय में शामिल हुआ।

वर्ष (2021-2022) कक्षा 10 व 12 का परीक्षा परिणाम

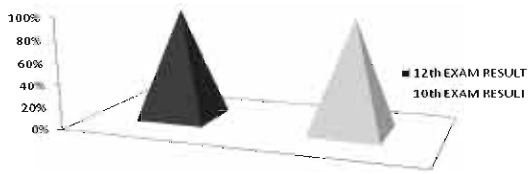

विद्यालय के विकास में आगामी लक्ष्य

1. बच्चों की उपस्थिति बायोमैट्रिक करवाना।
2. विद्यालय में वाचनालय व पुस्तकालय का निर्माण कर पूर्णत: डिजिटलीकरण करना।
3. खेल मैदान में बॉस्केटबॉल कोर्ट, 400 मी. रनिंग ट्रेक, क्रिकेट ग्राउण्ड, कबड्डी ग्राउण्ड, वॉलीबाल ग्राउण्ड का निर्माण।
4. विद्यालय भवन की चार दीवारी व मुख्य द्वार का निर्माण।
5. विद्यालय मे NCC यूनिट का गठन करना।
6. विद्यालय सौन्दर्यकरण में हरितवाटिका का निर्माण।
7. प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए किण्डर गार्डन का निर्माण।
8. फिट इण्डिया के तहत ग्रामवासियों व बच्चों के लिए OPEN ZYM का निर्माण।
9. मिड-डे-मिल योजना के लिए किचन व बच्चों में भोजन व्यवस्था के लिए शेड का निर्माण ।
10. सामुहिक कार्यक्रमों के लिए ऑडिटोरियम का निर्माण।

ग्राम पंचायत में शैक्षिक नवाचार :

1. गत वर्ष से विद्यालय में प्रवेश ऑनलाइन माध्यम से किया गया।
2. राज्य सरकार की ई-स्माइल कार्यक्रम की निगरानी गूगल शीट के माध्यम से।
3. पी.ई.ई.ओ. द्वारा अधीनस्थ विद्यालयों के संस्थाप्रधान की बैठक गूगल-मीट की सहायता से।
4. बोर्ड कक्षाओं के लिए स्थानीय स्तर पर प्री बोर्ड परीक्षा का आयोजन कर तैयारी करवाना।
5. बच्चों की प्रगति रिपोर्ट साप्ताहिक फोन के माध्यम से अभिभावकों को अवगत करवाना।
6. 1 से 10 तक न्यून स्तर अधिगम वाले विद्यार्थियों का चयन कर अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन करना व समानुपातिक रूप से बांट कर अध्यापकों को बच्चे गोद देना।
7. प्रतिदिन अनुपस्थित रहने वाले बच्चों को संस्थाप्रधान द्वारा फोन कर विद्यालय में न आने का कारण जानकर आगे से उपस्थिति हेतु पाबन्द करना।

राजकीय विद्यालयों के गौरवशाली इतिहास को पुन: लौटाने के संकल्प के साथ।

प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. रघुनाथपुरा
ब्लाक सूरतगढ़, जिला-श्रीगंगानगर

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–जुलाई 2022 में 50 हजार एवं अधिक दान देने वाले दानदाता

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	SUMER SINGH	MAHATMA GANDHI GOVT. SECONDARY SCHOOL MANSHA JOHARI (402613)	PIPRALI	SIKAR	320000
2	RAVI KUMAR LAMBA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHELASI (216037)	NAWALGARH	JHUNJHUNU	300000
3	MANOJ KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHOJAWAS (227424)	NAWALGARH	JHUNJHUNU	131000
4	SUBHASH CHANDRA MUND	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHOJAWAS (227424)	NAWALGARH	JHUNJHUNU	100100
5	INTIMETEC VISIONSOFT PRIVATE LIMITED	ANARDEVI GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NAGAR (217063)	NAGAR	BHARATPUR	100000
6	BANSHIDHAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL TODAS (219977)	KUCHAMAN	NAGAUR	100000
7	DR RAM S WAROOP MEENA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANOTA (464623)	SAWAI MADHOPUR	SAWAI MADHOPUR	100000
8	BABITA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ABUSAR (211577)	JHUNJHUNU	JHUNJHUNU	100000
9	ANIL KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHAINPURA CHHOTA (215205)	RAJGARH	CHURU	100000
10	PRAMOD KUMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ABUSAR (211577)	JHUNJHUNU	JHUNJHUNU	100000
11	MANMOHAN SINGH	SHRI TULSIRAM RAMNARAYAN GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SHOBHASAR (215432)	SUJANGARH	CHURU	95700
12	MEENAKSHI PARMAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PREMPURA (219963)	KUCHAMAN	NAGAUR	73500
13	PARMESHWARI SHIVRAN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SULKHANIYA CHHOTA (215265)	RAJGARH	CHURU	65000
14	DHARM PAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANGOTHARI (215836)	SURAJGARH	JHUNJHUNU	51000
15	BAJRANG LAL	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KISHANPURA (473774)	DEEDWANA	NAGAUR	51000
16	KAILASH BAI LODHA	SWAMI SHRI RAMESHWAR ASHRAM GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GURUKUL (224616)	BAKANI	JHALAWAR	51000
17	JAI SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RAMPURA DABRI (218597)	JALSU	JAIPUR	51000
18	NARAYANLALPATIDAR	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL SEMALIYA (401149)	GARHI	BANSWARA	51000
19	ANSH GUPTA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAYANA (217402)	BAYANA	BHARATPUR	51000
20	GIRISH CHANDRA PANDYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHEDA (223905)	GARHI	BANSWARA	51000
21	UDARAM POTALIYA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BIJARASAR (419937)	SARDAR SHAHAR	CHURU	51000
22	RAJESH KUMAR YOGI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANOTA (464623)	SAWAI MADHOPUR	SAWAI MADHOPUR	51000
23	KALURAM BHAMBI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RUPAHELI KALAN (214438)	HURDA	BHILWARA	50900

24	MALARAM MEGHWAL	GOVT. UPPER PRIMARY SCHOOL KUSUMDESAR (474671)	SARDARSHAHAR	CHURU	50000
25	MADHU SAMOTA	GOVT. GIRLS SENIOR SECONDARY SCHOOL NP BADI SADRI (224403)	BADI SADRI	CHITTAU-RGARH	50000
26	PURAN MAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SATYUN (215174)	TARANAGAR	CHURU	50000
27	RAMKISHOR BIDIYASAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHINYALA (213429)	JAYAL	NAGAUR	50000
28	HARVEER SINGH JAKHAR	MAHATMA GANDHI GOVT. SCHOOL RATAU (478507)	LADNUN	NAGAUR	50000

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह-जुलाई 2022 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	99	1438730
2	JHUNJHUNU	27	885000
3	SIKAR	54	698750
4	BANSWARA	210	478143
5	NAGAUR	52	450889
6	BHARATPUR	27	259913
7	HANUMANGARH	290	236264
8	UDAIPUR	35	235693
9	BHILWARA	37	209029
10	SAWAIMADHOPUR	5	184400
11	JAIPUR	23	157400
12	BARAN	17	136666
13	RAJSAMAND	13	127038
14	CHITTAURGARH	18	113658
15	AJMER	40	111221
16	JHALAWAR	7	94655
17	BARMER	203	92263
18	PRATAPGARH	19	82510
19	PALI	130	72123
20	GANGANAGAR	15	68403
21	ALWAR	36	65800
22	KOTA	28	60522
23	DHAULPUR	9	52100
24	TONK	7	47700
25	JODHPUR	15	38000
26	DUNGARPUR	18	23000
27	BIKANER	4	22300
28	BUNDI	11	18752
29	JALOR	70	4426
30	DAUSA	5	3699
31	JAISALMER	22	2410
32	KARAULI	7	970
33	SIROHI	2	151
Total		**1555**	**6472578**

ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट

विभिन्न औद्योगिक घरानों/संस्थानों/व्यक्तिगत दानदाताओं द्वारा राजकीय विद्यालयों मे सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से स्वीकृति हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Create your own Projects में Projects Submit किए गए। माह जुलाई 2022 में 02 करोड 87 लाख से अधिक की लागत से कुल 07 **Projects** स्वीकृत/अनुमति प्रदान की गई है, उक्त अनुमोदित/स्वीकृत किए गए Projects निम्नानुसार है:-

क्रं. स.	कम्पनी/संस्था/दानदाता का नाम	प्रोजेक्ट संख्या	कम्पनी/संस्था/दानदाता द्वारा किए जाने वाले कार्य का विवरण	अनुमानित लागत/ व्यय (लाखों में)
1	श्री सतपाल गोदारा	933	रा.उ.प्रा.वि., श्रीगंगानगर, गंगानगर में स्मार्ट कक्षा-कक्ष निर्माण कार्य	8.10
2	श्रीमति मीरा देवी मानसिंह राम पटेल चैरिटेबल ट्रस्ट	940	रा.उ.प्रा.वि., जाजुसन, सांचोर, जालोर में भवन, प्रधानाध्यापक कक्ष, पुस्तकालय कक्ष का निर्माण कार्य	65.00
3	पॉली मेडिक्योर लिमिटेड	943	रा.बा.उ.मा.वि राजमहल गुलाबसागर, जोधपुर सिटी, जोधपुर में बालिका शौचालय, खेल का मैदान विकास, अन्य कक्ष, पुस्तकालय कक्ष, फर्नीचर, अतिरिक्त कक्षा कक्ष (9-12), स्मार्ट क्लासरूम, इत्यादि का निर्माण कार्य	200,00
4	श्री मूल सिंह राठौड	944	रा.उ.प्रा.वि., भवाद, मोलासर, नागौर टीन शैड एवं कक्षा-कक्ष का निर्माण कार्य	9.32
5	श्री अरविन्द कुमार पाठक	945	महात्मा गांधी रा.वि. सरेडी बडी, गरही, बांसवाडा में कक्षा (1-8), का निर्माण कार्य	4.18
6	रेखा रोत	946	महात्मा गांधी रा.वि. बोरी, गरही, बांसवाडा में छात्राओं के शौचालय, का निर्माण कार्य	0.34
7	रेखा रोत	947	महात्मा गांधी रा.वि. बोरी, गरही, बांसवाडा में छात्राओं के शौचालय, का निर्माण कार्य	0.30
	कुल राशि			**287.24**

(मा.शि. अनुभाग, मा.शि. राज. बीकानेर)

आजादी के अमृत महोत्सव राज्य स्तरीय कार्यक्रम,जयपुर के आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, अध्यक्ष माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, अति.वि. अतिथि शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती जाहिदा खान, मुख्य सचिव श्री पवन कुमार गोयल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल, जिलाधीश जयपुर एवं अन्य शीर्षस्थ अधिकारीगण की उपस्थिति में 1.23 करोड़ विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति गीतों का प्रस्तुतिकरण करते हुए।

राजकीय सेठ भेरूदान चौपड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय गंगा शहर बीकानेर में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत् विशेष कार्यक्रम भारत शृंगार के आयोजन में प्रस्तुतिकरण करते हुए शाला स्टाफ एवं विद्यार्थीगण ।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर श्रीमान् गौरव अग्रवाल ने राजीव गांधी ग्रामीण ओलम्पिक खेलों के लिए खिलाड़ियों का किया संबलन

नेशनल जम्बूरी स्थल निम्बली बह्मनान रोहट, पाली में पूर्व तैयारी का अवलोकन करते निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर श्री गौरव अग्रवाल एवं स्काउट अधिकारी।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के श्री गौरव अग्रवाल द्वारा राजकीय महात्मा गाँधी (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय सांडेराव, पाली प्राथमिक कक्षाओं में अवलोकन एवं शिक्षण करते हुए।

एमजीजीएस कलेक्ट्री झालावाड़ की चित्रकला प्रतियोगिता की झलकियाँ

राजकीय सादूल उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर की चित्रकला प्रतियोगिता की झलकियाँ

एमजीजीएस खांडू कॉलोनी, बांसवाड़ा की चित्रकला प्रतियोगिता की झलकियाँ

शिविरा पत्रिका (मासिक) : सितम्बर, 2022 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका : सितम्बर, 2022

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ढाकिया में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 10 से 15 अगस्त के मध्य राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड स्थानीय संघ रामगंज मण्डी, झालावाड़ प्रभारी जिला कमिश्नर श्री विनोद कुमार वर्मा, सचिव श्री दयाल सिंह शा शिक्षक , संस्थाप्रधानमय शाला स्टाफ, स्काउट गाईड तथा विद्यार्थीगण उत्सव मनाते हुए।

बाल शिविरा सितम्बर, 2022

1. नाम-गुड़िया कक्षा-7,
2. कृष्णा कक्षा-7 एवं
3.जसवंत कक्षा-2
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा, जालौर

नाम-लक्ष्मी बिश्नोई,
कक्षा- 12
(कला संकाय)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भैरूपुरा सीलवानी,
श्रीगंगानगर

नाम-कमलेश स्वामी
कक्षा-8
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
कसोरिया (बनेड़ा)भीलवाड़ा

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • सितम्बर, 2022 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 सितम्बर, 2022 पृष्ठ 132 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान; बीकानेर निदेशालय परिसर मे आयोजित

स्वतंत्रता दिवस समारोह की झलकियाँ

15 अगस्त, 2022

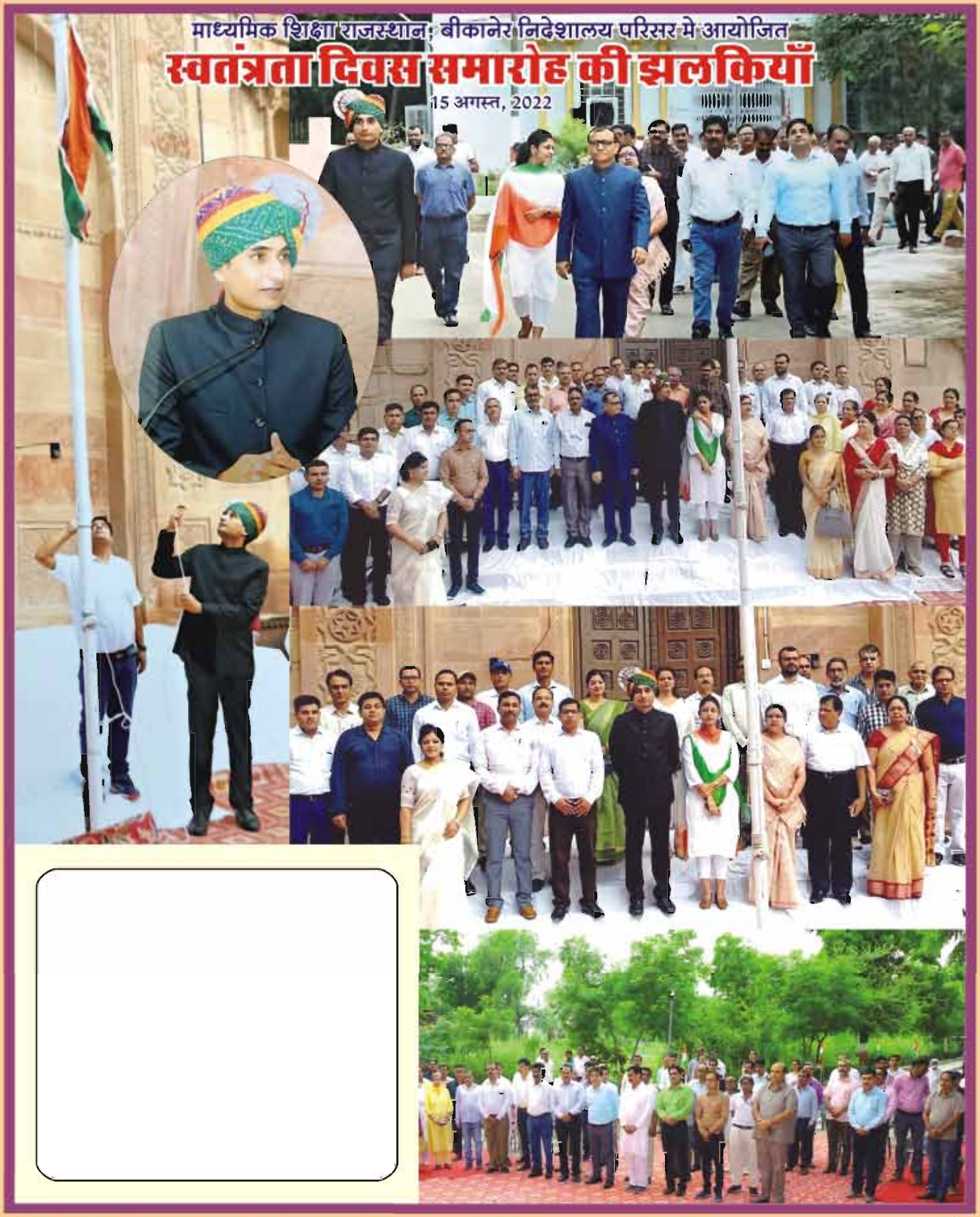

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर-334011